श्री

सिद्धांत शिरोमणि

खण्ड १-

कर्त्ता,

स्वर्गस्थ कीर्तिमान् परमपूज्य (गच्छाधिपति) श्री श्री श्री
१००८ श्री श्री श्री, रेखराजजी महाराजके पौत्र शिष्य
श्री महामुनि कुन्दनमलजी महाराज तच्छिष्य
बालब्रह्मचारी मुनि श्री रामचंद्रजी महाराज.

छपाके प्रसिद्धकर्त्ता,
मगनमलजी गणेशमलजी कासवा, हिंगणघाट.

प्रथमावृत्ति-प्रत ५००

अहमदाबाद-" भारतबंधु प्रिन्टींग वर्क्स " छापखानेमें
शाह वाडीलाल मोतीलालने छापा.

संवत् १९६७.-ई. स. १९१०. वीर सवत्. २४३६.

विना मूल्य.

॥ प्रार्थना ॥

सिद्धांत शिरोमणि ग्रंथ ए रच्यो बुद्धि अनुसार ॥
खोट कसर होवे टिका लीजो बिबुध सुधार ॥ १ ॥

आगम अबुधि अति गहन नया तरंग अपार ॥
अल्प मती प्रकाशालमें निपुण करे विचार ॥ २ ॥

नहि बुद्धी नल्प याद कम नही सहायक लार ॥
तदपि सुगुरु कृपाथकी किंचित् कर्यो विचार ॥ ३ ॥

पठण करो इस ग्रंथको पाठक स्थिर करि मन ॥
तत्व बोध जिनसे हुवे मिटे भ्रम भवि जन ॥ ४ ॥

गणेशमल कांसवा.
ग्रंथ कर्ता.

सूचना.

इस ग्रंथको यत्नासें पठना, असातना नही करना.
उघाडे मुंहे तथा दीपकके सामनें नहीं पढना.
और गुणोंके ही अनुरागी होना, दोषको छोड देना.



मुनिश्रीका संक्षिप्त जीवन चरित्र.

मुनिश्रीका जन्मभूमि स्थान 'मारवाड' देशमें 'जोधपूर' राज्यांतर्गत 'रीया' ग्राम है. इनके पिताका नाम 'महारामजी', माताका नाम 'वाली'बाइ. मुनिश्रीका जन्म संवत् १९३९ आश्विन शुक्ल १ के शुभ दिनपर हुवा. जन्मके पाच छे बरस अनन्तर इनके मातापिता कोइ प्रसंगमात्रतासे 'नया'शहर आ रहे. वहां चार पांच मास रहकर फिर मातापिता तो उमी 'रिया' को पिछे चले गये. तब मुनिश्रीको आग्रहसे इनके मातापिताके पाससे लेकर महाशय सेठ फत्तेचंदजी गुलाबचन्दजी कांकरिया नयाशहर वासी इनोने अपने पास रख लीये.

इनका बाल्यभाव वहांही व्यतीत हुवा. एक समय स्वर्गीय पूज्य कीर्तिमान गच्छाधिपति साधुवर्ग शिरोमणि व्याकरण काव्य कोष छन्द न्यायाम्भो निधि सर्व गुणगणालंकृत श्री श्री १००८ श्री श्री 'रेखराजजी' महाराज "तच्छिष्य" पूज्य श्री १०८ श्री 'नथमलजी' महाराज "तच्छिष्य" महामुनि श्री कुन्दनमलजी महाराजका आगमन हुवा. उनका स्थानकमें व्याख्यान होता था. व्याख्यानको नगरवासी सर्व जैनधर्मीय जन जाते थे. तिसमें म० गुलाबचंद कांकरियाके साथ बाल्यपणमें मुनिश्री भी जाते थे. नित्य व्याख्यान सुननेसे इनको वैराग्य भाव प्राप्त हुवा और दीक्षा लेनेको तैयार हुये. फिर मातापिताके अनुग्रासें मुनिश्रीके पास इनोनें बडे धामधूमसे दीक्षा धारण कीयी. तब इनकी ऊमर १३ बरसकी थी. "दीक्षा धारण संवत् १९५२ ज्येष्ठ शुक्ल ७ मी के दीन हुवा."

मुनिश्री अपने गुरुके साथ विहार करने लगे. यह गुरु शिष्यनें प्रथम चोमासा 'नया'शहरका ही कीया. दूसरा चोमासा मेवाड शाहपूरका. ३ रा चोमासा मेडतेका. ४ था शाहपुरका. ५ वां जिल्हा झालरापाटनकी 'छावनी'का. ६ ठा मेवाडमें केकडीका. यह पांच चोमासें मुनिश्रीनें अपने गुरु महाराजके संग करे. और छट्ठे चोमासेमे गुरुवर्यका वियोग काल आया. मुनि श्री 'कुन्दनमलजी' गुरुवर्य महाराजनें आयुष्यकी समाप्ती जानकर ३ दीनका संथारा कीया और चौथे दिन संवत् १९५७ श्रावण शुद्ध १० को स्वर्ग चले गये. फिर सर्व श्रावकोनें मिलकर मुनिश्री की महोत्सवसे मेत क्रिया कियी. उस समय आश्चर्यजनक बात यह हुई कीं उनका चोल पट्टा और मुपत्ती अग्निसे विमल निकले. इनपर एक डाग भी नही था. यह जैनधर्म सत्क्रिया पालनका प्रभाव !

गुरुवर्यका वियोग हुवा. पासमें अन्य कोई संत नही. उमर नव तारण्य दशाका आरंभ. इस प्रकार संकटमें भी धीरतासें सत्क्रियाचरण गुरुके पास ५ बरसके किये ज्ञानाभ्याससे व्याख्यानादि सुनवाना देश विदेशागमन इत्यादि करने लगे. उस चोमासेके बाद विहार करके शाहपूर आये. और सातवां चोमासा श्रावकोंके विनतीसें वहां शाहापूरका ही किया. वहांसे फिर 'नया'शहर आये. और पिपलीया बजार स्थानकमे उतरे. वहां सब श्रावक मुनिश्री को एकाकी देख और गुरुवर्यका वियोग सुन बहुत दुःखित हुए और फिर श्रावकवर्य गुलाबचंदजीनें महाराजको वहांसे आगे जाने दिया नहीं. और एक विद्वान गीर्वाण भाषा निपुण शास्त्रीको मुनिश्रीके ज्ञानाभ्यासके लिये रख दीया. उनके पास मुनिश्रीनें कितने दिन तक अभ्यास कीया. और आठमा चोमासाभी यहां का हुवा *

---

* यह जो आठ चोमासे मुनिश्रीनें लगोलग (पास-पासही) किये हे सो कारणसे किये हें (शास्त्रोमें नियम तीसरे वर्षका है)

वहांसे इतर (दूसरे) सतोंका सग मिलनेपर विहार करके मुनिश्री जोधपूर आये. वहां मुनिश्रीको शिष्यका लाभ हुवा. (जो अभी हर्षचद्रजी महाराज विद्यमान है.) फिर विहार करके मारवाड जिल्हा परवतसर ग्राम वडु आये. यहांही नववा चोमासा कीया. दसवा फिर मारवाडांतर्गत गोढवाड प्रांतमें घाणेरावके पास सादडी शहरमें हुवा.

चोमासाके अनतर विहार करके (श्रावकोंकी वीनती आनेपर) जालोर पधारे और जालोरसे पीछे 'नयाशहर' आते मार्गमें 'रास' है यहां वैशाखके महिने आये (यह नयाशहरसे दस कोस है.) वहां मुनिश्री हर्षचद्रजीकी (सवत् १९६२ ज्येष्ठ शुद्ध १३ के दिन महोत्सवके साथ) दीक्षा हुई. मुनिश्रीको शिष्य प्राप्ति होनेपर फिर नया शहर आये. इग्यारमा चोमासा यहांका हुवा.

बारवा चोमासा मेवाडमें शाहापूरका. तेरवां फिर सादडीका हुवा ॥ चोमासा होनेके पश्चात् मुनिश्री शिष्य सहित मेवाड उदेपूर राज्यान्तर्गत ग्रामोंमे विचरतेथे. उस वख्त (संवत् १९६४) जिल्हा ग्वालियर शहर लष्करके श्रावकवर्य रीखवदासजी धाडीवाल मुनिश्रीके दर्शनार्थ रूपायली ग्राममें आये. और लष्कर आनेकी बहुत विनती की. विनतीको मुनिश्रीने मान्यकर अवसर देख लष्करको प्रयाण कीया, (और भाई पीछे लौट गये.) मार्गसे जाते २ देश हाडोती कोटा बुदी होते हुए देश झालावाड शहर झालरा पटण पधारे. वहां श्रावकवर्य रीखवदासजी लष्करके सर्व श्रावकोंके तर्फसे चोमासाकी विनती लेकर आ पहुचे. उस विनतीको मान्यकर गुना सीपरीकी छावनी होकर मुनिश्री लष्करमें आषाढ शुद्ध १० मीके आये. यह चवदवा चोमासा यहांका हुवा.

चोमासाके अनंतर मुनिश्री आग्रा पधारे. आग्राके नजदीकमें देख मुनिश्रीका इरादा पंजाबमें गवेश करनेका था. परंतु उधरका पांनी वगेरा नहीं सधनेसें पीछे लौटना भाग पडा. फिर पीछे. छप्पर होकर सीपरीकी छावणी आये. दोली चोमासा यहांका कीया. और वहा लक्ष्मीचदजी नामके फिर एक शिष्य (महाराज साहेबके) हुए.

दीक्षा देकर माळवा भोपाल गये. यहां चोमासेकी विनती होनेपर मुनिश्रीनें भोपाळमेंही चोमासा किया. यह पंधरावा चोमासा. यह चोमासा होनेपर मुनिश्रीका विचार भुसावळ होकर दक्षिणकी ओर जानेका था. परंतु वहाके मुख्य श्रावक फुलचंदजी कोठारी इन्होंने कहा कि मुनिश्री आप वदनूर बैतूल और अमरावती होते हुए जाइये, क्योंकि इस ओर आज तक कोई मुनिश्रीका जाना नही हुवा है और मुनिश्रीके गमनसे ये क्षेत्र भी पुनीत होंगें. और धर्म की भी बहुत वृद्धी होगी. परंतु इधरका मार्ग विकट है तो श्रम होवेगे. इस विनती पर मुनिश्रीनें इधर ही धर्म वृद्धीके वास्ते आगमन किया.

भोपाळसे हुशंगाबाद और हुशंगाबादसे शिवनी आये. शिवनीमें गोरक्षण करनेका निर्बंध कीया गया. और मुनिश्री १ मास ठहरे. वहा तपस्या वगैरा भी बहुत अच्छी हुई.

फिर वहांसे इटारसी और इटारसीसे वदनूर आये. वहां शारफवर्य शेठ लखमीचंदजी गिरीमलजी गोठी (यह एक अच्छे श्रीमंत गृहस्थ है.) और अन्य भी वहां दस बारा साधुमार्गी सांप्रदायके घर है. परंतु वहां कोई मुनि न जानेसे ये सब मन्दिरमार्गी हो रहे थे. मुनिश्रीनें पधार कर सबको गुरु आम्नाय दी. और दृढ साधु-

मागी बनाये छोटी चोमासा भी यहांका कीया. और २१६ रु० मुनिश्री के उपदेशसे जलधर कान्फरन्स को भेजे गये.

छोटी चोमासाके बाद विहार करके चांदोड बजार आये. यहां न्यातमें दोन धडे थे. उसका मुनिश्रीनें समेट कीया. यहांसे फिर अमरावती आये. यहां मुनिश्रीके उपदेशसे एक (सिधा) धर्मस्थानक मोल लेने के लीये रु ७०० इक्ट्ठे कीये गये. मुनिश्री अमरावती आनेपर हम लोगोंको खबर समझी. हम भी (चुनीलालजी कटारिया खेमराजजी भंडारी वख्तावरमलजी गांधी) अत्यानंदसे मुनिश्रीको (आग्रहसे) लानेकी विनती करनेको अमरावती गये. वहां मुनिश्रीको नम्र विनती कर जरुर हिंगणघाट आनेका आग्रह कीया, जिससे मुनिश्रीने भी विनती मान्य की.

मुनिश्री अमरावतीसे चलके वडनेरा आये. वहां भी धर्मस्थानकके वास्ते रु. ७०० इकट्ठे किये गये. यहांसे नामक वाधुलगांव इन क्षेत्रोंमें विचरते हुए राळे गांव आये. वहाभी ११०० रु० वर्गणी धर्मस्थानकके वास्ते कीयी गयी. और राळे गावसे हिंगणघाट आ पहुचे. रत्नचिंतामणी सभामें मुकाम कीया. और ज्ञान वृद्धीका उपदेश लगाया.

सी० श्वे० स्था० र० चिं० सभा





ग्रंथ प्रसिध्ध कर्ताका जीवन चरित्र.



मारवाड देशमें हरसोर नामक ग्राम है. वहां बहुत कालसे कासवा ये वंश वास करता है. वहां जे भाणजी नामके इसवंशके मूल पुरुष थे. इनको ३ पुत्र हुए. जोहारमलजी (१) नेमिचंदजी (२) मगनमलजी (३). मगनमलजीका जन्म १८९९ संवत् में हुवा. जोहारमलजी और नेमिचंदजी व्यापार निमित्त हिंगणघाट आये. उनके बाद मगनमलजी भी संवत् १९१३ में भाईके पास आके व्यापार करने लगे. मगनमलजीका व्याह लूणकर्णजी पोखरणाके कन्या (दोलीबाई) से हुवा. भाग्यसे संपत्ती प्राप्त हुइ, परंतु उनकू संतान न रहा. फिर संपत्तीको वारिस होना इसलिये अजमेरमें जवानमलजी कासवा का पुत्र गणेशमलजीको दत्तक (खोले) लीये. यह ही इस ग्रंथके प्रसिद्ध कर्ता.

इनका जन्म सं० १९४४ आश्विन वदि ७ को छगणीबाईके कुक्षीसे हुवा. दत्त विधान १९५७ सालमें हुवा. तबसे मगनमलजीके संपत्तीके मालिक हो गये.

मगनमलजीका संवत् १९६४ में मृत्यु हुवा, तब गणेशमलजीकी उमर २० वर्ष की थी. इनोंने मुनि श्री दयाचंदजी के पास अजमेरमें सम्यक्त्व धारण कीयी. इनोंने रु० ७०० इस ग्रंथ छपानेमें खर्च कीये है. इस लीये इस महाशयको धन्यवाद है. और ऐसे ही अन्य महाशय पुस्तकें छपावेंगें तो स्वधर्मीय लोगोंको और उसको ज्ञान प्राप्ती होगी. और जगत्के धन्यवादको पात्र होगा.

जै० श्वे० स्था० स० हिं० सभा



प्रसिद्ध कर्त्ता

श्रीयुत. गणेशमल सिरदारमल कांसवा.

(जन्म स० १९८४) (जन्म स० १०६६)

हिंगणघाट



धन्यवाद.



यह 'सिद्धान्तशिरोमणि' अमूल्य ग्रंथ, पूज्यजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री 'स्वामिदास'जी महाराजके सांप्रदायानुयायी पाटानुपाट बालब्रह्मचारी मुनिश्री 'रामचंद्र'जी महाराजनें प्रणीत किया है। अनेक श्रावकोंके नम्र विनती पर लक्ष देके और उन्हो की अपने पास निर्मल भक्ति देखकर मुनिश्रीनें यह काम हाथमें लिया. और २ मासके अत्यल्पावधीमें बहुत ग्रंथ निरीक्षण करके सारभूत सद्यः फलदायक ऐसे मधुर विषयोसे यह ग्रंथ पूर्ण किया. इसमें मुनिश्री इतर कर्म व्यग्रतासे बहुत श्रम पाये. लोकोद्धारार्थ देह भी समर्पण करनेका जिनका दृढ मनःपरिग्रह, उस मुनिश्रीनें ये श्रम कुछ मनमें लाये नही। इसके हम अनंतवार मुनिश्रीपदाब्जी प्रणत हो कर आजन्म आभारी है. यह उपकार और भव व्याघ्र जभाके भयसे यह ग्रंथरूपखड्गने बचाया इसके पावंपर देह घसघस यदि व्यय कीया जाय तो भी भर पानेका नही. यह निश्चित है. मुनिश्रीकी इस विषयमें प्रशंसा की उतनी थोडी है. हम भविजन यदि अहर्निश आजन्म स्तुती करेंगे, तथापि थोडी ही है. मुनिश्री की पूज्यता देख हम हर्ष मुग्ध हो गये है इसलिये मुनिश्रीको अनंत पूज्यवाद समर्पण करते है.

समेतही इस ग्रथका स्व द्रव्य खर्चकर छपाके प्रसिद्ध करनेहारा को भी धन्यवाद दीये जाते है. मुनिश्रीके नित्य व्याख्यानका परिणाम जिन्होंके मन पर हुवा उनमेसे यह गृहस्थ एक है. इनका नाम 'मगनमलजी गणेशमलजी कासवा' इन्होंनें अपना और दूसरेंका भी तारण करनेको (ज्ञानवृद्धीसे) स्व द्रव्यसे उपाय कीया. मुनिश्रीका अमूल्य ग्रथ भवपारदायक इस उपायसे आदीनधनी जनको विना मूल्य ज्ञान लाभ देवेगा। यह सर्व श्रेय महाशय 'गणेशमलजी'के ऊपर ही है. और वे शतशः धन्यवाद पात्र है.

श्री जैन श्वेतांबर स्थानकवासी (साधुमार्गी)
रत्नचीतामणी सभा.
शहर हींगणघाट जीले वर्धा.
(सी० पी०)

प्रेसमालककी विनंति.

हिंगणघाट सभाकी ओरसे जो पोथी छापनेको मुझे मिलीथी बराबर उस मजमुन मुजबही छापनेका मेरा अधिकार था और उस मुजब ही छाप दिया है और मो सभाके हुकमसे मेने यह काम अति ही शीघ्रतासे याने १२ मासका काम ३ मासम पूर्ण कर दिया है

मालक, 'भारतवर्ष प्रिन्टिंग वर्क्स'



भूमिका.



॥ 'स्व स्वधर्म रताः सर्वे प्राप्नुवन्ति परांगतिं' ॥



मुमुक्षु महाशयो !

☞ इस दुस्तर और दुःखमय भव सागरके पार होनेको एक धर्मही मार्ग है । धर्म विना अन्य मार्ग नही. अर्थात् जो जो प्राणियोको मुक्त होनेकी अभिलाषा होवे इस मार्गसें अवश्य क्रमण करे। परतु यह धर्म जाननेकी बुद्धी एक मानव प्राणियोंमेंही है, जिस कारणसेही मानव श्रेष्ट समझा जाता है. केवल यह ही नही तो स्वदेहको कष्ट दे अपने मनको आत्मवश कर धर्मके तत्वसे वर्ताव करनेकी भी शक्ति उत्पन्न कर सकता है यह श्रेष्ट कारण है.

प्रत्येक प्राणियोकों उनके भाषासे कहा समझता है; परतु एक स्वाभाविक धर्म छोड मोक्ष'मार्गसे जाना यह बुद्धी उनको होती नही. यह बुद्धी मानवको उपदेशसे आती है और उसमें वर्ताव करनेकी उत्सुकता भी प्राप्त होती है, तस्मात् मानव श्रेष्ट है.

परंतु यह धर्म मार्गसे मानव यदि क्रमण न करै तो तिर्यच प्राणीमें और मानवमें कुछ भी तफावत नही, वह पशु ही है. क्योंकि कहा है:—

'आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणां ॥
ज्ञानंहि तेषामधिकं विशेष ज्ञानेनहीनाः पशुभिः समानाः ॥

आहार सुषुप्त्यादि सर्व गुण सर्व प्राणियोंमें वास्तव्य करते है वैसे मानवमें भी है तो मानवेतर और मानवमें फिर अंतर क्या है? कुछ भी नहि. मानव पशु ही है-बलके पशुसे भी नीच है. धिक्कार! मानवको; यदि उसे सिंहासन मिलके उस मुताबिक वर्ताव करता नही.

तिर्यचोंको अपने धर्मसे चलना यह अभिमान—और मानव पराया धर्मका अनुकरण करता यह देख अज्ञानी तिर्यचोंको सदेह ही प्राप्त होता है कि 'अपन कौन? और ये कौन? वर्तान तो एक ही है. क्या हम मानव है? अगर हो तो (इसके) अत्यानदसे हमको भी मुक्तता प्राप्त होगी'। तिर्यच यह नही समझता कि मुक्ति मिलनेका मार्ग अन्य है. क्योंकि मानवको यह श्रेष्ट समझके उसके मुताबिक वर्ताव करना चाहता है. कहा है:—

'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः'

जैसे श्रेष्ट आचरते है वैसे इतर भी आचरते है ॥ मानव सदृश अपना भी वर्तन समझकर आनंद मानते। इसका कारण यह है की मानवोनें अपना जो श्रेष्ठाचरण उसको छोड दिया यह एक प्रकारका अपमान है. नीचने ऊंचके समान बैठना यह क्या ठीक है ? यह व्यावहारिक दृष्टान्तसे भी जान पडता है.

कर परम पुण्यसे मानव देह लेता है. क्यों कर ? मुक्त्यर्थ. मानव देहमें जाकर ज्ञानसे मुक्ति प्राप्त करना यह जीवका इष्ट हेतु.

ज्ञान प्राप्त करनेको धर्म होना.

उक्तं चः—

'धर्मोऽय वै ज्ञान मार्गोपदेशो येनाय वै शुद्धतां याति देहः' ॥

धर्मका शास्त्रोक्ताचरण ऐसा अर्थ है. उसके जीवदया दान इत्यादि अर्थ भी होते है. यह धर्माचरण करके मुक्ति प्राप्त होती है। देखिये; जीवोंके उपर दया करना जिसको जीवदया कहते है.

दान देना यह गरीबोंके उपर एक प्रकार दया ही है. और धन-मानादिक प्राप्त हुये उपर मत्तता प्राप्त होती है उसको शासन सन्मार्ग पर लाना इसको शास्त्रोक्ताचरण बोलते है. यह आचरण कर परिजनको आनद जिससे वे भी सन्मार्गका वर्ताव करते है. किं बहुना? प्राणसे भी प्यारा अपना धर्म समझते हे.

कहा है किः'—एकः प्रेम्णा पश्यत्यन्यः पश्यति तथैवतप्रेम्णा ॥
तत्सदशाचरण तत्कुरुते गच्छत इतः परभद्र' ॥

यह धर्माचरणसें मोक्ष मिलता है. पुण्यसे ईह परत्र सुख होता है. दयासे कीर्ती प्राप्त हो कर नाम मरे ऊपर भी चिरस्थायी होता है. जिधर उधर अत्यानंद हो परिजनोको भी उसका अनुकरण करके मुक्ति प्राप्त करनेकी इच्छा होती है.

देखिये महाशयों ! यह मानव देहसे कितना लाभ है?

यह धर्म किस तरह है?

अनेक संशयोच्छेदी परोक्षार्थस्यदर्शकम् ॥
सर्वस्य लोचन शास्त्रं यस्य नास्त्यध एव सः ॥

मनमें आये हुवे अनेक संशयोंका छेदन कर श्रेष्ट फल दिखानेवाला यह शास्त्ररूप लोचन नाम नेत्र है. यदा यदा मानव सन्मार्गसे भ्रमित हो अन्य मार्ग पर जाता है उसको फिरसे उसी मार्ग पर यह शास्त्रही लाता है ॥ इसको लोकमें 'विवेक' कहते है. विवेक शास्त्र ग्रंथोंके पठणसे आता है, अर्थात् पठण करना अत्यावश्य है.

यह उद्देशसे ही यह ग्रंथ करनेमें आया है. पूर्वकालमें अपने पूर्वज बहुतेरे धीमान् हो गये. उन्होंनें वनि प्रणीत सस्कृत अर्द्धमागधी भाषाके मूल ग्रथ पठण किये. परतु इस कालमें सस्कृत मागधी अल्पमति लोक वलके और निरुद्योगी चैनी होनेसे उनको अगम्य हो गया है. जिससे मोक्ष और ज्ञान और धर्म उनको मिलना अशक्य है. यह देख पूर्वज बहुत दयासें सस्कृत मागधीकी भाषा करनेमें उद्योगी भये. यह उपकार फिटता नहीं. वह ही भाषा प्रबंध प्रायः मार्ग दिखानेमें दक्ष है. यह मनमें ले कर ये ग्रंथ रचना की है, जिसको निरतर एक चित्त पठण कर मुमुक्षु महाशय ज्ञान और धर्म प्राप्त करेंगे यह प्रबल आशा है.



ग्रंथका संक्षिप्त वर्णन.



इस ग्रथका नाम सिद्धान्तशिरोमणि है. ये २ खण्डमें विभक्त किया है. दोनो खण्ड मिलके एकदर ३८ प्रकरण ग्रथित किये है. प्रथम खण्डमें ७ और दुसरेमें ३१ डाले है. इस ग्रथभी जैन धर्मीय लोगोको जो जरूर सो सब आया है. इसमे नित्य स्तवन स्तोत्र छन्द और ज्ञान विषय भी भली भांति रख्खे गये है. यह श्रावक तथा साधु लोगोके पठन पाठन योग्य है. जिससे सावधान वाचन करने पर धर्म ज्ञान और मोक्ष लाभ होवेगा, ये निश्चित है. इस प्रकार ग्रथ मुनिश्रीनें भविजन तारणार्थ किया और गणेशमलजी कासवानें प्रसिद्ध किया ये जैन धर्मीय लोगो पर उपकार हुआ है. उनकी उदारताको धन्य है.

सर्व भाइयोका कृपाभिलाषी,

भवानीदासजी चुनीलालजी कटारिया
प्रेसिडेंट,
श्री जैन श्वेतांबर स्थानकवासी
(साधुमार्गी) रत्नचिंतामणि सभा.
हिंगणघाट जि० वर्धा.
सी. पी.

जेठमल लोढा, सेक्रेटरी
रत्नचिंतामणी सभा.
हिंगणघाट.
जि० वर्धा.
सी. पी.





अनुक्रमणिका.

सामायिक—प्रतिक्रमणादिक नित्यस्मरणम्.

सिद्धान्त शिरोमणि-प्रथम खंडः

प्रकरण १ ला—स्तोत्रः—

प्रकरण २ रा—छंदः—

प्रकरण ३ रा—पदः—

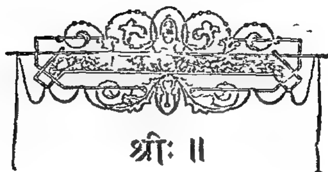
प्रकरण ४ था—स्तवनः—

प्रकरण ५ वा–लावणीः–

प्रकरण ६ ठा–होरीः–

प्रकरण ७ वा–व्याख्यान.—

द्वितीय खंड.



श्रीः ॥

अथ नमस्कार ॥



णमो अरिहताण (१) णमो सिद्धाण (२) णमो आयरियाण (३) णमो उवज्झायाण (४) णमो लोये सव्वसाहूण (५) एसो पच णमुक्कारो (६) सव्व पावप्पणासणो (७) मंगलाणं च सव्वेसि (८) पढम हवइ मगल (९) ॥

इति नमस्कार समाप्त ॥



अथ तिक्खुत्तोकी पाटी ॥

तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण, वदामि, णमसामि, सक्कारेमि. समाणेमि, कल्लाण, मंगल, देवय, चेइयं, पज्जुवासामि मत्थएण वदामि ॥

इति तिक्खुत्तोकी पाटी समाप्ता ॥

अथ इरियावहियाएकी पाटी ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छम्.

इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए (१) गमणा गमणे (२) पाणक्कमणे (३) बीयक्कमणे, हरियक्कमणे (३) ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे (४) जे मे जीवा विराहिया (५) एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया (व) अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (७) ॥

इति इरियावहियाएकी पाटी समाप्त ॥

अथ तस्सउत्तरीकी पाटी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माण, णिग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्ग (८)

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए (१) सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं (२) एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो (३) जाव, अरिहंताण भगवंताणं, णमुक्कारेण, न पारेमि (४) ताव, कार्यंठाणेण, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाण, वोसिरामि (५)

इति तस्सउत्तरीकी पाटी समाप्त ॥

अथ लोगस्सकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्त ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ [आर्यावृत्त.] उसम १ मजिय २ च वंदे, सभव ३ मभिणं ४ च सुमइ ५ च । पउमप्पहं ६ सुपासं ७, जिणं च चंदप्पहं ८ वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ९, सीअल १० सिज्जंस ११ वासुपुज्जं १२ च । विमल १३ मणंत १४ च जिणं, धम्म १५ संतिं १६ च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं १७ अरं १८ च मल्लिं १९, वंदे मुणिसुव्वयं २० नमिजिणं २१ च । वंदामि रिठ्ठनेमिं २२, पासं २३ तह वद्धमाणं २४ च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इति चतुर्विंशति स्तवनामक लोगस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ सामाइक लेनेकी पाटी ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, नकारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इति सामाइक लेनेकी पाटी समाप्त ॥

अथ शक्रस्तवनामक नमुत्थुणंकी पाटी ॥

नमोत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं (१) आइगराणं तित्थगराणं, सय संबुद्धाणं (२) पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं (३) लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं (४) अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, (जीवदयाणं) बोहिदयाणं (५) धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं (६) दीवोताणं सरणगइपइट्ठा) अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं (७) जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं (८) सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं (९) ॥

इति शक्रस्तवनी पाटी समाप्त ॥

अथ सामाइक पारनेकी पाटी ॥

नवमो सामायिक व्रतरे विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ ॥ मन, वचन, कायारा जोगपाडुवे ध्यान प्रवर्ताया होय ३ सामायिकमें संभालना नहीं कीधी होय ४ अणपुगी पाडी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ दस मनरा, दस वचनरा, बारे कायारा, बत्तीसं दोषांमायलो कोई दोष लागो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ सामायिकमें स्त्री कथा, भक्त कथा, देश कथा, राजकथा, ए चार कथा मांयली कोई विकथा कीधी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिक पाडनेकी पाटी समाप्त ॥

सामाइक पाड़्या पछे एवुं पाठ कहवुं.

सामायिकं सम्मं काएणं, फासियं, पालियं, सोहियं, तीरयं, कित्तियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिककी छ पाटियां समाप्त ॥

अथ सामायिक लेने की विधि ॥

आसण छोड, दो हात जोड, श्रीगुरुदेवकी आज्ञा मांग, "इरियावही"की पाटी "जीवीयाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं" पर्यंत भणवी ॥ पछे—"तस्सुत्तरीकी" पाटी भणने काउस्सग्ग करवो. काउस्सग्गमें "इरियावही" री पाटी "जीवीयाओ ववरोविया" पर्यंत मनमेंही गुणणी "नमो अरिहंताणं" मनमें कहिनें काउस्सग्ग पाडवो. पछे "लोगस्स" की पाटी कहवी ॥ पछे "करेमि भंते" की पाटी "जाव नियमं" सुधी कहीनें आगल मुहूर्त घालणा हुवे तिके घालणा ॥ पछे "पज्जुवासामि" थी ले "अप्पाणं वोसिरामि" सुधी पाठ कहवु ॥ पछे डावो गोडो ऊभो राखी दोनु हाथ जोडी "नमुत्थुणं" नी पाटी दोय वार कहवी ॥ दूजा नमुत्थुणं रे अंते "ठाणं संपाविउ कामस्सणं णमो जिणाणं जिअ भयाणं" एम कहवु ॥ पछे आसण माथे बेसीनें, सामायिक कालमें "नमोकार, तथा बोलचाल" गुणणा, पढणा ॥

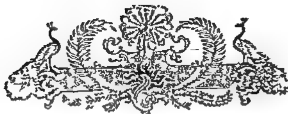
इति सामायिक लेनेकी विधि समाप्त ॥

अथ सामायिक पारवाकी विधि ॥

सामायिक पाडती वगत " इरियावही " की पाटी और "तस्स उत्तरी" की पाटी कही काउस्सग्ग करवो । काउस्सग्गमें "लोगस्स" की पाटी मनमें कहवी. ' नमोअरिहंताणं ' कही काउस्सग्ग पारवो. फेर ' लोगस्स ' प्रगट कहणो ॥ दोय नमुत्थुणं पूर्ववत् कहणा ॥ पछे नवमो सामायिक पारवाकी पाटी " न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कड " सुधी कहवी ॥ अंतमें तीन नवकार कही ऊठवुं ॥

इति सामायिक पारवाकी विधि समाप्त ॥





अथ प्रतिक्रमण ॥

अथ इच्छामिणं भंतेकी पाटी ॥

इच्छामिण भंते तुब्भेहिं अभणुणायसमाणे देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि, देवसिय णाण दसण चरित्ताचरित्त तप अतिचार चिंतरणार्थं करेमि काउस्सग्ग ॥

इति इच्छामिण भंतेकी पाटी समाप्त ॥

अथ इच्छामि ठामिकी पाटी ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्ग जो मे देवसियो अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचितिओ अणायारो अणिच्छियव्वो, असावग पाउग्गो नाणे तहदंसणे चरित्ता चरित्ते सुण सामाइए तिन्हं गुत्तीणं चउन्ह कसायाण पंचन्हमणु व्वयाण तिन्ह गुणव्वयाणं चउन्हं सिक्खा-

वयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिय जं विराहियतस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति इच्छामि ठामिकी पाटी समाप्त ॥

अथ आगमे तिविहे की पाटी ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा, सुत्तागमे, अत्थागमे तदुभयागमे; एहवा श्री ज्ञानके विषै जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं; जवाइद्धं १ वच्चामेलियं २ हीणक्खर ३ अच्चक्खर ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीण ८ सुट्ठुदिन्न ९ दुट्ठु पडिच्छियं १० अकाले कओ सज्झाओ ११ काले न कओ सज्झाओ १२ असज्झाए सज्झाइय १३ सज्झाये न सज्झायं १४ भणता गुणतां चितवतां ने विचारता ज्ञान अने ज्ञानवतनी आशातना कीनी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इति आगमे तिविहेकी पाटी समाप्त॥

अथ दंसण श्री समकित की पाटी ॥

आर्या वृत्तम् ॥

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो । जिणपण्णत्तं तत्तं, ए सम्मत्तं मए गहिय ॥ १ ॥ परमत्थ सथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २ ॥

एवा श्री समकितके विषै जे कोई अतिच्यार लागो हुवे तौ आलोउं। जिन वचनमें शंका आणी होय १ परदर्शनरी वाछा कीधी होय २ फल सदेह आण्यो होय ३ पर पाखंडीरी प्रशंसा कीधी होय ४ पर पाखडीरो संस्तव परिचय कीधो होय ५ तौ म्हारा समकित रूप रत्नरे विषै मिथ्यात्व रूपरज, मैल, खेह लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इति दसण श्री समकितकी पाटी समाप्ता ॥

अथ बारे व्रत और उनके अतिचार ॥

१ पहिलो अणुव्रत—थूलाओ पाणाइवायाओ, विरमण, त्रसजीव, बेइंदिय, ते इंदिय, चउरिंदिय, पचेंदिय, विन अपराधे जाणी प्रीछी आकुटी संकल्पी हणवारी बुद्धि करीनें हणवाहणावणका पचक्खाण जावज्जीवाए दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा॥ [एवा पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होवे तौ आलोउं। रीस वशे गाढा बंधण बान्ध्या होय, गाढा घाव घाल्या होय, चामना छेद कीना होय, अतिभार घाल्या होय, भात पाणीना विच्छेद कीना होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १ ॥

२ दूजो अणुव्रतः—थूलाओ मोसावायाओ विरमणं कन्नालियं, गोवालियं, भोमालियं, थापणमोसो, कूंक छे कूडी साख, इत्यादिक मोटका झूठ बोलणका पचक्खाण। जावज्जीवाए दुविहं तिविहेण न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ (एवा दूजा थूल मृषा

वाद विरमण व्रतके विषै जो कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं सहसात्कारे किणी प्रति कूडो आल दीधो होय १ रहसछांनी वात प्रगट कीधी होय २ पोतानी स्त्रीका मर्म प्रकाश्या होय ३ मृषा उपदेश दीया होय ४ कूडा लेख लिख्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ २ ॥

३ त्रीजो अणुव्रतः—थूलाओ अदिन्नादाणाओ विरमणं, खानर खिणी, गाठ छोडी, ताळो पर कूंची, वाट पाडी, पडी वस्त मोटकी धणिया सेती जांणीने लेवणका पचक्खाण ॥ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ [एवा तीजा थूल अदत्तादान विरमणा व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । चोराई वस्तु लीधी होय १ चोरने साझ दीधो होय २ राज्य विरुद्ध कारज कीधो होय ३ कूडा तोला कूडा मापा कीधा होय ४ वस्तमें भेल समेल सखरी दिखाय नखरी आपी होय ५ तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

४ चोथो अणुव्रतः—थूलाओ मेहुणाओ विरमण, पोतारी स्त्री उपरांत मैथुन सेवणका पचक्खाण । जावज्जीवाए देवता संबंधी दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा, मिनख तिर्यंच संबधी इक विहं इकविहेणं न करेमि कायसा ॥ [एवा चौथा थूल स्वदारा संतोष विरमण व्रतके विषै जो कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । इत्वर थोडा काल राखीसूं गमन कीधा होय १ १ अप गृहीसूं गमन कीधा होय २ अनंग क्रीडा कीधी होय ३ पराया व्याव नातरा जोडिया होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा सेविया होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ४ ॥

५ पाचवो अणुव्रत—थूलाओ परिग्गहाओ विरमण, खेत घरको, रूपा सोनाको, धन धान्यको, दुपद चौपदको, घर विखराको यथा परिमाण कीधो छै ते उपरात आपको करी परिग्रह राखणका पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविहं तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा पाचवा थूल परिग्रह विरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ । खेत घरको १ रूपा सोनाको २ धन धान्यको ३ दुपद चौपदको ४ घर विखराको ५ यथा परिणाम कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ५ ॥

६ छट्ठो दिशिविरमण व्रत—उची नीची तिरछी दिशाकों यथा परिमाण कीधो छै ते उपरांत स्वइच्छायें जाईनें पाच आश्रवद्वार सेवणका पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविहं तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा छठा दिशिविरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं ॥ उची नीची तिरछी दिशाको यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय ३ एक दिशा घटाई होय, एक दिश वधाई होय ४ सदेह पडिया पथ आगे चाल्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ६ ॥

७ सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रतः—उल्लणियाविहं १ दंतणविहं २ फलविहं ३ अब्भगणविहं ४ उवट्टणविहं ५ मज्जणविहं ६ वथ्थविहं ७ विलेवणविहं ८ पुप्फविहं ९ आभरणविहं १० धूपविहं ११ पेजविहं १२ भक्खणविहं १३ ओदनविहं १४ सूपविहं १५ विगयविहं १६ सागविहं १७ माहुरविहं १८ जीमणविहं १९ पाणीविहं २० मुखवासविहं २१ वाहनविहं २२ सयणविहं २३ पन्निविहं २४ सचित्तविहं २५ द्रव्यविहं २६ इत्यादिक छाईस बोलांरी मरजाद कीधी छै ते उपरात उपभोग परिभोग भोगणका पचक्खाण, जाव-

ज्जीवाए एगविह तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा सातवां उपभोग परिभोग विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । पच्चक्खाण उपरांत सचित्तको आहार कीधो होय १ सचित्तप्रतिबद्धको आहार कीधो होय २ अपक्कको आहार कीधो होय ३ दुपक्कको आहार कीधो होय ४ तुच्छ ओषधि भक्खण कीधा होय; थोडो खाय घणो नाखियो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ए भोजनथकी कह्या. हिवे कर्म थकी पनरे कर्मादान श्रावकनें जाणवा जोग छै पिण आदरवा जोग नथी. तं जहा, ते कहै छै इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६ लक्खवाणीज्जे ७ रसवाणिज्जे केसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे १० जंतपिल्लणकम्मे ११ निल्लंछण कम्मे १२ दगिदावणया १३ सरदह तलाव परिसोसणया १४ असईजणपोसणया १५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

८ आठमो अनर्थ दड विरमण व्रतः—चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा, अवज्झाणाचरियं पमाया चरियं, हिंसपयाणं, पावकम्मोवएस, एवा अनर्थ दड सेवणरा पच्चक्खाण, जावज्जीवाए दुविहं तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ॥ (एवा आठवां अनर्थदड विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं । कंदर्पकी कथा कीधी होय १ भड कुचेष्टा कीधी होय २ मुखर वचन बोल्या होय ३ अधिकरण जोडी मूक्या होय ४ उपभोग परिभोग अधिका वधार्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ८ ॥

९ नवमो सामायिक व्रतः—सावज्जजोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मनसा वयसा कायसा एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं ते वारे सिद्ध ॥

(एवा नवमा सामायिक व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ। मन वचन कायरा जोग पाडवे ध्यान प्रवर्ताया होय ३ सामायिकमें सभालना नहीं कीधी होय ४ अणपूगी पाटी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ९ ॥

१० दसमो देसावगासिक व्रतः—दिन प्रतिप्रभात थकी प्रारंभीनें पूर्वादिक छः दिशकी जेटली भूमिका मोकली राखी छै ते उपरात स्वइच्छायें कायायें जईनें पाच आश्रवद्वार सेवणका पच्चक्खाण। जाव अहोरत्त दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ते मांहि द्रव्यादिक नेमकी मरजादा कीधी छै ते उपरांत भोगणरा पच्चक्खाण। जाव दिवस पज्जुवासामि, एगविह तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ॥ [एवा दसमा देसाव गासि व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ। नेथी भूमीकाथी वस्तु नारथी अणाई होय १ मोकलाई होय २ शब्द करी, रूप करी, पुद्गल नाखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

११ इग्यारमो पोषध व्रतः—असण पाण खाइमं साइमका पच्चक्खाण, अवभ सेवणका पच्चक्खाण, अमुक्कमणि सोवनका पच्चक्खाण, माला वन विलेपणका पच्चक्खाण, सत्थ मुसलादिक सावज्ज जोगका पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ॥

एवा इग्यारमा पोषध व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, पोसामें सज्जा सथारो न जोयो होय, माठी तरे जोयो

होय १ न पूंज्यो होय, माठी तरे पूंज्यो होय २ उच्चार, पासवण, भूमिका न जोइ होय, माठी तरे जोई होय ३ न पूजी होय, माठी तरे पूजी होय ४ पोसामें निद्रा, विकथा, प्रमाद कीधो होय ५ तस्स मिच्छामि दुकडं ॥जावता आवसही२ नही कीधु होय, आवतां निसिही२ नही कीधुं होय, इंद्रमहाराजरी आज्ञा नही लीधी होय, थोडीदूर पूंज्यो होय, घणी दूर परठी होय, परठने तीन वार वोसरे वोसरे नही कीधुं होय, आयने चोईस थव नही कीधु होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ वारमो अतिथि सविभाग व्रतः—साधु निग्रंथनें पासु एषणीक शुद्ध, असणं १ पाण २ खाइम ३ साइम ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६ कवल ७ पायपुच्छणेणं ८ (पाडिहारिय) पीढ ९ फलग१० सिज्जा ११ संथारे १२ ओषध १३ भेषज १४ प्रतिलाभतो थको विचरू एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करू तेदारे सिद्ध ॥

एवा वारमा अतिथि संविभाग व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, सूजती वस्तु सचित्त ऊपर मूकी होय १ सचित्त करी ढांकी होय २ पोतेरी वस्तु पारकी कही होय ३ अहकार भावे दान दीधुं होय, थोडो दे घणो पोमायो होय ४ भोजन वेला टालीनें निमंत्रणा कीधी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥१२॥

इति वारे व्रत तथा उनके अतिचार सम्पाप्त ॥

अथ संलेखणाकी पाटी ॥

अहभते अपच्छिम मरणातिय संलेहणा झूसणा आराहणा पोषध साला पूजीनें, उच्चार पासवण भूमिका पडिलेहीनें, गमणा गमणे पडिक्कमीनें, दर्भादिक सथारो सथारीनें, दर्भादिक संथारे दुरुहीनें, पूर्व तथा उत्तर दिशि पल्यंकादिक आसणें वैसीनें, करयलसंपरिग्गहिय सिर सावत्त मत्थए अजली त्ति कट्टु, एवं वयासी, नमोत्थुण अरिहंताण भगवंताण जावसंपत्ताण, एम अनंता सिद्धिजीनें वंदना नमस्कार करीनें नमोत्थुण अरिहंताण भगवंताण जाव ठाणं संपाविउं कामे, इम दूजो नमोत्थुण गुणीनें जयवंता वर्तमान तीर्थंकर महाराजनें वंदना नमस्कार करीनें, पोतेका धर्माचार्यजीनें नमस्कार करीनें, साधु प्रमुख चार तीर्थ, खमावीनें, सर्व जीव राशि खमावीनें, पूर्वे जे व्रत आदऱ्या छे, तेना जे अतिचार दोष लागा छे, ते सर्व आलोइ, पडिक्कमी, निंदी, निःशल्य थई, सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामि । सव्व मोसावाय पच्चक्खामि । सव्व अदिन्नादान पच्चक्खामि । सव्व मेहुण पच्चक्खामि । सव्व परिग्गह पच्चक्खामि । सव्वं कोहमाण जावमिच्छा दसणसल्लं, सव्व अकरणिज्जं पच्चक्खामि । जावज्जीवाए तिविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि, करंतं पि नाणुजाणामि, मणसा वयसा कायसा, एम अठारे पाप स्थानक पच्चक्खीनें, सव्वं असणं पाण खाइम साइम चउव्विहंपि

आहारं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए । एम चारे आहार पच्चक्खीनें, जपीय, इम सरीर इठ कत, पिय मणुन्नं मणाम धिज्जं विसासियं समय अणुमय बहुमय भंडकरंडगसमाणं रयण करंडगभूयं माणसिय माणं उन्ह, माण खुहा, माण पिवासा, माणंवाला, माण चोरा, माणं दंसा, माणं मसग्ग, माणं वाहियं, पित्तियं, कप्फिय, संभीमं सन्निवाइयं, विविहा

रोगायंका, परिसहोवसग्ग फासा फुसंति, एव पियणं, चरमेहिं उ-स्सास निस्सासेहिं, वोसिरामि त्ति कट्टु । एम शरीर वोसिरावीनें, कालं अणवकं खमाणे विहरामि । एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवी संलेखणाके विषै जे कोई अतिचार लागों होय तो आलोउ, इहलोगासंसप्पउगे १ परलोगासंसप्पउगे २ जीविया संसप्पओगे ३ मरणा संसप्पओगे ४ कामभोगा ससप्पओगे ५ मा मज्ज हुज्ज मरणंते । श्रद्धा प्ररूपणामें फरक आयो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सलेखणा सातिचार समाप्त ॥

अथ तस्स धम्मस्सकी पाटी ॥

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिउ मि आराहणाए, विरउ मि विराहणाए, तिविहेण पडिक्क तो वंदामि जिणे चउव्वीस ॥

इति तस्स धम्मस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ तस्स सव्वस्सकी पाटी ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासिय दुच्चिंतियं आलोयते पडिक्कमामि ॥

इति तस्स सव्वस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ चत्तारि मंगलं की पाटी ॥

चत्तारि मगल, अरिहंता मगल, सिद्धा मंगल, साहू मंगल, केवलि पन्नत्तो धम्मो मगल; चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरण पवज्जामि, अरिहंते सरण पवज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि, साहु सरण पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरण पवज्जामि ॥

अरिहंतारो सरणो, सिद्धारो सरणो, केवलि मरूपित दया धर्मरो सरणो ॥ च्यार सरणा दुर्गतिहरणा, और सरणो नही कोय जे भव्य प्राणी आदरै तो अक्षय अमरपद होय ॥

इति चत्तारि मगलं की पाटी समाप्ता ॥

अथ अठारे पापस्थानककी पाटी ॥

अठारे पापस्थानक आलोउं । पैलो प्राणातिपात १ दूजो मृषावाद २ तीजो अदत्तादान ३ चौथो मैथुन ४ पांचमो परिग्रह ५ छट्ठो क्रोध ६ सातमो मान ७ आठमो माया ८ नवमो लोभ ९ दसमो राग १० इग्यारमो द्वेष ११ बारमो कलह १२ तेरमो अभ्याख्यान १३ चवदमो पैशुन्य १४ पनरमो परपरिवाद १५ सोळमो अरति रति १६ सतरमो माया मोसो १७ अठारमो मिथ्यादर्शन शल्य १८ ए अठारे पाप स्थानक सेव्या होय, सेवाया होय, सेवता प्रतिभले जाण्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इति अठारे पाप स्थानककी पाटी समाप्ता ॥

१० स्वलिंगी सिद्धा ११ अन्य लिंगी सिद्धा १२, गृहस्थ लिंग सिद्धा १३ एक सिद्धा १४ अनेक सिद्धा १५ ॥ आठ गुणाकरीनें विराजमान—अनंतो ज्ञान १ अनतो दर्शन २ अनतो सुख ३ क्षायिक समकित ४ अटल अवगाहना ५ अमूर्तिपणो ६ अगुरु लघु ७ अनंत अकरण वीर्य ॥ ८ ॥

अडिल्ल छंद ॥

अविनाशी अविकार परम रसधाम है, समाधान सरवंग सहज अभिराम है। शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत है, जगत शिरोमनि सिद्ध सदा जयवंत है ॥ १ ॥ जठे जन्म नहीं, जरा नही, मरण नहीं, रोग नहीं, सोग नहीं, भूख नहीं, तृषा नहीं, चाकर नहीं, ठाकर नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र नहीं, एवमें अनेक, जोतमें जोत विराजमान, एवा अनंता सिद्ध भगवान छे, जानें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो। कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारम्वार हात जोड मान मोड खमाउ छु, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वारमन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ पछे तिक्खुताका पाठ ३ कहिजे ॥ २ ॥

३ तीजे पद नमो आयरियाणं कहतां सर्व आचारजजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ आचारजजी महाराज कैवा छै ॥ ज्ञानाचार १ दंसणाचार २ चारित्राचार ३ वीर्याचार ४ तप आचार ५ ए पांच आचार पाळै ५ पंच समित ५ तीन गुप्त ३ शुद्ध आराधै ॥ छत्तीस गुणां करके विराजमान आचारजजी महाराज अर्थका दातार, आठ संपदा सहित, जा महापुरुषाने म्हारो वनणा

नमस्कार हुईजो ॥ कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारवार हात जोड मान मोड खमाउ छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो नमग। नमस्कर हुईजो ॥ तिक्खुतो तीन वार कहणो ॥ ३ ॥

४ चौथे पद नमो उवज्झायाणं कहतां सर्व उपाध्यायजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ उपाध्यायजी महाराज कैवा छै ॥ उपाध्यायजी, गणधरजी, स्थविरजी, वहुश्रुतजी, इग्यारे अग आचारांग १ सुयगडाग २ ठाणाग ३ समवायांग ४ भगवती ५ ज्ञाता ६ उपासक दसा ७ अतगड दसा ८ अनुत्तरोववाई दसा ९ प्रश्न-व्याकरण १० विपाक ११ ॥ वारे उपाग–उववाई १ रायप्पसेणी २ जीवाभिगम ३ पन्नवणा ४ जंबुद्वीपपण्णत्ती ५ चंद्रपण्णत्ती ६ सूरप-ण्णत्ती ७ निरया वलिया ८ कप्पवडिंसिया ९ पुप्फिया १० पुप्फ-चूलिया ११ वन्हिदिसा १२ ॥ मूलसूत्र चार–उत्तराध्ययन १ दस-वैकालिक २ नदीसूत्र ३ अनुयोगद्वार ४ छेदच्यार–दशाश्रुतस्कन्ध १ वृहत्कल्प २ व्यवहार ३ निशीथ ४ ॥ वतीसमो आवश्यक ॥ आदि देई अनेक ग्रंथका जाणणहार, इग्यारे अग वारे उपांग चरणसित्तरी करण सित्तरी भणे भणावे ए पचीस गुणे करी विराजमान, तथा चउदे पूर्व इग्यारे अंग भणे भणावे, सात नय, निश्चय व्यवहार प्रत्यक्ष ने परोक्ष दोय प्रमाणके जाणणहार, मनुष्य अथवा देवता कोई पण जेनें विवादमें छलवानें समर्थ नही, सूत्रपाठका दातार उपाध्यायजी महाराज, जांनें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारवार हात जोड मान मोड खमाउ छू, आप खमवा जोग्य छो । १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो॥ पछै तिक्खुत्तोरो पाठ तीनवार कहणो ॥ ४ ॥

५ पांचवें पद नमो लोए सव्वसाहूणं कहतां लोकरे विषै सर्व साधुजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ साधुजी महाराज कैवा छै । स्व पर कार्यका साधनहार, पोतारा धर्माचार्यजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री स्वामीजी श्री रामचंद्रजी श्री हरखचद्रजी महाराज (तथा इण ठिकाणे आप आपके गुरुका नाम केणा ॥) जघन्य दोय हजार क्रोड साधुजी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधुजी, पांचे समिते समिता, तीने गुप्ते गुप्ता, बयालीस दोष टाळीनें आहार पाणीका लेणहार, छ कायके पीर, छ कायके रक्षक, बावीस परिसहांरा जीतणहार, बावन अनाचारके टालनहार, तेडया जाय नहीं, नूंत्या जीमे नहीं, निर्लोभी, निर्लोलची, सूरा वीरा धीरा मोक्ष मार्ग साधै, भगवान् की आज्ञामें विहरै विचरै, शुद्ध संयम पाळै, सत्ताईस गुणाकरी विराजमान पचमहाव्रत पाळै ५ पांच इद्रिय वश करै १० च्यार कषाय टाळै १४ भाव सचे १५ करण सचे १६ जोगसचे १७ क्षमावंत १८ वैराग्यवत १९ मनसमाधारणीया २० वय समाधारणीया २१ काय समाधारणीया २२ नाण सपन्ने २३ दसण संपन्ने २४ चारित्त सपन्ने २५ वेदनी समाअहियासणिया २६ मरणातिसमा अहियासणिया २७ ॥ इसा साधुजी महाराजनें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड मान मोड खमाउं छूं, आप खमवा जोग्य छो । १००८ वार मन वचन कायाए करी शुजो शुजो वनणा नमस्कार हुईजो । पछै तिक्खुत्तारो पाठ तीन वार कहणो ॥ ५ ॥

ए पंच पद लोकमें महा मंगलिक छै, महा उत्तम छै, शरण लेवा योग्य छै, वारंवार इण भवमें तथा भवभवमें म्हनें सरणो हुईजो।

इति पंच पदाकी वंदना समाप्त ॥

अथ आयरिय उवज्झाए की पाटी ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ । जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, भगवओ अजलिं करिय सीसे । सव्व खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहियनियचित्तो सव्व खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहय पि ॥ ३ ॥

इति आयरिय उवज्झाएकी पाटी समाप्ता ॥

अथ खमतखामणा ॥

अढाई द्वीप, पनरे खेत्र माहे तथा बारे श्रावक श्राविका दान देवे, शील पाळै तपस्या करै, भावना भावै, संवर करै, सामायिक करै, पोसह करै, पडिक्कमणा करै, तीनमनोरथ चउदे नियम चिंतवे, एक व्रत धारी, तथा बारे व्रत धारी, मूल गुण उत्तर गुण सहित ते माहे मोटानें हात जोड मान मोड पगे लागी खमाउं छूं, छोटांने समुच्चय खमाउं छूं ॥

इति खमत खामणा समाप्ता ॥

अथ चौरासी लाख जीवाजोनि ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप् काय, सात लाख तेउ काय, सात लाख वाउ काय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय,

चउदे लाख साधारण वनस्पति काय, दोय लाख बे इन्द्री, दोय लाख ते इंद्री, दोय लाख चउरिंद्री, च्यार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्जंच पचेंद्री, चउदे लाख मिनखरी जात, च्यार गत चौरासी लाख, जीवा जूण सूक्ष्म बादर पर्याप्तक अपर्याप्तक जाणतां अजाणतां कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यों होय, हणतानें भलो जाण्यो होय मन कर वचन कर काया कर अठारे लाख, चोइस हजार एक सौ वीस १८२४१२० मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति चौरासी लाख जीवाजोनि समाप्ता ॥

अथ खामेमि सव्वे जीवाकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

खामेमि सव्वजीवा, सव्वेजीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ ण केणइ ॥ १ ॥ [आर्या वृत्तम् ।] एवमहं आलोइय, णिंदियं गरहिय दुगंछियं सम्म । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥

इति खामेमि सव्वजीवाकी पाटी समाप्ता ॥

देवसिक प्रायश्चित विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अथ समुच्चय पच्चक्खाण ॥

गंठि सहियं मुट्ठि सहियं नवकारसी पोरसी साढा पोरसी आप आपनी धारणा प्रमाणे तिविहपि चऊव्विहपि आहारं असण पाण

खाइम साइमं अन्नत्थणा भोगेण सहसागारेण महत्तरागारेणं सव्वस माहिवत्तिआगारेण वोसिरे ॥

इति समुच्चय पञ्चक्खाण समाप्त ॥

अथ पडिक्कमणाकी विधि ॥

पैली " चौवीस स्तव " कीजै । पछै ऊभो होय आसण छोड " तिक्खुत्तो " कहीजै । पछे देव गुरु तथा साधुजी कनें आज्ञा लेई वडासाधर्मी भाईयाकी आज्ञा मागी " देवसिक पडिकमणा करण की आज्ञा है " इसो कही " इच्छामि ण भंते " की पाटी कहणी । पछै " नवकार " कहणो । फेर " तिक्खुत्ता " को पाठ कही, पैला आवश्यककी आज्ञा मागी " करेमि भते " की पाटी कहणी । पछे " इच्छामि ठामि काउस्सग्ग " की पाटी कहणी । पछै " तस्स उत्तरी " की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोयको करणो । शक्ति नहीं होय तो बैठ सिद्धासन लगाय जिनमुद्राए काउस्सग्ग करणो । काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका अतिचार " जगाइद्धं " आदि अर्थ रूप चिंतवणा । पछै समकितका ५ अतिचार " जिन वचनमें शका आणी होय " इत्यादि चिंतवणा । पछे वारे व्रतारा दूजा भागरा एवा सू लगाय एक एक व्रतरा पाच पाच अतिच्यार कुल ६० कर्मादानरा १५ सलेहणारा ५ एव ९९ अतिचार । १८ पापस्थानक तथा " इच्छामि ठामि " की पाटी चिंतवणी ॥ काउस्सग्गमें " तस्स मिच्छामि दुक्कड " कठेई नहीं कहणो ॥ ने " इच्छामि ठामी " की पाटीमें " ठामि काउस्सग्ग " की जगह " इच्छामि पडिकमिउं " कहणो ॥ पछै नवकार मनमें गुणीनें " नमो अरिहंताण " काउसग्ग पारती प्रगट प्रगट कहणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक सपूर्ण ॥ १ ॥

चउदे लाख साधारण वनस्पति काय, दोय लाख बें इन्द्री, दोय लाख ते इंद्री, दोय लाख चउरिंद्री, च्यार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्जंच पचेंद्री, चउदे लाख मिनखरी जात, च्यार गत चौरासी लाख, जीवा जूण सूक्ष्म वादर पर्यापृक अपर्याप्तक जाणतां अजाणतां कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतानें भलो जाण्यो होय मन कर वचन कर काया कर अठारे लाख, चोइस हजार एक सौ वीस १८२४१२० मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति चौरासी लाख जीवाजोनि समाप्ता ॥



अथ खामेमि सव्वे जीवाकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

खामेमि सव्वजीवा, सव्वेजीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ ण केणइ ॥ १ ॥ [आर्या वृत्तम् ।] एवमहं आलोइय, निंदिय गरहिय दुगंछियं सम्म । तिविहेण पडिक्कंतो, वदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥

इति खामेमि सव्वजीवाकी पाटी समाप्ता ॥

देवसिक प्रायश्चित विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥



अथ समुच्चय पच्चक्खाण ॥



गंठि सहियं मुट्ठि सहिय नवकारसी पोरसी साढा पोरसी आप आपनी धारणा प्रमाणे तिविहपि चउव्विहपि आहारं असणं पाण

खाद्म साद्मं अन्नत्थणा भोगेण सहसागारेणं महत्तरागारेण सव्वस माहिवत्तिआगारेण वोसिरे ॥

इति समुच्चय पच्चक्खाण समाप्त ॥

अथ पडिकमणाकी विधि ॥

पैली " चौईस स्तव " कीजै । पछे ऊभो होय आसण छोड " तिक्खुत्तो " करीजै । पछे देव गुरु तथा साधुजी कनें आज्ञा लेई वडासाधर्मी भाइयांकी आज्ञा मागी " देवसिक पडिकमणा करण की आज्ञा है " इसो कही " इच्छामि ण भंते " की पाटी कहणी । पछै " नवकार " कहणो । पेर " तिक्खुत्ता " को पाठ कही, पैला आवश्यककी आज्ञा मागी " करेमि भंते " की पाटी कहणी । पछे " इच्छामि ठामि काउस्सग्ग " की पाटी कहणी । पछै " तस्स उत्तरी " की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोथको करणो । शक्ति नहीं होय तो बैठ सिद्धासन लगाय जिनमुद्राए काउस्सग्ग करणो । काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका अतिचार " जयाइद्धं " आदि अर्थ रूप चिंतावणा । पछै समकितका ५ अतिचार " जिन वचनमें शंका आणी होय " इत्यादि चिंतावणा । पछे वारे व्रतारा दूजा भागरा एवा सू लगाय एक एक व्रतरा पाच पांच अतिच्यार कुल ६० कर्मादानरा १५ सलेहणारा ५ एव ९९ अतिचार । १८ पापस्थानक तथा " इच्छामि ठामि " की पाटी चिंतवणी ॥ काउस्सग्गमें " तस्स मिच्छामि दुक्कड " कठेई नहीं कहणो ॥ ने " इच्छामि ठामी " की पाटीमें " ठामि काउस्सग्गं " की जगह " इच्छामि पडिकमिउ " कहणो ॥ पछै नवकार मनमें गुणीनें " नमो अरिहंताण " काउसग्ग पांटनो नगत प्रगट कहणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक सपूर्ण ॥ १ ॥

पछै " तिक्खुत्ता"को पाठ कही "दूजा आवश्यककी आज्ञा है" ऐसो कही प्रकट " लोगस्स " की पाटी पढणी ।।

इति दूजो चउविसत्थो आवश्यक संपूर्ण ॥ २ ॥

" तिक्खुत्तो " कही 'तीजा आवश्यककी आज्ञा है' ऐसो कही दोयवार " इच्छामि खमासमणा " की पाटी कहणी । साधु श्रावक दोनुं कने रजोहरण, मुखपत्ती और चलोटो ए तीन सिवाय कांइ नहीं राखै ।। पाटीमें प्रथम " निसीही " शब्द आवे जद मितावग्रहमें प्रवेश कर ऊभा गोडा राख हाथ जोड गुरु कणे बैठणो । पछे गुरुका चरणाके हाथ लगाय आपके माथे लगावणा. ने छ आवर्त करणा. " अहोकाय काय " इणं अक्षरासूं तीन आवर्त हुवे है । यथा–दोनु हाथ लंबा कर हातरी दसू आगलिया जमी माथे धर मुखसू " अ " अक्षर नीचा स्वरसू कहणो । पछै यूंही दसू आगलिया आंखियां उपर धरता " हो " अक्षर उंचा स्वरसूं कहणो । ओ पैलो आवर्त हुवो । यूंहीज " का " ने " यं " उच्चारता दूजो आवर्त हुवे । तथा " का " ने " य " उचारतां तीनो आवर्त हुवे।। पछै " जत्ता भे जवणिज्ज च भे " इणां अक्षरांसूं तीन आवर्त हुवे।। यथा प्रथम " ज " मद स्वरसू, " त्ता " मध्यम स्वरसू " भे " उंचा स्वरसू, ऊपरली रीते दोनु हाथ जमी माथे, बिचमें (आरती रूप) ने आख्या माथे, एक एक अक्षर क्रमसू बोलता लगावणा ।। ओ पैलो आवर्त हुवो । " ज. व. णि. " ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसू ऊपर मुजब उच्चारतां दूजो आवर्त हुवे । " ज्जं. च. भे. " ए तीन अक्षरासू पूर्वोक्त रीतिसू तीजो आवर्त हुवे । ऐसे ६ आवर्त एकवार गुणतां हुये । दोय वार पाटी गुणतां बारे आवर्त हुवे ।

चेले खमासमणामें " वइक्कम " ताईं कहिने " आवसियाए " इण पद ऊपर ऊभो हुवणो. और गुरु चरणासूं पाछले पगा सरकणो, मितावग्रह वारे अर्थात् तीन हात अलगो गुरुके सन्मुख ऊभो रही शेष पाठ पढणो। दूजा खमासमणामें पूर्व रीते थोडो शरीर नमाविं " इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए णिसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गह निसीही ' ए पाठ कही गुरुके समीप जाय वैसीनें पूर्वोक्त रीतिसूं छ आवर्त देणा. सारो पाठ वैठो २ पढणो, गुरुके सामें दृष्टि राखणी. दूजा खमासमणामें " आवसियाए पडिक्कमामि " ए दस अक्षर नहीं कहणा ॥

इति तीजो वंदनावश्यक संपूर्ण ॥ ३ ॥

" तिक्खुत्तो " को पाठ कही, 'चौथा आवश्यककी आज्ञा है' ऐसे कही उभो होय " आगमें तिविहे " की पाटी सूं लेयने " इच्छामि ठामि " की पाटी पर्यंत ९९ अतिचार काउस्सग्गमें कह्या सो प्रगटपणे कहाणा " तस्स मिच्छामि दुक्कड ' देणो ॥ पछे " तस्स सव्वस्स ' की पाटी कहणी ॥ पछै नीचो वैठ जीवणो गोडो उभो राख " नवकार " कहणो। पछे " करेमि भंते " की पाटी कहणी। पछे " चत्तारि मंगलं " की पाटी कहणी ॥ पछे " इच्छामि ठामि " की पाटी, पछे " इरिया वहियाए " की पाटी कहणी. पछे " तिक्खुत्तो " गुणी, हात जोडी, व्रत अतिचार भेला कवणकी आज्ञा लेणी। पछे " आगमे तिविहे " की पाटी कहणी। पछे " दंसण श्री समकित " की पाटी कहणी ॥ पछे वारे व्रत अतिचार सहित कहणा ॥ पछे सलेखणाको पाठ अतिचारा समेत कहणो ॥

पछे अठारे पाप स्यानककी पाटी कहणी ॥ पछे " इच्छामि ठामि" की पाटी कहणी ॥ अठातांई जीवणो गोडो उंचो राखिया वैठो रैणो॥ पछे उभो होय हात जोड " तस्स धम्मस्स " की पाटी कहणी ॥ पछे " इच्छामि खमासमणा " की पाटी पूर्वोक्त रीतिसूं दोय वार कहणी ॥ पछे आज्ञा लेई, उदा गोडा वैसी, दोनु हात जोडी, मस्तक जमीके लगावी, पांच पदाकी वदना करणी ॥ पछे उभो होय "आ- यरिय उवज्झाए " की पाटी कहणी ॥ पछे " अढाई द्वीप " को पाठ कहणो ॥ पछे " चौरासी लाख जीवा जोनि सात लाख पृथ्वी काय " इत्यादि पाठ कहणो ॥ पछे "खामेमि सव्व जीवा" को पाठ कहणो ॥ पछे अठारे पाप स्यानक कहणा ॥

इति चौथो प्रतिक्रमण आवश्यक संपूर्ण ॥ ४ ॥

" तिक्खुत्तो " को पाठ पढी, 'पांचवां आवश्यककी आज्ञा है' असे कही, " दैवसिक प्रायश्चित विशोधनार्थ करेमि काउस्सग्ग " ॥ ओ पाठ कहणो ॥ पछे " नवक्कार " कहणो । पछे " करेमि भंते " की पाटी कहणी । पछे " इच्छामि ठामि काउस्सग्ग " की पाटी कहणी ॥ पछे "तस्स उतरी" की पाटी कहणी। पछे काउस्सग्ग करणो ॥ काउस्सगमें सदैव, देवसी, रायसी तथा पखी सवत्सरी पडिक्- मणामें ४ लोगस्स कहणा. ॥ कितेक आप आपकी आम्नाय प्रमाणे कमती जादा करे है । मनमें " नवकार " गुणी, काउस्सग्ग पारणो पछे " नमो अरिहंताणं " इसो प्रकट कहणो । पछे " लोगस्स " प्रगट कहणो ॥ पांच पदांकी वदना पछे सारी क्रिया ऊभो २ करणी

पछै नीचो बैठ डावो गोडो उंचो राख, दोय " नमोत्थुणं " पूर्ववत् पढणा. पछै ऊभो होयने श्रीसीमंधरस्वामीजी मतें पचाग नमाय, " तिक्खुत्तो " का पाठसू १००८ वार वदना करूं छू, इम कही पोताना धर्माचार्यजीनें इण रीते वदना करवी । पछै उपाश्रयमें जे मुनिराज होय तिणानें वदना करीने अपराध खमावणो । पछै तपस्वी साधर्मी भाइयांस खमत खामणा कर सुख साता पूछणी । पछै सारा साधर्मी भाइयासू खमत खामणा करणा अने सुख साता पूछणी ॥ देवसि पडिक्कमणामें " मिच्छामि दुक्कड " आवे तठै दिवस सवधी मिच्छामि दुक्कड देणो ॥ राइ पडिक्कमणामें रात्री सबंधी कहणो । पक्खी पडिक्कमणामें देवसि पक्खी संबधी कहणो। चौमासीमें देवसि चौमासी सबधी कहणो । सवच्छरी पडिक्कमणा में देवसि सवत्सरी संबधी मिच्छामि दुक्कड कहणो ॥

इति श्रावक प्रतिक्रमण विधिः समाप्तः ॥





॥अथ दश पच्चक्खाण॥



गाथा ॥

दोचेव नमुक्कारो, आगारा छच्च हुति पोरिसिए । सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणमि अट्ठे व ॥ १ ॥ सत्ते गट्ठाणस्सउ, अट्ठेव यअनिलमि आगारा । पचेव य भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पच चउदो अभिग्गहे, निव्वीए अठ्ठ नवय आगारा। अप्पाउरणे पचउ हवति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

१ अथ नोकारसीको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिय पचक्खामि । चउव्विहंपि आहारं असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणा भोगेण १ सहसागारेणं २ वोसिरे इति ॥ १ ॥

२ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पोरसिं पचक्खामि चउव्विह पि आहारं असणं पाणं

खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेण १ सहसागारेण २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ६ वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

३ साड्ढ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साड्ढपोरासि पच्चक्खामि चउव्विह पि आहार असण पाण खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पच्छन्नकालेण ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहि वत्तियागारेण ६ वोसिरे ॥ इति ॥ ३ ॥

४ पुरिमड्ढको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमड्ढ पच्चक्खामि चउव्विह पि आहार असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पच्छन्न कालेण ३ दिसामोहेण ४ साहुवयणेण ५ महत्तरागारेण ६ सव्व समाहि वत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ४ ॥

५ अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासण बियासण चउव्विह पि आहार असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ सागारि आगारेण ३ आउटण पसारेणं ४ गुरुअब्भुट्ठाणेण ५ पारिट्ठावणियागारेण ६ महत्तरागारेण ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

६ अथ एकलठाणको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगठाण पचक्खामि दुविह तिविह चउव्विह पि आहार असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २

खाइमं साइमं अन्नत्यणा भोगेण १ सहसागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहिवत्तियागारणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

३ साड्ढ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साड्ढपोरसि पच्चक्खामि चउव्विह पि आहार असणं पाणं खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेण २ पच्छन्नकालेण ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहि वत्तियागारेण ६ वोसिरे ॥ इति ॥ ३ ॥

४ पुरिमड्ढको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमड्ढ पच्चक्खामि चउव्विह पि आहारं असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पच्छन्न कालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ महत्तरागारेण ६ सव्व समाहि वत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ४ ॥

५ अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासण बियासण चउव्विह पि आहार असण पाणं खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ सागारि आगारेण ३ आउटण पसारेणं ४ गुरुअब्भुट्ठाणेणं ५ पारिट्ठावणियागारेण ६ महत्तरागारेण ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

६ अथ एकलठाणको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगट्ठाण पचक्खामि दुविह तिविह चउव्विह पि आहार असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २

सागारियागारेणं २ गुरुअब्भुट्ठाणेण ४ परिठावणिया गारेण ५ मह-त्तरागारेण ६ सव्वसमाहि वत्तियागारेण ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ६ ॥

७ अथ आयंबिलको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि तिविहपि आहार असण पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेणं २ लेवालेवेण ३ गि-हत्थससट्ठेण ४ उक्खित्तविवेगेण ५ पारिठावणियागारेणं ५ महत्तरा-गारेण ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ७ ॥

८ अथ चउविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तठ्ठ पच्चक्खामि चउव्विह पि आहारं असणं पाण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पारिट्ठावणिया-गारेण ३ महत्तरागारेण ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ५ वोसरे ॥ इति ॥ ८ ॥

९ अथ तिविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविह पि आहार असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पारिठावि यागारेण ३ महत्तरागारेण ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ५ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरे ॥ इति ॥ ९ ॥

१० अथ चरम पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिम पच्चक्खामि चउव्विह पि आहार असणं पाण खा-

इम साइम अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेण २ महत्तरागारेण ३ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ४ वोसिरे ॥इति ॥ १० ॥

११ अथ अभिग्रहको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे गंठि सहिय मुठि सहिय पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहार असण पाणं खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेणं २ महत्तरागारेणं ३ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ४ वोसिरे ॥ इति॥११॥

१२ अथ निव्विगईको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे निव्विगइयं पच्चक्खामि चउव्विह पि अहारं असण पाणं सूरे खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ लेवालेवेण ३ गिहत्थससट्ठेणं ४ उक्खित्तविवेगेण ५ पडुच्चमुक्खिएण ६ पारिट्ठावियागारेणं ७ महत्तरागारेण ८ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ९ वोसिरे ॥ इति ॥ १२ ॥

इति दश पच्चक्खाण समाप्त ॥





अथ तीन मनोरथ ॥

दोहा

आरभ परिग्रह तजी करी । पच महाव्रत धार ॥
अत अवसर आलोयणा । करु संथारो सार ॥ १ ॥

पहला मनोरथ-समणोपासक (साधूकी सेवा करनेंवाला) श्रावकजी ऐसा चिंतवे की, कब में चौदे प्रकारका बाह्य और नव प्रकारका अभ्यतर परिग्रहसे तथा आरभसे निवर्तुंगा ? यह आरभ परिग्रह काम क्रोध मद मोह लोभ विषय कषायका बढानेवाला, दुर्गतिका दाता, मोह मत्सर राग द्वेपका मूल, धर्म ज्ञान क्रिया क्षमा दया सत्य सतोष समकित संयम तप ब्रह्मचर्य सुमतिका नाश करने वाला अठारे पापका बढानेवाला, अनंत ससारमें भ्रमानेवाला, अशुच, अनित्य, अशाश्वता, असरण, अतरण, निग्रथोंका निंदनीक, ऐसे अपवित्र आरंभ परिग्रहका मैं जब त्याग करूंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा !

दूसरा मनोरथ-समणोपासक श्रावकजी ऐसा चिंतवे-वि-

चारे की, कब में द्रव्ये भावे मुंड होके दश यतिधर्म, नव वाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पाच महाव्रत, पांच सुमति, तीन गुप्ति, सतरे भेदे सयम, बारे प्रकारे तप, छेकायका दयाल, अप्रतिबध विहार, सर्वसंग रहित, वीतरागकी आज्ञा मूजब चलनेवाला, होउगा? जिसदिन निर्ग्रंथका मार्ग अंगिकार करूंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा!

तीसरा मनोरथः—समणोपासक श्रावक ऐसा चिंतवे की, किस वक्तमें सर्व पापस्थानक आलोयी निंदी निःशल्य हो सर्व जीवोंसे खमतखामणा कर त्रिविध २ अठारे पापकों त्याग जिस सरीरको मैने अतिप्रेमसे पाला है ऐसे शरीरसे ममत्व त्याग छेल्ले श्वासोच्छवास तक वोसीराके चारही आहारको त्याग के तीन आराधना चार सरणा सहित आयुप्य पूरा करूंगा? पंडित मरण मरूंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होगा!

यह तीन मनोरथका विचार करता हुवा प्राणी महा निर्जरा उपार्जन करे, ससार मत करे। मोक्षके सन्मुख होय। अनुक्रमे सर्व दुःखसें छुटे, अनत अक्षय सुख पावे.

दोहा.

तीन मनोरथ ए कहे। जे ध्यावे नित्य मन ॥
सक्ति सार वरते सहू। तो पावे शिव सुख धन ॥ १ ॥

इति तीन मनोरथ समाप्त ॥





चार सरणा.

॥ अरिहंत सरण पव्वज्जामी । सिद्ध सरण पव्वज्जामी ॥ साहु सरण पव्वज्जामी ॥ केवली पन्नत धम्मसरण पव्वज्जामी ॥

(१) पहला सरणा श्री अरिहंत भगवंतका. आरिहंत प्रभु चौंतीस अतिसय, पेंतीस वाणी गुण, अष्ट प्रतिहार अनंत चतुष्टय, बारे गुण करके विराजमान, अठारे दोष करके रहित । चौंसठ इंद्रके वंदनीक पूजनीक, इत्यादिक अनंत गुणे करी विराजमान है । अरिहंत प्रभूका इस भव परभव भवोभव सरणा होज्यो ।

(२) दूजा सरणा श्रीसिद्ध भगवंतका, सिद्ध भगवंत अष्टगुण इगतीस अतिसय करी सहित, मोक्षरूप सुखस्थानमें विराजमान, अनंत अक्षय, अव्याबाध, अजर, अमर, अविकारी, अनंत सुखमें विराजमान, अष्ट कर्म रहित है. सिद्ध भगवंतका, इसभव, परभव, भवोभव सरणा होणा !

(३) तीसरा सरणा साधू मुनिराजका, साधूजी सचा–

इस गुंण करी सहित, कनक कामिनी के त्यागी, सतरे भेद संजम के पालणहार, बारे भेद तपके करणहार, छन्नु दोष टाली आहार वस्त्र स्थानक पात्रके भोगवणहार, निर्लोभी बावीस परिसह सम प्रणाम सहे, शांत–दांत–क्षांत, इत्यादि अनेक गुण सहित ते निग्रंथ साधूजी महाराजका इण भव परभव भवोभव सदा सरणा होणा !

(४) चौथा सरणा केवली परुप्या दया धर्मका. धर्म दो प्रकारका–श्रुत धर्म सो द्वादशागी जिनागम । चारित्र धर्म सो आगारी अणगारी. यह धर्म आधि व्याधि उपाधिका विणासणहार है, मोक्षरूप शाश्वत सुखका दाता है. ये दया धर्मका इसभव परभव भवोभव सदा सरण होना !

दोहा

यह चार सरणा, दुःखहरणा, और न दुजा कोय ।
जो भवी प्राणी आदरे, तो अक्षय अमर पद होय ॥ १ ॥

इति चार सरणा समाप्त ॥



अथ चौदे नियम ॥

१ सचीतः—कहीये काचो पाणी ॥ कोरो दाणो ॥ काची ली-लोती ॥ प्रमुख अनेक चीज जाणवी ॥ एनी मरजादा करणी ॥

२ द्रव्य ते—मुखमे जितनी चीज घाले ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

३ वीगय ते—दूध ॥ दही ॥ घृत ॥ तेल ॥ खांड ॥ गुल ॥ सरव मीठाईनी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

४ पनी ते—पगरखी ॥ तलीया ॥ मोजा ॥ पावडीया ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

५ तबोल ते—लुग ॥ इलायची ॥ पान ॥ सोपारी ॥ इत्यादि एनी मरजादा करणी ॥

६ वथ ते—वस्त्र पेहरणा ओढणा तेनी मरजादा करणी ॥

७ कुसम ते—सुगणेमे आवे जीतनी चीज तेनी मरजादा करणी ॥

८ वाहण ते गाडी ॥ रथ ॥ तांगो ॥ वगी ॥ घोडा ॥ जात॥ ॥ असवारीमें काम आवे ॥ तेनी मरजादाकरणी ॥

९ सयण ते–गादी ॥ पीलग ॥ मांचो ॥ खुरसी ॥ अथवा, छपर पीलंग विछावनेकी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

१० विलेपण ते–केशर ॥ कुंकु ॥ तेल पीठी सरीरने विलेपण हुवे तेनी मरजादा करणी ॥

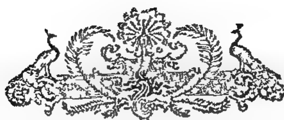
११ अवंभ ते–कुसीलनी मीरजादा करणी ॥

१२ दिसते ॥ पुरव दीस ॥ पश्चम दीस ॥ दिखण दीस ॥ उत्तर दीस ॥ उंची दीस ॥ नीची दीस ॥ ये छे दिसमें जावणेकी सारी मरजादा करणी ॥ अथवा कागद देवणरी मरजादा करणी ॥

१३ नाहावण ते–स्नानरी ॥ मरजादा करणी ॥

१४ भत्ते सुते–आहार पाणी करणेरी मरजादा करणी ॥ ये चौदे नियमकी नित्य मर्यादा करनेसे सर्व लोक की अव्रत आणी वहुत वंध हो जाती है. जीवको थोडेही कालमें मोक्षके परम सुखकी प्राप्ती होती है ॥





अथ समाईकके बत्तीस दोष ॥

जिसमे प्रथम मनके दस दोष कहते है ॥

१ औसर विना समाई करे तो दोष लागे ॥ २ ॥ यश किर्तिके अरथे समाई करे तो दोष लागे॥ ३ ॥ इण लोकरा लाभरे अरथे समाई करे तो दोष लागे ॥ ४ ॥ गरव अहंकाररे अरथे समाई करे तो दोष लागे ॥ ५ ॥ भयसें अर्थात् डरतो डरतो समाई करे तो दोष लागे ॥ ६ ॥ समाईमें ससय करे तो दोष लागे ॥ ७ ॥ समाईमें निहाणो करे तो दोष लागे ॥ ८ ॥ समाईमें रीस करे तो दोष लागे ॥ ९ ॥ समाई विनयहिन[1] करे तो दोष लागे ॥ १० ॥ बेटीयानी[2] परे समाई करे तो दोष लागे ॥ ए दस मनके दोष ॥

अथ दस वचनके दोष ॥

॥ १ ॥ सामाइकमें झूट बोले तो दोष लागे ॥ २ ॥ अण वीमास्यो बोले तो दोष लागे ॥ ३ ॥ राग करीने गीत गावे तो

१. अविनयसें. २. भावरहीत.

दोप लागे ॥ ४ ॥ उतावलो उतावलो घणो बोले तो दोप लागे ॥ ५ ॥ कलह करे तो दोप लागे ॥ ६ ॥ च्यार विकथा करे तो दोप लागे ॥ ७ ॥ हांसी करे तो दोप लागे ॥८॥ उतावलो २ अक्षर पद गुणे तो दोप लागे ॥ ९ ॥ अजुगती भापा बोले तो दोप लागे ॥ १० ॥ अव्रतीने आवो पधारो कहे तो दोप लागे॥ ए दस वचनके दोप ॥

अथ वारे कायाके दोप ॥

॥ १ ॥ ठांसणी मारीने बेसे तो दोप लागे ॥ २ ॥ अथिर आसण बेसे तो दोप लागे ॥ ३ ॥ विपय सहित दृष्टी जोवे तो दोप लागे ॥ ४ ॥ समाईकमें घरका कारज करे तो दोप लागे ॥ ५ ॥ विना कारण ओटो लेवे तो दोप लागे ॥ ६ ॥ सरीर संकोचीने बेसे तो दोप लागे ॥ ७ ॥ क्रोध करीने अंग मोडे तो दोप लागे ॥ ८ ॥ आलस आणे तो दोप लागे ॥ ९ ॥ कडका मोडे तो दोप लागे ॥ १० ॥ सरीररो मेल उतारे तो दोप लागे ॥ ११ ॥ विना पुंज्या खाज खिणे तो दोप लागे ॥ १२ ॥ विनाकारण समायकमें नियावच करोव तो दोप लागे ॥ एवं समाइकका वत्तीस दोप जाणवा॥

अथ पोसारा अठारा दोप ॥

पोसा निमित्ते सरीरकी शुश्रुपा करे नही ॥ १ ॥ कुसील सेवे ॥ २ ॥ सरस आहार करे नही ॥ ३ ॥ वस्त्र धुवावे नही ॥ ४ ॥

पग उपर पग धरके.

आनुपूर्वी.

५

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

६

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

७

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

८

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

आनुपूर्वी.

१

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

२

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

३

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

४

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

आनुपूर्वी.

५

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

६

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

७

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

८

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

आनुपूर्वी.

९

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

१०

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

११

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

१२

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

आनुपूर्वी.

१३

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

१४

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

१५

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

१६

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

आनुपूर्वी.

१७

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

१८

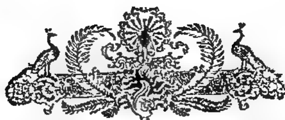
२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

१९

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

२०

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१



२४ तीर्थंकरोंके नाम.

१ श्री ऋषभ देवजी.	१३ श्री विमलनाथजी
२ श्री अजित नाथजी.	१४ श्री अनतनाथजी.
३ श्री संभवनाथजी.	१५ श्री धर्मनाथजी.
४ श्री अभिनदनजी.	१६ श्री शाति नाथजी
५ श्री सुमतिनाथजी.	१७ श्री कुथूनाथजी
६ श्री पद्मप्रभूजी.	१८ श्री अर्हनाथजी.
७ श्री सुपार्श्वनाथजी.	१९ श्री मल्लीनाथजी.
८ श्री चद्र प्रभूजी.	२० श्री मुनीसुव्रतजी.
९ श्री सुविधिनाथजी.	२१ श्री नेमीनाथजी.
१० श्री शीतलनाथजी.	२२ श्री रिष्टनेमीजी.
११ श्री श्रेयांस नाथजी.	२३ श्री पार्श्वनाथजी.
१२ श्री वासपूज्यजी.	२४ श्री महावीर स्वामी.



२० विहर मानके नाम.

१ श्री मदीर स्वामी.	११ श्री वज्र धर स्वामी
२ श्री जुगमंदीर स्वामी.	१२ श्री चंद्राननस्वामी.
३ श्री वाहुजी स्वामी.	१३ श्री चंद्रबाहु स्वामी.
४ श्री सुवाहुजी स्वामी.	१४ श्री भुजग स्वामी.
५ श्री सुजात स्वामी.	१५ श्री ईश्वर स्वामी.
६ श्री स्वयमभू स्वामी.	१६ श्री नेमप्रभूस्वामी.
७ श्री ऋषभानद स्वामी.	१७ श्री वीरसेन स्वामी.
८ श्री अनतवीर स्वामी.	१८ श्री महाभद्र स्वामी.
९ श्री सूरप्रभू स्वामी.	१९ श्री देवयस स्वामी.
१० श्री विसालधर स्वामी.	२० श्री अनंतवीर स्वामी.



११ गणधरके नाम.

१ श्री इंद्रभूतिजी.

२ श्री अग्नीभूतिजी.

३ श्री वायुभूतिजी.

४ श्री विगतभूतिजी.

५ श्री सुधर्मा स्वामी.

६ श्री मेडीपुत्रजी.

७ श्री मोरी पुत्रजी.

८ श्री अकंपितजी.

९ श्री अचलजी.

१० श्री मेतारजजी.

११ श्री प्रभासजी.





१६ सतीके नाम.

१ श्री ब्राम्हीजी.

२ श्री सुंदरीजी.

३ श्री कौसल्याजी.

४ श्री सीताजी.

५ श्री राजेमतीजी.

६ श्री कुंताजी.

७ श्री द्रौपदीजी.

८ श्री चंदणाजी.

९ श्री मृगावतीजी.

१० श्री चेलाणाजी.

११ श्री प्रभावतीजी.

१२ श्री सुभद्राजी.

१३ श्री दमयन्तीजी.

१४ श्री सुलसाजी.

१५ श्री शिवाजी.

१६ श्री पद्मावतीजी.

ये चोवीस तीर्थंकर, वीस विहरमान, इग्यार गणधर, सोले सतीको त्रीकाल वंदणा नमस्कार होजो, तिखूत्तो जाव मथ्येणं वंदामि.



आलोयणा अथवा संथारा करने कराने की विधि

नमो अरिहंताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण । नमो उवज्झायाण । नमो लोए सव्व साहूण ॥ १ ॥

॥ पहली नवकार एक कही । इरियावही पडिकमीनें काउस्सग्ग करी । एक लोगस्स उजोयगरे । कावसगमाहि चिंतीनै "काऊसग" पारी एक लोगस्स उजोयगरे कही । " हेठा बेसीने " नवकार एक कही । नमोथ्थुण एक कही ने । ए चउवीसत्थो कीजे । लोगस्स उजोयगरे पछै नमोथ्थुणं कहीये । पछै वर्तमान तीर्थकरानें वदीए । पहली तो सम्यक्त सुद्ध करिये—तिहां ३ पदार्थ साचा सरधणा । देव तो अरिहंत देव ॥ १ ॥ गुरु साधु निर्गंथ, जिनाज्ञाना पालणहार. ॥ २ ॥ धर्म श्री केवली प्ररूप्यो दयामय धर्म ॥ ३ ॥ ए ३ तत्व साचा सरध्या न होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ वली नव पदार्थ साचा सर्दवा (तेहना नाम) जीव (१) अजीव (२) पुण्य (३) पाप (४) आश्रव (५) संवर (६) निर्जरा (७) बंध (८) मोक्ष (९) ए ९ पदार्थ साचा सरध्या न होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ हिवे धर्मनो स्वरूप कहे छे ॥

॥ गाथा ॥

सव्वेमि जेय अतीता, जेय पडुप्पन्ना, जेय आगमिसा, अरिहता भगवतो, सव्वे ते एवमाइखन्ति, एवं भासन्ति, एव पन्नवन्ति, एव परूवेति, सव्वेपाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, न हंतवा ॥ इत्यादि ॥

॥ सूत्र द्वितीय, आचारग, अध्ययन ४

अर्थ—जे गये कालमें अनता अरिहंत भगवत हुये, और वर्तमान कालमें सख्याता अरिहत भगवत विद्यमान है, और आवते कालमें अनता अरिहत भगवत होवेंगे, उनोनें फरमाया है की सर्व प्राणीनें सर्व भूतनें सर्व जीवने सर्व सत्वनें दडादिके करी हणवा नही । बलात्कारी हणवो नही, दासनी परइ गीणवा नही । सरीर वेदना मानसिक वेदना करी परितापवा नही । प्राण थकी दूर करवा नही । एहवी जीवदया पालवी । ते धर्म शुद्ध छे । निष्कलंक छे । मोक्षनो हितकारी छे । एहवो धर्म साचो न सरध्यो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ हिवइ सरणा कहे छै । चत्तारि सरण पवज्जामि १ अरिहत सरण पवज्जामि २ सिद्ध सरण पवज्जामि ३ साहु सरणं पवज्जामि केवली पण्णत्तो धम्म सरणं पवज्जामि (अर्थ) अरिहत सिद्ध साधु केवली प्ररूपित दयामय धर्म ए चार सरणा आदरूं छू. हिवे अरिहत सिद्ध केवलीनी साखे चौरासी लक्ष जीवाजोनीको खमावू छु.

॥ गाथा ॥

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा वि खमतु मे ॥
मित्ति मे सव्व भूएसु, वेर मज्झ न केणई ॥ १ ॥

अर्थ—सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउ काय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चौदे लाख साधारण वनस्पति काय, दो लाख वेइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रीय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यंच. चौदे लाख मनुष्यकी जात, एवं चौराशी लाख जीवा जोनीने मेरे जीव हणी होय, हणाई होय, हणता प्रति भलो जाण्यो होय, तो अठारे लाख चोवीस हजार एकसो वीस तस्स मिच्छामि दुकड ॥ ए सर्व जीव मेरा अपराध क्षमो ! सर्व जीव मेरे मित्र है, मुझे किसीसे शत्रुता नही है ॥

हिवे अठारे पाप स्थानक आलाउछु, अठारे पाप स्थानकके नामः—

१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान १४ पैशून्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ माया मोसो १८ मिथ्या दर्शन सल्य ॥

(१) हिवे प्रथम प्राणातिपातनो स्वरूप कहे छे ॥ प्राणातिपात कहता जीवकी हिंसा का करणा ते जीव छ कायके तेहना नामः—

१ पृथ्वी काय २ अप्पकाय ३ तेउ काय ४ वाउ काय ५ वनस्पति काय ६ त्रस काय.

पृथ्वी कायना दो भेद १ सूक्ष्म और २ बादर । तेहना दो भेद १ प्रजाप्ता अने २ अप्रजाप्ता । सूक्ष्म पृथ्वी काय तो सर्व लोकमाही भरी छे और बादर पृथ्वी काय लोकना एक देशमें भरी छे, ते बादर पृथ्वी कायमें मट्टी, मूरड, कंकर, पाषाण, खड्डी, गेरू, हिंगळू,

हिरमच, लूण, सोनो, रूपो, तावो, लोह, कथीर. जसद, पीतल, हीरा, पन्ना, मणी, माणिक, इत्यादि पृथ्वी कायना अनेक भेद छे ॥ उक्त पृथ्वी कायके जीवोंकी हिसा मेरे जीव इन भवे परभवे, कीधी होय कराई होय–करतां मतें भलो जाण्यो होय–तो तीन कर्ण तीन जोगसें मिच्छामि दुकड ॥

(२) हिवे अपकायना दो भेद. १ सूक्ष्म और २ वादर ॥ तेहना दो भेद १ अपजाप्ता और प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्म अपकायतो सर्व लोकमाही भरी छै–और वादर अपकाय लोकना एक देश विपे छे, ते वादर अपकायमें, कुवानो पाणी, नदीनो पाणी, तलावनो पाणी, ओस, धूर गार, इत्यादिक अनेक भेद छे ॥ उक्त अपकायके जीवोंकी हिंसा, मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई होय करातामतें भलाजाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसें मिच्छामि दुकड ॥

(३) हिवे तेउकायना दो भेद १ सूक्ष्म और २ वादर ॥ तेहना दो भेद १ अपजाप्ता और२ प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्थ तेउ काय तो सब लोकमाही भरी है, और वादर तेउ काय लोकना एक देशनें विषे छे ॥ ते वादर तेउ कायमें, खीरा, अगारा, उल्कापात, विजली, अग्नि, इत्यादिक अनेक भेद छे ॥ उक्त तेउकायके जीवोंकी हिसा मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई होय करतांमति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

(४) हिवे वाउ कायके दो भेद सूक्ष्म और वादर ॥ तेहना दो भेद ॥ अपजाप्ता । अने प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्म वाउ काय तो सर्व लोकमाही भरीहै ॥ और बादर वाउ-काय लोकना एक देशना विषे छे ॥ ते बादर वाउ कायमें उकलिया वाय, मंडलिया वाय, घन वाय, तन वाय, शुद्धवाय, सवर्तक वाय, इत्यादिक वाउकायना अनेक भेद छे ॥ उक्त वाउकायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इनभवे परभवे कीधी होय कराई होय करता प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू मिच्छामि दुक्कड ॥

(५) हिवे वनस्पति कायना दो भेद सूक्ष्म और बादर ॥ तेहना दो भेद ॥ प्रजाप्ता अने अप्रजाप्ता ॥ तथा प्रत्येक और साधारण॥

सूक्ष्म वनस्पतिकाय तो सर्व लोकमाही भरी छे ॥ ओर बादर वनस्पतिकाय लोकना एक देशने विषे छे ॥ ते बादर वनस्पति कायमें, नीलण, फुलण, कंद, मूल, बीज, हरी, अकुरा, सचित, मिश्र, इत्यादि वनस्पति कायना अनेक भेद छे ॥ उक्त वनस्पति कायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई होय करता प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

(६) हिवे त्रस कायना चार भेद ॥ बेइद्रीय, तेइद्रीय, चउ-रिंद्रीय, पचेंद्रिय, सन्नी, असन्नी, समूर्छिम, गर्भज, इत्यादि त्रस कायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इनभवे परभवे कीधी होय कराई होय करता प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इति प्रणाति पातः

(२) हिवे दूजो मृषावाद कहे छे ॥ क्रोध करी, लोभ करी,

भय करी, हास्य करी, झूट बोल्यो होय बोलाव्यो होय बोलतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुक्कड॥

(३) हिवे तीजो अदत्तादान कहे छे ॥ गुरुदत्त, देवदत्त, सहामि दत्त, सागारि दत्त, राजा दत्त, इत्यादिक तृणमात्र विनाज्ञा, कोई वस्तु लीधी होय लेवाची होय लेवता प्रति भलो जाण्यो होय, तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

(४) हिवे चोथो मैथुन कहे छे ॥ देवगणा संबधी, मनुष्य मनुष्यणी सबधी तिर्यच तिर्यचणी सबंधी काम भोग सेव्या होय सेवाया होय सेवतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(५) हिवे पांचमो परिग्रह कहे छे ॥ सचित अचित मिश्र परिग्रह राख्यो होय रखाया होय राखतांप्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

(६) हिवे छठो–क्रोध (७) सातमो–मान (८) आठमो–माया (९) नवमो लोभ और दसमो (१०) राग (११) इग्यारमो द्वेष--कीधो होय करायो होय करतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुकड ॥

(१२) बारमो–कलह–कहतां राड (१३) तेरमो–आव्याख्यान कहता-झूठो कलंक देवो (१४) चौदमो–पैशून्य–कहता–पारकी चुगली करवी (१५) पधरमो–परपरिवाद–कहतां-पारकी निंदा का करना (१६) सोळमो-रति अरति-कहता-सुख और दुख उपजा साता असातानो वेदवो (१७) सत्रमो–मायामोसो–कहता--पराया

परम प्रकाशया (१८) अढारमो मिथ्या दसणसल्य कहता–कुगुरु कुदेव कुधर्मने साचो सर्दवो ए अठारे पाप स्थानक सेव्या होय सेवाया होय सेवतां प्रति भलो जाण्यो होय तो अरिहंतादिकनि साखे करी मुझे तस्स मिच्छामि दुकड ॥

हिवे इस जीवने अपार ससार समुद्रमें रलता अनेक भव किये ते सक्षेपमात्र कहे छे.

काजीना–मुल्लाना–पीरना–कसाईना–वागुरियाना–मोचीना–धोबीना, हलाल खोरना, नाईना, बारीना, तबोळीना, तेलीना, गधीना, नीलगरना–तीरगरना–कनीगरना–सवनीगरना–हलवाईगरना–दारुगरना–पनीगरना–रेगरना–खटीकना–कठियाराना–मणिहारना–पटवाना–डाकोतना–लोहारना– सोनारना– भरावाना–ठठेराना–कुभारना–पिंजाराना–वणकरना–घाचीना–कावीना– लोधाना–रगरेजना–छिपाना–चितार ना- खारोलना–ओडना–सिलावटना -कर्पणीना–माळीना–वागवानना–धोबीना–कशेराना–वडभूजाना–तमाख्याना–वेश्याना–भगतणना–भोयीना–नटना–धावडना–जाटना–काजराजा–मजूरोंना–वीणाना–माडवीना–कोड्वीना–दर्जीना–कागदीना–आगडना–जागडना–जडियाना, तुनाराना–पायकना–ज लैवदारना–कुलगुरुना–भोजगना–बहुरुप्याना–भाडना–मारतना–पाशवानना–रेवाडीना–खरादीना– फराशवानना–चर्वादारना-दरोगाना-चरखीदारना-कूडीगरना-साहीगरना-सोरीगरना-कामडना-थावरना-मलाना–चोरना–शिकारीना–कहारना–गवालना–दाढीना–शिकाना–मूडचीराना–कनफडाना– कूजडाना– कालवेलियाना–ठगना–भोपाना–जूलावाना–कोलीना–खोजाना–कलालना–

पाशीगरना--खवासना--दासीना--रासधारीना-- कुलिटाना-- दूतीना--पातरना--गाडीवानना--ब्राम्हणना--गुजरातीना--जोतशीना-- गारुडियाना--मिस्त्रना--भटना--नागरना--सेठना--साढना--वजाजना-सरापीना--पसारीना-रजपूतना--वणजाराना--रसोइदारना--पेलवानना-- डोढीवानना-- चीडीमारना-- मच्छीगरना-- चारणना--भाटना-- जुवारीना--राजाना--वादशहाना--वजीरना--वगसीना--फोजदारना-- पोतदारना--हाकमना--प्रधानना--कोटवालना--भडारीना--किलादारना-- पटेलना--पटवारीना--हमालना--नाऱ्याना---शिशागरना--चकाईना-वढईना-पारधीना--भिलना--यवनना: इत्यादिक भवने विषे अनेक पाप कीधा होय कराया होय करता प्रति भलो जाण्यो होय तो "तथा" इत्यादिकसू वनज व्यापार कीधा होय तो तस्स मिच्छामि दुकड ॥

"तथा" हिंसाने अर्थे तरवार, वदूक, दारू, गोली, भाला, वरछी, धनुष्य, वाण, फरशी, छुरी, इत्यादिक, शस्त्रादिक, वणाव्या होय तो तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

* तथा अनित्य भावना (१) असरण भावना (२) एकंत भावना (३) ससार भावना (४) अभिनव भावना (५) अशुचि भावना (६) आश्रव भावना (७) संवर भावना (८) निर्जरा भावना (९) लोक स्वभाव भावना (१०) धर्म भावना (११) बोध वीज भावना (१२) ए बारे भावना मेरे जीवने नही भावी होय तो तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

** तथा जो जो गुरु मुखथी व्रतपचखाणादिक आदऱ्या छे ते माही कोई अतिचार दोप लागो होय नो अनंत सिद्ध केवलीनी साखे करी तस्स मिच्छामि दुकड

* बारे भावनाको स्वरुप अन्य जगहसे जाणवो.

१ द्वादशमतादिन

☞ इसके बादमें " अहं भंते अपच्छिम मरणांतीय " सें लेकर एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छे फरसणा करूं तेवारे सिद्ध " तक सलेखणानी पाटी (जो प्रतिक्रमणमें पहिले कह आये है) कहवी ॥ पश्चात् आरराप्रमाणे पचख्वाण करणा तथा कराना ॥ इत्यालोयणा ॥

उपर प्रमाणे जे श्रावक श्राविका ए आलोयणा साभली-वाची-आत्माने शुद्ध करश ते आराधिक पद पामी समाधि लहशे



पद्मावती



(राग-वेराडी)

हिवे राणी पदमावती, जीवराशि खमावे,
जाणपणु जगदोहीलु, एनी वेळाए आवे-ते मुज मिच्छामि दुकडं॥१॥

भव अनताए करी, अरिहतनी शाख;
जे में जीव विराधीया, चोराशी लाख. ते मुज. ॥ २ ॥

सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय,
सात लाख तेउकायना, साते वळी वाय. ते मुज. ॥ ३ ॥

दसलाख प्रत्येक वनस्पति, चौद साधारण,
बेंद्रियादिक* जीवना, जे बे लाख विचार. ते मुज. ॥ ४ ॥
देवता तिर्यंच अनें नारकी, चारचार लाख प्रकाशी;
चौद लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी. ते मुज. ॥ ५ ॥
आ भव परभव सेविया, जे पाप अठार;
त्रिविधे त्रिविधे करी परिहरूं. दुरगति दातार. ते मुज. ॥ ६ ॥
हींसा कीधी जीवनी, बोल्या मृखावाद.
दोष अदत्तादाननो, मैथुन उनमाद. ते मुज. ॥ ७ ॥
परिग्रह मेळव्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष;
मान, माया, लोभ में कर्या, वळी राग ने द्वेष. ते मुज. ॥ ८ ॥
क्लेश करी जीव दुहव्या, दीधा कुडा कलंक,
निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक. ते मुज. ॥ ९ ॥
चाडी खाधी चोंतरे, कीधो थापण मोसो,
कुगुरु, कुदेव, कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो. ते मुज. ॥ १० ॥
खाटकीना भवमें कीधा, कीधी जीवनी घात;
चडीमारने भव चरकला, मार्या दीन ने रात. ते मुज. ॥ ११ ॥
माछीगर भव माछला, झाल्या जळवास;
धीवर, भील, कोळी भवे, मृग पाडिया पास. ते मुज. ॥ १२ ॥
काजी, मुल्लानें भवे, पढ्या मंत्र कठोर;
जीव अनेक झभ्भे कर्या, कीधा पाप अघोर. ते मुज. ॥ १३ ॥
कोटवाळना भवे में कीधा, आकरा कर-दंड;
बधीवानने मराविया, कोरडा-छडी-डंड. ते मुज. ॥ १४ ॥

---

* बेंद्रियसे २ लाख-तेंद्रियना २ लाख-चौरेंद्रियना २ लाख भेद जाणवा

परमाधामीना भवे, दीधा नारकीने दुःख,
छेदन-भेदन-वेदना, ताडन अति तीख. ते मुज. ॥ १५ ॥

कुंभारना भव मे कीधा, काचा नीभा पकाव्या,
तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिंड भराव्या. ते मुज. ॥ १६ ॥

हाली भवे हळ खेडिया, फोडया पृथ्वीना पेट;
सूड निंदण कीधा घणा, दीधा बळद चपेट. ते मुज. ॥ १७ ॥

माळीना भवे रोपिया, नाना विविध वृक्ष,
मूळ-पत्र-फळ-फुलना, लाग्या पाप अलक्ष. ते मुज. ॥ १८ ॥

अधोवाइयाना भवे भर्यो, अधकेरो भार,
पोठी-उट कीडा पडया, न जाणी दया लगार. ते मुज. ॥ १९ ॥

छीपाना भवे छेतर्या कीधा रंगण पास,
अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास. ते मुज. ॥ २० ॥

शुरपणे रण झुझता, मार्यां माणस वृंद,
मास-मदिरा माखण भख्या, खाधां मूळ ने कंद. ते मुज. ॥ २१ ॥

खाण खणावी धातुनी, अणगळ पाणी उलेच्या,
आरंभ कीधा अति घणा, पोते पापज संच्या. ते मुज. ॥ २२ ॥

इंगाल कर्म कीधा वळी, धर्मे दवज दीधा,
सूसम खाधा वितरागना, कुडा कोपज कीधा. ते मुज. ॥ २३ ॥

बिली भवे उंदर गळ्या, गरोळी हत्यारी,
मुढ मुरख तणे भवे, में जु लीख मारी. ते मुज. ॥ २४ ॥

भाडभुजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव;
जार-चणा-घउं सेकिया, पाडता रीव. ते मुज. ॥ २५ ॥

खांडण–पीसण–गारीनो, आरंभ कीधो अनेक;
रांधण–शीधण अग्निना, पाप लाग्या विशेक. ते मुज. ॥ २६ ॥
विकथा चार कीधी वळी, सेव्या पांच प्रमाद;
इष्ट वियोग पडाविया, रुदन विखवाद. ते मुज. ॥ २७ ॥
साधुने श्रावक तणां, व्रत लेइने भाग्या,
मुळ उत्तर तणा, मुज दुषण लाग्या ते मुज. ॥ २८ ॥
साप–वींछी–सिंह–चितरा, सकरा ने समळीः
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबळी. ते मुज. ॥ २९ ॥
सुवावड दुषण घणा, काचा गर्भ गळाव्या;
जे पांणी ढोळ्या घणा, शियळ व्रत भगाव्यां. ते मुज. ॥ ३० ॥
धोबीना भव जे कर्या, जळना जीव मुवाळा,
धूळे करी जळ रोळिया, दान देता निवार्या.ते ते मुज. ॥ ३१ ॥
लवारना भव जे कर्या, घड्या शस्त्र अपार;
कोस–कोदाळा ने पावडा, खिख खिखती तरवार. ते मुज. ॥ ३२ ॥
गुजरना भव जे कर्या, लीला भारा वढाव्या,
पाडीने बेलां मेलियां; पाडे उठी छे ज्वाळा. ते मुज. ॥ ३३ ॥
ओडना भव जे कर्या, कूवा–वाव खोदाव्यां,
सरोवर गळाविया, वळी टांका बंधाव्या. ते मुज. ॥ ३४ ॥
वाणियाना भव जे कर्या, कूडा लेख लखाव्या;
ओछुं आपी अधिकु लीधुं, कूडा माप रखाव्या. ते मुज. ॥ ३५ ॥
हाथीना भव जे कर्या, वेलडी वलुरिया,
पखी माळा चुंथिया, पापे पेटज भरियाः ते मुज. ॥ ३६ ॥
केरी ने कोठींबडा, वळी लींबुज मोर्याः
राइ चढावी शेलणे, पोते पापज सिंच्यां. ते मुज. ॥ ३७ ॥

अणगळ आघण मेलिया, अणपूजे चूले;
अणसोया कण ओरिया, तेना पाप केम छूले? ते मुज. ॥ ३८ ॥

भव अनेक भमता थका कीधो कुटुंब संबंध,
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरुं, तेणें शुं प्रतिबंध- ते मुज. ॥ ३९ ॥

भव अनेक भमता थका, कीधो देह संबंध,
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरुं, तेणे शुं प्रतिबंध. ते मुज. ॥ ४० ॥

भव अनेक भमता थका, कीधो परिग्रह संबंध;
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरुं, तेणे शुं प्रतिबंध. ते मुज. ॥ ४१ ॥

इणी पेरे इह भव परभवे, कीधां पाप अखत्र;
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरुं, करुं जन्म पवित्र. ते मुज. ॥ ४२ ॥

हवे राणी पद्मावती, लीधा शरणा चार;
सागारी अणसण कर्यो, जाणपणानुसार. ते मुज ॥ ४३ ॥

राग वेराडी जे सुणे, ए त्रीजी ढाळ;
समय सुंदर कहे पापथी, छुटो तत्काळ. ते मुज. ॥ ४४ ॥

॥ इति पद्मावती ॥





अथ उपदेशक दोहा ॥

समय मात्र परमाद नित, धर्म साधना मांहि ॥
अथिर रुप संसार लख, रे नर करियें नांहि ॥ १ ॥

छीजत छिनछिन आउखो, अजलि जल जिम मीत ॥
कालचक्र माये भ्रमत, सोवत कहा अभीत ॥ २ ॥

तन धन जोवन कारिमा, संध्या राग समान ॥
सकल पदारथ जगतमें, सुपन रूप चित्त जान ॥ ३ ॥

मेरामेरा मत करे, तेरा है नहि कोय ॥
चिदानद परिवारका, मेला है दिन दोय ॥ ४ ॥

ऐसा भाव निहारी नीत, कीजें ज्ञान विचार ॥
मिटे न ज्ञान विचारबिन, अतर भाव विकार, ॥ ५ ॥

ज्ञान रवि वैराग जस, हीरिदे चद समान ॥
तास निकट कहो किम रहे, मिथ्या तम दुखखान ॥ ६ ॥

आप आपणे रूपमें मगन ममत मलखोय ॥
रहे निरतर समरसी तास बध नवि कोय ॥ ७ ॥

पर परणित परसंगथु उपजत विणसत जीव ॥
मिटे मोह परभावके, अचल अबाधित शिव ॥ ८ ॥

जैसे कंचुक त्यागथी, विणसत नही भुयग ॥
देह त्यागथी जीव पग, तैसे रहत अभग ॥ ९ ॥

जो उपजे सो तु नही, विणसत तेपण नांहि ॥
छोटा महोटा तु नही, समज देख दिल माहि ॥ १० ॥

वरणभांति तो में नही, जात पात कुलरेख ॥
रावरंक तू है नही, नहीं बाबा नही भेख ॥ ११ ॥

तू सहुमें सहुथी सदा, न्यारा अलख सरूप ॥
अकथ कथा तेरी महा, चिदानंद चिद्रूप ॥ १२ ॥

जनम मरण जिहा है नही, इतभीत लवलेश ॥
नहीं शिर आण नरिंदकी, सोही अपणा देश ॥ १३ ॥

विनाशिक पुद्गल दिशा, अविनाशी तू आप ॥
आपा आप विचारतां, मिटे पुण्य अरू पाप ॥ १४ ॥

बेडी लोह कनकमयी, पाप पुण्य युग जाण ॥
दोउथी न्यारा सदा, निज सरूप पहिछाण ॥ १५ ॥

जुगल गती शुभ पुण्यथी, इतर पापथी जोय ॥
चारू गति निवारियें, तव पंचम गति होय ॥ १६ ॥

पंचम गति विण जीवकू, सुख तिहु लोक मझार ॥
चिदानंद नवि जाणजो, ए महोटो निरधार ॥ १७ ॥

इम विचार हीरिदे करत, ज्ञान ध्यान रस लीन ॥
निरविकल्प रस अनुभवी, विकल्पता होय छीन ॥ १८ ॥

निरविकल्प उपयोगमें, होय समाधि रूप ॥
अचल ज्योति जलके तिहां, पावे दरस अनूप ॥ १९ ॥

देख दरस अद्भुत महा, काल त्रास मिट जाय ॥
ज्ञानयोग उत्तम दिशा, सदगुरु दीये बताय ॥ २० ॥

ज्ञानालम्बन दृढ ग्रही, निरालम्बता भाव ॥
चिदानंद नित आदरो, एहिज मोक्ष उपाव ॥ २१ ॥

थोडासामें जाणजो, कारज रूप विचार ॥
कहत सुणत श्रुत ज्ञानका, कबहु न आवे पार ॥ २२ ॥

में मेरा ए जीवकूं बंधन महोटा जान ॥
में मेरा जाकु नही, सोही मोक्ष पीछान ॥ २३ ॥

में मेरा ए भावथी, बधे राग अरु रोष ॥
रागरोष जौलों हिये, तौलो मिटे न दोष ॥ २४ ॥

रागद्वेष जाकूं नही, ताकुं काल न खाय ॥
कालजीत जगमें रहे, महोटा बिरुद धराय ॥ २५ ॥

चिदानंद नित कीजीयें, समरण श्वासोश्वास ॥
वृथा अमूलक जात है, श्वास खबर नही तास ॥ २६ ॥

एक महूरत माहि नर, स्वरमें श्वास विचार ॥
तिहुंतर अधिका सातसो, चालत तीन हजार ॥ २७ ॥

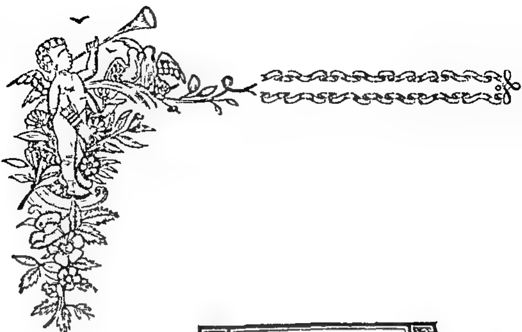
एक दिवसमें एक लख, सहस त्रयोदश धार ॥
एक शत नेवु जात है, श्वासोश्वास विचार ॥ २८ ॥

मुनि शत सहस पंचाणवे, भाखे तेत्रीश लाख ॥
एक मासमें श्वास इम, एहवी प्रवचन शाख ॥ २९ ॥

चउसत अडताली सहस, सप्तलश स्वरमाहि ॥
चार क्रोड इक वरसमा, चालत सशय नाहि ॥ ३० ॥
चार अवज कोडी सपत, पुनः अडताळीस लाख ॥
स्वास सहस चाळीस मुचि, सो वरसामें भाख ॥ ३१ ॥
वर्तमान ए काल्में, उत्कृष्टी थिति जोय ॥
एकशत शोले वर्षनी, अधिक न जीवे कोय ॥ ३२ ॥
सोपक्रम आयु कयो, पचम काल मजार ॥
सोपक्रम आयु विषे, घात अनेक विचार ॥ ३३ ॥
श्वास श्वास प्रभु नाम ले, वृथा श्वास मत खोय ॥
ना जानू ये अतको, यही श्वास नहि होय ॥ ३४ ॥
वूरा वूरा सवसू कहे, बूरा न दीसे कोय ॥
जो घट सोधू माहेरो, मोसू वुरो न कोय ॥ ३५ ॥
सुख दिया सुख होत है, दुख दियां दुख होय ॥
आप हणे नै औरकूं, तो आपन हणे न कोय ॥ ३६ ॥
राम कीसीकू मारे नहि, सबसें मोटा राम ॥
आपहि आप मर जायगा करकर खोटा काम ॥ ३७ ॥

॥ प्रार्थना ॥

कहेवामें आवे नहि अवगुण भर्या अनत ॥ लिखवामें किम-कर लिखु, जाणो श्री भगवत ॥ ३८॥ करुणानिधि कृपा करी, कठिण कर्म मोय छेद ॥ मोह अज्ञान मिथ्यात्वको, करिये गठी भेद ॥३९॥ पतित उधारण नाथजी, अपणो विरुद विचार ॥ भूल चूक सव महायरा, खमिये वारवार ॥ ४० ॥ माफ करो सव महायरा, आज तलकना दोष ॥ दीन दयाल आपो, मुजे, श्रद्धासील संतोष ॥४१॥ अरिहत देव निग्रथ गुरु, सवर निर्जरा धर्म ॥ केवली भाषित शास्त्र ए, एही जिन मत मर्म. ॥ ४२ ॥

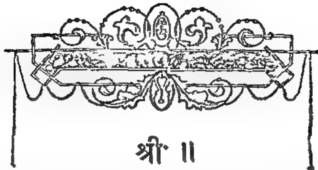


इति सामायिक प्रतिक्रमणादि नित्य स्मरणम् ॥

॥ श्लोकम् ॥

॥ इति प्रणीत गुरु रामचंद्रां–त्रि सेवकेनप्रभुपदप्रसादात् ॥

॥ हर्षाग्रत श्चंद्र इतीव नाम्ना प्रीत्यै भवेत्सर्व जनस्यसम्यक्॥



श्री ॥

सिद्धांत शिरोमणि.

प्रथम खंडः ॥

प्रकरण पहिला—स्तोत्र ॥

चतुर्विंशति जिनस्तुतिः ॥

सार्दूल विक्रीडितम् ॥

वंदे धर्म जिन सदा सुखकर चंद्रप्रभ नाभिज । श्रीमद्वीर जिनेश्वर जयकरं कुंथु च शांति जिन॥ मुक्ति श्रीफलदायनंत मुनीप वंदे सुपार्श्व विभु । श्रीमन्मेघ नृपात्मजच सुमतिं पार्श्व नमामीष्टद ॥१॥ श्रीनेमीश्वर सुव्रतौ च विमल पद्मप्रभ शंकर । शेवेश भवशंकर नमि जिन मल्लिं जयानंदन ॥ वंदे श्रीजिनसीतल च सुगुण सेवे जिन

मुक्तिद । श्रीसिध व्रत पच विंशतितम साक्षादर वैष्णद्र ॥२॥ स्तोत्र सर्वजिनेश्वरै रभिगतं मत्रेपु मत्र वर । मेतत्सगत यंत्र एव विजयो द्रव्यैर्लिखित्वा शुभैः ॥ पाश्वैः सध्रियमाण एव सुखदो मांगल्य मालामदो । वामागे वनिता नरस्तदतरे कुर्वन्ति ये भावत. ॥३॥ प्रस्थाने स्थिति युद्धिवाद करणे राजादि सदर्शने । मार्गे सविपमे दवाग्नि ज्वलिते चितादि निर्नाशने ॥ रप्यार्थे सुतहेतवे रनकृते रक्षतु पार्श्वे सदा । यत्रोय मुनिने त्रासिह कविना संग्रथितः सौरव्यदः ॥४॥

इति चतुर्विंशति जिनस्तोत्र समाप्त ॥

---

२ अथ अकलंक स्तोत्रम् ॥

त्रैलोक्य सकल त्रिकाल विपय सालोकमालोकितम् । साक्षाग्रेन यथा स्वयकरतले रेखात्रय सागुलिम् ॥ रागद्वेपभयान्महातकजरालोलत्व लोभादयो । नीलत्पटलधनाय स महादेवो मया वंद्यते ॥१॥ दग्ध येन पुरत्रय शरभुवा तीव्रार्चिपा वन्हिना । यो वा तृत्यति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वागुहः ॥ सोऽय किं मम शकरो भयतृपा रोपार्ति मोहक्षयं । त्कत्वा यः सतु सर्वविन्तनुभृता क्षेमंकरः शकरः॥२॥ यत्नाग्रेन विदारितं कररुहैर्दैत्येंद्रवक्षःस्थल । सारथ्येन धनजयस्य समरे यो मारयत् कौरवान् ॥ नासौ विष्णुरनेक कालविपयं यद्ज्ञानमव्याहत । विश्व व्याप्य विजृभते स तु महा विष्णुः सदिष्टोमम ॥३॥ उर्वश्यामुदपादि रागवहुलं चेतो यदीयं पुनः । पात्री दडकमण्डलु प्रभृतयो यस्याकृतार्थस्थितिं ॥ आविर्भावयितु भवेत्तु स कथ ब्रह्मा भवेन्मद्दशां । क्षुत्तृष्णाश्रम राग रोप रहितो ब्रह्मा कृतार्थोस्तुनः॥४॥ यो जग्ध्वापि सित समत्स्य कवलं जीवस्य शून्य वदन् । कर्ता कर्म फल न भुक्त इतियद्वक्ता सबुद्धः कथ ॥यज्ज्ञान क्षण वर्ति वस्तु सकल

ज्ञातुं न शक्य सदा । यो जानन् युगपज्जगत्त्रयमिदं साक्षात्स बुद्धो मम ॥५॥ ईशः किं छिन्नलिंगो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्या। न्नाथःकिं भैक्षचारी यतिरिति स कथं सागनः सात्मजश्च ॥ आराजः किंत्वजन्मा सकल विदिति किं वेत्तिनात्मातराय । संक्षेपात् सम्यगुक्तं पशुपति मपशु· कोत्रवीमानुपास्ते ॥ ६ ॥ ब्रह्मा चर्माक्षसूत्री सुर युवति रसावेश विभ्रांतचेताः । शंभुःखट्वांगधारी गिरिपति तनयारागली-लानुविद्धः ॥ विष्णुश्चक्राधिपःसन्दुहितं रम गमत् गोपनाथस्य मोहा। दर्हन् विध्वस्तरागो जितसकलभयः कायमेवाप्तनाथः ॥ ७ ॥ एकः स्तप्तति विप्रसार्य ककुभा चक्रे सहस्र भुजा । मेकः शेष भुजग भोग शयने आदाय निद्रायते ॥ दृष्ट्वा चारु तिलोत्तमा मुखमगादेक श्चतुर्व-क्त्रता । मेते मुक्तिपथं वदति विदुषा मुत्कृष्टसत्यदद्भुतं ॥ ८ ॥ यो विश्वं वेद्य वेद्यं जनन जलनिधेर्भंगिनः पारदृष्टा । पूर्वां पर्यां विरुद्धं वचनमनुपम निष्कलंक यदीय॥ त वदे साधुवंद्यं सकलगुणनिधिं ध्वस्त-दोषद्विषत । बुद्धं वा वर्धमानं शतदलनिलयं केशवं वा शिवं वा ॥ ९ ॥ माया नास्ति जटा कपाल मुकुट चंडो न मूर्धावली । खट्वांग नचवासुकिर्नच धनु शूलं न चोग्र मुखं ॥ कामो यस्य न का-मिनी नच वृषो गीतं न नृत्य पुनः । सोयं पातु निरंजनो जिनपतिः सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः ॥ १० ॥नो ब्रह्मांकित भूलन नचहरेः शंभोर्नमु-द्रांकित । नो चंद्रार्ककरांकितं सुरपतेर्वज्रांकितं नैव च ॥ षड्वक्त्रांकितं बौधदेवहुतभुग्यक्षोरगैर्नांकितं । नग्नं पश्य समंततो जगदिदं जैनेंद्र मुद्रांकितं ॥११॥मौंजी दंडकमंडलुप्रभृतयो नो लाञ्छनं ब्राह्मणो । रुद्रस्यापि जटा कपाल मुकुट कौपीन खट्वांगिना ॥ विष्णोश्चक्र गदादि शंखमतुलं बौधस्य रक्तांबरं। नग्नं पश्यतवादिनो जगदिदं जैनेन्द्र मुद्रांकितं ॥ १२ ॥ नाहंकार वशीकृतेन मनसा न द्वेषिणं केवलं । नरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य बुद्धया मया ॥

राज्ञःश्री हिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनां। बोद्धौयान् सकलान् विजित्य सु तःपादेन विस्फालितः ॥ १३ ॥ खट्वाग नैव हस्ते नरशिरचिता लंबिता नैव माला। भस्मागं नैव शूल नचगिरि उदिता नैवहस्ते कपालं ॥ चद्रार्घं नैव मूर्ध्नि नचवृषगमन नैव कंठे फणींद्रः। तंवदे त्यक्तदोषभवभयमथन ईश्वर देव देव ॥ १४ ॥ किंवाग्रो भगवानमेय महिमादेवो कलंकः कलौ। काले यो जनता सुधर्मनिहतो देवोऽकलंकोजिनः ॥ यस्यस्फार विवेकसमुद्र लहरी जाले प्रमेयाकुला। निर्मग्नातनु ते तराभगवती तारा शिरः कपनं ॥ १५ ॥ सातारारवलु देवता भगवती मन्यापि मन्यामहे। पण्मासात्रिं जाड्य शख भगवान् भट्टा कलक प्रभो ॥ वाक्कल्लोल परपराभिरमिते नूनं जने मज्जन। व्यापार सहते स्मविस्मितमति सताडिते तस्तत ॥ १६ ॥

इति अकलक स्तोत्रम् समाप्तं ॥

३ अथ महिम्नस्तोत्रम् ॥

शिखरिणी वृत्त ॥

महिम्नः पारते परमल भमाना अपि विभो। भवति स्तोतारः समवसृति भूमौ समुदिताः ॥ यदींद्राद्यास्त्वातज्जिनवृषभ भक्त्यास्तवयतो। ममाप्येष स्तोत्रे हरनिरपवादः परिकरः ॥ १ ॥ स्वरूप चिद्रूप किमपि तदरूपं भगवत। अनूरूपात्ब्राह्मी यदि गदितु मीष्टेन भवतः॥ ततः कस्य स्तुतय किमुपम मिद कस्य विषयः। पदेत्वर्वाचीने पतति नमनः कस्य नवचः ॥ २ ॥ पद शैव केचित्परममन पेक्षा क्षयसुखं। स्तुवंति त्वा राज्यादिकपद कृते मदमतयः। भवेद्वा तत्वार्थे रति रतितरां नैव भविनः। पदेत्वर्वाचीने पतति नमनः कस्य नवचः ॥ ३ ॥

गुणानामानन्त्यादविषयतया वाङ्मनसयो। न शक्या तत्त्वज्ञैरपि तव विधातु स्तुतिरियं ॥ भवन्नामोच्चारा पुनरनिममेतां निजगिर। पुनामीत्यर्थेस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥ ४ ॥ जटालंकारंगल कृतमथ वृषां कच भगवन्। पुनान विश्व त्वा प्रथम जिन मत्वा किमुतत. ॥ जटा धृत्वा श्रुत्वा वृषमहमपि क्ष्मातलमिद। पुनामीत्यर्थे स्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ५ ॥ न कोपस्याटोपः स्वरिपुषु नचस्वेष्टपितथा। प्रसत्तिर्नो कांताद्विकपरिकरः कश्चिदिति ते ॥ त्रिलोक्या मालोक्या प्यहह परमा प्राभवरमा। विहर्तुं व्याक्रोशी विदधत इहैके जडधियः ॥ ६ ॥ ध्रुव कश्चित्कर्ता निखिल भुवनस्यापि सपुन। विभुर्नित्यश्चैक'. सतनु रतनु र्गस्त्ववशतः ॥ स्वयसिद्धे प्यस्मिंस्तत्र मतमनात्पान् हत-धियः। कुतर्काय कश्चिन् मुखरयति मोहाय महतां ॥ ७ ॥ विशुद्धो रागाद्यै रपि भवति कि सर्व विदहो। विनात्वा सर्वज्ञ ननुजिन किमा-त्पो पिसचकिम् ॥ त्वदन्यो पि कापि त्रिजगति वतात्पस्वविषये। यतो मदास्त्रा मत्यमत्वर सशो न्त इति ॥ ८ ॥ त्वमेवार्हन् बुद्धो जगति परमेष्ठी च पुरुषो। त्तमो लक्ष्यो भास्वान् विबुध गुर रात्रीश्वर इति ॥ विभो नानाख्याभि' सम विषम मार्गेषु चरतां। नृणामेको गम्य स्त्व-मसि पयसा मर्णव इव ॥ ९ ॥ प्रसादात्ते पुत्रा विषय सुख साम्राज्य मभजन। न केवासेवातस्तनन वनराभृद्धिमगमत् ॥ तृपे स्त्रैणे स्वर्णे दृषदिच सदृक्ष पुनरहो। नहि स्वात्मारामं विषय मृग तृष्णा भ्रमयति ॥ १० ॥ भवत्तत्त्वाद्दक्षातिशय महिमे क्षात्र ससमु। द्भवद्भक्तिव्यक्ता रिणरण कितातः करणतः ॥ अधिरव्युर्युक्ता खिलजग दशक्यस्तवम-पि। स्तुवन् जिह्रेमि त्वा न खलु ननु धृष्टा ह्युखरता ॥ ११ ॥ न श-स्यौ कस्यस्त्वा नमि विनमि पत्ती जिनपते। त्वदेकस्वामित्वात् क्रमक-मल सेवा सुरसिकौ ॥ प्रसादाच्चे विद्या धरपति ततिर्यत्सविनय। स्वयं तस्यैताभ्याम् तवकिमनुद्दक्तिर्नफलति ॥ १२ ॥ तदा विद्याः प्राप्य ध्रुवमखिल विद्याधर महा। न्त्त्वय प्रादुर्भाव्य प्रथम मथवैताढ्य

विभुतां ॥ यदेतौ दुःसाध्यौ सुरवरनराणामभजतां । स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुर हरविस्पूर्जित मिद ॥ १३ ॥ तदैश्वर्यं वर्यं मदन मद विध्वंसच महा । ग्रति त्व सर्वज्ञ त्वमसमविभूतिश्च परतः ॥ सिंहासगश्चगः सतत्वमिति नो कस्य कृतिनः । स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुरहर विस्पूर्जित मिद ॥ १४ ॥ विवाहादौ नेतर्मृदुरूपकृतोपिभ्र-भिव । त्वया पार पर्यागत परिचयान्मोह चरटः ॥ तथादूर नष्टः कचिदपि यथा केवल कला। प्रतिष्ठात्वय्यासी ग्रमुपचितो मुब्धति खलः ॥ १५ ॥ निजत्वीसपर्यालुभेरत निभुरासीन्मघवता । यदा पश्यस्पार्द्धी सनमथसुख केवल त्मा ॥ तदेतस्मिन्सर्व तव पद जिनश्रे समुचित । न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरस स्त्वय्यवनतिः ॥ १६ ॥ निन सया पूर्व क्षणमजगणत्वां भरत राट् । सम चक्रेणाहो तदिहविपयानां विपमता ॥ यदेतस्यार्चात्र प्रमित फलदैवा शिव सुख । न कस्याप्युन्नत्यैभवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १७ ॥ प्रभोत्वत्पुत्रस्या तुलवलवतो वा दुवलिनः । तपस्तीव्र तादृक्सरद्‍विधिमानादपिकृतं ॥ निदानं पानस्य ध्रुवमभवदाश्चर्य मथवा । विकरोपि श्लाघ्यो भुवन भय भंगव्यसनिन' ॥ १८ ॥ न सुत्रामि यत्र प्रभवति विद्यातापि न विभुः । स वैकुंठः कुंठः किमपि नभवश्चाभवदल ॥ जिगीपुः सत्वामप्यपर सुलदुर्मतिरभूत् । स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिपु पथ्य परिभुव ॥ १९ ॥ प्रयुजान स्वामिन् स्वयमखिल शिक्षान्यसुमतां । कला पुसा स्त्रीणामपि च सकला क्ष्मापतिरपि ॥ कुलालादींस्तास्तान क्षणमभिनयन् शिक्षणविधौ । जगद्भायै त्व नटसि ननु वामैव विभुर्न ॥ २० ॥ प्रभो तैस्तै सारैरणुभिरखिलै श्चामरवरै । कृत रूपं सर्वोत्तम सुखमपगुष्टकमित ॥ त्वदंगुष्ठस्याग्रे शुभंति किलनागारक इवे । त्यनेनैवोन्नेय धृतमहिर दिव्यं तव वपु ॥ २१ ॥ प्रजा भाज्य राज्यं स्थविरजननी स्वस्यतनुजा । स्तनदस्त्वासपत्ता वपिच विहरन् वाहुवलिनं ॥ उपेक्षिष्टा आत्त वृत नृप

सहस्रांश्च चतुरे । त्रिवेयै क्रीडत्यो न खलु परतन्त्रा प्रभुरिय ॥२२॥ ददानो रत्नाना त्रयमखिल दौर्गत्य हरण । निदान सपत्ते स्त्रिभुवन जनानामनुदिन ॥ भवान्योगक्षेमा वपि विरचयन्मन्मथजये । त्रयाणा रक्षायै त्रिपुर वर जागर्ति जगता ॥ २३ ॥ यथा पूर्वं मुग्धास्तव समुपदेशा कमलिनः । सदा स्वामिन्नत्रा जनिपत सदाचार चतुराः ॥ तथा कस्कः सपूत्यपिन विशदेषु त्वदुदित । श्रुतौ श्रद्धा वद्धवा दृढ-परिकरःकर्म सुजनः ॥ २४ ॥ तपस्वीनव्रह्म व्रत नियम निष्ठा बहु-विधा । क्रिया कष्टा स्पष्टा अपि जिन यदुष्टाशयतया ॥ त्वदाज्ञा वज्ञाया नियत महिता यैव भविना । अव कर्तुःश्रद्धाविधुरमभिचारा-यहिमवा' ॥ २५ ॥ क्षमाभृन्मुख्याः के नियत मधिमात्रा नपिसदा । शयस्थान् शास्त्रौघान न दधति तरायस्य हतये ॥ अविघ्न त निर्व्रन्न सम समयस्तामसमृग । त्रसत तेनापि स्यजति न मृगव्या रभसः ॥ २६ ॥ परिभ्रम्यक्लेशार्जितमपि सहस्रेण शरदा । मदाश्चिद्रत्न त्व सपदि मरुदेव्यो तदपिचेत् ॥ प्रभो निःस्नेह सान्तसमय सर्वावगणना । दवैति स्वामन्ना व्रत वरद मुद्रा भुवतय ॥ २७ ॥ महानदे यन्नम्यसि जिन दवी यस्य पि पदे । न स्पृष्टस्तुष्टश्च त्रिभुवन जनेषु कचिदपि ॥ भवन्नामस्वामिन् स्वमनसि महामंत्र मनिश । तथापि स्मर्तॄणा वरद परम मगलमसि ॥ २८ ॥ प्रभो प्राणायामा भ्यसनरसि कत्वान्निज-मनः । समाधावा धायाखिलविषयतो क्षाणि युगपत् ॥ द्रुत मत्याकृष्य स्थिर निहित नासाग्रनयना । दधत्य स्तत्त्व किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥ २९ ॥ सुरद्रुःस्वकुभ स्त्रिदश सुरभीत्व सुरमणि.। पितामाता भ्राता विधुरपि सुकृत्व च सुगुरुः ॥ परात्मा ब्रह्मापि त्वमसि परम दैवत मतो । नविज्ञस्तत्त्व तद्वय मिहहि यत्र न भवसि ॥ ३० ॥ अकाराद्यैर्वर्णै स्त्वयिपरिणतान् पचपरमे । ष्ठिनःस्पष्ट पचाक्षर रच-नया नामनिगदत् ॥ कलानाद व्यक्ते किमपि परम ब्रह्मविषय । सम-

स्त व्यस्तं त्वां शरणदगृणा त्योमितिपदं ॥ ३१ ॥ नरागाद्यैर्गस्तो न पुनरनुकम्प्यो मदपरः । कृपालुस्त्व त्तोन्यो न जगति नतेभ्यः पुनरल ॥ स्वय तैरत्यार्त्तैःकिमितर सुरैश्चेति विमृशन । भियायास्मै धाम्ने प्रविहित नमस्योस्मि भवते ॥ ३२ ॥ नमोनाशक्ताय कचिदपि विरक्ताय चनमो । नमःसवुद्धाय प्रसमदमरिद्धाय च नमः ॥ नमःसर्वज्ञाय स्मरणपर तज्ज्ञाय च नमो । नमःसर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वायच नमः ॥ ३३ ॥ दलित रजसे शश्वद्विश्वा चिंताय नमोनमः । प्रहत तमसे श्री सर्वज्ञाधिपाय नम ॥ जनहित कृते तुभ्य सत्त्वाधिकायनमः । प्रमहसि पदे निस्त्रै गुण्ये शिवाय नमोनमः ॥ ३४ ॥ कुसुम वदुदिवाहतच्युतौ किंचनार्हं । कृतिभिरुरसि कंठे वा गुणता दधाय ॥ जिनवर निजहर्षा रकर्षतो कार्पमेव । वरद चरणयोस्ते वाग्यपुष्पोपहारं ॥ ३५ ॥ प्राग् श्री सोमवंशे जनिपत मुनयो मौक्तिकानीव शुद्धा । स्तेथप्येकावलीव प्रगुण गुणवती श्रीमदाचार्य पक्तिः ॥ जीयाद्राज्या यदूनामिव गुरु जयचद्राद्वय श्री मुनींद्र.। तस्यामप्येप चिंतामणिरुचिर रुचिर्नायकःकृष्णदेवः ॥ ३६ ॥ निहित चरम पाद श्री महिम्न स्तवस्य । त्रिभुवन महितस्य श्री युगादीश्वरस्य ॥ भ्रमर इव सदा तत् पादपद्मोपजीवी । रुचिरमलघु वृत्तैःस्तोत्रमेतद्व्यधत्त ॥ ३७ ॥ एव शारद सोमसुंदर यशः स्तोम युगादीश्वर । चेतोभूज्जयचद्र मौलिभिरभिष्टुत्वान्वहं योगिभिः॥ज्ञानप्राप्यत्रिशाल राज दसमाल्हाद समाश्रीयते । मुक्ते मूर्धनिरत्नशेखररमाब्रम्हैकतेजोमयी ॥ ३८ ॥

इति महिम्न स्तोत्र समाप्त ॥

---

४ अथ सिध्ध विंशतिका ॥

शिखरिणी वृत्त ॥

मुनीना दुस्तर्क्य खलुदुरधिगम्योमृत भुजा । गुणाना ते राशि कलयति नरस्तत्कथममु ॥ विवक्षु मौत्सुक्यात्स्वधिय मविजानन् जड-मति । निंधातुकुभातर्निधिमभिलषामीहपयसा ॥ १ ॥ त्वमीशानोस्माक वयमपिच भृत्यास्तव विभो । तदुच्चैर्भृत्याना भजसि न कथ हतवरद ॥ यदामादक्षेण स्फुरति तव लज्जा जडधिया । धिय स्वस्यादाने वद किमिति कार्पण्य मतुल॥२॥न रोधो नावज्ञा नच खलभय ना नवसरो। न-चासिद्धिर्नास्थाचिरपरिचयेनोचटुवच विभोत्वत्सेवायामिहयदपि सौ कर्यं मखिलं । तथाप्यस्मचेतो हतमितरसेवास्पृहयति ॥ ३ ॥ श्रुते न व्यासगो नच सतत सगोपि सुविदा । मभगो नोत्साहस्तपसि नच दान नविरति ॥ गुणैरस्पृष्टनो वत जनममु तारयसि चे । जडाना-मुद्धारे वरद तवकाहो पुरपिका ॥ ४ ॥ भजतोमर्मामाम्प्यहह विषया रूढ मनस । स्तदुद्धारे माभू श्लथित विनियोगो जडधिया ॥ त्यजामो व्यासग विषम विषयाणा यदितदा । स्वयतूर्ण तीर्णा स्त्वयि किमिते दैन्येन भगवन् ॥ ५ ॥ त्वमुद्धर्ता नृणामपि भवपयो धौनिपतता । विदित्वे त्यागाते दुरितभरभुग्नोपि शरण ॥ कुरूद्धारनोचेरसममिह-मदीयैश्चदुरितै । पराभूति गता वत वत विवाद व्यतिकरे ॥ ६ ॥ मयागी चक्रे त्व परमपद लाभाहित धिया । त्वमीशोदासि य भजसि-यदि वाच्यं किमु पुन ॥ त्रिदूरेऽभीष्टार्थ प्रवितरण कीर्तिं किमितिमे । कृतागीकार स्त्व परमनृण भाव न भजसि ॥ ७ ॥ त्वमीगस्मर्तृणां चकुल भवभार निरसय । भतदर्यामादक्षे श्रियमनुमपेया वितनुपे ॥

जनस्त्वा माख्याति श्रुतविदिह नीरागइतियस्तदाश्चर्य यद्वाद्भुत चरित लक्षाह विभव ॥ ८ ॥ उदासीनो नाथ स्त्वमिह भजतामप्य भजतां। सुख वा दु ख वा नखलु समदृश्वा स्पृहयसि ॥ पर त्वन्नमैवावति जन मर्मु विघ्न भरतो। भिधैव श्लाघ्या तत्त्वयि किमपि मोध वत यश ॥ ९ ॥ त्रिलोकी त्वामतत्रं सति जगदीशेति महिमा। तव श्लाघ्यो लोकेऽखिल जन चमत्कार जनन ॥ मम त्वामप्यत दृर्द टि निवहत किंचन यशो। विना पुण्यै कीर्ति जगति किल कश्चिन्न लभते ॥ १० ॥ समच्छिन्नामेश्री कृतकलुप कर्मोग्र पटलै। मदेया सैवा श्रु स्वयमिह समुद्घाटय सहसा ॥ अये कीर्ति सौधाकर किरण कांत्या सहचरीं। मदीय ता मद्य श्रिय मवितरन् किं न भजसे ॥ ११ ॥ मकुर्वन्त पापा न्यनि भय मुपेमो नहि मनाक्। तवैवार्थेऽस्माभिर्व्यरचि दुरिताना व्यतिकरः ॥ विनामादक्षैस्ते विपमभव पायोऽधि पतितैः। कथ कार लभ्या वरदयति तो द्वार पदवी ॥ १२ ॥ त्वमुद्धर्तुं दीनान् दुरित भर भुग्नानपि विभो। भवाब्धौ निक्षेप्नु ममदुरित मत्याग्रह पर ॥ दिदृक्षामो ब्रह्मन्निहहि नत वाद व्यतिकरे। प्रतिज्ञाया कस्यो लसति दृढ भूमिः खलु हतः ॥ १३ ॥ समक्षस्त्व नाक्ष्णोर्न च वरद चित्रानुकृति भाक्। नवा लक्षः स्वप्ने कथमपि न मेव्योऽसि वपुषा ॥ तथाप्यस्मच्चेत स्त्वयि भजति रागाद्दृगता। न जाने तद्ब्रह्मन्क्रमममभिचारं प्रथयसि ॥ १४ ॥ भवश्वभ्रापातः स्फुरति बत राग प्रभवइत्युपास्ते त्वां लोको वत निहतरागच विमृशन् ॥ अये चित्र चित्र चरितमविचिंत्य वरद ते। श्रुतोप्यंतर्नृणा अतुल मनुराग जनयसि ॥ १५ ॥ निशम्य स्व दास कंचिदपि विपद्भिन्नितनुं। त्वरते स्वा व्रीडा ह्रदि निदधतो हत विभवः ॥ अये मामा क्रान्तं दृढ दुरित लुटाकनि करैः। मुहुः पश्यन्पश्रान्वत वत न, लज्जा कलयसि ॥ १६ ॥ पयोधेर्गांभीर्यं विपमतिमिनक्रै रुप हत। हत काठिन्येन ध्रुवमचल

राजस्य महिमा ॥ विनिर्मुक्तं दोषै रगणित गुणौघैः श्रितवति । त्वयि ब्रह्मन्धत्ते सततं सुषुमां तव द्वयमपि ॥ १७ ॥ पशुर्धेनुः शैलो मणिरवनि जन्मातरू रथ, स्फुटं याचा दैन्ये ददति मितमर्थ कथमपि ॥ तव ब्रह्मन्स्वैर श्रियमपरिमेयां वितरतो । न जाने त्रैलोक्ये कतरदुपमानं चिलसति ॥ १८ ॥

। शार्दूल विक्रीडितम् ।

इत्थ भक्ति भरातुरेणमनसा वाचामगम्योपियो । नूनं नाथनूतोसि शीघ्ररचितैरत्युग्र काव्यैर्मया ॥ तुष्टोयत्रसि साम्प्रत भवभव क्लेशाकुल हंतमा । मगीकुर्वनुरुपया जिनपते नोवेदनगीद्रु रू ॥ १९ ॥

॥ अनुष्टुभ् ॥

॥ त्वमनंगोऽसि भगवन्नगमग्यनुकम्प्यताम् ॥
॥ यथायनागससर्गैः कर्हिचित्परिभूयते ॥ २० ॥

इति श्रमणोपासक दलपतिराय विरचित सिद्ध विंशका स्तोत्रम् ॥६॥

९ । अथ सिद्धान्तेऽष्ट पदार्था दुरधिगम्या ।

अनाश्रय सिद्धि ध्रुवमुपगतास्तापुनरितः स्तथाप्येपारिक्ता नहि खलुकदाचित्समभवत् ॥ तदेव दुस्तर्क्यं व्यतिकर निरासा क्षमधिया-मचिन्त्यस्तेवाचो वहति महिमा श्वासनविधिं ॥ १ ॥ वहत्यद्व मुक्ते रविरतमय भव्य निरता-दनतोसोकाल स्तदपि नचते यातिविरतिं ॥ तदेव० ॥ २ ॥ अवश्यंसेत्स्यन्ति स्फुटमिहहि-भव्यास्तदपिभो-अमी-सिद्धेभ्य स्युः खलुयदि सदानतगुणिता ॥ त० ॥ ३ ॥ अभाज्ये क्षेत्रादौ स्थितिमुपगत पुद्गलगणः-पृथग्भूदेण स्तनच भजति सनातनि-

चयं ॥ तदे० ॥ ४ ॥ प्रदेशःखस्येकः स्पृशातिखलु दिक्स्थानपिपशन्-पृथग्दैशैः स्वस्याप्यवयवविहीन स्तदपिसः ॥ त० ॥ ५ ॥ दिगंते जीवोयं व्रजति समयैकेन घटयन्नभोऽणून्निः संख्यांस्तदपिचनिरंशोहि-समयः ॥ त० ॥ ६ ॥ अणोशीतादीनां द्वयमिह चतुर्णा निगदितं-कुतः स्कंधे चाष्टौ कथमिहहि शब्दादिघटना ॥ त० ॥ ७ ॥ कृतं पुंसा कर्म प्रभवति कथं तस्य घटना–निरादिः स्याद्वास्ता कथमिहनिरादेर्विघटनं ॥ त० ॥ ८ ॥

॥ इति सिद्धान्तेऽष्टपदार्थो दुरधिगम्या समाप्ता ॥

---

६ ॥ श्रीमहावीराष्टक लिख्यते ॥

यदीये चैतन्ये मुकर इव भावाश्चिदचितः–समभ्रातिध्रौव्य व्यय जनिलसतोंतरहिताः ॥ जगत्साक्षि मार्गप्रगटनपरो भानुखियो–महावीरः स्वामी नयनपथगामी भवतुनः ॥ १ ॥ अताम्रयचक्षुः कमल युगलं स्पदरहितं जनान कोपाथाय प्रकटयति वाभ्यंतरमपि ॥ स्फुट मूर्तिर्यस्यप्रशमसमयी वातिविमला महावीर० ॥ २ ॥ नमन्नाकेंद्राली मुकुटमणिभाजालजटिल लसत्पादां भोजद्वयमिह यदीय तनुभृता भवज्वाला शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि महावीर स्वामी० ॥३॥ यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह क्षणादासीत्स्वर्गीगुणगणसमृद्ध सुखनिधे॰ लभते सद्भक्ताः शिव सुख समानं किमुतदा महावीर स्वामी० ॥ ४ ॥ कनत्स्वर्णाभासोप्यपगत तनुर्ज्ञाननिवहो विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनय अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुतगतिः महावीरः० ॥ ५ ॥ यदीया वाग्गंगा विविध नय कल्लोल विमला वहद् ज्ञानाभोधिर्जगति जनतायाश्नपयति । इदानी मप्येषा बुधजनमरालैः

परिचिता महावीरः० ॥ ६ ॥ अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभटः कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येनविजितः स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपद राज्यायसजता महावीरः० ॥७॥ महा मोहातंक प्रशमन पराकस्मिक भिषक् निरापेक्षो बंधुर्विदित महिमामंगलकरः शरण्यःसाधूना भवभय भृतामुत्तमगुणो महावीरः० ॥ ८ ॥

अनुष्टुप्.

महावीराष्टक स्तोत्रं भक्त्याभागेंदुनाकृतं
यःपठेच्छृणुयाद्वापि सयातिपरमांगतिं ॥ ९ ॥

इति महावीराष्टक स्तोत्रम् ॥

---

७ अथ जिन सहस्र नाम स्तोत्रम् ॥

प्रभो भवांग भोगेषु निर्विण्णो दुःखभीरुकः ॥ ॥ एष विज्ञापयामित्वा शरण्यकरुणार्णवम् ॥ १ ॥ सुखलाल सदामोहाद्भ्राम्यन्बहि रितस्ततः ॥ सुखैकहेतोर्नामापि तव न ज्ञातवान्पुरा ॥ २ ॥ अद्य मोहग्रहावेश शैथिल्यात्किंचिदुन्मुख अनंतगुणमाप्तेभ्य स्त्वाश्रुत्वास्तोतुमुद्यतः भक्त्या प्रोत्साह्यमानोपि दूरं शक्त्या तिरस्कृतः ॥ त्वानामाष्टसहस्रेण स्तुत्वात्मानपुनाम्यहं ॥ ४ ॥ जिन सर्वज्ञ यज्ञार्ह तीर्थकृन्नाथ योगिनां । निर्वाण ब्रह्म बुद्धान्त कृताचाष्टोत्तरैः शतैः॥५॥

तद्यथा

जिनो जिनेंद्रो जिनराट् जिनपृष्ठो जिनोत्तमः । जिनाधिपो जिनाधीशो जिनस्वामी जिनेश्वर ॥ ६ ॥ जिननाथोजिनपतिर्जिनराजो जिनाधिराट् । जिनप्रभुर्जिनविभुर्जिनभर्ता जिनाधिभूः ॥ ७ ॥ जिन नेता जिने शानो जिनेनो जिन नायकः । जिनेट् जिन परिवृढो जिन देवो जिनेशिता ॥ ८ ॥ जिनाधि राजो जिनपो जिनेशी जिनशा-

श्रीता । जिनाधिनाथोऽपि-जिनाधिपतिर्जिनपालक ॥ ९ ॥ जिनचंद्रो जिनादित्यो जिनार्को जिनकुंजर । जिनेंदुर्जिन धौरेयो जिन धुर्यो जिनोत्तर ॥ १० ॥ जिनवर्यो जिनवरो जिनसिंहो जिनोद्वह । जिनर्षभो जिनवृषो जिन रत्नं जिनो रसं ॥ ११ ॥ जिनेशो जिनशार्दूलो जिनाग्र्यो जिनपुंगव । जिनहंसो जिनोत्तंसो जिननागो जिनाग्रणी ॥ १२ ॥ जिनप्रवेकश्च जिनग्रामणीर्जिनसत्तम । जिनप्रवर्ह परमजिनो जिनपुरोगम ॥ १३ ॥ जिनश्रेष्ठो जिनज्येष्ठो जिनमुख्यो जिनाग्रम । श्री जिनश्चोत्तम जिनो जिनवृंदारकोरिजित् ॥ १४ ॥ निर्विघ्नो विरजा शुद्धो निस्तमस्को निरंजन । घातिकर्मातक कर्म मर्म वित्कर्महानघ ॥ १५ ॥ वीतरागोऽक्षुदद्वेषो निर्मोहो निर्मदोगदः । वितृष्णोनिर्ममोऽसगो निर्भयोवीतविस्मयः ॥ १६ ॥ अस्वप्नो नि श्रमोऽजन्मा निःस्वेदोनिर्जरोमर । अरत्यतीतो निश्चितोनिर्विषादास्त्रिषष्टिजित् ॥ १७ ॥

इति जिनशतम् समाप्तम् ॥

सर्वज्ञ सर्व वित्सर्वदर्शी सर्वावलोकन । अनंत विक्रमो नंत वीर्यो नंत सुखात्मक ॥१८॥ अनंत सौख्यो विश्वज्ञो विश्वदृश्वाखिलार्थदृक् । न्यक्षदृक् विश्वतश्चक्षुर्विश्वचक्षुरशेषवित् ॥ १९ ॥ आनंद परमानंद सदानंद सदोदय । नित्या नंदो महानंद परानंदः परोदय ॥ २० ॥ परमोजः परंतेज परंधाम परमह । प्रत्यग्ज्योति परंज्योति परंब्रह्म परंरह ॥ २१ ॥ प्रत्यगात्मा प्रबुद्धात्मा महात्मात्ममहोदय । परमात्मा प्रशांतात्मा परात्मात्म निकेतन ॥ २२ ॥ परमेष्ठी महिष्ठात्मा श्रेष्ठात्मा स्वात्मनिष्ठित । ब्रह्मनिष्ठो महानिष्ठो निरूढात्मा दृढात्मदृक् ॥ २३ ॥ एकविद्यो महाविद्यो महाब्रह्म पदेश्वर । पंच ब्रह्ममय सार्व सर्व विद्येश्वर स्वभू ॥ २४ ॥ अनंत-

धीरजंतात्मा नतशक्तिरनततक् अनंतानतधीशक्ति स्नतचिदनत-सुत् ॥ २५ ॥ सदाप्रकाशः सर्वार्थ साक्षात्कारीसमग्रधी कर्मसाक्षी जगच्चक्षुरलक्षात्मा जगत्स्थिति ॥ २६ ॥ निराबाधोप्रतक्यात्मा धर्म चक्रीविदांवर भूतात्मा सहज ज्योतिर्विश्वज्योतीरतींद्रियः ॥२७॥ केवलीकेवलालोको लोकालोक विलोकन विविक्त केवलोऽव्यक्त शरण्योऽचिंत्यवैभव ॥ २८ ॥ विश्वसृड्विश्वरूपात्मा विश्वात्मा विश्व-तोमुख विश्वव्यापी स्वयंज्योतिरचिंत्यात्मामितप्रभ ॥ २९ ॥ महौदार्यो महाबोधी महालाभोमहोदयः महोपभोगीसुगतिर्महाभोगोमहाजल ॥३०॥

इति सर्वज्ञशत समाप्तम् २

यज्ञार्हो भगवानर्हन्महार्हो मघवार्चितः भूतार्थयज्ञपुरुषो भूतार्थ क्रतुपूरुष ॥ ३१ ॥ पूज्यो भट्टारकः तत्र भवानत्र भवान्महान महा महार्हस्तत्रायुस्ततोदीर्घायुरर्घ्यवाक् ॥ ३२ ॥ आराध्यः परमाराध्यः पचकल्याणपूजित दृग्विशुद्धिगणोदग्रो वसुधारार्चितास्पद. ॥ ३३ ॥ सुस्वप्नदर्शीदिव्योजाः शचीसेवितमातृक स्याद्रत्नगर्भो श्रीपूतगर्भोगर्भ-त्सवोत्थित ॥ ३४ ॥ दिव्योपचारोपचित पद्मभूर्निष्कलःस्वज सर्द्धीयजन्मापुण्यागो भास्वानुद्भूतदैवत ॥ ३५ ॥ विश्वविज्ञातसभूतो विश्वदेवागमाप्लुतः शचीसृष्टप्रतिछद सहस्राक्षदृगुत्सवः ॥ ३६ ॥ नृत्यदैरावतासीन. सर्वशक्र नमस्कृतः हर्षा कुलामरखगश्चारणर्षिमतो-त्सवः ॥ ३७ ॥ व्योमविष्णुपदारत्ना स्नानपीतायिताद्रिराट् तीर्थेशम-न्यदुग्धाब्धि स्नानाबुस्नातवासवः ॥ ३८ ॥ गधाम्बुपूत त्रैलोक्यो वज्रसूचीशुचिश्रवाः कृतार्थितशचीहस्तः शक्रोद्घुष्ट नायकः ॥ ३९ ॥ शक्रारब्धानद नृत्यः शची विस्मापितांबिकः इद्रनृत्यत्तपितृको रैदपूर्ण मनोरथः ॥ ४० ॥ आज्ञार्थींद्र कृता सेवा देवर्षीष्ट शिवोद्यमः दीक्षाक्षण क्षुब्दजगद्भूर्भुवः स्वःपतीडितः ॥ ४१ ॥ कुबेर निर्मितास्थानः श्री

युग्योगीश्वरार्चितः ब्रह्मेड्योब्रह्मविद्ब्रह्मोयाज्योयज्ञपतिःक्रतुः ॥ ४२ ॥ यज्ञांगममृतंयज्ञो हविःस्तुत्यः स्तुतीश्वरः भावोमहामहपतिर्महायज्ञोग्रयाजकः ॥ ४३ ॥ दयायागो जगत्पूज्यः पूजार्हो जगदार्चितः देवाधिदेवः शक्राचर्यो देवदेवो जगद्गुरुः ॥४४॥ संभूतदेव संघार्च्यः पद्मयानो जयद्वजी भामंडली चतुःषष्टी चामरो देव दुंदुभिः ॥ ४५ ॥ वागस्पृष्टासनस्तत्र त्रयराट्पुष्पवृष्टि भाक् दिव्याशोको मानमर्द्दीसगीताहेष्टिमंगलः ॥ ४६ ॥

इति यज्ञार्हशतम्. ३

तीर्थकृत्तीर्थसृट्तीर्थकर स्तीर्थकरःसुदृक् तीर्थकर्तातीर्थभर्त्तातीर्थेशस्तीर्थनायकः ॥ ४७ ॥ धर्म तीर्थकरस्तीर्थ प्रणेता तीर्थकारकः तीर्थ प्रवर्तकस्तीर्थवेधास्तीर्थ विधायकः ॥ ४८ ॥ सत्यतीर्थकरस्तीर्थ सेव्य स्तैर्थिकतारकः सत्य वाक्याधिपः सत्यशासनो प्रतिशासनः ॥ ४९ ॥ स्याद्वादी दिव्यगीर्दिव्य ध्वनिरव्याहतार्थवाक् पुण्य वागर्थ्य वागर्द्ध मागधी योक्तिरिद्धवाक् ॥ ५० ॥ अनेकांत दिगेकान्त ध्वांत भिद्दुर्नयातकृत् सार्थवागमयत्नोक्तिः प्रतितीर्थमदघ्नवाक् ॥ ५१ ॥ स्यात्कार ध्वज वागी हा पेतवागचलौष्टवाक् अपौरुषेय वाक् शास्तारुद्धवाक्सप्तभंगिवाक् ॥ ५२ ॥ अवर्णगी सर्व भाषा मयगीर्व्यक्त वर्णगीः अमोघ वागक्रम वा गवाच्यानंत वागवाक् ॥ ५३ ॥ अद्वैतगीः सूनृतगीः सत्यानु भयगीःसुगीः योजन व्यापगीः क्षीर गौरगीस्तीर्थकृत्वगीः ॥ ५४ ॥ भव्यैकः श्रव्यगुः सद्गुश्चित्रगुःपरमार्थगुः प्रशांतगुः प्राश्निकगुः सुगुर्नियतकालगुः ॥ ५५॥ सुश्रुतिःसुश्रुतो याज्य श्रुतिः सुश्रुमहाश्रुतिः धर्मश्रुतिः श्रुतिपतिःश्रुत्युर्द्धर्त्ता ध्रुवश्रुतिः ॥५६ ॥ निर्वाणमार्गदिग्मार्ग देशकः सर्वमार्गदिक् सारस्वतपथस्तीर्थ परमोत्तमतीर्थकृत् ॥ ५७ ॥ देष्टा वाग्मीश्वरो धर्मशा-

सको धर्मदेशकः वागीश्वर स्त्रयीनाथस्त्रिभंगीशोगिरापतिः॥ ५८॥ सि-
द्धाज्ञः सिद्धवागाज्ञा सिद्धःसिद्धैकशासनः जगत्प्रसिद्धसिद्धान्त सिद्ध-
मंत्रःसुसिद्धवाक् ॥ ५९ ॥ शुचि श्रवा निरुक्तोक्तिः तंत्रकृन्न्यायशास्त्र-
कृत् महिष्ठ वाग्महा नादः कवींद्रो दुंदुभिस्वनः ॥ ५० ॥

इति तीर्थकृच्छतं ॥

नाथः पतिः परिवृढः स्वामीभर्ता विभुः प्रभुः ईश्वरोधीश्वरो धी-
शो धीशानो धीशिते शिता ॥ ६१ ॥ ईशोधिपति रीशान इनइंद्रो-
धिपोधिभूः महेश्वरो महेशानो महेशः परमेशिता ॥ ६२ ॥ अधिदेवो
महादेवो देवस्त्रिभुवनेश्वरः विश्वेशो विश्वभूतेशोविश्वेट्विश्वेश्वरोधिराट्
॥ ६३ ॥ लोकेश्वरो लोकपतिर्लोकनाथो जगत्पतिः त्रैलोक्यनाथो
लोकेशो जगन्नाथो जगत्प्रभुः ॥ ६४ ॥ पितापरः परतरो जेता जि-
ष्णुरनीश्वरः कर्ताप्रभुष्णुर्भ्राजिष्णुः प्रभविष्णुः स्वयप्रभुः ॥ ६५ ॥
लोकजिद्विश्वजिद्विश्व विजेता विश्वजित्वरः जगज्जेता जगज्जैत्रो जरा-
जिष्णुर्जगज्जयी ॥ ६६ ॥ अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता भूर्भुवः स्वरधीश्वरः ध-
र्मनायक ऋद्धीशो भूतनाथश्चभूतभृत् ॥ ६७ ॥ गतिः पाता वृषोवर्यो
मंत्रकृच्छुभलक्षणः लोका यक्षोदुरावर्षो लव्य बधु निरुत्सकः ॥ ६८॥
धीरोजगद्धितो जय्यस्त्रिजगत्पतिरीश्वरः विश्वासी सर्व लोकेशो विल-
न्त्रो भुवनेश्वरः ॥ ६९ ॥ त्रिजगद्वलभ्भ स्तुग स्त्रिजगन्मगलोदयः धर्म-
चक्रायुधः सद्योजातः स्त्रैलोक्य मगलः ॥ ७० ॥ वरदो मतिघो छेद्यो
दृढीयानभयकरः महाभागो निरोपम्यो धर्मसाम्राज्य नायकः ॥ ७१ ॥

इति नाथशतकम् ॥ ५

योगी प्रव्यक्तनिर्वेदः साम्यारोहण तत्परः सामायिकी सामयि-
को निष्प्रमादो प्रतिक्रमः ॥ ७२ ॥ यमः प्रधान नियमः स्वभ्यस्त पर-

मात्मनः प्राणायाम चणः सिद्धः प्रत्याहारो जितेंद्रियः ॥ ७३ ॥ धारणाधीश्वरो धर्म ध्याननिष्ठः समाधिराट् स्फुरत्समीर सीभाव एकी करणनायकः ॥ ७४ ॥ निर्ग्रंथ नाथो योगींद्र ऋषिः साधुर्यतिर्मुनिः महर्षिः साधु धौरेयो यति नाथो मुनीश्वरः ॥ ७५ ॥ महामुनिर्महा मौनी महाध्यानी महाव्रती महाक्षमो महाशीलो महाशांतो महादमः ॥ ७६ ॥ निर्लेपो निर्भ्रमः स्वान्तो धर्माध्यक्षो दयाध्वजः ब्रह्मयोनिः स्वयंबुद्धो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म तत्वविद् ॥ ७७ ॥ पूतात्मा स्नातकोदांतो भदंतो वीतमत्सरः धर्म वृथा युधो क्षोभ्यः मपूतात्मामृतोत्सवः ॥ ७८ ॥ मंत्रमूर्ति स्वसौम्यात्मा स्वतंत्रो ब्रह्म संभवः सुप्रसन्नो गुणांभोधिः पुण्यापुण्य निरोधकः ॥ ७९ ॥ सुसंवृत्तः सुगुप्तात्मा सिद्धात्मा निरुपप्लवः महोदर्को महोपायो जगदेकः पितामहः ॥ ८० ॥ महा कारुणिको गुण्यो महा क्लेशाकुशशुचिः अरिजयः सदायोगः सदाभोगः सदाधृतिः ॥ ८१ ॥ परमौदा सिताताम्वान् सत्ताशीः शातनायकः अपूर्व वैद्यो योगज्ञो धर्ममूर्तिरधर्मधृक् ॥ ८२ ॥ ब्रह्मेन्महा ब्रह्मपतिः कृतकृत्यः कृतक्रतुः गुणाकरो गुणोच्छेदी निर्निमेषो निराश्रयः ॥ ८३ ॥ सूरिः सुनय तत्वज्ञो महामैत्रीमयः समी प्रक्षीणबंधो निर्द्वंद्वो वेदवेदो गुणाग्रणीः ॥ ८४ ॥

इति योग शतं समाप्तम्.

निर्वाणः सागरः प्राज्ञैःमहासाधुरुदाहृतः विमला मोक्ष शुद्धाभः श्रीधरोदत्त इत्यपि ॥ ८५ ॥ अमलाभोऽप्युद्धरोग्निः सजयश्च शिवस्तथा पुष्पांजलिः शिवगणउत्साहो ज्ञान सज्ञकः ॥ ८६ ॥ परमेश्वर इत्युक्तो विमलेशो यशोधरः कृष्णो ज्ञानमतिः शुद्धमतिः श्रीभद्र शातियुक् ॥ ८७ ॥ वृषभस्तद्वदजितः संभवश्चाभिनंदनः सुनिभि, सुमतिः पद्मप्रभः मोक्तः सुपार्श्वकः ॥ ८८ ॥ चंद्रप्रभः पुष्पदन्तः शीतल श्रेय

आन्हयः वासुपूज्यश्च विमलोनंतजिद्धर्म इत्यपि ॥ ८९ ॥ शांति कुंथुर रोमल्लिः सुव्रतो नमिरप्यतः नेमिः पार्श्वो वर्द्धमानो महावीरः सुवीरकः ॥ ९० ॥ सन्मतिश्चाकयमिहतिमहावीर इत्यपि महापद्मः सूरदेवः सुप्रभश्च स्वयंप्रभः ॥ ९१ ॥ सर्वायुधोजयो देवो भवेदुदयदेवकः प्रभादेव उदंकश्च प्रश्न कीर्तिं जयाभिधः ॥ ९२ ॥ पूर्णबुद्धिर्निष्कषायो विज्ञेयो विमलप्रभः बहलो निर्मलश्चित्रगुप्तः समधि गुप्तकः ॥ ९३ ॥ स्वयंभूश्चापि कंदर्पो जयनाथ इतीरितः श्रीविमलो दिव्यवादोनंतवीरोप्युदीरितः ॥ ९४ ॥ पुरुदेवोयसुविधिः प्रज्ञापारमितो व्ययः पुराण पुरुषो धर्म सारथिः शिवकीर्तिनः ॥ ९५ ॥ विश्वकर्माक्षरोछद्मा विश्व भूर्विश्वनायकः दिगंबरो निरातंको निरारेको भवांतकः ॥ ९६ ॥ दृढव्रतो नयोत्तुंगो निष्कलंकः कलाधरः सर्व क्लेशा पहोक्षय्यः क्षांतः श्रीवृक्षलक्षणः ॥ ९७ ॥

इति निर्वाण शतम्. ७.

ब्रह्मा चतुर्मुखो धाता विधाता कमलासनः अब्जभूरात्मभूः स्रष्टा सुरज्येष्ठा प्रजापतिः ॥ ९८ ॥ हिरण्यगर्भो वेदज्ञो वेदांगो वेदपारगः अजो मनु' शतानंदो हंसयानस्त्रयीमयः ॥ ९९ ॥ विष्णु त्रिविक्रमः शौरिः श्रीपति. पुरुषोत्तमः वैकुंठः पुंडरीकाक्षेहृषीकेशोहरि' स्वभूः ॥ १०० ॥ विश्वंभरो सुर ग्सी मा ग्वो बलिबंधनः अधोक्षजो मधुद्वेषी केशवो विष्टरश्रवाः ॥ १०१ ॥ श्रीवत्स लांछनः श्रीमानच्युतो नरकांतकः विष्वक्सेनश्चक्रवर्ती पद्मनाभो जनार्दनः ॥१०२॥ श्रीकंठः शंकरः शंभुः कपाली वृषकेतनः मृत्युंजयो विरूपाक्षो वामदेवस्त्रिलोचनः ॥ ३ ॥ उमापतिः पशुपतिः स्मरारिस्त्रिपुरांतकः अर्धनारी स्वरोरुद्धो भवोभर्गः सदाशिव' ॥ ४ ॥ जगत्कर्तांधकारातिरनादि निधनो हरः महासेनस्तारकजिद्गणनाथो विनायकः ॥ ५ ॥ विरोचनो वियद्-

त्न द्वादशात्मा त्रिभावसुः द्विजाराध्यो बृहद्भानुश्चित्रभानुस्तनूनपात् ॥ ६ ॥ द्विजराजः सुधीः शोचिरोषधी शोकलानिधिः नक्षत्रनाथः शुभ्रांशुः सोमः कुमुदबांधवः ॥ ७ ॥ लेखर्पभो निलःपुण्यजनः पुण्यजनेश्वरः धर्मराजो भोगिराजःप्रचेताभूमिनंदनः ॥ ८ ॥ सिंहिकातनयश्छायानंदनो बृहतापतिः पूर्वदेवो पदेष्टाच द्विजराज समुद्भवः ॥९॥

इति ब्रह्मशतम्.

बुद्धो दशबलः शाक्यः षडभिज्ञस्तथागतः समंतभद्रः सुगतःश्रीघनो मूलकोटिदिक् ॥ १० ॥ सिद्धार्थो मारजिच्छास्ताक्षणिकैक सुलक्षणः बोधिसत्को निर्विकल्पदर्शनोद्वयमात्रपि ॥ ११ ॥ महाकृपालुर्नैरात्म्यवादी संतानशासकः सामान्य लक्षणचणः पचस्कधमयात्मदृक् ॥ १२ ॥ भूतार्थभावनासिद्धश्चानुभूमिकशासनः चतुरार्यः सत्यवक्ता निराश्रयविदन्वयः ॥ १३ ॥ योगोवैशेषिकस्तुच्छा भावमित् षद् पदार्थदृक् नैय्यायिकः षोडशार्थः वादीपंचार्थ वर्णकः ॥ १४ ॥ ज्ञानांतरा-यक्ष बोधः समवायवशार्थभित् भक्तेकसाधकर्मातो निर्विशेषगुणामृतः ॥ १५ ॥ सांक्षः समीक्षः कपिलः पंचविंशतितत्वविद् व्यक्ताव्यक्तज्ञ सुज्ञानीज्ञानचैतन्यभेददृक् ॥ १६ ॥ अश्व सविदित ज्ञान वादी सत्कार्य वादवित् निष्प्रमाणोऽक्षप्रमाणःस्याद्वाहकारिकाक्षदृक् ॥ १७ ॥ क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषो नरो नाचेतनःपुमान् अकर्ताविर्गुणो मूर्तो भोक्तासर्वगतोक्रियः ॥ १८ ॥ दृष्टस्तटस्थः कूटस्थो ज्ञातानिर्बंधनोभवः वहिर्विकारो निर्मोक्षः प्रधान बहुधानकं ॥ १९ ॥ प्रकृति स्यातिरारूढः प्रकृतिःप्रकृतिप्रियः प्रधानभोज्यो प्रकृतिर्विरम्यो विकृतिः कृतिः ॥ २० ॥ मीमांसकोस्त सर्वज्ञः श्रुतिपूतः सदोत्सवः परोक्ष ज्ञान वादिष्ठोभारकः सिद्धकर्मकः ॥ २१ ॥ चार्वाको भौतिक ज्ञानो भूताभिव्यक्तचेतनः प्रत्यैक्षकप्रमाणस्यःपरलोको गुरु श्रुतिः

॥ २२ ॥ पुरंदरो विद्धकर्णो वेदांती सविदद्वयी शब्दाद्वयी स्फोटवादी पाखंडघ्नोनयौघयुक् ॥ २३ ॥

इति बुद्धशतम्.

अतर्क्यपारकृत्तीर प्राप्तः पारेततः स्थितः त्रिदंडी दंडितारातिर ज्ञान कर्म समुच्चयीः ॥ २४ ॥ संहृतध्वनिरुत्सन्न योगः सुप्तार्णवोयमः योगः श्रेष्ठापयायोगः क्रीडङ् निर्लेपनोत्रतः ॥ २५ ॥ स्थिति स्थूल वपुर्येतो गीर्मणो योग कार्श्यक. सूक्ष्मवाक्चित्त योगस्थः सूक्ष्मीकृत वपुःक्रियः ॥ २६ ॥ सूक्ष्म कार्य क्रियास्थायी सूक्ष्मवाक्चित्त योगहा एक दंडीच परमहंसः परमशवरः ॥ २७ ॥ नैष्कर्म सिद्धः परमः निर्जरः प्रज्वलत्प्रभः मोघकर्मा त्रुटत्कर्म पाशःसैलेश्य संस्कृत ॥ २८ ॥ एकाकारो रसास्वादः विश्वाकार रसाकुलः अजीवन्मृतको जाग्रत्सुप्तः शून्यतामयः ॥ २९ ॥ प्रेयानयोगीचतुरः गितिलक्ष गुणोगुणः नीपित्तानंद पर्यायो मिथ्या संस्कार नाशकः ॥ ३० ॥ वृद्धो निर्वचनीयोणुरणीयाननणुप्रियः प्रेष्ट. प्रेयान्स्थिरोनेष्टः श्रेष्ठोज्येष्टः सुनिष्ठितः ॥ ३१ ॥ भूतार्थ सूरो भूतार्थः दूर' परमनिर्गुण. व्यवहार सुसुप्तोति जागरूकोति सुस्थित ॥ ३२ ॥ उदितोत्रिति माहात्म्यो निरुपाधि रतिक्रिय. अप्रेय महिमात्यतशुद्ध. सिद्धि स्वयंवर' ॥ ३३ ॥ सिद्धानुज' सिद्धपतिः पार्थ' सिद्ध गुण स्थितिः सिद्ध सर्गोन्मुख' सिद्धालिंगे सिद्धो पगूहक. ॥ ३४ ॥ पुष्टोष्टादश सास्त्र शीलाश्व पुण्य सभरः वृत्ताग्र सुग्रे परमः शुक्लेज्योपचारकृत्. ॥ ३५ ॥ क्षेपिष्टोंत्यक्षण सख्या पच लघ्वक्षरस्थितिः द्वासप्तति प्रकृत्यासीत्रयोदश कलिप्रणुत्' ॥ ३६ ॥ अरदो याजको याज्यो याज्यो नग्न परिग्रहः अनग्निहोत्र परमनिस्पृहोत्यत निर्दयः ॥ ३७ ॥ अशिष्यो शासको दीक्षो दीक्षको दीप्तितोदयः अगम्यो गमको,रम्यो रमको ज्ञाननिर्भर. ॥ ३८ ॥

इत्यंत कृच्छतम्.

महा योगीस्वरो द्रव्य सिद्धोदेहोपुनर्भवः ज्ञानैकचिज्जीवघनः सिद्धो लोकाग्रनामकः ॥ ३९ ॥

इत्यंताष्टकम्.

इदमष्टोत्तर नाम्नां सहस्रं भक्तितोहतं योनता नाम धीतेसौ मुच्यंताश्रुक्ति मश्नुते ॥ ४० ॥ इदं लोकोत्तण्पुसा इद शरणमुत्तम इदं मंगलमग्रीय इद परम पावनं ॥ ४१ ॥ इदमेवपर तीर्थ मिदमेवेष्ट साधनं इदमेवाखिलक्लेश संक्लेश क्षय कारणं ॥ ४२ ॥ एतेषा मेरुमप्यर्हनाम्नामुच्चारयन्नघैः मुच्यतेकि पुनः सर्वान्यर्थज्ञस्तु जिनायते ॥ १४३ ॥

इतिश्री जिनसहस्रनामानि.

८ अथ वर्द्धमान स्तोत्रम्.

वर्द्धमान स्तुमः सर्वं नयनद्यर्णवागम सक्षेपतस्तदुद्गीत नयभेदानुवादतः ॥ १ ॥ नैगमः संग्रहश्चैव व्यवहार ऋजुसूत्रकौ शब्द समभिरूढैवं भूताश्चेतिनयाः स्मृताः ॥ २ ॥ अर्था सर्वेपि सामान्य विशेषोभयधर्मकाः सामान्य तत्र जात्यादिर्विशेषस्तद्विभेदकः ॥ ३ ॥ एकाबुद्धिर्घटशते भवेत्सामान्य धर्मतः विशेषाच्च निजनिजं लक्षयन्ति घटंजनाः ॥ ४ ॥ नैगमोमन्यते वस्तु तदेतदुभयात्मकं निर्विशेष न सामान्यं विशेषोपिनतद्विनाः ॥ ५ ॥ संग्रहो मन्यते वस्तु सामान्यात्मकमेवहि सामान्य व्यतिरिक्तोस्ति न विशेषंखपुष्पवत् ॥ ६ ॥ विना वनस्पतिः कोपिनिंवाम्राद्निर्दश्यते हस्ताग्रतर्भाविनोहि नागुल्याद्यास्ततः पृथक् ॥ ७ ॥ विशेषात्मकमेवार्थं व्यवहारश्चमन्यते विशेष भि-

न्यः सामान्य मसत्खरविषाणवत् ॥ ८ ॥ वनस्पतिं गृहाणेति प्रोक्तेगृ-ण्हातिकोपिकिं विनाविशेष नाम्रादिस्तन्निरर्थकमेवतत् ॥ ९ ॥ व्रण पिंडी पादलेपादेको लोक प्रयोजने उपयोगो विशेषैः स्यात्सामान्येन न कहिंचित् ॥ १० ॥ ऋजु सूत्र नयो वस्तु नातीत नाप्यनागत म-न्यते केवल वस्तु वर्तमान तथा निज ॥ ११ ॥ अती तेनानागतेन परकीयेण वस्तुना नकार्य सिद्धि रित्येत दशद्गगन पद्मवत् ॥ १२ ॥ नामादिषु चतुर्ष्वेप भावमेवचमन्यते ननाम स्थापना द्रव्याण्येवमग्रेत-नावपि ॥ १३ ॥ अर्थ शब्दनयोनेकैः पर्यायैरेकमेवपत् मन्यते कुभ कलश घटायैकार्थ वाचकाः ॥ १४ ॥ बृते समभिरूढोर्य भिन्नपर्याय भेदतः भिन्नार्थ कुभ कलश घटा घटपटादिवत् ॥ १५ ॥ यदि पर्याय भेदपि न भेदोवस्तुनोभवेत् भिन्न पर्याययोर्नस्यात्सकुभ पटयोरपि ॥ १६ ॥ एकपर्यायाभिधेय मणिवस्तु च मन्यते कार्य स्वकीय कुर्वाण मेव भूतनयोध्रुवः ॥ १७ ॥ घटकार्यमकुर्वाणः पीप्यतेतत्तयासचेत् तदा पट्टेपिन घट व्यपदेशः किमिष्यते ॥ १८ ॥ यथोत्तर विशुद्धास्युः न-र्यासप्ताप्यमीतया एकैकः स्याच्छतविधस्ततः सप्तशतान्यपि ॥ १९ ॥ अथैव भूत समभिरूढयोः शब्द एवचेत् अतर्भावस्तदापच नयापच शतीभिदा ॥ २० ॥ द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिकयोरतर्भवेति सर्वेमी प्र-थमे प्रथम चतुष्टय मत्येचात्यात्त्रयस्तत्र ॥ २१ ॥

वसततिलका.

सर्वेनया अपि विरोध भृतो मिथस्ते
सभूय साधु समय भगवन्भजते
भूपाइव प्रतिभटा भुवि सार्व भौम
पादाबुज प्रधनयुक्त पराजिताद्राक् ॥ २२ ॥

इत्थ नयार्थ कवचः सुसमैर्जिनेंदु वीरोर्चितः सविनयं विनयाविश्वेत श्रीद्वीपवदिरवरे विजयादिदेव सूरीशितुर्विजयसिंह गुरुश्चतुष्टौ ॥२३॥

इति वीर स्तवनं.

९ अथेदमारभ्यते दर्शन स्तोत्रम्.

दर्शन देवदेवस्य दर्शनं पाप नाशनं दर्शनं स्वर्ग सौख्यान दर्शन मोक्ष साधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणा साधूनां वदनेन च न तिष्ठंति चिर पापं छिद्रहस्ते यथोदक ॥ २ ॥ वीतराग मुखदृष्ट्वा पद्मराग समप्रभ बहु जन्म कृत पापं दर्शनेनैव नश्यति ॥ ३ ॥ दर्शन जिन सूर्यस्य ससार ध्वांतनाशनं बोधनंचित्त पद्मस्य करोत्यर्थ प्रकाशनं ॥ ४ ॥ दर्शन जिन चद्रस्य सद्धर्मा मृतवर्षण जन्मनोध विनाशाय वितनोति सुखं चिर ॥ ५ ॥

जीवारि तत्व प्रतिदर्शकायः सम्पृक्त मुख्याष्ट गुणाश्रयाय
जिनाय देवाय दिगंवराय नमो जिनायैच नमो जिनाय ॥ ६ ॥

चिदानदैकरूपाय जिनाय परमात्मने परमात्म प्रकाशाय नित्य-स्वाध्यात्मने नमः ॥ ७ ॥ अन्यथा शरणं नास्तित्वमेव शरण मम तस्मात्कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ८ ॥ नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जयत्रये वीतरागात्परोदेवो न भूतो न भविष्यति ॥९॥ जिने भक्तिः जिने भक्तिः जिने भक्तिर्दिनेदिने सदामेस्तु सदामेस्तु२ भवेभवे ॥ १० ॥ जिनधर्म विनिर्मुक्तो मा भव चक्रवर्त्यपि स्याचेत्तोपि दरिद्रोपि जिन धर्मानुवासित ॥ ११ ॥ जन्म जन्म कृत पापं जन्म कोटि समार्जित जन्म मृत्यु जरायोग हन्यते जिनदर्शनात् ॥१२॥

त्रैलोक्य सकल त्रिकाल विषय सालोकमालोकितम्

साक्षाद्येन यथा स्वय करतले रेखात्रय सांगुल
रागद्वेष भयान्महातक जरा लोलत्व लोभादयो
नालंघत्पद लघनाय समहादेवो मयावन्द्यते ॥ १३ ॥

इति दर्शन स्तोत्रम्.

१० अथ पार्श्वनाथ स्तोत्रम्.

वरस वरस वरस वरस । भवद भवद भवद भवद । सममा सममा सममा सममा । गमभ गमभ गमभ गमभ ॥ १ ॥ दरम दरम दरम दरम । गतर गतर गतर गतर । गरस गरस गरस गरस । नवर नवर नवर नवर ॥ २ ॥ रमुदा रमुदा रमुदा रमुदा । समिनं समिन समिन समिन । विदित विदित विदित विदित । नमते नमते नमते नमते ॥ ३ ॥ यतना यतना यतना यतना । नयमा नयमा नयमा नयमा ॥ क्षणल क्षणल क्षणल क्षणल । क्षरद क्षरद क्षरद क्षरद ॥ ४ ॥ प्रमदा प्रमदा प्रमदा प्रमदा । नकरा नकरा नकरा नकरा ॥ नवमा नवमा नवमा नवमा । नसदा नसदा नसदा नसदा ॥ ५ ॥ तरसा तरसा तरसा तरसा । दयनो दयनो दयनो दयनो ॥ कदम कदमं कदम कदम । विभवा विभवा विभवा विभवा ॥ ६ ॥ इति पार्श्वजिनेश्वर ते स्तवन । रचित खचित यमकै सुपरिः ॥ रजित दक्ष नरप्रकर असता शिवसुन्दर सौख्यभरम् ॥ ७ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

११ पार्श्व स्तोत्रम्

प्रणम्य परमात्मान श्री पार्श्व तव दर्शनात् पवित्रयामि सद्योहं अज्ञानवासो जलादिव ॥ १ ॥ चरीकृति नमस्कार बालधी वृद्धि मि-

द्धये श्रीमत्पार्श्व जिनेंद्राय तेषांजन्म फले ग्रहि ॥ २ ॥ उदित तत्र धाताय श्री वामानंदनोजिन. सारस्वती मृजुं कुर्वे गतिस्त्वस्ते सतांनसा ॥ ३ ॥ श्री आश्वसेने सिद्धांता राधनंतावकंविना विदधानोऽपिनो सिद्धयत्म क्रियांनाति विस्तरां ॥ ४ ॥ इंद्रादयोपि यस्यांतं फणीनांत्व मनुग्रहात् कृतवानुत्तमं तस्य युक्तं क्रमचणोभवः ॥ ५ ॥ पारदृश्वा सुभोदर्को नययु शब्दवारिधे ऋद्धिर्वृद्धिर्निधिः सिद्धि भवते पार्श्वसेवक. ॥ ६ ॥ पादप्रसाद पार्श्वस्य श्रीमतोहिममैनस प्रक्रियांतस्य कृत्स्नस्य यस्मा क्लेशो भवे भवे ॥ ७ ॥ सुधां धसां गुरु. पारयेर्पानापसमायुषा तान्गुणान्पार्श्व देवस्यक्षमोवक्तु नर कथ ॥ ८ ॥ इति श्री मात्र जिन पार्श्वो जीरापल्लिपुरीप्रभु. मणितःपार्श्वचंद्रेण भूयाद्भूरि विभूतये ॥ ९ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

१२ अथ आत्मरक्षा स्तोत्रम्.

परमेष्ठी नमस्कार सार नवपदात्मक आत्मरक्षाकर वज्रं पंजराभं स्मराम्यह ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहताण शिरस्थ तुशिरस्त्थतथा ॐ नमो छिच सिद्धाण मुपेमुपपटांनरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाण अगरक्षातिशायिनी ॐ नमो उवज्झायाण आयुत्र हस्तयोर्दृढ ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहुण पचके पादयोः सुभे एसो पच नमोकारो शिला वज्रमयीतले ॥ ४ ॥ शव्व पावप्पणासीणो वप्रो वज्रमयोवही मगलाणच सव्वेसि खादिरगारकातिका ॥ ५ ॥ स्वाहातच पदज्ञेय पढम हवइ मगलं वप्रोपरिवज्रमयं प्रधान देहि रक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रभाव रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनी परमेष्ठी पदोद्भूत कथित पूर्व सूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैव कुरुते रक्ष परमेष्ठी पदे सदा तस्यनस्याद्भय व्याधि राधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

इत्यात्मरक्षा स्तोत्रम्.

१३ अथ पंचषष्टि यंत्र स्तोत्रम्

आदौ नेमिजिनं नौमि संभवं सुविधिं तथा धर्मनाथं महादेव शांति शांति कर सदा ॥ १ ॥ अनंतं सुव्रत भक्त्या नमिनाथं जिनोत्तमं अजितं जितकंदर्पं चद्र चद्र समप्रभं ॥ २ ॥ आदिनाथ तथा देवं सुपार्श्वं विमल जिन मल्लिनाथं गुणोपेत धनुषा पचविंशति ॥ ३ ॥ अरनाथ महावीर सुमतिंच जगद्गुरु श्री पद्मप्रभ नामान वासपूज्य सुरैर्नुतं ॥ ४ ॥ शीतल शीतल लोके श्रेयास श्रेयसे सदा कुंथुनाथ च वामेयं श्री अभिनंदन विभु ॥ ५ ॥ जिनाना नामनिर्बद्ध पचषष्टि समुद्भवः यत्रोय राजते यत्र तत्र सौख्य निरतरं ॥ ६ ॥ यस्मिन्गृहे महाभक्त्या यत्रोय पूज्यते बुधै भूत प्रेत पिशाचादि भय तत्र न विद्यते ॥ ७ ॥ सकल गुण निधान यत्रमेन प्रसिद्धं हृदय कमल कोशे धीमतां ध्येय रूपे ॥ जय तिलक गुरु श्री सूरिराजस्य शिष्यो वदति सुखनिदान मोक्ष लक्ष्मी निवास ॥ ८ ॥

इति पचषष्टि यत्र स्तोत्रम्.

यत्रम्

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

१४ अथ पार्श्वनाथ स्तोत्रम्. *

ॐ ह्रीं श्रीं तं नमह पासनाहं।ॐ ह्रींश्री धरणिंदनमसियं दुहविनाश ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जस्सपभावेणस्येया। ॐ ह्रीं श्रीं नासंति उवद्दवा चहवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पइसमरंताणमणे । ॐ ह्रीं श्रीं नहो इवा हीन त महा दुरकं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नामविय पिहुमंतसमं । ॐ ह्रीं श्रीं पयडं नयिथ्थ संदेहो ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जलजलण भय नइ सप्प सीह । ॐ ह्रीं श्रीं चोरारि संभवे खिप्पं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जो समर इपासनाहं पहु । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पुह जिन कयाविकंतश्श ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीं इहलोगठ्ठी परलोगठ्ठी । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जो समरइ पाशनाहतु ॥ ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रीं गार्गागः तंतहसिझइखिप्पं । ॐ ह्रीं श्रीं इयनाऊ सरह भगवत ॥ ४ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्रा ग्री ग्रूं क्लीं क्लीं कलिकुंड स्वामिने नमः स्वाहा ॥ (इति मूल मत्र.)

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

१५ अथ पार्श्व स्तोत्रम्

द्रें द्रें कि धप मप धुधुमि धो धो उसकि धरमप धौरव । दों दों कि दों दों दिगड्दि दिगड्दिकि द्रमकि द्रणरण द्रेणव ॥झझ झिं किं झें झें झणण रणरण निजकि निज जन रंजनं । सुरशैल शिखरे भवतु सुखद पार्श्व जिनपति मजनं ॥ १ ॥ कटरि गिणिथों गिणिकथु गि-

* ए स्तोत्र पवित्र थइ नित्य सातवार भणिजे मन वचन काया शुध्धसे मास ६ तो अवश्य राज्य लक्ष्मी मिले जिने लिखी कंठे बांधे तिने पुत्र थाय जिने खोल्-पावे घ्यतरादिक सर्व दोष टले कष्टमें आंबिल करे ३, १२५०० जाप घोळी माळाये जपिजे भूमि शयन कीजे शील पालिजे मिथ्या नहिं बोलिजे चिंतित कार्य सिध्धि होय सर्वत्र जय होय इत्यादि अनेक गुण है विशेष गुरु मुखथी धारिये

गिड् दा धुधुकिधुट नट पाटवं । गुणगुणण गुणगुण रणकि णें णें गुणण गुणगुण गौरव ॥ झ झ झें किं झें झें झणण रणरण निजकि । निज जन सज्जना । कलयति कमला कलित कलि मल मकलमीश महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठें किं ठें ठें ठंहिं ठंहिंकि ठहिंपट्टानाड्यते । तलि लों किं लों लों थेपि थेंपिनिडेंपि डेंपि निवाद्यते ॥ ॐ ॐ किं ॐ ॐ कथुगि कथुगिनि थोंगि थोंगिनि कलरवे । जिनमत मनत महि मतनुतानमत सुरनरमुत्सवे ॥ ३ ॥ खुदांकिं खुदां खुखुड्दि खुदां खुखुड्दि दां दां अम्बरे । चाचपट वच पटरणकि णें णें ड्रणण डें डें डंबरे ॥ तहिं सरगि मपधुनि निधपमगरि ससससससस सुरसेविता । जिन नाट्य रंगे कुशल मनिशं दिशतु शासन देवता ॥ ४ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

१६ अथ शांतिधारा पाठ *

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं व म ह सं तं ववं मंम हह सस तत पर्प झंझं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रांद्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्रीं क्रों मम पापं खंडय २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ श्रीघ्रं कुरु २ ॐ नमोऽर्हझंक्ष्वींक्ष्वीं हं स झ व ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः असिआउसाय नमः ॥ मम पूजकस्य ऋद्धिं वृद्धिं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः ठः मम श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु कांतिरस्तु कल्याणं अस्तु मम कार्य सिद्ध्यर्थं सर्व विघ्न निवारणार्थं श्रीमद्भगवते सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्य नाथार्चित पादपद्म अर्हत परमेष्ठि जिनेंद्र देवाधि देवाय नमो नमः मम श्री शांति

* ए स्तोत्र प्रातःकालमें उठकर पवित्र हो कर २१ पढगा सर्व विघ्न शांति होय

देव पादपद्म प्रसादात्सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धन धान्य समृद्धिरस्तु श्री शांतिनाथोमां प्रति प्रसीदतु श्री वीतराग देवोमां प्रति प्रसीदतु श्री जिनेंद्र परम मांगल्य नामधेय ममेहामुत्रच सिद्धि तनोतु ॥ ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते श्री चिंतामणि पार्श्वतीर्थ कराय रत्नत्रय रुपाय अनंत चतुष्टय सहिताय धरणींद्र फणा मौलि मंडिताय सम शरण लक्ष्मी शोभिताय इंद्र धरणींद्र चक्रवर्त्यादि पूजितपाद पद्माय केवल ज्ञान लक्ष्मी शोभित जिनराज महा देवाष्टादश दोष रहिताय षट् चत्वारिंशद्गुण सयुक्ताय परम गुरु परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य परमेश्वराय देवाय सर्व सत्वहित कराय धर्म चक्राधीश्वराय सर्व विद्या परमेश्वराय त्रैलोक्य मोहनाय धरणींद्र पद्मावती सहिताय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय अनेक दैत्य दानव कोटि मुकुट घृष्ट पाद पीठाय ब्रह्मा विष्णु रुद्र नारद खेचर पूजिताय सर्व भव्य जनानंद कराय सर्व रोग मृत्यु घोरोपसर्ग विनाशनाय सर्व देश ग्राम पूर राजा प्रजा शांति कराय सर्व जीव विघ्न निवारण समर्थाय श्री पार्श्व देवाधि देवाय नमो स्तुते श्री जिनराज पूजन प्रसादात्मम सेवकस्य सर्व दोष रोग सोग भय पीडा विनाशन कुरु २ सर्व शांतिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु २ स्वाहा । ॐ नमो श्री शांति देवाय सर्वारिष्ट शांति कराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा मम सर्व विघ्न शांतिं कुरु २ अमुकस्य मम तुष्टिं पुष्टिं कुरु२ स्वाहा श्री पार्श्वनाथ पूजन प्रसादात्मम अशुभान् पापान् छिंधि छिंधि मम अशुभ कर्मोदय जनित दुःखान् छिंधि छिंधि मम परदुःख जनोपकृत मंत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छल छिद्रादि दोषान् छिंधि २ मम अग्नि चोर जल सर्प व्याधिः छिंधि २ मारी कृतो पद्रवान् छिंधि २ डाकिनी शाकिनी भूत भैरवादि कृतो पद्रवान् छिंधि २ सर्व भैरव देव दानव वीर नव नारसिंह योगिनी कृत विघ्नान् छिंधि २ भुवन

वासि व्यंतर ज्योतिषि देव देवी कृत दोषान् छिंधि २ अग्निकुमार कृत विघ्नान् छिंधि २ उदधिकुमार सनत्कुमार कृत विघ्नान् छिंधि २ द्वीपकुमार भयान् छिंधि २ भिंधि २ वातकुमार मेघकुमार कृत विघ्नान् भिंधि २ इंद्रादि दश दिक्पाल देव कृत विघ्नान छिंधि २ जय विजय अपराजित मान भद्र पूर्ण भद्रादि क्षेत्रपाल कृत विघ्नान् छिंधि २ राक्षस वेताल दैत्य दानव यक्षादि कृत दोषान छिंधि २ नव ग्रह कृत ग्राम नगर पीडा छिंधि २ सर्व अष्ट कुल नाग जनितविष भयान सर्व ग्राम नगर देश मारी रोगान् छिंधि २ सर्व स्थावर जंगम वृश्चिक दृष्टि विष जाति सर्पादि कृत विष दोषान् छिंधि २ सर्व सिंह अष्टापद व्याघ्र व्याल वनचर जीव भयान् छिंधि २ पर शत्रु कृत मारणोच्चाटन विद्वेषण मोहन वशीकरणादि दोषान् छिंधि २ भिंधि २ सर्व देशपुर मारीः छिंधि २ सर्व गो वृषभादि तिर्यच मारीः छिंधि २ सर्व वृक्ष फल पुष्फल तामागी छिंधि २ ॐ नमो भगवति श्री चक्रेश्वरि ज्वाला मालिनि पद्मावति देवि अस्मिन् जिनेंद्र भुवने आगच्छ २ एहि २ तिष्ठ २ बलिं ग्रहण २ मम धन धान्य समृद्धिं कुरु २ सर्व भव्य जीवानंदन कुरु २ सर्व राजा प्रजा नदन कुरु २ सर्व देश ग्रामपुर मध्ये क्षुद्रोपद्रव सर्व दोषाय मृत्यु पीडा विनाशन कुरु २ सर्व परचक्र भय निवारण कुरु २ सर्व देश ग्राम पूर मध्य सुभिक्ष कुरु २ सर्व विघ्न शांति कुरु २ स्वाहा। ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वृषभादि वर्द्धमानात चतुर्विंशति तीर्थंकर महादेवाधिदेवाः प्रीयंता २ मम पापानि शाम्यतु घोरोपसर्गान्सर्व विघ्नान् शाम्यंतु। ॐ आंक्रों ह्रीं श्री रोहिण्यादि महादेव अत्रागच्छ २ सर्व देवता प्रीयतां २ ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती महादेवी प्रीयता २ ॐ आं क्रों ह्रीं श्री मणिभद्रादि यक्षकुमार देवाः प्रीयता २ सर्व जिन शासन रक्षक देवाः प्रीयता २ श्री आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति

शुक्र शनि राहु केतु सर्वे नवग्रहाः प्रीयंतां २ प्रसीदतु देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः ॥ १ ॥ यत्सुखं त्रिषुलोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं । अभयं क्षेम मारोग्यं स्वस्तिरस्तुव्मे सदा ॥ २ ॥ यस्यार्थं क्रियते कर्म समितिः नित्यमुत्तम । शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वं कार्येषुसिद्धिदाः ॥ ३ ॥ इति शांतिधारा पाठः ॥ ४६ ॥

इति शांतिधारा पाठः

१७ अथ ग्रहशांति स्तोत्रम्.

जगद्गुरु नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरु भाषित ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि लोकानासुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्रैः खेचराः ज्ञेयाः पूजनीयाविधि क्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैः धूपैः नैवेद्यै स्तुष्टि हेतवे ॥ २ ॥ पद्म प्रभस्य मार्तंड चद्रश्चद्र प्रभस्य च वासुपूज्ये भूमि पुत्रो बुधोप्यष्ट जिनेषुच ॥ ३ ॥ विमलानत धर्मीराः शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा । वर्द्धमानस्तथै तेषा पादपद्मेबुधन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजित सुपार्श्वाश्चाभिनंदन शीतलौ । सुमतिः संभवः स्वामी श्रेयासश्चैषुगीष्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः सुव्रतस्य शनैश्वरः ॥ नेमिनाथे भवेद्राहुः केतुः श्री मल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जन्माँल्लग्नेच राशौच यदा पीडति खेचराः। तदा संपूजयेद्धीमान् खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥ पद्मप्रभ जिनेंद्रस्य नामोच्चारेण भास्कर ॥ शांतिंच तुष्टिंच पुष्टिंच रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ ८ ॥ चंद्रप्रभ जिनेंद्रस्य नाम्ना तारागणाधिप ॥ प्रसन्नो भव शांतिंच रक्षांकुरु जयं ध्रुव ॥ ९ ॥ सर्वदा वासुपूज्यस्य नाम्ना शांतिं जयश्रियं ॥ रक्षां कुरुधरा सूनो अशुभोऽपि शुभो भव ॥ १० ॥ विमलानत धर्मीराः शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा ॥ महावीरश्च तन्नाम्ना शुभोभूयाः सदा बुधः ॥ ११ ॥ ऋषभाजित सुपार्श्वाश्चाभिनंदन शी–

तलौ ॥ सुमतिः सभवः स्वामीं श्रेयांसश्च जिनोत्तमः ॥ १२ ॥ एत चीर्थ कृतां नाम्ना पूज्यो शुभः शुभोभव ॥ शांतिं तुष्टिंच पुष्टिंच कुरु देवगणार्चित ॥ १३ ॥ पुष्पदन्त जिनेंद्रस्य नाम्ना दैत्य गणार्चित ॥ प्रसन्नो भव शांतिंच रक्षा कुरु २ श्रिय ॥ १४ ॥ श्री सुव्रत जिनेंद्रस्य नाम्ना सूर्यांगसंभव । प्रसन्नो भव शांतिंच रक्षां कुरु २ श्रियं ॥ १५ ॥ श्री नेमिनाथ तीर्थेश नामतः सिंहिका सुत । प्रसन्नो भव शांतिं च रक्षा कुरु२ श्रिय ॥ १६ ॥ राहो सप्तमराशिस्थ कारेण दृश्य संवरे । श्री मल्लीपार्श्वयोर्नाम्ना केतो शांतिं जय श्रिय ॥ १७ ॥ नव कोष्टक मालेख्य मडल चतुरस्रक । ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या वक्ष्यमाणक्रमेणतु ॥ १८ ॥ मध्येहि भास्करः स्थाप्यः पूर्वदक्षिणत शशी । दक्षिणस्यां धरासूनुर्बुधः पूर्वोत्तरेणच ॥ १९ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः पूर्वस्या भृगुनदनः ॥ पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो राहुर्दक्षिण पश्चिमे ॥२०॥ पश्चिमोत्तरत केतुरिति स्थाप्या क्रमाद्ग्रहाः ॥ पट्टेस्थालेऽथ वाग्नेय्यां ईशान्यातु सदा बुधैः ॥ २१ ॥ आदित्य सोम मगल बुध गुरु शुक्राः शनैश्चरो राहुः । केतु प्रमुखा खेटाः जिनपति परतोऽवतिष्ठतु ॥२२॥ पुष्प गधाद्यिभिर्धूपै नैवेद्यैः फल सयुतैः । वर्ण सदृशदानैश्च वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ २३ ॥ जिन नाम कृतोच्चारा देश नक्षत्र वर्णकै । पूजिता' सस्तुता भक्त्या ग्रहाः सतु सुखावहा. ॥ २४ ॥ जिननामाग्रतः स्थित्वा ग्रहाणा शांति हेतवे । नमस्कार शत भक्त्या जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ २५ ॥ एव यथानामकृता भिषेकै अलिपनैर्धूपन पूजनैश्च ॥ फलैश्चनैवेद्य वरैजिनानां नाम्ना ग्रहेन्द्रावरदा भवतु ॥ २६ ॥ साधुभ्यो दीयते दान महोत्साहो जिनालये । चतुर्विधस्य सघस्य बहु मानेन पूजन ॥ २७ ॥ भद्रबाहु रुवाचेद पचम श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रभावतः पूर्वात् ग्रह शांतिरुदीरिता ॥ २८ ॥

इति ग्रहशांति स्तोत्रम्.

यंत्रम्.

बुधः	शुक्रः	शशि
गुरुः	सूर्य	भौम
केतु	शनि	राहु.

१८ अथ उवसग्गहर स्तोत्रम् *

ॐ उवसग्गहरं पास पास वंदामि कम्म घण मुक्क विसहर विसनिन्नासंमगल कल्लाण आवास ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंत कठे धारइ जो सयामणुवो तस्सग्गह रोग मारी दुष्ठ जरा जंति उव रसाम ॥ २ ॥ चिट्ठउदूरेमतो तुज्झपणा मोवि बहु फलो होइ नर तिरिए सुविजीवा पावंति न दुःख दोहग्ग ॥ ३ ॥ ॐ तुवदंसणेण स्वामीपणासेइ रोग सोग दोहग्ग कप्पतरु मेव जाई तुव दंसणेन सफल हेउ स्वाहा ॥ ४ ॥ तुह समत्ते लद्धे चिंतामणि कप्पपाय वभ्भ हिये पावंति अविघेण जीवा अयरा मरठाणं ॥ ५ ॥ अमरतरु कामधेनु चिंतामणि काम कुंभ माईये श्री पार्श्वनाह सेवा गयाण सव्वेवि दिसंतु ॥ ६ ॥ नमयेण पाणमसेईय मपावेण धरणी नागेंद सिरप उमराय कलिय पास जिणद नमसामि ॥ ७ ॥ हय सथुवो महायस्स भत्तिभर निभ्भरेण हियेण ताव देव दिज्ज वोहिं भवे भवे पास जिणचद ॥ ८ ॥

इति उवसग्गहर स्तोत्रम्.

* ए स्तोत्र मोते वख्त तीनवार पढकर शयन कीजे अशुभ स्वप्न नहि आवे इत्यादि बहुत गुण है विशेष गुरु आम्नायसे जानिये

१९ अथ जिनवानी अष्टक.

जिनदिश जाता जिनेंद्रा विख्याता । विशुद्धा प्रबुद्धा च त्रैलोक्य माता ॥ दुराचार दुरिताहरा शंकरानी । नमो देवि वागेश्वरि जैन वाणि ॥ १ ॥ सुधा धर्म ससाधिनी धर्मशाला । सुधा ताप निर्नाशिनी मेघमाला ॥ महा मोह विध्वसिनी मोक्षदानी । नमो देवि० ॥ २ ॥ अक्षय वृक्ष शाखा व्यतीताभिलाषा । कथा संस्कृता प्राकृता देश भाषा । चिदानंद भूपालकी राजधानी । नमो देवि० ॥ ३ ॥ समाधान रूपा अनूपा अक्षुद्रा । अनेकान्तता स्यादवादांक मुद्रा ॥ त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी वखानी । नमो देवि० ॥ ४ ॥ अक्रोधा अमाना अदंभा अलोभा । श्रुत ज्ञानरूपा मति ज्ञानशोभा । महा पावना भावना भव्यमानी । नमो देवि० ॥ ५ ॥ अतीता अजीता सदा निर्विकारा । विषय वाटिका खण्डनी खड्ग धारा । पुरा पाप विच्छेदिनी कर्तृ कृपाणी । नमो देवि० ॥ ६ ॥ अगाधा अबाधा निरध्रा निराशा । अनंता अनादीश्वरी कर्मनाशा निशंका निरंका चिदंका भवानी । नमो देवि० ॥ ७ ॥ अशोका मुदोका विवेका विधानी । जगज्जंतु मित्रा विचित्रा वसानी ॥ समस्तावलोका निरस्ता निदानी । नमो देवि वागेश्वरि जैन वाणि ॥ ८ ॥

इति जिन वाण्यष्टकम्.

---

२० अथ परमात्मा स्तोत्रम्

अपादस्य पाद कथ वे प्रणाम । अकर्णस्य कर्णे कथं गीत नृत्यं
अकंठस्य कंठ कथं पुष्पमाल । विना नासिकायां कथ धूपगंध ॥१॥
स्वय सिद्ध बुद्धं पर विश्वनाथ । न देव न बंधु न कर्म न कर्ता
नअंग न संग न इच्छा न काम। चिदानंदरूप नमो वीतराग ॥२॥

नवधो न मोक्षं न रागादि लोकं। न जोगन भोग न व्याधि न शोकं। न क्रोध न मानं न माया न लोभं। चिद्रानद० ॥ ३ ॥ न हस्तो न पादो न घ्राणं न जिव्हा न चक्षु न कर्ण न वक्त्रं न निद्रा। न स्वाद न खेद् न वर्ण न मुद्रा। चिदानद० ॥ ४ ॥ न जन्म न मृत्युर्न मोड न चिंता। न क्षुद्राद् नभीत नकुप्य न तुदा। न स्वामी न भृत्यं न देव न मर्त्यं। चिदानद० ॥ ५ ॥ त्रिदंडे त्रिखण्डे हरे विश्वव्याधी। हृषी केश विद्वांस कर्मारिजाले। न पुण्य न पाप न अक्षादि भाण। चिदानंद० ॥ ६ ॥ न बाल्य न वृद्ध न विद्व न मूढा। न खेद्य न भेद्य न मूर्ति न मीहा। न कृष्ण न शुक्लं नमोह न तद्रा। चिदानंद० ॥ ७ ॥ न आद्यं न मध्य न अन्त्यं न अन्या। न द्रव्यं न क्षेत्रं न द्रष्टो न भावाः। न गुर्वो न शिष्य न आद्य न हीन। चिदानद० ॥ ८ ॥ इद ज्ञानरूप स्वय तत्त्ववदी। न पूर्ण न शून्य स चेतन स्वरुपी। अन्योन्य भिन्न परमार्थमेक। चिदानंद० ॥ ९ ॥ आत्माराम, गुणाकरं गुणनिधेः चैतन्य रत्नाकर। सर्वे भूत गतागते सुख दु ख ज्ञातास्त्वया सर्वगो ॥ त्रैलोक्याधिपतिः स्वयं स्वमनसा ध्यायति योगेश्वरा। वंदे त्वा हरिवंश हर्षहृदये श्रीमानभ्युद्धर्चित ॥ १० ॥

इति परमात्म स्तोत्रम्.

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ प्रथम खण्डे
स्तोत्राभिधं प्रथम प्रकरणम् ॥





अथेदमारभ्यते द्वितीय प्रकरणम्–छंद.



२१ अथ पार्श्वनाथ छन्दम् दोहा.

सारद मात मया करी ॥ आपो अविचल वाणि ॥ पुरीसादाणी. पास जिण ॥ गाउ गुणमणि खाण ॥१॥ अद्भुत कौतिक कलियुगें ॥ दीसै एह अदभ ॥ अरथी अधर रहै सदा ॥ अंतरीक थिर थभ ॥२॥ महिमा महिमडल सवल ॥ दिसै अनुपम आज॥अवर देव सूता सवे॥ जागें तूं जिनराज ॥ ३ ॥ एक जीभ करि किम कहूं ॥ गुण अनत भगवत ॥ कोड जीभ करि को कहै ॥ तोहि न पावे अंत ॥ ४ ॥ तूं माता तूहिज पिता ॥ भ्राता तूहिज बधु ॥ मन धर मुज उपर करो करुणासिंधु ॥ ५ ॥

॥ अथ अडिल छन्द ॥

करि करुणा करुणा रससागर ॥ चरणकमल प्रणमैं नित नागर। निरमल गुणमणि गुणवैरागर । सुरगुरु अधिक अवै मति आगर ॥ १ ॥ काम कुभ जिम कामितदायक । पदप्रणमैं सुरवरनर नायक । मथित सुदुर्मथ मनमथ सायक । अष्ट कर्म रिपुदल्ल वल घायक ॥२॥ नवनिधि तुज नामैं । मनवछित सुख संपति पामैं । जे प्रभु पद पकज

शिरनामैं । बकुलासुर सारै तसुकांमै ॥ ३ ॥ बकुल वसै विपहारी व्रात ॥ वरसिरपुर वसुधा विख्यात ॥ जिहा राजै जिनवर जगत्रातैं ॥ अंतरीक अनुपम अवदातं ॥ ४ ॥

छंद.

अवदात जेहनो जगत्र जाणै । गुण वखाणे सुर धणी । परसाद प्रभुनै प्रगट परभव ॥ पामिये प्रभुपद फणी ॥ महिमा वधारै विघन वारै करै सेवा अति घणी ।.तुम नाम लीनो रहै भीनो । अवर देव है अवगुणी ॥ १ ॥ नरनाथ कोडी हात जोडी । मानमोडी इम कहै । प्रभुनाथ चरणे जिके सरणे रहै ते परमपद लहैं । वलि जेह उतकट विकट संकट निकट नोवे ते वली ॥ भय आठ मोटा निपट खोटा दूरथी जाये टली ॥ २ ॥

॥ छंद चाल. ॥

जे रोग भयकर दुष्ट भगंदर । कुष्ठ खयन खस खास हरिखा अंतर्गल वलीमल ज्वर विषम ज्वर जाये नाश ॥ दिसै अति माठा वलि । व्रण चाठा नाठा जाये तेह । तुम दर्शन स्वामी शिवगत गामी चामीकर समदेह ॥ १ ॥ जलनिधि जलगज्जे प्रवहण भज्जे वज्जे वायकुवाय । थरहर तिहां [illegible] पुज्जे कीजे बहुल उपाय ॥

वीहे जण जाता देखी राता लोयण तस विकराल ॥ कीरे गुणग्यानें प्रभुनें ध्यानें अहिया इविसराल ॥ ४ ॥ पापें पग भरता हिंडे फिरता करतां अति उद्माद ॥ धोटिक जिम छेटे अति आकूटे लूटे निपट निपाद ॥ वनमाजे पडिया चोरे नडियां अडवडियां आधार ॥ इस अवसर राखे कुण प्रभु पाखे भाखे वचन उदार ॥ ५ ॥

छद.

मयमत्त मयगल अतुल वल धरजा सदरसण भज्ज ए ॥ केसगिंसिंह अवीह अति है मेहमय वडगज्ज ए ॥ विकराल काल कराल कोपें सिंहनाद विमुकए ॥ सुखधाम प्रभु तुम नाम लेता तेहसींह नदुक ए ॥ १ ॥ गलगाट करतो मद झरतो कोप धरतो धावए ॥ भय रोश रातो अधिक मातौ अति उजातौ आव ए ॥ घर हाट फोडै वध तोडै मान मोडै नृपतणु । तुम नामैं ते गज अजा थावै वसै आवै अति घणु ॥ २ ॥ रिणमाहि सूरा भीडे पूरा लोह चूराचूर ए ॥ गजकुंभ भेदे सीस छेदे वहे लोहित पूर ए ॥ दल देखि कपे दीन जपे करय प्रवल पुकार ए ॥ तुमस्वामि नामै तिणै ठामै वरते जयजयकार ए ॥ ३ ॥ भय आठ मोटा दुष्ट खोटा जेम रोटा चूर ए ॥ अश्वसेन धोटा तुज प्रसादे मनमनोरथ पूर ए ॥ महिमाहि महिमा वधे दिनदिन चंद्रने सूरिज समो जसजाप करता ध्यान धरतां पार्श्व जिनवर ते नमो ॥ ४ ॥

उद चाल.

छाया पडल जाल सव कांपें ॥ आल्या तेज अधिक नलि आंपें ॥ पन्नगपति प्रभुनें परतापें ॥ अविचल राजकाज थिर थापें ॥१॥ पद्मावति परचो नह पूरे प्रभु प्रशाद संकट सवि चूरें॥ अलवत अलगी

जावै दूरे लक्ष्मी घर आवै भरपूरे ॥ २ ॥ महिमंडल मोटो तूं देव चोसट इंद्र करै तुज सेव ॥ त्रिभुवन ताहरो तेज विराजे जस प्रताप जगत्रमें गाजे ॥ ३ ॥ केता देश कहूं वलिनामें प्रभुनी कीरत जिण जिण ठामें ॥ पुरपट्टण सवाहन गामें सुणता नाम भविक सुख पांमे ॥ ४ ॥

॥ छंद देशांतरी ॥

अग वग कलिग मरुधर मालवौ मरहट्टए। काश्मीर हूण हम्मीर हब्वस सवालख सोरठ ए ॥ कामरु कुरुण दमण देसै जपे तेरो जाप ए। इण देशे अविचल प्रबल प्रतपे पास प्रगट प्रतपे ए ॥ १ ॥ लाट ने कर्णाट कन्नड मेदपाटमे वात ए। वलिनाट धाट वैराट वागड वछ कछ कुशात ए ॥ सतालिंग गग फिरग देशे जपे तेरो जाप ए। इण देश० ॥ २ ॥ वलि ओड त्रोड सगौड द्राविड चोड नट महा भोट ए। पचालने वगाल देशे सवर बब्बर कोट ए ॥ मुलताण मागध मगध देशे जपे तेरो जाप ए ॥ इण देश० ॥ ३ ॥ नमि आडलाड कर्णाल कोशल बहुल जंगल जाणिए। खुरसाण रोम अइराक आरब कुरु करात वखाणिए। कुरु अच्छ मच्छ विदेह देशैं, जपे तोरो जाप ए ॥ इणि ॥ ४ ॥ काशीए केरल अनेके कर्ट, सुरसेन सदिलए। गंधार गुज्जर गाजणो, वलियार गुड विदर्भए । कनविर नै सोवीर देशै, जपै तोरो जाप ए ॥ इणि ॥ ५ ॥ नैपाल नाहल, अम्मल कुंतल, अज्ज कज्जल देशैए। प्रतिकाल चिल्लन मलय सिंहल, सिंधु देश विसेशए, खसरवाण चिन सिलौन देसै, जपै तोरो जाप ए ॥ इणि ॥ ६ ॥ कनवीर कानड कुलख कावल वुलख भग विभंगए। मलहार मधुहिल्लार हमंज, पियगु हिंगुलं वगए। वलि वसाणनै टस्साण देशैं जपै तोरो जाप ए ॥ इणि० ॥ ७ ॥

॥ छंद छप्पय ॥

प्रतपै प्रबल प्रताप पाप संताप निवारण। दश दिश देशविदेश। भमता भविजन सुखकारण। रोग सोग सवी टलै मिले मनवांछित भोगए। दुख दोहग दारीद, दुर सवि टलै वियोगए। स्वर्ग मृत्यु पाताल्में श्रीभुवनै प्रगटयो सदा, श्री पार्श्वनाथ प्रताप, आपै अविचल संपदा ॥ १ ॥

॥ छन्द चाल ॥

अविचल पद आपै थिर कर थापै। जग व्यापक जिनराज। उपद्रव सव नाशे। सुरगुण गासैं, वस थायें नरराज, दीपै परदीपै रिपुने जीपै, दीपै जिम दीनराज, पदपंकज पुजै प्रभुने शिक्षया, सीझे वंछित काज ॥ १ ॥ तू छे मुज नायक, हु तुज पायक, लायक तुज समान, कुण छै जगमाहि, साहिरा राखे आप समान, तुहिज ते दीसें विश्वावीसैं हीयडु हीसैं हेत, देखुहू नयणें तुम हिज वयणे निरमल गुणमणि गेह ॥ २ ॥ सीदूर सुडाला मद मतवाला, दुदाला दरवार। झुलै मन गमता रंगे रमता, उच्छालता वार, तुरकी तेजाला आगल पाला, झुझाला तरवार, झालीनै दोडै होडा होडै, जोडै बहु परिवार ॥ ३ ॥ हयवर पाखरीया, रथ जोतरीया, घूघरना घमकार, सोवन चितरीया, नेजा धरिया, परवरीया असवार, गज बैठा चाले, रिपुमन साले माले लक्ष्मीनो सार, एहवी रिद्धी पामै प्रभुने नामे सफल करै अवतार ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अवतार सार संसार माहि, तेह जननो जाणिए, धन कमाई

धर्म स्थानक जिनै लक्ष्मी मांनिए. ॥ १ ॥ सुंदर रूप सुहामणो, श्रवण सुणी नरनार ॥ कोडी करजोडी रहै, दरशननें दरबार ॥२॥

॥ छन्द अर्ध नाराच ॥

भीयगुवन निलतन देखी मनमोहए सनूर सूरनुरतैं, अधिक तेज सोहए, अमदचद वृदतैं फलाकलाप दिप्पए सुरिंद कोटी कोटी तैं जिनद जोर जिप्पए ॥ १ ॥ अफूल फूल बांणकै, कवान तो न लग्गए, दुजोध क्रोध जोध वैरी मांन छोडी भगए, अदीन तूसदीन बधू, देहि मुख मग्गए, शरण जांण स्वामीके, चरण रू विलग्गए ॥ २ ॥ सुजोति २ मोतितें, सुदत पत दिप्पए, गुलाल लाल उष्टतैं, प्रवाल माल छिप्पए, सुवास वास वासतैं कपूर पुर भज्जए, प्रलंब बाहु बाहुतैं, मृणाल नाल लज्जए ॥ ३ ॥ अनुपरूप देखतें जिणंद चद पासए, पादारवृंदवृंदतें कुपापव्याप नासए, दारिद्र चुरचुरके प्रभु पुर मोरी आसए, अनाथनाथ देई हात कर सनाथ दासए ॥४॥ कमठ हठ गंजनो कुकर्म कर्म भजनो, जगति नाति रजनो, मदद्रुम प्रभंजनो कुमती मति मंजनो, नयन युग्म खजनो, जगत्रय अगजनो सो जयो पार्श्वनिरंजनो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पास एह निजदासनी, अवधारो अरदास, नयणे देखाडी दरस, पुरो पुरण आस ॥ १ ॥ चकत्रा चाहे चितसू, दिनकर दरसण देव, चतुर चकोरी चंद जिम, हु चाहु नितमेव ॥ २ ॥ निसभर सुतां निंदमें, दीठो दरसण आज, परतिख देखाडी दरसण, सफल करो मुज काज ॥ ३ ॥ तुम दर्शन सुख संपदा, तुम दर्शन नवनिद्ध, तुम दर्शनथी पामियें, सकल मनोरथ सिद्ध ॥ ४ ॥

॥ छन्द चाल अडयल पाधडी ॥

अतरिक प्रभु अतरजामी दिजे दर्शन शिवगत गामी, गुण केता कहिये तुम स्वामी, कहता सरस्वती पार न पामी. कियो छंद मदमति सारु, हितकर चि मे धरजो गारु, बालक यटवा तदवा बोले, माताने मनें अमृत तोलै ॥ २ ॥ कियो कवित चित्त हुल्लासें, साभलतां सब आपद नासै, सपद सघली आवै पासें, भाव विजय भणते इम भासै ॥ ३ ॥

॥ छन्द छप्पय ॥

कियो छद आनद हृद मन माही आणि, साभलता सुखकद, चंद जीम सीतल वाणी, श्री विजयदेव गुरुराज, आनतश गनगर गाजे, श्री विजयप्रभ नाम काम समरुप विराजे, गंणधर दोय प्रणमी करी शुणयो पास अशरण शरण, श्री भाव विजय वाचक भणे जयो देव जयजय करण ॥ १ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्दम्.

---

२२ अथ पार्श्वनाथ स्वामिनो शिलोको

प्रणमू परमातम अविचल अवतारू ॥ अरिहत सिध्धाना नाम उचारू, सिमरू आचारज मोटा उपाध्या ॥ साधू आतमरा कारज साध्या ॥ १ ॥ नगरी अलकापुर वाणारसि सोहै ॥ देखता प्रगारा मनडाजी मोहै ॥ देश देशामें काशी वड देशो ॥ नरदड अकरारो नहि लवलेशो ॥ २ ॥ राजै महाराज अश्वसेन राजा, साझीतां वा-

गल वाजै नित वाजा, कासी राजा रोकैसूं परमाणो, देश सघलामै वरते छे आणो ॥ ३ ॥ मणि माणिक मोती भरीया भण्डारो, अष्ट सिद्ध नवनिधरो नही पावे पारो, अति घणी सुंदर ओपे ठकुराणी, साऊ वामादे माता पटराणी ॥ ४ ॥ जिणरी कूंक्षे ते जगन्नाथ जायो, पारस कुमर जगनामक हायो, तीन भवनरो नायक नाथो, मुगतर मणीनें घाली छैं बाथो ॥ ५ ॥ चोसठ इंद्रानो पुजनीक देवो, निसदिन आगल तो सारेजी सेवो, दश भवारो वैरी गैरी सवायो, कमठ सन्यासी तापस आयो ॥ ६ ॥ चिहुं दिश अगनि धुखती ज्वाला, सिरपर तो सोहै सूरज वडाला, इसडी पचाग न तपस्या तपतो, माला रुद्राक्षनि जाप जपंतो ॥ ७ ॥ गगातट ऊपर आसण कीनो ॥ जोगी जप तपमे अति घणो भीनो, सीस जटानें मुकुट संजुटी ॥ भांग धत्तुरा पिया अति बुटी ॥ ८ ॥ आसण पद्मासण पूरण छायो ॥ लेप भस्मीसू धसमस कायो ॥ पहिरण पावडियां अगरू पडीयां ॥ वज्र कसोटो कसियो छेकडियां ॥ ९ ॥ चक्षु चोला वेहू झलके जीडोला ॥ श्रृगी सैली वभूतरा गोला ॥ तिखो त्रिसूलो एक अधिक विराजै, भालचंद सरिखोभल छाजै ॥ १० ॥ सोहै वाघंबर काषवर सोहै, देख्या अवधूतने घणा मन मोहै, अवधूतो इसडो कोइ न आयो, जस तपसीरो घणो सवायो ॥ ११ ॥ दोडी दुनीया सहूदर सण आवै, जलज्यू तो जोगी ज्वालामे नावै, इसडी तो वाता अब आइ दरवारो, कहै वामा सुण पारस कुमारो ॥ १२ ॥ जहा जोगीसर जाप जपतो, दरसणरी मनमें घणी छै खतो, चढीया वामादे माता चकडोलै, चाकर सहिल्या चामर डोले ॥ १३ ॥ हुकुम मातोरे पारस कुमारो, गयवर ऊपर हुवा असवारो, शरणै आयारो साहकसामी, जीव साराणे अंतरजामि ॥ १४ ॥ हस्ती हल्कारै गंगातट आया, कपटी कमठरी देखी सहुमाया, जितरे तो जिनवर ग्यान कर जोयो,

सुणदी तपसि एक मांहरी जीवायो ॥ १५ ॥ एकाग्र चित्तशू सांभलजे भायो, इसडो तपतो मांहरी दायन आयो, इणविध पचांगनि तो मततापो, जारोपिण इद्रि राखने आपो ॥ १६ ॥ छांडो माया-मद दयाचित धारो, सिद्ध समन्यासू होसी निसतारो, इतरो तो सुणने कमठज बोलै, आतुर तो ऊफणतो आखज खोले ॥ १७ ॥ गुस्से भरियोनें धडहड धूज्यो, किड किड दानानै गिड गिड गूज्यो, बोले वडवडने वके वदनूरो, कडकडतो आख्यादिसै करूरो ॥१८॥ राजकुवर तूं दिसे अवतारो, अब तो लेवेगा अत हमारो, खडा[1] करते हो हमसे तुम सेखी, कैसी तपस्यामें हिंस्या तुम देखी ॥१९॥ कुडी[2] तो कुमगकारा[3] नहि कीजे, जगली जोग्यारी आळ न लीजे, वरजे वामादे ऊभा परचावै, रख्खे तपसि कोइ हुन्नर[4] चलावै ॥ २० ॥ इतरे लकडारां टुकडा कराया, बलता हुताशन नाग जलाया, अतरमहुरतमें जीवन काया तिहा प्रभु पारस नाम सुणाया ॥२१॥ तडफडता पडिया बाहिर फुनिंदो, पायो अमरापुर हुवा धरणिंदो, हिव तपसी तो हूवो छैहैराणो, पुरी परखदामे हुवो खीसाणो[5] ॥ २२ ॥ धूखती धूणी ले देरी विखेरी, अवतो खबर है पारस तेरी, जल जल तो वलतो आफलतो ऊठ्यो, प्रभुजी ऊपर तो घणोहि रूठ्यो ॥ २३ ॥ हमारी तपस्यागे अज सधायो, पारसकुमर तू रहो सुखदायो, काया कसटरो पिंड परमाणो, चूकू तो नही कुमर सूंटाणो ॥ २४ ॥ काळे मासे करीने काळो, उपज्यो कमठासुर मेघजमालो, प्रभुतो छे जिनवर मोटा उपगारी, लेसी दीक्षानें उतरसी भवपारी ॥ २५ ॥ नाग नागणीनो कीयो नीसतारो, जस हुवो छै सघले संसारो, लोक नगरीरा सघला सुख पाया, हिव तो कुमरजी महलामें आया ॥ २६ ॥ इम करतां उतऱ्यो वरस गुण तीरो, आप आलोचे

१–दिल्लगी, २–झूठी, ३–निंदा, ४–विद्या, ५–सरमिन्दा.

मनमे जगदीशो, पहिलां तो वरसीदानज दीजे, पाछे तो अवसर दीक्षाजी लीजे ॥ २७ ॥ सोलै मासे इक कनक कहीजे, कनक सोलारो मोनइयो लीजे, आठ लाख सोनइया एकज कोडो, नित प्रत देवे इतरारी जोडो ॥ २८ ॥ इसडा छमछरी दानज दीया, जिनवर ते विसमा सजम लीया ॥ तिनसो मुनिवर तो हुवा तिणवारो, लारै जुरै छे सघलो परिवारो ॥२९॥ इक दिन तो प्रभुजी सिवद्रिग वनमे, ध्यान धरीयो छे अविचल मनमे ॥ अब तो कमठासुर ध्यान करजोयो, कटै हमारा दुसमण होयो ॥ ३० ॥ रूठो कमठासुर बादल[1] चलावै, अवर पहाडा सिखर उठावे, बादल झडियानै छायो आकासो, जाणै भाद्रवडो वरसै जीमासो ॥ ३१ ॥ बीजल वावलने अति घणु गाजै, पुणगा[2] पाहण[3] ज्यो पडती जीराजे, पडै पाणीना पारस परनाला, वसमसिया डूंगर जारा नक चाला ॥ ३२ ॥ काला अकाल्ला मचीया वरसाला, वाला खालानें चलीया वहाला, जिनवर तो जलमें नासा लग कलिया, ध्यानें अचला चल नहि जील्लिया ॥३३॥ इतरै तो आतुर धरणेंद्र आया, पाय लागीनें अधर उठाया, फुण तो हजारा ऊपर कीया, लुल लुल प्रभूना वारणा लीया ॥३४॥ अब तो मनमाहे दीयो ओलंभो, ओ तो छै दुष्टी मेघ जमालो दश भवारो वैरी कमठासुर दीसे, सिर सोलै वजर आणी अतरीसे ॥३५॥ भूंगा कमठासुर घणो पिछताया, में तो जिनवरनें यूंही सताया, रानो छे प्रभुजी मुगतरा प्यारा, रागद्वेषसू होय वैठान्यारा ॥ ३६ ॥ इसडो जाणीने लागो छे पावो, प्रभुजी हमारो पाप खमावो, तब तो कमठासुर इंद्र देवो, सारै प्रभुजीनी घणीजी सेवो ॥ ३७ ॥ आपणे थानक पुहता तिणवारो, फिरै तो जिनवर कियो विहारो, दीन तर्यासी छद्मस्थ रहीया, बावीस परिसह करडा जी सहिया ॥ ३८ ॥ आठू

१ वायु २ पाणीकी बूंदें ३ पाषांण

करमारो कीयो छै नासो, पा'ऊे तो केवल हूओ परकासो, वाणी पैंतीसेने अतीसे चउतीसों, इणपरतो विचरे ते श्रीसमा जगदीसो ॥ ३९ ॥ ज्या ज्या जिनवरजी पगल्या पधरावे, ए वातां आगासूं नासी जी जावै, सोसो कोसामैं न पडे दुकालो, मोटा रोगांरो नहि हुवै चालो ॥ ४० ॥ कोड हलुकर्मी श्रावकरे पारणो पावे, देवन मोनइया कोडा वरसावै, सुरपत भगवन्तनी सारै नितसेवो, लाभै अण हुते सत लख देवो ॥ ४१ ॥ देव देवी मिल दरसण आवै, रत्न कचनरो त्रिगडो रचावे, वाणी धुकारो उठे अति भारी, परखदा बारेही समजे तिणवारी ॥ ४२ ॥ गावा नगरा पुरसो है विचरन्ता, भागे भव जीवा माले भगवन्ता, गुणना आगरने सागर गम्भीरो, लडिया करमासू भारी रणधीरो ॥ ४३ ॥ अनेक जीवारा काज साऱ्या, भवसागरसू पार उताऱ्या, एकसो वरसारी पाई छे उमर. जाट तो चढीया समेतगिर शिखर ॥ ४४ ॥ तिथ आठमने श्रावण शुद मांसो, प्रभुजी सिद्धामें कीनो छे वासो, ऊणही सिद्धानो वेसू वखाणो, पयुहीक सूतनो मतपिण आणो ॥ ४५ ॥ सिद्ध शिलारो इसठो उनमानो, उडै भगवन्तरो अविचल थानो, लम्बी पहुली परतप तालिस जोयण, कथियो गुणवता इसटो जीमोयण, निचम तो जाडी धणीजी सघली, छे छडै माखीकी पाखथी पतली, सोहे सिद्धाका अनंत श्रेणी, सम्या शिवपुरनी नहि आवे केहणी ॥ ४७ ॥ पाणी पवनरो नहि लवलेशो, नहि अधारो नहि रवि प्रवेशो, नही ऊनाल्गे नहि वरसालो, नहि सीयालो नहि वरसालो ॥ ४८ ॥ हासा रमतरो नहि उपवासा, रमट पढ जीवाराजोरे तमासा, को नहि आवे कोइ किणरे नहि जावै, खावे पीवे नहि किणने नहि भावे ॥ ४९ ॥ चाकेर ठाकुर तो नहि उण ठोडो, रूपो बडेरो नहि कोइ ल्होडो, वरतें सिद्धांना सवे समभावें, जठै तो प्रभुजी आतम सुख पावे ॥ ५० ॥

भणियो शिलोको भगवंतरो भलो, प्रणमैं पंचोली जोरावर मलो, पल पलमे होज्यो त्रनणा हमारी, मेहर राखी ज्यो मो पर थारी ॥ ५१ ॥ संवत अठारे वरस इकुपन्नो, पोसवद दशमीनो मोटो के दिन्नो, वांचे भणे ने सीखैसदाइ, तिणरे तो कु मणा नही रहै कांइ ॥५२॥

इति पार्श्वनाथ (शिलोको).

२३ अथ पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद (सायंकालका)

अचिंतचिंत चिंतामणी श्री पार्श्वनाथ जगमांहे भणिए ॥ जगरक्षण जगसार्थवाह जगवधव थुणिए॥ जिनवर जगगुरु जगनाथ जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ काम कुंभ कलि काल हुवा प्रणमू सिर नामी ॥ त्रिभुवन तारण वीनवूं हे ॥ श्री परमेसर पास ॥ चरण कमल प्रभु भेटतां प्रभू मुज पुरोजी आस ॥ १ ॥ अनतग्यान अनत गुण जिनें सरभणिए लक्ष जीव्हा पार पावे नही एकण किम थुणिए॥ सब वालूकण क्षेत्र छंट ते अलिख अपारा ॥ तिणथी अधिक अनंतगुण श्री॥ किम पावू पारा ॥ तारा गुणतो सुग्गम ए सव सायरको नीर॥ श्री मुख सरसती वर्णवे ॥ तोहि न पावेजी तीर ॥ २ ॥ ग्यान रहित हू मानवी तुम गुण किम जाणू ॥ मति पाखे वरणवू ॥ संक्षेप वखाणूं ॥ कोयल सुरतरु अंबडाल अवा वहु सगते ॥ तिण दृष्टांते तुम प्रसाद गुण वोल्सू भगते॥ रोम रायतन हुलसियोए हिवडे हरप न माय॥ अति आनंदें ऊचरूं तिरूं जिण तुज सुप साय ॥ ३ ॥ चमर सिंघासन छत्र तीन सिर ऊपर सोहै ॥ वाणी दुदुभी नाद सुणी सुरनर मन मोह ॥ पूठें भामडल भलो जसकीरत कारण ॥ फलियो फूल्यो आशोक वृक्ष सब दुःख निवारण वाणी गुण पैतिस अरूए ॥ वलि अतिशय चौतीस ॥ समोशरण कर शोभता ॥ तें प्रणमू जगदीश ॥ ४ ॥ रूपे जीत्यो मदनराय, तेजें अदीतो, लक्ष्मी जीती ऋद्धि

ऋद्धि जगमांही वदी तो॥ सोमपणामें चंद्र थकी प्रभू अधिक अपारा, तिणथी अधिक अनंत गुण किम पावू पारा, सागर जिम गंभीर वरुए श्री जोगेश्वरनाथ, कृपा करो सामी मुज भणी तारो त्रिभुवननाथ ॥ ५ ॥ हस्ती समरे कुजवन कोयल सहकारा ॥ चकवी समरे दिवसनाथ सतिया भरतारा, सायर समरे चद्रमा पपइया मेहा ॥ हंस सरोवर गऊ वछ जिम अधिक सनेहा ॥ मधुकर समरे मालतिए, बालक समरे माय, तिमहुं सिमरु दीनानाथको दरशन द्यो जिनराय ॥ ६ ॥ आभाले कागद करे मेरू जिम लेखण क्षीर समुद्र शाही करे लिखे ईन्द्र विचक्षण ॥ लिखतां पार पावे नही॥ में गुण किम जाणु, मति पाखें करि वर्ण व्याउनमान वखाणूं, मक्षेपे गुणमें थुणि आप श्री अर्हंत भगवन्त देव, करजोडी कवियण कहै प्रभु मुजे आपोजी सेव ॥ ७ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

२४ अथ पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद (प्रातःकालका)

नरेंद्र फणींद्र सुरेंद्र अधीशं । सतेंद्र सपूज्य भजेनायशीस मुनींद्रं गणींद्र नमे जोर हाथ । नमो देव देव सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ गजेंद्रं मृगेंद्र ग्रह्यो तू छुडावे । महा आगतेंआगतें तूबचावै । महारोगतें बंधते तू खुलावै । महारण तें जुदतें तूं जीतावै ॥ २ ॥ दुःखी दुःख हरता सुखी सुख करता । सवे सेवकोने सदानंद भरता । हरे जक्ष राक्षस भूत पिशाचं । विजन डाकनीके भय अवाच ॥ ३ ॥ दरिद्रनकूं द्रव्यके दान दीन्हे । अपुत्रनकू ते भले पुत्र कीने । ग्रहा सर्व सेती निकाले विधाता । सवै संपदा सर्वकूं देह दाता ॥ ४ ॥ महा चोरको वज्रको भय निवारै । महा पवनके पुजसे तू उबारै । महा

क्रोधकी आगमें मेघ धारा । महा लोभसे लसही वज्रमारा ॥ ५ ॥ महा मोह अंधारकु ग्यान भानूं । महा कर्म कंतारकु देह प्रधानं । किये नाग नागिणी अधो लोक सामी । हन्यो मानतें दैत्यको भय अकामी ॥ ६ ॥ तुही कल्पवृक्ष तुही कामधेनु । तुंही देव चिंतामणी नाथ एनु । पशु नरकके दुःखसेती छुडावे ॥ महा स्वर्गमे मोक्षमें तूं वसावें ॥ ७ ॥ करै लोह ते हेम पाषाण नामी ॥ रटें नामसो क्यो नही मोक्ष गामी ॥ करै सेनताको करै देव सेवा ॥ सुने वै नसोही लहै ग्यान मेवा ॥ ८ ॥ जपै जापता कू कहा पाप लागै । धरै ध्यान ताका सबी दुःख भागे । विना तोहि जाने धरे भव घनेरो । तुमारी कृपासे सरै काज मेरो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ गणधर इंद्र न करि सकें तुम विनती भगवान ॥ दानत भीत निहारकें कीज्यो आप समान ॥ १ ॥

इति पार्श्वनाथ स्वामिनो छन्द.

२५ अथ पार्श्वनाथ छन्द (सायंकालका)

प्रणमामी सदा प्रभु पार्श्व जिन। जिन नायक दायक सुख धनं। घन सार मनोहर देह धर । धरणी पति नित्यप्रभु सेवकर ॥ १ ॥ करुणारश रंजित भव्य फणी, फणी सप्त सुशोभित मौलि मणी, मणी कांचन रूप त्रिकोटि घटं । घटीतासुर कोन्नर पार्श्व तटं ॥ २ ॥ तटनी पति घोस गभीर सूर । शरणागत विश्व असेस नर । नरनारी नमस्कृत्य नित्य पदा । पद्मावती गावती गीत सदा ॥ ३ ॥ सततें-द्रियकोपयथा कमठ । कमठासुर वारण मुक्तहठ । हठ हेलित कर्म कृताव बल । बल चलधामदम्ढलपंकजलं ॥ ४ ॥ जलजलसत्पत्र प्रभा नयनं । नयनंदित भव्य तेरीगमन । मन मंथ महीरुह वन्हि सम । समतामय गुण रत्न मयं परमं ॥ ५ ॥ परमार्थ विचार सदा कुशल । कुशल कुरमे जिन नाथ अलं । अलनी नलिनी मल नील-

तन । तनुता प्रभु पार्श्वजिनम् सुजन ॥ ६ ॥ सुधन धान्यकर कल्णापर । परम सिद्धिकर ददाधर, वरतर अश्वसेन कुलोद्भव । भव भृता पार्श्व जिन शिव ॥ ७ ॥ छ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

२६ अथ छन्द भुजंग प्रयात. (प्रात.कालका)

सेवो पास सखेश्वरो मन सुद्धे । नमो नाथ निश्चे करी एक बुद्धे ॥ देवी देवला अन्यने सू नमो छो । अहो भव्य लोको भुला सू भमो छो ॥ १ ॥ त्रि लोकके नाथने सू तजो छो । पड्या पासमें भूतडानें सू भजो छो ॥ सुरधेनु छडी अज्यानें अजो छो । महापंथ मूकीं कुपथे चलो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे । ग्रहे कोण रासभने हस्ती साटे ॥ सुरद्रुम ऊपाडीने कोण आक वावे । महा मूढ सो आकडा अब चावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो नें किहा मेरु श्रृग । किहा केसरीनें किहां ते कुरग ॥ किहा विश्वनाथ नें किहां अन्य देवा । करो एक चित्ते प्रभू पास सेवा ॥ ४ ॥ भजो देव प्रभावती प्राणनाथ । सहू जीवनें जे करे विश्वनाथ ॥ महा तत्व जाणीं सदा देव ध्यावे । तेहना दुःख दारिद्र दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पामी मानुष जन्म वृथा क्यू गमो छो । कुसीलें करीं देहिनें सूं रमो छो ॥ नही मुक्त वास विना वीतरागं । भजो भगवन्त तजो दुष्ट रागं ॥ ६ ॥ उदै रत्न भाख्या सदा हेत आंणी । दया भाव कीजे प्रभू दास जाणी ॥ मारे आज मोतीनका मेह वुठा । प्रभू पास सखेश्वरा आप तूठा ॥ ७ ॥

इति भुजंग प्रयात छन्द.

२७ अथ पार्श्वनाथ स्वामी छन्द. (प्रात.कालका)

क्षिति मडल मुकुट धर्मकनिकट विश्वाप्रगट चारु भट, नव रेणु

समीरं नील शरीरं सुर गुरु धीर गंभीर, जगती जग शरण दुर्मतिह-रणं दुद्धर चरणं सुख करण, श्री पार्श्वजिनेंद्रं नितनागेंद्र नमत सुरेंद्र कृत भद्र ॥ १ ॥ देह द्युति सारं सुभगाकारं विश्वाधारं गुणधार, शिवरमणी रक्तं राग विरक्तं सकट मुक्तं गुण युक्त, कमठे सम दलन गजगति चलनं, केवल कमलं श्री विमल ॥ श्री० २ ॥ महिमा दिन-कारं भवनिस्तारं निर्जित सारं दातारं, प्रति भव नेतार गत वैभार जैनेतार त्रातारं, कुसुमे जल रदन दुर्मति दलनं, सप्रति मदन गुण सदनं ॥ श्री पार्श्व० ॥ ३ ॥ पास श्री जक्ष निर्मल पक्ष कृति जिन रक्ष जिन मोक्षं, शिव ललना हार सफल विहारं मुगुट विहार सुख-कारं, धरणीधर रम्य जगत्यगम्य रम्या रम्य शह रम्य ॥ श्री पार्श्व० ॥ ४ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

२८ अथ सिद्धाष्टकम् (सायंकालका)

अखण्डं चिदानद देवाधि देवं । फणींद्राद्रि रुद्रादि इंद्रादि सेव । मुनींद्रा कवींद्रादि चद्रादि मित्र । नमस्ते ३ पवित्र ॥ १ ॥ धराभज-लग निमरुस्त्वं नमस्त्व । घटत्व पटत्वं अणुत्वं महत्व । मनस्त्व वच-स्त्व द्रिगत्वं दस्त्व । नमस्ते. ३ समस्त्व ॥ २ ॥ अडोल अतोलं अमोल अमान । अदेह अठेहं अनेह निधानं । अजापं अथाप अताप अपापं । नमस्ते. ३ अमाय ॥ ३ ॥ न ग्राम न धाम न शीतं न उ-ष्णं । न रक्त न पीत न श्वेत न कृष्ण॥ अशेषं अशेष नरेश न रुपं। नमस्ते ३ अनूपं ॥ ४ ॥ न छाया न माया न देशो न कालो । न जाग्रं न सुप्तं न वृद्धो न बालो । न ह्रस्व न दीर्घ न रम्य अरम्य। नमस्ते ३ अगम्य ॥ ५ ॥ न बंध न मुक्तं न मौन न वक्तं । न धुम्र

न तेजो न धामी न नक्त । न रक्तं विरक्त न जुक्तं अजुक्तं । नमस्ते ३ असक्तं ॥ ६ ॥ न रुष्टं न तुष्टं न इष्टं अनिष्ट । न ज्येष्टं कनिष्ठ म मित्र अमित्र । न अग्र न पिष्ट न तुल्य न गृष्ट । नमस्ते ३ अदृष्टं ॥ ७ ॥ न वस्त्र न घ्राण न कर्ण न अक्ष । न हस्त न पाद न सीस अलक्ष । कथ सुद्दर सुदर नामधेय । नमस्ते ३ अशेष ॥ ८ ॥

इति सिद्धाष्टकम्.



२९ अथ शांतिनाथाष्टकम् (सायंकालका).

नाना विचित्रं वहु दुःख राशी, नाना भारभमोहान् फाशी, पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्म शरण तव शांतिनाथ ॥१॥ संसार मध्ये मिथ्यात्व चिंता, मिथ्यात्व मध्ये करमाणि वधं, ते वध छेदन्ति देवाधिदेव॥इह०॥२॥कामस्य क्रोध मायाति लोभ। चतुर्कषायां इह जीववध ॥ ते वध छेद० ॥ इह० ॥ ३ ॥ जातस्य मरण ध्रुवतस्य वचनं ॥ बहुतीजीव वहु जन्म दुःख ॥ ते० ॥ इ० ॥ ४ ॥ चारित्र हीनो नर जन्म वथो । सम्यक्त रत्न प्रतिपालयन्ति । ते जीव सिद्धन्ति देवाधि देवं ॥ इ० ॥५ ॥ मृदु वाक्यहीनो कठिनस्य चित्तो । परजीव निंदा मनसाच वध ॥ ते० ॥ इ०॥ ६ ॥ परद्रव्य चोरी पर दार सेवा ॥ हिंसाधिकारी अनुवृत्ति वध ॥ ते० ॥ इ० ॥ ७ ॥ पुत्राणि मित्राणि फलत्र बंधु ॥ वहु वध मध्ये इह जीव वधं ॥ ते० ॥ ॥ इ० ॥ ८ ॥

इति शांतिनाथाष्टकम्.



३० अथ ऋषभदेवनो छन्द. (सायंकालका)

परम अलक्षहि त्रिजग चक्षुहि । सघ सुपक्षहि अक्षवते । प्रभु अवियोगी आदि वियोगी ॥ स्वयमुपयोगी सघ कृते ॥ ऋषभ निरंजन सत्र दुख भंजन ॥ हे मनरंजन सुमचित्ते ॥ जय जय हो अमराधिप वदन कर्म निकंदन नाभि सुते ॥ १ ॥ मरुदेवी नंदन अनिंदहिकंदनि । है ढिग चउहिं मड दुते । तन कनकाचल चंपकली कल दीप सिखा दल स्वच्छ वते । निरखत हर्ष प्रकर्ष वधै । दुर जात वितर्क तमार्क वते ॥ जय० ॥ २ ॥ पद अरविंदहि वृंद वनदित वंदत वृंद सुरंद निते । जुत सुभ लछन वछित दछन स्वच्छ मतच्छ स्वचछंद चिते । लहि अपवर्गहि दीर्घ सुख न लहे समवर्ग हि स्वर्गपते ॥ जय० ॥ ३ ॥ दरसण केवल केवल ग्याननि केवल राग विराग विरोधरते, अतिशय लायक व्यक्त साहायक । मुक्ति प्रदायक मुंक्ति पते । भव भ्रम जाल कराल दलिततकाल मृणाल दताल वते ॥ जय० ॥ ४ ॥ निरजर कोट पलोटत पाप । निरतर ओंठ अखूट पते । सिरतिय छत्र निचित्र रहै । अकरत्न पवित्र नक्षत्र पते। इम महिमा रुप अनूपस्तू । मतिहारज जयो जिनराज जुते ॥ जय० ॥ ॥५ ॥ सब जगजीवन जीवन मूर । श्रवो धर्म जीवन दांवुवते । यह भवसागर नागर ते गहि । सारद नावसु पारहुते । तुम सिंध रुपकपाल अनूप । शरणागत सिद्ध सरुप कृते ॥ जय० ॥ ६ ॥ प्रभु गुण सागर पारनवारिति, रघुज धारन पारगते । तिम पदहीन अपग निरत्र, चढै गिरि अग उतगनते । इमढिजहो बुद्धिहीन अधीन । यहमत कीन क्षमा कुरुते ॥ जय० ॥ ७ ॥

इति ऋषभदेव छन्द.



३१ अथ पार्श्वनाथ स्तुती–(सायंकालका)

सकल सार सुरतरु जग जाण । जस जस वास जगत परमाण। सकल देव सिर मुकुट सुरंग । नमो नमो जिनपति मनरग ॥ १ ॥ जे जन मनरग अकल अभग । तेज तुरग नीलग । सत्र सोभासग। दग्ध अनंग शीश भुजग चतुरग ॥ २ ॥ बहु पुण्य मसग, नित उछरग नव नव रग मर्दग । कीरत जलगग देश दुरग सुरनर सग सारग ॥ ३ ॥ सारगा चक्र । परम पवित्र रुचिर चरित्र जीवित्र, जे जीन मत्र पकज पत्र निर्मल नेत्र सावित्र ॥४॥ जगजीवन मत्र श्वासत सत्र । मंत्रायत्र महा मत्र, विसवत्रेवेत्र चामर उत्र सीस धरित्र पवित्रं ॥ ५ ॥ पावित्राधरणं मुकुटा वरण त्रिभुवन शरण आचरण, सुर चरिचतचरण दारिद्र हरणं सित्र सुख करण मात्ररण ॥ ६ ॥ गो अमृत करण जनमनमरण ॥ भवजल तरण उद्धरण, श्व सपत करण अग सहरणं शरणा वरण आदरणं ७ ॥ आहरणा पाल, झाकजमाल नित भूपाल उजियाल, अष्टम शशि भाल, देव दयाल, चेतनचाल सुखमाल॥८॥ त्रिभुवन रखवाल, काल दुकाल, महाविकराल भयटाल, सणगार रसाल मय कमाल, रति विशाल भूपाल ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सकलरूप उदार सार । सपत सुखदायक । रोग सोग सताप पाप । दुख दुर निवारक ॥ १० ॥ चिहु दिश आण अखड । तेज जिम तपै दिण दै, नमै अपछरा कोऊ, देवसनन मै नरिंदे ॥ ११ ॥ तेविसमो जिणवर भलो, अधिक अधिक मगल निलो । मुनि मेघराज इम वीनवै सयण्यो तवन त्रिभुवन तिलो ॥ १२ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ स्तुती.

श्री पार्श्वनाथ स्वामिनो छंद (तोटक वृत्तम्–प्रातःकाल).

जय जय जग नायक पार्श्वजिनं। प्रणताऽखिल मानव देवगणं॥ जिन शासननायक स्वामि जयो। तुम दरशन देख आनंद भयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलांबर भानु निभं। नवहस्त शरीर हरित प्रभं॥ धरणेंद्र सुसेवित पाद युग। भर आसुर काति सदा सुभग ॥ २ ॥ निजरूपविनिर्जित रंभपति। वदनो द्युति शारद शोभतति। नयना बुज दीप्त विशालतरा। तिल कुसुम सन्निभ नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद समान सदा। दशनावलि अनार कुली सुखदा। अधरारुण विद्रुम रंगघन। जय पुरुषादाणी पार्श्वजिन ॥ ४ ॥ अति चारु मुकुट मस्तक दीपे। काने कुंडल रवि शशि जीपे ॥ तुज महिमा महिमंडल गाजे। नित पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर विद्याधर आवे। नरनारी तोरा गुण गावे ॥ तुजने सेवे चौसठ इंद्र सदा। तुज नामे नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥ जे सेवे तुजने भाव घणे। नव निधि थाय घर तेह तणे ॥ अडवडिआ तूं आधार कह्यो। समरथ साहिब में आज लह्यो ॥७॥ दुखियाने सुखदायक तू दाखे। अशरणनें शरणे तू राखे ॥ तुज नामे संकट विकट टले। विछडियां व्हाला आवि मिले ॥ ८ ॥ नट विट लंपट दूरे नासे। तुज नामे चोर चुगल त्रासे ॥ रण राउल जय तुज नाम थकी। सघले आगल तुज सेव थकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा। करी केसरी दावानल विहगा॥ वध बंधन भय सघला जावे। जे एकमने तुजने ध्यावे ॥ १० ॥ भुत प्रेत पिशाच छली न शके। जगदीश तवाभिध जाप थके ॥ मोटा जोटिंग रहे दूरे। दैत्यादिकना तू मद चूरे ॥ ११ ॥ डाकिणि शाकिनी भय हटकी। भगवंत थाय तुज भजन थकी ॥ कपटी तुज नाम लिया कंपे। दुर्जन मुखथी जीजी जपे ॥ १२ ॥ मानी मछराला मुह मोडे। ते पण आगलथी कर-

जोडे ॥ दुर्मुख दुष्टादिक तूहि दमे । तुज नामे मोटामछेऊ नमे ॥१३॥ तुज नामे माने नृप सवला । तुज जश उज्वल जिम चद्र कला ” तुज नामे पामें ऋद्धि घणी । जयजय जगदिश्वर त्रिजगधणी ॥१४॥ चिंतामणि काम सवी पामै । हयगय रथ पायक तुज नामे ॥ जनपद ठकुराई तू आपे दुर्जन जननो दारिद्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तू धनवत करे । तू तूठो कोठार भडार भरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो । ते सहु महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि माणिक मोती रत्न जड्यां । सोवन भूषण वहु सुघड घड्या ॥ वली पहेरण नव-रग वेष घणां । तुम नामे नवि रहे काई भणा ॥ १७ ॥ वैरीवि-रूओ नवि ताकि शके । वलि चोर चुगल मनथी चमके ॥ छल छिद्र कदा केहनो न लगे । जिनराज सदा तुज ज्योति जगे ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सनि थर हर कपे । पाखडी पणको नवि फरके ॥ क्षुदा-दिक सहू नासी जाये । मारग तुज जपता जय थाये ॥ १९ ॥ जड मुरख जे मति हीन वली । अज्ञान तिमीर तस जाय टली । तुज समरणथी डाह्या थाए । पडितपद पामी पूजाए ॥ २० ॥ खंस खासी खयन पीडा नासे । दुर्वल मुख दीनपणूं त्रासे ॥ गड गुंवड दुष्ट जिके सवला ॥ तुज जापे रोग समें सघला ॥ २१ ॥ गहिला गुगा बहिराय जिके । तुज ध्याने गत दुःख थायतिके ॥ तनु काति कला सुविशेष वधे । तुज समरणशू नवनिधि सधे ॥ २२ ॥ करि केसरी अहिरण नधसया । जल जलण जलोदर अष्ट भया ॥ रागण पमुहा सवि जाय टली । तुज नामे पामे रगरली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्ह श्री पार्श्व नमो । नमिउण जपता दुष्ट दमो । चिंतामणि मत्र जिके ध्याये । तिणधर दोलत दिन दिन थाये ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्ध जे आराधे । तस जस कीर्ती जगमा वाधे ॥ वली कामित काम सवे साधे । समि-हित चिंतामणि तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर मनथी दूर तजे ।

भगवंत भलीपरे जेह भजे ॥ तस घर कमला कल्लोल करे । वलि राज्यरमणि बहु लीलवरे ॥ २६ ॥ भयवारक तारक तू त्राता । सज्जनजनगति मुक्तिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तू स्वामी । शिवदायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठाकुर तू मेरो । निशिवासर नाम जपूं तेरो ॥ सेवक शूं परम कृपा कीज्यो । वाछेशर वछित फल दीज्यो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा तूं जयकारी । तुज मूर्त्ति अति मोहन कारी । मुगत मेहेल मांही तूंही विराजे । त्रिभुवन ठकुराइ तुज छाजे ॥ २९ ॥ इम भाव भले जिनवर गायो । वामा सुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि शशि मुनि सवच्छर रगे । जयदेव सुरीमां सुख सगे ॥ ३० ॥ जय पुरुपादाणी पार्श्व प्रभो । सकलार्थ समीहित देहि विभो ॥ बुध हर्ष रुचि विजयाय मुदा । तप लब्धि रुचि सुख थाय सदा ॥ ३१ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ इति पार्श्वनाथ स्तुति छन्द. ॥



२२ अथ श्री पार्श्वनाथस्वामिनो छन्द (प्रातःकालका).

आपण घर बेठा लील करो । निज पुत्र कलत्र शु प्रेम धरो । तुम देश देशातर काई दोडो ॥ नित्य पास जपो जिनश्री रुडो ॥१ ॥ मनवछित सघला काज सरे । शिर उपर छत्र चामर धरे । कलमल आगल चाले घोडो ॥ नित्य० ॥ २ ॥ भूत प्रेत पिशाच वली । सायणि ने डायणि जाय टली । छल छिद्र न कोई लागे जोडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ एकान्तर ताव सियो दाह । औषध विण जाय क्षणमांहू । नवि दु.खे माथुं पग गुडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कठमाल गड गुवड सघला, तस उदर रोग टले सघला । पीडा न करे फुन गल फोडो॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जागतो तीर्थंकर पास पहू । एम जाणे सघलो

जगत सहू । तत्क्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ पास वाणारशिपुरी नगरी । तिहा उदयो जिनवर उदय करी । समय सुंदर कहे कर जोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.



२४ अथ शांतिनाथ स्वामिनो छन्द (प्रातःकालका)

शारद माय नमू शिरनामी । हू गुण गाउ त्रिभुवनके स्वामी । शाति शाति जपे सब कोई । ते घर शाति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी नें कीजे कामा, सोहि काम होवे अभिरामा । शाति जपी परदेश सिधावे । ते कुशले कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारि निवारी । शातिज नाम दियो हितकारी । जे नर शाति तणा गुण गावे । ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जे नरकू प्रभु शांति सहाई । ते नरकुं क्या आरति भाई । जे कछु वछे सोहि पुरे। दुःख दारिद्र मिथ्या मति चुरे ॥ ४ ॥ अलख निरजन ज्योत प्रकाशी । घट घटके अतर प्रभु वासी । स्वामी स्वरूप कह्यु नवि जावे । कहेता मुज मन अचरीज थावे ॥ ५ ॥ डार दिये सवही हथियारा । जीत्या मोह तणा दल सारा । नारी तजि शिवशू रग राच्यो । राज तजीयो पण साहिव साचो ॥ ६ ॥ महा वलवत कही जे देवा । कुजर कुथुन एक हणेवा । ऋद्धि सवही प्रभु पास लहीजे । भीक्षा आहारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजककू सम भायक । पण सेवकहीकू सुखदायक । तजि परिग्रह हुवा जगनायक । नाम अतिथि सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजे । नाम देव अरिहन्त भणी जे सकल जीव हितवन्त कहीजे । सेवक जाणी महापद दीजे ॥ ९ ॥ सायर जेसा होत गभीरा । दूषण एक न माहे

शरीरा । मेरु अचल जिम अंतरजामी । पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिनजी सब देखे । पण सुपने प्रभु कबहु न देखे । रीस विना वामीप परीशा । सेना जीती तुं जगदीशा ॥११॥ मान विना जग आण मनाइ । माया विना शिव शुं लय लाइ । लोभ विना गुण राशि ग्रहीजे । भिक्षु भावे त्रिगडो सेविजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणे शिरछत्र धरावे । नाम यती पण चामर ढुळावे । अभयदान दाता सुख कारण । आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्री जिनराज दयाल भणीजे । कर्म सर्वको मूल खणीजे । चउविह संघ तीरथ थापे । लच्छी घणी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे । नाहि किसीकू शीस नमावें । अकचन को बिरुद धरावे । पण सोवन पद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग नही पण सेवक तारे । द्वेष नही निगुणा संगवारे तजि आरभ निज आतम ध्यावे । शिव रमणीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिए । तेरा गुणको पार न लहिये ॥ तूं प्रभु समरथ साहेब मेरा । हुं मन मोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तूरे त्रिलोक तणो प्रतिपाल । हूरे अनाथ ने तूरे दयाल । तू शरणागत राखन धीरा ॥ तूं प्रभु तारक छे वड वीरा ॥ १८ ॥ तूहि समो वड भागज पायो । तो मेरो काज अइयोरे सवायो करजोडि प्रभु विनवूं तुमशूं । करो कृपा जिनवरजी अमशू ॥ १९ ॥ जनम मरणना भय निवारो । भव सागरथी पार उतारो । श्री हस्थिणापुर मडण सोहै । या श्री शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराय पसाया । श्री गुण सागर कहे मन भाया । जे नरनारि एक चित गावे । ते मनवांछित निश्चे पावे ॥ २१ ॥

इति शांतिनाथ छन्द.



३५ अथ गौतम स्वामिनो छंद. (प्रात:कालका)

वीर जिणेशर केरो शिष्य । गौतम नाम जपो निशदिश । जो कीजे गौतमनू ध्यान । तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे । मनवंछित हियेडे सपजें । गौतम नामे नावे रोग । गौतम नामे सर्व सभोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वकडा । तस नामे नावे ढुकडा । भूत प्रेत न विभंडे प्राण । ते गौतमना करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय । गौतम नामे वाधे आय । गौतम जिन शासन शणगार । गौतम नामे जय जयकार ॥४॥ शाली दाल सुरहा घृत गोल । मनवंछित कापडे तबोल । घर सुघरणी निर्मल चित्त । गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उग्यो अविचल भाण । गौतम नाम जपो जगजाण । मोटा मन्दिर मेरु समान । गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड । वारु पहूंचे वछित कोड । महियल माने मोटा राय । जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातक टले । उत्तम नरनी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान । गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवन्त अवधारो सहू । गुरु गौतमना गुण छे बहु । कहे समय सुंदर कर जोड । गौतम तूठा संपति कोड ॥ ९ ॥

इति गौतमनो छन्द.



३६ अथ चिंतामणीनो छन्द. (प्रातःकालका)

सुगुरु चिंतामणी देव सदा । सुज सकल मनोरथ सुदा कमलागर दुर न होय कदा । जपता प्रभु पार्श्वेश नाम यदा ॥ १ ॥ जल अनल मनगज भय जावे । अरि चोर निकट पण नहि आवे । सिंह

सर्प रोग न संतावे । धन्य धन्य प्रभु पार्श्व जिन ध्यावे ॥ २ ॥ मछ कछ मगर जलमांही भमें । वडवानल नीर अथाह गमै । प्रवहण बैठा नर पार पमै नित्य जे प्रभु पार्श्व जिनद नमै ॥ ३ ॥ विकराल दावानल विश्व दहै । दह वस्ती आकाश धन ग्रास ग्रहै । तुम नाम लिया उपशांति लहै । वन नीर सरोवर जेम वहै ॥४॥ झरतो मदलोल कपोल झरे । भ्रमरा गुंजारव भर रोस भरै । करि दुष्ट भयंकर दूर करे । श्री पार्श्वनाथजीके समरे ॥ ५ ॥ छाना छल छिद्र निजाय छलें । यश वाश सुगी मनमांही जलें । ते पिशुन पडे नित्य पाय तलें । जपतां प्रभु वैरी जाय टलें ॥ ६ ॥ धन देख निशाचर बहुत तके । भुज मन्दिर पैस कदे न सके । अति उछव तास आवास अखे । परमेसर पारस जास पखे ॥७॥ असराल विदारण हांथ हटे । गजलोल जिहा गज कुंभ घटे । मृगराज गहा भयभीत मिटे । रसनां जगनायक जेह रटे ॥ ८ ॥ फिरतो चिहु फेर फुंकार फणी । धरणिंद्र धसै घर रीस घणी भय त्रास न व्यापै तेह भणी । धरता चित पारसनाथ धणी ॥ ९ ॥ कफ कुष्ट जलोदर रोग कसै । गड गुनड देह अनेक वसै । विन भेषज व्याधि सवे विनसे । वामा सुत पावस जेथ वसे ॥ १० ॥ धरणींद्र धराधिप सुर ध्यायो । प्रभु पारस पारस कर पायो । छवि रूप अनूपम जग छायो । जननी धन वामा सुत जायो ॥ ११ ॥ करतां जिनजाप सताप कटै । धन दारिद्र दोहग सोग मिटे हट छोड जिहा रिपु जोर हठे । पद्मावती पारस जहां प्रगटे ॥ १२ ॥ मंत्राक्षर गाथा गुप्त मढ्यो, चिंतामणि जाणे हाथ चढ्यो वलि मान महंत पतेजे वढ्यो, पारस स्तवन मुख जे न पढ्यो ॥ १३ ॥ तीरथ पति पारस नाथ तिलो । भणतां जस वास निवास भलो । मन मंत्र सकोमळ होय मिलो । अमची प्रभु पारस । ॥ १४ ॥ लूंकागछ नायक लाज लीये । हित क्षेम करण

गुरु नाम हिये । दिन दिन गछ नायक सुख दिये । कीरत प्रभु पारस नाथ किये ॥ १५ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.



३७ अथ शांतिनाथ प्रभूनो छन्द (प्रात कालका)

शांतिनाथ जीरो कीजे जाप । कोड भवाना काटे पाप ॥ सत-जीनेसर मोटा देव । सुरनर सारे ज्यारी सेव ॥ १ ॥ दुख दालिद्र जावे दूर । सुख सपति पामे भरपूर। ठगपासीधर जावे भाग । बलती होवे शीतल आग ॥ २ ॥ राज लोकमे महिमा घणी । संत जीनेंसर माये धणी । जो ध्यावें प्रभुजीनो ध्यान । राजा देवे इधको मान ॥ ३ ॥ ग्रह गोचर पीडा टल जाय । दुष्मन दोषी लागे पाय । सगळो भागो मनको भ्रम । राखो समकित काटो क्रम ॥ ४ ॥ सुनो प्रभूजी म्हारी अरदाश । हूं सेवक तुम पूरो आश । मारा मनरा चिंत्या कारज करो । चिंता आराति विघन हरो ॥ ५ ॥ मेटो प्रभुजी आल जजाल । प्रभुजी मुजने नयन निहाल । आपरी कीरत ठामो ठाम । प्रभुजि सुधारो मारो कांम ॥ ६ ॥ जे नर नित प्रभुने रटे । मोत्या बंधन फुला कटे । चोवां लागण दोनू झड जाय । विना ओषध कट जावे छाय ॥ ७ ॥ प्रभु नामथी आंख्या निर्मल थाय । धुंद पडल जाला फट जाय । कवळ्यों पील्यो झर झर पडे । शांत जिनेंसर साता करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधि मिटावे रोग । सेण मित्रनो मिळे सजोग। इसदो देव न दिसे ओर । नहि चाले दुसमणको जोर ॥ ९ ॥ लूटे रास वजावे नास । दुर्जन मिट होवे निज दास । शांति प्रभूनी महिमा घणी । कृपा करो त्रिभुवनका धणी ॥ १० ॥ अरज करूछू जोडी

हाथ । तुंम छानी नहि दूजी वात ।देख रया छो पोते आप । प्रभुजी काटो मारा पाप ॥ ११ ॥ मारा मनका चिंतया कीजे काज । राखो प्रभुजी मारी लाज । थां समान नहि जगमे कोय । था समन्या सुख संपत होय ॥ १२ ॥तुम आगे नहि चाले मृगीरो जोर ॥ताव तेजरो नाखो तोड़ । तुम मरी मिटावो कर देवो संत।तुम गुणरो नहि आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने समरे जोगि जती । तुमने समरे साधु सती सकट काटो राखो मान । अविचल पदवी आपो ठांण ॥ १४ ॥संमत अठारावे चौगनने जाण । देश मालवो इधको वखाण । गाम रेजाव चैत्र मास । हू आयो चरणारो दास ॥ १५ ॥ ऋषि रघुनाथजीकीधो छन्द । काटो प्रभुजी करमारा फंद । हूं जोऊछूं आपरि वाट । चिंता मारी सगली काट ॥ १६ ॥

इति शांतिनाथ छन्द.

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ प्रथम खण्डे छन्दाभिधं द्वितीय प्रकरणम्.





॥ स्वर्गीय श्रीमत्गच्छाधिपति कित्तिंमान् पूज्यजी
महाराज श्री श्री १००८ श्री श्री रेखराजजी
महाराज प्रणीत. ॥

(प्रकरण तीसरा–पद.)



२८ अथ चौवीसी (राग सायंकालकी–सांमकल्याण)

भवि तुम साझ सवेरे जिनवदो.॥टेर॥ ऋषभ अजत सभव अभिनदन,
सुमत पदम जिणदो ॥ १ ॥ भवि तुम०

श्री सुपारस चंदा प्रभु ध्यावो आणी भाव अमदो ॥ २ ॥ भवि तुम०

सुवुध शीतल श्रेयांस वासपुज ज्यित जेम दिणदो ॥ ३ ॥ भवि तुम०

विमल अनत धर्मनाथ शाति जिन वरताया आनदो ॥ ४ ॥ भवि तुम०

कुंथु अरह मल्लि मुनिसुव्रतजी शिवरमणीना कतो ॥ ५ ॥ भवि तुम०

नमि नेम पार्श्व महावीरजी तार्‍या जीव अनतो ॥ ६ ॥ भवि तुम०

रेखराज प्रभु अरज करतहे मेटो भवदुख फदो ॥ ७ ॥ भवि तुम०



३९ [राग सायंकालकी-सांमकल्याण]

माया मतवाळी निज ज्ञान भुलावेरे ॥ टेर. ॥ माया०
जांके नसामे जगतके प्राणी, अंधाधंध होजावेरे. ॥ १ ॥ माया०
मांन महागिर चढके उपर, जगतको तुच्छ बतावेरे. ॥ २ ॥ माया०
कर्म चपेट लगे जब उनके, तब हिरदे शुध आवेरे ॥ ३ ॥ माया०
रेखराज उनके मननांही । सोही धन्य कहावेरे ॥ ४ ॥ माया०

४० [राग सायंकालकी-आसावरी]

कैसें कर ए बहेरे अज्ञानी ॥ कैसें ॥ टेर ॥
आनन दीन वसे काननमें । कायर भाव रहेरे ॥ अ. ॥ १ ॥
कंचन वसन रजत एक तनकी । मान पूंजी निवहेरे ॥ अ. ॥ २ ॥
न धरे रोष पोषका हूको । दोष न कोई कहेरे ॥ अ. ॥ ३ ॥
तृण ग्राहीकू क्षत्रि न मारे । अहो निस तृणही ग्रहेरे ॥ अ. ॥ ४ ॥
नयनोपम तो लहे जगदीश्वर । चर्मकूं योगी लहेरे ॥ अ. ॥ ५ ॥
कहा अपराध मारीये इनकूं । सो तो प्रथम कहेरे ॥ अ. ॥ ६ ॥
एक स्वाद के कारण मूरख । देवल एह ढहेरे ॥ अ. ॥ ७ ॥
या बध तें लहे परम अधोगत, वेदवचन ए कहेरे ॥ अ. ॥ ८ ॥
शशि सूरज अरु जबलग पृथवी तब लगतांही रहेरे ॥ अ. ॥ ९ ॥
रेखराज भवि हिंसक प्राणी । नरकके दुःख सहेरे ॥ अ. ॥ १० ॥

४१ [राग सायंकालकी-आसावरी]

पृथवी पति अरज हमारी । सुनहू महर विचारी ॥ पृ. ॥ टेर. ॥
दीनानाथ प्राणेक रक्षक, कहत हैं तुम ससारी ॥
जगत पिता होय प्रान गमावो, या तुम कैसी विचारी ॥ पृ. ॥ १ ॥

विन अपराध विना भये सनमुख । हतें न मतिज्ञा तिहारी ॥
कहा अपराध भागतही मोपर । कैसे करहु सवारी ॥पृ.॥
विजया दशमी नाम है याको, मगल करे नर नारी ॥
मेरे मानका नास करत हो । या तुम कैसी धारी ॥पृ ॥
सीता हरन अपराधतें रावन, रनकें लक विदारी ॥
कहा अपराध मारत हो हमकूं । सो कहो दोप निकारी ॥पृ.॥
मातही होय मानकी हरता । है शाकिन अवतारी ॥
सिंघ सवल तज ग्रहत निवल कू । काहेकी शक्ति विचारी ॥पृ.॥
मेरे चर्म वाजित्र वजे हे । नृप देव गृह वारी ॥
ताही गुनतें राख अब मोकूं । मैं हू सरण तिहारी ॥पृ.॥
पुत्री हमारी पयकी दाता, पुत्र भार वहे भारी ॥
मति मारहु जगदीस दुहाई । कहत हु एह पुकारी ॥पृ ॥
रेखराज साहपुरामे । कहतहे वारवारी ॥
ईम निमुणीने त्यागो माणी वध । नृप आदि सकल नर नारी॥पृ ॥८

४२ (राग–चलित)

सत गुरु साचे सिपाई, मैं तो ऐसे देखें हो ॥ स. ॥ टेर.
सवर कवच दृढ है उनकें । विनय वगतर सुखदाई ॥
करुणा भाव कीये केसरीया, ध्यान टोपल हराई ॥ स ॥ १
समरस अमल गालवा पीके । दिल हुसीयारी आई ॥
क्षमा खड्ग क्रियाकी कटारी । सील सेल सुखदाई ॥ स. ॥ २
चारित्र चक्र धनुप धीरज को, वान विवेक दिखाई ॥
संजम शक्ति शक्ति रुप है, मुद्गर मून्य दिखाई ॥ स ॥ ३ ।
गाख त्याग गदावर करमें । निगुप्त त्रिशूल सुहाई ॥
गम गोफण अरु गुनके गोली । देत हे रिपुकु उडाई ॥ स ॥ ४ ।

ऐसें भये नर गरज न सरें, लख्यो न निज पदनूर ॥
नैन हृदय खोलीये तो, रेख देख हजूर ॥ वंदा ॥ स. ॥ ४ ॥

४७ [राग—मारू]

जिउं जाणो जिउं थारा नाथजी जिउ जाणो जिउं थांरा हा ॥
कामी क्रोधी अति अपराधी लोभी अवगुन गारां हा ॥ना.॥१॥
था विन दूजो दाय न आवे ध्यान सदा उर धारां हा ॥
कब मिल है निजनाथ कृपाकर, निस दिन वाट निहारां हा॥ना.॥२॥
ऊठत बेठत जागत सोवत, निमख न ध्यान विसारा हा,
एक आस विसवास नाथका, दूजी दिस न चितारां हा ॥ना.॥३॥
तन मन प्रान कियो निछरावल, केवल नाम उचारा हां;
रखियो लाज सरन आयेकी, खाना जादा तिहारां हां ॥ना.॥४॥
असरन सरन चरन भव भंजन, वारम्वार संभारां हां;
जनम जनम आगे अरू अबही, नही कद्मा तें न्यारा हां ॥ना.॥५॥
कोऊ सिर जैपाले कोऊ हन है, यों उरमाज विचारां हा,
तारक ब्रह्म विना कुण तारे, नाथही नाथ पुकारा हां ॥ ना. ॥ ६ ॥
चात्रकज्यूं लिवनाथ जपें उर, विरह अगननमें जारां हा;
सीचत नाम सुधारसतापर, सास उसास उतारा हा ॥ ना. ॥ ७ ॥
करहो कृपा जान जिन अपनो नखन कीसीके सारां हां;
दास मान पद पकज सेवे, में लग्या राजके लारां हां॥ ना. ॥ ८ ॥

४८ [राग—आसारी]

साधो अपना रूप जब देखा, करता कोन फुनि करनी
कैसी कोन मागे गोलेखा ॥ सा. ॥ १ ॥

साधु संगति अरू गुरुकी कृपा तें, मिट गई कुलकी रेखा ॥
आनंदघन प्रभु परचो पायो, उतर गयो दिल भेषा ॥ सा. ॥ २ ॥

४९ [राग—आसावरी]

अवधु राम राम जग गावे, विरला अलख लखावे ॥ ओ. ॥ टेर ॥
मतवाला तो मतमें माता, मठ वाला मठ राता,
जटा जटाधर पटा पटाधर, छता छताधर ताता ॥ ओ. ॥ १ ॥
आगम पढि आगमधर थाके, माया धारी छाके,
दुनीया दार दुनीसे लागे, दासा सब आसाके ॥ ओ. ॥ २ ॥
बहिरातम मूढा जग जेता, मायाके फंद रेता,
घट भीतर परमातम भावे, दुर्लभ प्राणी तेता ॥ ओ. ॥ ३ ॥
खग पद गगन मीन पद जलमें, जो खोजे सो बोरा,
चित पकज खोजे सो चिन्हें, रमता आनंद भोंरा ॥ ओ. ॥ ४ ॥

५० (राग—आसावरी)

आसा ओरनकी क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पीजे ॥ टेर ॥
भटके द्वार द्वार लोकनके, कूकर आसा धारी ॥
आतम अनुभव रसके रसिया, उतरे कबु न खुमारी ॥ आ. ॥१॥
आसा दासीके जाये, ते जन जगके दासा॥
आसा दासी करे जे नायक, लायक अनुभो पीयासा ॥ आ. ॥२॥
मनसा प्याला प्रेम मसाला, ब्रह्म अगनि परजाली॥
तन भाटी उटाय पीये, कस जागे अनुभोलाली ॥ आ. ॥ ३ ॥
आगम पियाला पिये मतवाला, चीन्हे अध्यातम वासा ॥
आनंदघन चेतन व्हे, खेले देखे लोक तमासा ॥ आ. ॥ ४ ॥

५१ (राग–आसावरी)

ओधूं नाम हमारा राखे, सोही परम रस चाखे ॥ ओ. ॥ टेर ॥

नही हम पुरखा, नही हम नारी, वरण न भांत हमारी ॥
जाति न भाति मसाटक नाही, नही हलका नही भारी ॥ ओ. ॥१॥
नही हम ताते नही हम सीरे, नही दीरघ नही छोटा ॥
नही हम भगनी नही हम भाई, नही हम बाप ने धोटा ॥ ओ. ॥२॥
नही हम मनसा नही हम सब्दा, नही हम तनकी वरणी ॥
नही हम भेख भेष धर नाही, नही हम करता करणी ॥ ओ. ॥३॥
नही हम दरसन नही हम परसन, रसन गन्ध कछु नाही ॥
आनदघन चेतनमय मूरति, सेवक जन वलि जाई ॥ ओ. ॥४॥

५२ (राग–आसावरी)

ओधू क्या मांगू गुनहीना, वे गुन गमन्न प्रवीना ॥
गाय न जानूं बजाय न जानू, न जानू सुरदेवा ॥
रींज न जानु रीझाय न जानु, ना जानू पद सेवा ॥ ओ. ॥ १ ॥
वेद न जानू किताब न जानू, जानु न लक्षण छन्दा ॥
तरत वाद विवाद न जानू, न जानू कवि फंदा ॥ ओ. ॥ २ ॥
जाप न जानू जवाब न जानू, न जानूं कथि वाता ॥
भाव न जानू भक्ति न जानूं, जानूं न सीरा ताता ॥ ओ. ॥ ३ ॥
ज्ञान न जानू विज्ञान न जानूं, न जानू भज नांमा ॥
आनदघन प्रभुके घर द्वारे, रटन करू गुण धामा ॥ ओ. ॥ ४ ॥

५३ (राग–आसावरी)

अब हम अमर भये न मरेंगे या कारन मिथ्यात दीयो तज क्यू
कर देह धरेंगे ॥अब॥ १ ॥
मन्यो अनत वार कालतें प्रानी सोहम काल हरेंगे ॥अब॥ २ ॥
देह विनासी हू अविनासी अपनी गति पकरेंगे ॥अब॥ ३ ॥
नासी जासी हमथिर वासी चोपे हे न्हे निखरेंगें ॥अब॥ ४ ॥
मन्यो अनत वार विनासी बिन समजो अब सुख दुख विसरेंगे॥अब॥ ५॥
आनंदघन निपट निकट अक्षर दे नही समरे सो मरेंगें ॥अब॥ ६॥



५४ [राग–नाथ कैसे गजको फंद छुडायो]

नाथ तेरी माया जाल बिछाया जामे सब जग फिरत बुलाया ॥टेर॥
कर निवास नव मास गर्भमें फिर भूतलमें आया ॥
खानपान विपया रस भोगन मात पिता सिखलाया ॥ नाथ. ॥१॥
घरमें सुंदर नारि मनोहर देख देख ललचाया ॥
सुन सुन मीठी बातें सुतनकी मोह पाशमें फसाया ॥ नाथ. ॥२॥
गृह काजनमें निसदिन फिरते सबही जनम बिताया ॥
आशा प्रबल भई मन भीतर निर्बळ हो गइ काया ॥ नाथ. ॥३॥
पाप पुण्य सचय कर पुन पुन स्वर्ग नरक भटकाया ॥
ब्रह्मानद कृपा बिन तुमरी मुक्ति न हो जग राया ॥ नाथ. ॥४॥



५५ (राग—पूर्ववत्)

अये प्रभु सुनिये अरज अब म्हारी में तो आया हूं सरण तुमारी. ॥टेर॥
बाला पण सब खेल गमायो तरुण कियो वस नारी ॥
गृह कुटुंबके पोषण कारण पर घर होयो भिखारी ॥ अये. ॥ १ ॥
मैं जानत ये बांधव मेरे स्वारथकी सब यारी ॥
धनसे हीन भयो में जबही सबको लाग्यो खारी ॥ अये. ॥ २ ॥
आयाथा जिस काम करणको उसकी याद विसारी॥
ओरही माया जालमें फस्या निकलनकी नही बारी ॥ अये. ॥ ३ ॥
भवसागरमें डूबत हूं अब लिजिये बेगउबारी ॥
ब्रह्मानद करो करुणा प्रभु तुम विनको हितकारी ॥ अये. ॥ ४ ॥

५६ (राग—पूर्ववत्)

नाथ तेरे चरणनकी में दासी मेरी काटो जनमकेरी फांसी ॥ टेर. ॥
ना जाऊ मथुरा गोकूल न जाऊ ना जाऊं में कासी ॥
मोहे भरोसो एक तुमारो दीन बंधु अविनाशी ॥ नाथ. ॥ १ ॥
कोई वरत कोई नेम करत है कोई रहे वनवासी ॥
मैं चरणनको ध्यान लगावूं मनसे होय उदासी ॥ नाथ. ॥ २ ॥
नहि विद्या बल रूप न मेरे नहि सचय धन राशी ॥
शरणागत मोहे जान दया निजी राखीये चरणन पासी ॥ नाथ.॥३॥
नहि मे राज पाट कछु मांगु नहि सुख भोग विलासी ॥
ब्रह्मानद शरणमें तुमरी केवल दरश पियासी ॥ नाथ. ॥ ४ ॥



५७ (राग—वनजारा)

जगदीश जगतपति प्यारा कर भव दुख नाश हमारा ॥ टेर. ॥
तुम सब जीवनके स्वामी घट घटके अतरयामीजी ॥
नहि जान लोक गॅवारा ॥ जग. ॥ १ ॥
भूली जल अवर भारी सब रचना विश्व कर्मारीजी ॥
अचरज यह खेल पसारा ॥ जग. ॥ २ ॥
ईन्द्रादिक मुनि देवा नित करत तुमारी सेवाजी ॥
सबका तुम पालनहारा ॥ जग. ॥ ३ ॥
करुणानिधि दीन दयाला शरणागत जन प्रतिपालाजी ॥
ब्रह्मानद है दास तुमारा ॥ जग. ॥ ४ ॥

---

५८ (राग—वनजारा)

जगदीसमें शरण तुमारी प्रभु सुनिये विनति हमारी ॥ टेर. ॥
यह पाच विषयकी धारा सब बह्या जात ससाराजी ॥
करुणाकर पार उतारी ॥ जग. ॥ १ ॥
पंछी जिम जाल अधीना तिम जिव कर्म वस कीनाजी ॥
मोहे लिजिये वेग उवारी ॥ जग. ॥ २ ॥
तन धन सुत बाधव नारी सब झूठ जगतकी यारीजी ॥
तुमविन नहि को हितकारी ॥ जग. ॥ ३ ॥
यह प्रबल कर्मकी माया जामे जीव फिरे भरमायाजी ॥
ब्रह्मानद करो प्रभु न्यारी ॥ जग. ॥ ४ ॥

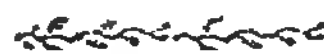
५९ (राग—बनजारा)

सुन सत्य वचन नर मेरा मिटे जनम मरण दुख तेरा ॥ टेर. ॥
कर परमेश्वरसे प्रीति नहि हेतनकी परतीतीजी ॥
पल छिनमें कूंच होय डेरा ॥ सुन. ॥ १ ॥
मनसे तज विषय विकारा करले सत संगत विचाराजी ॥
बिन ज्ञान मिटे न अंधेरा ॥ सुन. ॥ २ ॥
नित बैठ एकांत सदनमें धर ध्यान ईश्वरका मनमेजी ॥
मत दूर जानहे नेरा ॥ सुन. ॥ ३ ॥
सब जग मिथ्या कर जानो ब्रह्मानद स्वरूप पहचानोजी ॥
छुटे लख चौरासी फेरा ॥ सुन. ॥ ४ ॥



६० (राग—बनजारा)

सुननाथ अरज अब मेरी में शरण पडा प्रभु तेरीजी ॥ टेर. ॥
तुम मानुष तन मोहे दीना नहि भजन तुमारो कीनाजी ॥
विषयोंने लई मति घेरी ॥ सुन. ॥ १ ॥
सुत दारादिक परिवारा सब स्वारथका संसाराजी ॥
जिन हेत पापकीये ढेरी ॥ सुन. ॥ २ ॥
मायामे जीव भुलाना नहि रूप तुमारो जानाजी ॥
पडा जन्म मरणकी फेरी ॥ सुन. ॥ ३ ॥
भवसागर नीर अपारा कर कृपा करो प्रभु पाराजी ॥
ब्रह्मानंद करो नहि देरी ॥ सुन. ॥ ४ ॥



६१ [राग—गजल ताल दादरा]

विना प्रभुके भजन मुफत जनम गमाया, दुनीयाकी मौजमें फिर सदाही भुलाया ॥ टेर. ॥

यहवारवार देह मनुजका न मिलेगा, डालीसेंटूटागुलनगुलस्तामेखिलेगा ॥
दिन च्यार पाचके लिये क्या ढंग जमाया ॥ विना प्रभुके० ॥१ ॥
जिनकोतु मानताहें मेरे पियारें, वोछोडकर तुझे जगलमे घरको सिधारे॥
परलोकमे न तेरे कोइ होत सहाया विना प्रभुके० ॥ ॥२॥
मोहकीमदिराको पीकेमरण भूलया, चूसचूस विषया रसकु फिरत फूलया ।
जबतक नचूहे को वील्लीनें मुखमें ऊठाया ॥ विना प्रभुके० ॥३॥
कहता हे ब्रह्मानद ब्रह्मानद लीजीये, सदा प्रभुको भजन दिल ओर जानसें कीजीये० करनेसें फिर जिस्के कोई लोटके न आया ॥ विना प्रभुके० ॥ ४ ॥

६२ (राग—गजल ताल दादरा)

अये दीन बधु आज मेरी अरज सुन जरी, दया निधान जांन आंन शरणमेपडी ॥ टेर ॥

काम क्रोध लोभ मोह चोर धन हरें, तेरे विना दयाल कौन पालना करें॥
बढे हें जोरदार हार खाय में डरी, अये दीन बंधु० ॥ १ ॥
अज्ञानका पडदा मेरे दिलसे उठाईये, विषयोंके जालसे प्रभु मुजको बचाईये
भवसिंधुको तिरासोई जिसपें दया करी ॥ अये दीन बधु० ॥ २ ॥
जन्म मरणाका रोग मेरा नास कीजीये, चरण कमलकी भक्ति जांन दास दीजीयें, मिटेगेंदुर चसवीअवीं ॥
गुणहीन जानकर मुझे दिलसे न टारीये, जनम जन्मका दास जानकर सभारीये ॥
ब्रह्मानंद तेरे नामकी में टेक गन धरी अयें दीन बधु० ॥ ३ ॥

६३ [राग—गजल ताल दादरा]

मांन मान मान कह्या मानते मेरा, जांन जान जांनरूप जानले तेरा॥टेर॥
जाने विना स्वरूपके मिटे न गम कबी, कहता हे शास्त्र वारवार वात यह
सबी, हुंसीयार हो निहार यार डारमे मेरा । मांन मांन० ॥ १ ॥
जाता हे देखनेसे जिसे काशी दुवारका, मुकामहैं वदनमें तेरे उसहियारका॥
लेकिन विना विचारके किसीने नही हेरा मांन मांन० ॥ २ ॥
जो नैनकाभी नैन वैनका भी वैन है जिसके विना शरीरमें न पलक चैनहैं॥
पिछानले व खूबसो स्वरूप हे तेरा मान मांन० ॥ ३ ॥
कहताहे ब्रह्मानद ब्रह्मानद तु सही, वात यह पुरांण वेद ग्रंथमें कही॥
विचार देख मिटे जन्म मरणका फेरा मांनमांन० ॥ ४ ॥



६४ [राग—गजल ताल दादरा]

जाग जागजागमोह नींदसे जरा। भाग भाग भाग भोग जालसे परा॥टेर॥
विषयोंके जालमें फसा छुटे नही कबी, जनम जनममें विषयसंग होत हेसबी
विना वैरागके न भवसिंधु कोन तिरा जाग जाग०॥ १ ॥
वर्ष गया मास गया दिन गई घडी। दुनीयाके कार वारमें खबर नही पडी॥
नजदीक काल आ गया मनमे नहि डरा ॥ जाग जाग० ॥ २ ॥
सगतसे देहके स्वरूपको विसारीया। जगतको सत्यमानके मनको पसारिया
दिन रात करे सोच रागद्वेषसे भरा ॥ जाग जाग० ॥ ३ ॥
अपने स्वरूपको विचार देखले सही। ईश्वरहे तेरे पास वो तुझसे जुदा नही॥
ब्रह्मानद येहि सुनले वचन खरा ॥ जाग जाग० ॥ ४ ॥



६५ [राग—गजल ताल दादरा]

गाफिल तुं जाग देख क्या तेरा स्वरूप हैं। किस वासतें पडा जन्म मरण के रुप हैं ॥ टेर ॥
यह देह गेह नाशवान है नहीं तेरा, वृथाभिमान जालमें फिरे कहा घेरा ॥
तू तो विनाशसें परे सदा अनूप है ॥ गा. ॥ १ ॥
भेद दृष्टिकी न जबी दीन हो गया, स्वभाव अपनेसे आप हीन हो गया ॥
विचार देख एक तुं भूपनका भूप है ॥ गा. ॥ २ ॥
तेरे प्रकाशसें शरीर चित्त चेतता, तु देह तीन दृश्यकू सदा हे देखता ॥
द्रष्टा नहि होता है कबी दृश्य रूप है. ॥ गा. ॥ ३ ॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानद पाईये, इस बातको विचार सदा दिलमे लाइये ॥
तू देख जुदा करके जैसा छाय धूप है ॥ गा. ॥ ४ ॥

६६ [राग-गजल ताल दादरा]

अपनेको आप भूलके हैरान हो गया, मायाके जालमे फसा विरान हो गया ॥ टेर ॥
जड देहको अपना स्वरूप मान मन लिया, दिन रात खानपान कामकाज दिल दिया ॥ पानीमे दूध मिलके एक जान हो गया ॥ अ. ॥ १ ॥
विषयोंको देख देखके लालचमे आ रहा, दीपकमे ज्यो पतग जायके समा रहा ॥ विना विचारके सदा नादान हो गया ॥ अप. ॥ २ ॥
कर पुण्य पाप स्वर्ग नरक भोगता फिरे तृष्णाकि डोरसें नया सदा जनम धरे ॥ पीकरके मोहकि सुरा बेभान हो गया ॥ अप. ॥ ३ ॥
सतसगमे जाकर दिलमें विचारले वदनमे अपने आप रूपको निहार ले ॥
ब्रम्हानंद मिले मोक्ष जबी ज्ञान हो गया ॥ अप. ॥ ४ ॥



७१ रागगजल रेखता ॥

करो प्रभुका भजन प्यारे, ऊमर सब वीत जातीहै ॥ टेर ॥
पूर्व शुभ कर्म कर आया, मानुष तन धरणमें पाया ॥
फिरें विषयोंमें भरमाया, मौत नही याद आती है ॥ करो. ॥ १ ॥
वालापन खेलमें खोया, जोवनमे काम वश होया ॥
बूढापें खाटपर सोया । आशा मनको सताती हैं ॥ करो. ॥ २ ॥
कुटुंब परिवार सुत दारा, स्वपन सम देख जग सारा ॥
माया ने जाल विस्तारा, नहि यह संग जाती है ॥ करो. ॥ ३ ॥
जो प्रभु चरण चित लावें, सो भवसागरकों तर जावे ॥
ब्रह्मानद मोक्ष पद पावे, शास्त्र वाणी सुनाती है ॥ करो. ॥ ४ ॥



७२ राग—गजल ॥ वोलो चाहे न वोलो दिल जांनसे फिदाहूं ॥

प्रभुको समर पियारे, ऊमरां विहा रही है ॥
दिन दिन घडी घडीमें छिन छिनमे जा रही हैं ॥ टेर ॥
दीपककी जोत जावे, नदीयोंका नीर धावे ॥
जाती नजर न आवे, चंचल समा रही है ॥ प्रभुको. ॥ १ ॥
पिछली भली कमाई, मानुषकी दे हवाई ॥
प्रभु हेत ना लगाई, विख्या गमा रही है ॥ प्रभुको. ॥ २ ॥
घर माल मित्र नारी, दुनीयाकी मौज भारी ॥
होवे पलकमें न्यारी, दिलको फसा रही है ॥ प्रभुको. ॥ ३ ॥
क्या नींदमे पडा है, सिरकाल आ खडा है ॥
ब्रह्मानंद दिन चढा है, रजनी वीता रही हैं ॥ प्रभुको. ॥ ४ ॥

७३ [राग-गजल पूर्ववत्]

क्या भूलीया दिवानें दूनीयामें सार नांही, दिनच्यारका तमासा
आखिर करार नांही ॥ टेर ॥ क्या भूलीया०
राजा वजीर रांनी, पंडित सुरवीर ज्ञानी, सब हो गये हैं फानी,
जिनका सुमार नाही ॥ क्या भूलीया० ॥ १ ॥
सूरज वा चांद तारे, सागर पहाड भारे, होवेगा नाश सारें,
तनका आधार नांही ॥ क्या भूलीया० ॥ २ ॥
दुनीयासे हो न्यारा, सतसंग कर पियारा, सुन ज्ञानका विचारा,
नर जन्म हार नांही ॥ क्या भूलीया० ॥ ३ ॥
भवसिंधु नीरभारी, प्रभु नाम पार उतारी, ब्रह्मानंद मोक्षकारी,
दिलसैं विसार नाही ॥ क्या भूलीया० ॥ ४ ॥

७४ [राग गजल-पूर्ववत्]

गाफिल तुं सोच मनमें, प्रभु नाम क्यों विसारा, सुनता नही बजैहे,
सिर कालकान गारा ॥ टेर ॥ गाफिल०
जोवन भरी हे नारी, दिलको लगे पियारी, जब मौतकी तियारी,
तुझसे करे किनारा ॥ गाफिल० ॥ १ ॥
घरमाल वा खजाना, संगमें कोई न जाना, क्यों देखके लुभाना,
सब झूट है पसारा ॥ गाफिल० ॥ २ ॥
सुद रहै देह तेरी, होवे भस्मकी ढेरी, पलकी लगे न देरी,
विरथा करे विचारा ॥ गाफिल० ॥ ३ ॥
मायाके जाल मांही, मूर्ख रहा फसाई, ब्रह्मानंद मोक्ष पाई,
प्रभु चरणकोसहारा ॥ गाफिल० ॥ ४ ॥

७५ (राग गजल–पूर्ववत्.)

ईश्वर में दास तेरो, मुझको नहि विसारो, भवसिंधुमें पडाहुं,
प्रभु वेगे पार तारो ॥ टेर ॥ ईश्वरमें
जगकी अपार माया जिन खेल यह रचाया, मनको मेरे भुलाया,
नही खयाल है तुमारो ॥ ईश्वरमें० ॥ १ ॥
मद लोभ मोह यारी, दुस्मन वडे है भारी, करते है मार मारी,
प्रभु दीजीये सहारो ॥ ईश्वरमें० ॥ २ ॥
अजलीका नीर जावें, ऊमरा सवि विरावें, फिर के गई न आवे,
पलका नही आधारो ॥ ईश्वरमें० ॥ ३ ॥
सुत मात तात चेरा, कोई नहि है मेरा, ब्रह्मानंद वाल तेरा,
करके दया निहारो ॥ ईश्वरमें० ॥ ४ ॥

७६ राग–खमाच ताल ३ ॥

चंचल मन निशदिन भटकत है, एजी भटकत है भटकावत है ॥टेर॥
जिम मर्कट तरु उपर चढकर, डार डार पर लटकत है ॥ चंचल. ॥ १ ॥
रुकत जतनसें क्षण विषयनतें, फिरति नहीमें अटकत है ॥ चंचल. ॥ २ ॥
काचके हेत लोभकर मूर्ख, चिन्तामणिको पटकत है ॥ चंचल. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद समीप छोडकर, तुच्छ विषय रस गटकत है ॥ चचल. ॥ ४ ॥

७७ राग–खमाच ताल ३ ॥

अनहद धुनि सिरप वाज रही, एजी वाज रही अरु गाज रही ॥ टेर ॥
वाजत शख मृदग वसरी, घन गर्जन अति छाय रही ॥ अनहद. ॥ १ ॥
सुनकर मस्त भया मन मेरा, चचलता सव भाज गई ॥ अनहद. ॥ २ ॥
.के धर्म कर्म सव छूटे, लोक वदेकी लाज गई ॥ अनहद. ॥ ३ ॥
. गिरा गम नाही, शुन्य समाधि विराज रही ॥ अनहद. ॥ ४ ॥

७८ राग-खमाच ताल ३ ॥

मेरी सुरत गगनमें जाय रही, एयी जाय रही अरु आय रही ॥ टेर॥ मेरी.
त्रिकुटी महलमें चढकर देखा, जगमग जोत जगाय रही ॥ मेरी. ॥ १ ॥
अमृत वरसे, बादल गरजे, बिजली चमक मन भाय रही ॥ मेरी. ॥ २ ॥
दशवें महलमें सेज पियाकी, चुनचुन फूल बिछाय रही ॥ मेरी. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानद देह सुध वीसरी, सहज स्वरूप समाय रही ॥ मेरी. ॥ ४ ॥

७९ राग-जिला ठुमरी, चाल, गोविंद भजनकी येही विरिया० ॥

दे दर्शन मोहे आज सावरीया, विनदर्श नयन धीर न धरियाह ॥टेर॥
सावरी सुरत मेरे दिलमेंाद समाई, खांन पान तन सुध विसराई ॥
कलन पडत निशदिन पल घडीया ॥ दे दर्शन० ॥ १ ॥
विन चातक वर्षा विन होई, नेमके मिलन विन ममगति सोई ॥
तडप रही विन नीर मछरिया ॥ दे दर्शन० ॥ २ ॥
मेरे अवगुण नाथ विसारो करकृपा मम धांम पधारो ॥
जनम जनमकी में दास तुमरीया ॥ दे दर्शन० ॥ ३ ॥
ब्रह्मानद दर्शकी पियासी, करुणा करो जान निज दासी ॥
वारवार येहि मागे हमरीया ॥ दे दर्शन० ॥ ४ ॥

८० राग जिला ठुमरी ॥

अव तो तजो नर रति विषयनकी, करले फिकर परलोक गमनकी ॥टेर॥
वालपणा जिम गई जवानी, सुंदर काया भई पुराणी ॥
तदपि मिटे नही लालच मनकी ॥ अव तो तजो० ॥ १ ॥

जरा दूत लेव यमराज पठाया, रोग फोज संग लेकर आया ॥
मूर्ख आश करे क्या तनकी ॥ अब तो तजो. ॥ २ ॥
स्वारथ हेत करें सब प्रीती, सकल जगतकी यह हे रीती ॥
छोड ममत धन धांमसु तनकी ॥ अब तो तजो. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद वचन सुण लीजे निशदिन प्रभु चरण न चित दीजें ॥
पास कटे तेरी जन्म मरणकी ॥ अब तो तजो ॥ ४ ॥



८१ गजल--चाल--जोके हम तुमसे करार था॥

जोके गर्भका ईकरार था तुमे याद होके न याद हो ॥ टेर ॥
उलटे वदनसें वो लटकना, अरु लख चौरासी भटकना ॥
फिर सौचकर शिर पटकना, तुमे याद होके न याद हो॥ जोके गर्भ०॥ १॥
पिछले जन्मका वो संभारना, सब कर्मका वो विचारना ॥
फिर ईसईस पुकारना, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके गर्भ०॥ २ ॥
विषयोंसें दिल को हटावना, प्रभुके चरणमें लगावना ॥
किसी जीवकों न सतावना, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ ३ ॥
ऊस वातका विसरावना, दुनीयाकी मौज ऊडावना ॥
ब्रह्मानद फिर दुख पावना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ ४ ॥

८२ गजल ताल ३-चाल पूर्ववत् ॥

जोके ईसका उपकार था, तुमे याद होके न याद हो ॥ टेर ॥
करी गर्भमें तेरी पालना, फिर सुखसे बाहिर निकालना ॥
कुचीयोमे दूधका डालना, तुमे याद होके न याद हो॥ जोके ईसका०॥ १॥
सूरज वा चाद सितार है, जल पवन भोग अपार है ॥
तेरे वासते यह वहार है, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके ईसका॥ २॥

नर जन्म यह बहू कामका, तुजको दियाहै बे दामका ॥
अब भजन उसके नामका, तुमे याद हो के न याद हो ।।जोके ईसका. ॥ ३ ॥
प्रभुके भजनविन बेवफा, तुजको मिले न कभी नफा ॥
ब्रह्मानंदका कहना सफा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके ईसका. ॥४॥

८३ गजल ताल ३–चाल पूर्ववत् ॥

जोके मौतकादि न आयगा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ टेर. ॥
दुनीयांमे दिलको मिला दिया, प्रभुके भजनको भुला दिया ।
मनुषा जनमको रला दिया, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके.॥१॥
जब रोग आय सतायगा, खटियामे तुजको लिटायगा ॥
कोईकार काम न आयगा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके.॥२॥
सुतमित बांधव नारीया, धन माल महाल अटारीया ॥
तेरी छूट जायगी सारीया, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके. ॥३॥
यमदूत लेकर जायगा, तुझे नर विच गीरायगा ॥
ब्रह्मानंद फिर पछतायगा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके. ॥ ४॥

८४ राग–बतादो सखी कौन गली गये शाम. ॥

भजन विन विरथा जन्म गयो ॥ टेर ॥
बालपणो सब खेल गमायो, यौवन काम बह्यो ॥ भजन. ॥ १ ॥
बूढे रोगग्रसी सब काया, परवश आप भयो ॥ भजन. ॥ २ ॥
जप तप सुकृत कछु न कीनो, नही प्रभु नांम लह्यो ॥ भजन. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानद विना प्रभु समरण, जाकर नरक पयो ॥ भजन. ॥ ४ ॥

८५ राग-पूर्ववत् ॥

भजन विन भव जल कोन तरे ॥ टेर ॥
काम क्रोध-मद ग्राह वसतहै मारगमे पकरे ॥ भजन. ॥ १ ॥
कुच कंचन दोऊ घेर पडत है सब जग डूब मरे ॥ भजन. ॥ २ ॥
दान पुण्य तप निर्मल नौका अधविच टूट पडे ॥ भजन. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानद करो प्रभु सुमरन, सब दुख दूर टरे ॥ भजन. ॥ ४ ॥

८६ राग-पूर्ववत् ॥

मुसाफर क्या सोवे अब जाग ॥ टेर ॥
इन विर छनकी थिर नहिछाया, देख भुलाया वाग ॥ मुसा. ॥ १ ॥
इस सरायमे रहना नाही, काहे करत है राग ॥ मुसा. ॥ २ ॥
यह सब चोर लगे संग तेरे, इनसे वच कर भाग ॥ मुसा. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानद देर मत कीजे, अपने मारग लाग ॥ मुसा. ॥ ४ ॥

८७ राग-पूर्ववत् ॥

सुन मेरे मना अब तो समज कर चाल ॥ टेर ॥
वाल्य गयो योवन पुनि आयो, श्वेत भये सब बाल ॥ सुन. ॥ १ ॥
जो न तजे तूं इन विषयनको, आन छुडासी काल ॥ सुन. ॥ २ ॥
जाना दूर मुसाफर तुजको, पास नहीं कछु माल ॥ सुन. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानद मिलनके कारण, छोड जगत जजाल ॥ सुन. ॥ ४ ॥

८८ राग-पूर्ववत् ॥

करोरे नर प्रभु चरनसे हेत ॥ टेर ॥
बालपणो सब खेल गमायो, यौवन तरुणी तन लपटायो ॥
बाल भये अब श्वेत ॥ करोरे. ॥ १ ॥
जिनके कारण पाप कमावे, संग तेरे कोई नहि जावे ॥
मरकर होवत प्रेत ॥ करोरे. ॥ २ ॥
श्रवण सुने नहि नैन निहारे, मात पिता परलोक सिधारे ॥
अबहु तो मूरख चैत ॥ करोरे. ॥ ३ ॥
जो जन प्रभुसे हेत लगावे, सो ब्रह्मानंद निश्चय पावे ॥
जन्म सुफल कर लेत ॥ करोरे. ॥ ४ ॥

---

८९ राग-मंगल प्रभाती ॥

घटहिमे उजियारा साधो, घटहिमे उजियारारे ॥ टेर ॥
पास बसे अरु नजर न आवे, बाहिर फिरत गवारारे ॥
बिनसत गुरुके भेद न जाने, कोटि जतन कर हारारे ॥ घट. ॥ १ ॥
आसन पद्म लगाकर बेठो, उलट नैनका तारारे ॥
त्रिकुटी महलमे ध्यान लगावो, देखो खेल अपरारे ॥ घट. ॥ २ ॥
नहि सूरज नहि चांद चांदनी, नही बिजली चमकारारे ॥
जगमग जोत जगे निस वासर, पार ब्रम विस्तारारे ॥ घट. ॥ ३ ॥
जो जोगी जन दर्शन पावे, उघडे मोक्ष दुवारारे ॥
ब्रह्मानंद सुनोरे अबधू, वोहे देश हमारारे ॥ घट. ॥ ४ ॥

---

९० राग–मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

घटहीमे अविनासी साधो ॥ घट. ॥ टेर ॥
काहे रे नर मथुरा जावे काहे जावे काशीरे ॥
तेरे तनमे बसे निरजन जो वैकुंठ* विलासीरे ॥ घट. ॥ १ ॥
नहि पताल नहि स्वर्गलोकमें, नही सागर जल राशीरे ॥
जो जन सुमरन करत निरंतर, सदा रहे तिन पासी ॥ घट. ॥ २ ॥
जो तूं उस्को देखा चाहे, सबसे होय उदासीरे ॥
बैठ एकांत ध्यान नित कीजे, होय जोत परकासीरे ॥ घट. ॥ ३ ॥
हिरदेमे सब दर्शन होवे, सकल मोह तम नाशीरे ॥
ब्रह्मानंद मोक्ष पद पावे, कटे जनमकी फासीरे ॥ घट. ॥ ४ ॥



९१ राग–मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

जोग जुगत हम पाई साधो ॥ जोग. ॥ टेर ॥
मूल द्वारमे बंध लगायो, उलटी पवन चलाईरे ॥
षट चक्रका मारग सोधा, नागन जाइ उठाईरे ॥ जोग. ॥ १ ॥
नाभिसे पश्चिमके मारग, मेरु डंढ चढाईरे ॥
ग्रंथी खोल गगनपर चढीया, दसवे द्वार समाईरे ॥ जोग. ॥ २ ॥
भवर गुफामें आश न माच्यो, काया सुध बिसराईरे ॥
चंदा बिन सूरज निशदिन, जगमग जोत जगाईरे ॥ जोग. ॥ ३ ॥
परमातमको मेल भयो जब, सुंनमे सेज बिछाईरे ॥
ब्रह्मानद सत गुरु कृपासे आवागमन मिटाईरे ॥ जोग. ॥ ४ ॥

* मोक्ष

९२ राग-मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

अनहदकी धुन प्यारी साधो ॥ अन. ॥ टेर ॥
आसन पद्म लगाकर करसे, मुद्र कानकी वारीरे ॥
जीनी धुनमे सुरत लगावो, होत नाद झनकारीरे ॥ अनहद० ॥ १ ॥
पहले पहले रिलमिल वाजे, पीछै न्यारी न्यारीरै ॥
घटा शख वंसरी वीणा, ताल मृदग नगारीरै ॥ अनहद० ॥ २ ॥
दिन दिन सुनत नाद जब निकसे, काया कंपत सारीरे ॥
अमृत बुद झरे मुखमाही जोगीजन सुखकारीरे ॥ अनहद० ॥ ३ ॥
तनकी सब सुध भूल जात है, घटमें होय उजारीरे ॥
ब्रह्मानद लीन मन होवे देखी वात हमारीरे ॥ अनहद० ॥ ४ ॥



९३ राग-मंगल ताल प्रभाती ॥

सोहं शब्द विचारो साधो ॥ सोहं० ॥ टेर ॥
माला करसें फिरत नही है, जीभ न वरण उचारोरे ॥
अजपा जाप होत घटमांही, ताकी ओर निहारोरे ॥ सोहं० ॥ १ ॥
ह अक्षरसे स्वास उठावो, सोसे जाय विठारोरे ॥
हंसो उलट होत है सोहं, जोगी जन निरधारोरे ॥ सोहं० ॥ २ ॥
सब ईकीस हजार मिलाकर, छेसो होत सुमारोरे ॥
अष्ट पहरमे जागत सोवत, मनमे जपो सुखकारोरे ॥ सोहं० ॥ ३ ॥
जो जन चिंतन करत निरतर, छोड जगत व्यवहारोरे ॥
ब्रह्मानद परम पद पावे, मिटे जनम ससारोरे ॥ सोहं० ॥ ४ ॥



९४ राग-मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

नाम निरंजन गावो साधो ॥ नाम निरंजन गावोरे ॥ टेर ॥
नाम जहाज बेठकर दुस्तर, भवसागर तर जावोरे ॥
मानुष देह मिली यह दुर्लभ, काहे वृथा गमावोरे ॥ नाम० ॥ १ ॥
घरकी जीभ नाम बिन दामा, फिर क्यों देर लगावोरे ॥
उठत बेठत सोवत जागत, मनसें नहि विसरावोरे ॥ नाम० ॥ २ ॥
कलि केवल इक नाम अधारा, दुजा भरम भुलावोरे ॥
ब्रह्मानंद नाम बिन प्रभुके कबहु मोक्ष नहि पावोरे ॥ नाम० ॥ ३ ॥

९५ राग-मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

सत संगत जग सार साधो सत संगत जग साररे ॥ टेर ॥
काशी नाये मथुरा नाये नाये हरि द्वाररे ॥
चार धाम तिरथ फिर आये मनका नहि सुधाररे ॥ सत संगत ॥ १ ॥
वनमे जाय कीयो तप भारी, काया कष्ट अपाररे ॥
इद्रीजीत करी वश अपने, हीरदे नहि विचाररे ॥ सत० ॥ २ ॥
मंदिर जाय करे नित पूजा, राखे वडो आचाररे ॥
साधु जनकी कद्दर न जाने, मिले न [1]सर्जनहाररे ॥ सत० ॥ ३ ॥
बिन सत संगत ज्ञान नहि उपजे, करले जतन हजाररे ॥
ब्रह्मानद खोज गुरू पूरा, उतरो भवजल पाररे ॥ सत० ॥ ४ ॥

९६ (राग-मंगल ताल ३ प्रभाती)

गुरु बिन कोन मिटावे भव दुख, गुरु बिन कोन मिटावेरे ॥ टेर ॥
गहरी न दियां वेग वडो हे, वहत जीव सब जावेरे ॥
कर कीरपा गुरु पकड भुजासे, ग्यच तीर पर लावेरे ॥ गुरु बिन० ॥ १ ॥

१ परमात्मा

काम क्रोध मद लोभ चोर मिल, लूट लूट कर खावेरे ॥
ज्ञान खड्ग दे करकरमांही, सबको मार भगावेरे ॥ गुरु विन० ॥ २ ॥
जाना दूर रात अंधियारी, गैला नजर न आवेरे ॥
सीधे मारग पर पग धर कर, सुखसे धाम पुगावेरे ॥ गुरु विन० ॥ ३ ॥
तन मन धन सब अर्पण करके, जो गुरुदेव रिझावेरे ॥
ब्रह्मानंद भवसागर दुस्तर सो सहजे तर जावेरे ॥ गुरु विन० ॥ ४ ॥

९७ (राग-मंगल ताल ३ प्रभाती)

यह जग सुपना हे रजनीका, क्या कहे मेरा मेरारे ॥ टेर ॥
मात तात सुत दार मनोहार, भाई बंध अरु चेरारे ॥
अपने अपने स्वारथके सब, कोई नहि है तेरारे ॥ यह० ॥ १ ॥
जिनके हेत करत धन संचय, करकर पाप घनेरारे ॥
जब यमराज पकड लेजावे, कोइ न संग चलेरारे ॥ यह० ॥ २ ॥
उचे उंचे महल बनाये, देश दिगंतर घेरारे ॥
सबहि ठाठ पडा रह जावे, होत जंगलमें डेरारे ॥ यह० ॥ ३ ॥
अत्तर फुलेल मिले जिस तनको, अंत भस्मकी ढेरारे ॥
ब्रह्मानंद रूप विन जानें फिरत चौरासी फेरारे ॥ यह. ॥ ४ ॥

९८ [राग-प्रभाती]

जाग मुसाफिर क्या सुख सोवे, आखिर तुजको जाना है ॥ टेर ॥
इस सरायमे रहण न पावे, क्यारा जा क्या राणा है ॥
काहे पैर फेलावे मूरख, घडी पलक ठैरानाहै ॥ जाग० ॥ १ ॥
इक आवत दूजा चल जावे, कायम नही ठिकाणा है ॥
ये विष भरिया सुंदर परिया, काहे देख लुभाना है ॥ जाग० ॥ २ ॥
इस मकानमे चोर बसतहै, अपना माल बचानाहै ॥
आ परदेश खरच मत कीजे, यहां तोतुझे कमाना है ॥ जाग० ॥ ३ ॥

दूर देशमें जाना तुजको, पास न कछु समाना है ॥
ब्रह्मानद सुकृत कर प्राणी, जो आगे सुख पाना है ॥ जाग० ॥ ४ ॥

९९ राग–प्रभाती ॥

रे चेतन पोते तूं परना छिद्र चितारे तूं ॥ निर्मल होत कर्मका दमहू॥
निजगुण अवु नितारे तूं ॥ रे चेतन० ॥ १ ॥
सम्यक् दृष्टी नाम धरावे, सेवे पाप अठारे तू ॥
नरक निगोद थकी क्यू छूटे, जो पर हियो न ठारे तूं ॥ रे चेतन० ॥२॥
ज्यूं त्यूं करने सोभा अपनी, या जगमांही दिखावे तूं ॥
प्रगट कहावे धर्मको धोरी, अतर छलन निवारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ३ ॥
परमेश्वर घटघटको साखी, जांकी सरम न धारे तूं ॥
कुंभीपाक नरकमें पचशी, अंतश भरियो विकारे तूं ॥ रे चेतन० ॥ ४ ॥
पर निंदा अघ पिंड भरीजे, आगम साखन संभारे तूं ॥
विनयचंद कर आतम निंदा, भवभव दुष्कृत टारे तूं ॥ रे चेतन० ॥ ५ ॥

१०० राग–प्रभाती ॥

चिंता वेग हरो चिंतामण, पारशनाथ हमारी ॥ टेर ॥
धरणींद्र पद्मावती तेरे, सेवककूं हितकारी ॥ चिंता० ॥ १ ॥
चिंतामणि पायां सुख प्रगटे, पूरे इच्छा सारी ॥
तूं आनंद कद वामा सुत, महिमा विदित निहारी ॥ चिंता० ॥ २ ॥
वो चिंतामणि जड पुद्गल है, तिनहीके गुण भारी ॥
तू चेतन चिंतामणि पारश परतिख पर उपकारी ॥ चिंता० ॥ ३ ॥
तू चिंतामणकू प्रिय न राखे आपे रिद्धि अपारी ॥
तू ठाकुर त्रिभुवनको स्वामी आशा पूरवनारी ॥ चिंता० ॥ ४ ॥

इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ प्रथम खण्डे पद्याभिधम्
तृतीय प्रकरणं समाप्तम् ॥



(श्रीमत् पूज्यजी महाराज श्री नथमलजी महाराज कृत)

॥ प्रकरण चौथा ॥ स्तवन ॥



१०१ राग–मत विलमावै ए मत भरमावै ए ॥

प्यारा लागैजी, रूडा लागैजी, जिनजी तीन भवन मनमोहन गाराजी, पारस प्यारा लागैजी, ॥ टेर ॥

काशी देश वनारसी नगरी जो, जठे सोभा छे सारा जगरी जी ॥ पारश. ॥ अश्वसेन नृपतम धुरी वाणीजी, ज्यारे वामादेजी पटराणीजी ॥ पारश. ॥ १ ॥ ज्यांरी कूंखे प्रभू चव आयाजी, एतो स्वप्ना चवदे दिखायाजी ॥ पारश. पोस असित दशमी जायाजी, ज्यांरा इद्र इद्राणी मगल गायाजी ॥ पारश. ॥ २ ॥ जोवन वय दिक्षा धारीजी, प्रभू छाडी प्रभावती प्यारीजी ॥ पारश. ॥ प्रभू वनमें काउस्सग करीयोजी, जरा कमठासुर कोपै भरीयोजी ॥ पारश. ॥ ३ ॥ जगत जीवन जिहां आवेजी, यो तो दशभव वैर जितावेजी ॥ पारश. ॥ काली काठल आभो छावैजी, कोई आभामे वीजनमावेजी ॥ पारश. ॥ ४ ॥ सजल सघन घन वरषेजी, कोई गाजै गगन अति कडकैजी ॥ पारश. ॥ पड़ै मूसलधारा पाणीजी, एतो सरिता अति पूराणीजी ॥ पारश. ॥ ५ ॥ जलकर देही ढकाईजी, प्रभुरैना सातरू

दूर देशमें जाना तुजको, पास न कछु समाना है ॥
ब्रह्मानद सुकृत कर प्राणी, जो आगे सुख पाना है ॥ जाग० ॥ ४ ॥

९९ राग–प्रभाती ॥

रे चेतन पोते तूं परना छिद्र चितारे तूं ॥ निर्मल होत कर्मका दमसूं॥
निजगुण अंबु नितारे तू ॥ रे चेतन० ॥ १ ॥
सम्यक् दृष्टी नाम धरावे, सेवे पाप अठारे तू ॥
नरक निगोद थकी क्यू छूंटे, जो पर हियो न ठारे तूं ॥ रे चेतन० ॥२॥
ज्यूं त्यू करने सोभा अपनी, या जगमांही दिखावे तू ॥
प्रगट कहावे धर्मको धोरी, अतग छलन निवारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ३ ॥
परमेश्वर घटघटको साखी, जाकी सरम न धारे तूं ॥
कुंभीपाक नरकमें पचशी, अंतश भरियो विकारे तूं ॥ रे चेतन० ॥ ४ ॥
पर निंदा अघ पिंड भरीजे, आगम साखन संभारे तूं ॥
विनयचंद कर आतम निंदा, भवभव दुष्कृत टारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ५ ॥

१०० राग–प्रभाती ॥

चिंता वेग हरो चिंतामण, पारशनाथ हमारी ॥ टेर ॥
धरणींद्र पद्मावती तेरे, सेवककूं हितकारी ॥ चिंता० ॥ १ ॥
चिंतामणि पायां सुख प्रगटे, पूरे इच्छा सारी ॥
तूं आनद कंद वामा सुत, महिमा विदित निहारी ॥ चिंता० ॥ २ ॥
वो चिंतामणि जड पुद्गल है, तिनहींके गुण भारी ॥
तू चेतन चिंतामणि पारश परतिख पर उपकारी ॥ चिंता० ॥ ३ ॥
तू चिंतामणकू मिंय न राखे आपे रिद्ध अपारी ॥
तू ठाकुर त्रिभुवनको स्वामी अशा पूरवनारी ॥ चिंता० ॥ ४ ॥

इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ प्रथम खण्डे पद्याभिधम्
तृतीय प्रकरणं समाप्तम् ॥



(श्रीमत् पूज्यजी महाराज श्री नथमलजी महाराज कृत)

॥ प्रकरण चौथा ॥ स्तवन ॥

१०१ राग-मत विलमावे ए मत भरमावे ए ॥

प्यारा लागैजी, रूडा लागैजी, जिनजी तीन भवन मनमोहन गाराजी, पारस प्यारा लागैजी, ॥ टेर ॥

काशी देश बनारसी नगरी जो, जठे सोभा है सारा जगरी जी ॥ पारश. ॥ अश्वसेन नृपतम धुरी वाणीजी, ज्यारे वामादेजी पटराणीजी ॥ पारश. ॥ १ ॥ ज्यांरी कूंखे प्रभू चव आयाजी, एतो स्पना चवदे दिखायाजी ॥ पारश. पोस असित दशमी जायाजी, ज्यांरा इंद्र इंद्राणी मंगल गायाजी ॥ पारश. ॥ २ ॥ जोवन वय दिक्षा धारीजी, प्रभू छाडी प्रभावती प्यारीजी ॥ पारश. ॥ प्रभू वनमें काउस्सग करीयोजी, जरा कमठासुर कोपें भरीयोजी ॥ पारश. ॥ ३ ॥ जगत जीवन जिहां आवेजी, यो तो दशभव वैर जितावेजी ॥ पारश. ॥ काली कांठल आभो छानैजी, कोई आभामे बीजनमावेजी ॥ पारश. ॥ ४ ॥ सजल सघन घन वरषेजी, कोई गाजै गगन अति कडकैजी ॥ पारश. ॥ पडैं मूसलधारा पाणीजी, एतो सरिता अति पूराणीजी ॥ पारश. ॥ ५ ॥ जलरूर देही ढकाईजी, प्रभुरैना सातक

नदीयां आईजी ॥ पारश. ॥ प्रभू घोर परिसह मांहीजी, जिनजी ऊभा अचल गिरराईजी ॥ पारश. ॥ ६ ॥ धरणेंद्र पद्मावती आयाजी, जरा जिनजीनें सीस चढायाजी ॥ पारश. ॥ नृत्य करती इद्राणी हरषेजी, अनमिषनैंन जिनंद मुख निरपैजी ॥ पारश. ॥ ७ ॥ डरतों कमठ मद भागोजी, ओतो जिनजी रै चरणा लगोजी ॥पारश.॥वार वार अपराध खमावैजी, यो तो देव परिसह पिछतावैजी ॥पारश.॥ ॥ ८ ॥ करै कंचन जे लोहानैजी, तेतो पासर जड पापानैजी ॥ पारश. ॥ आप पारस गुण रहानैजी, तूठाकर देवो आप समानैजी ॥ पारश. ॥ ९ ॥ जिनजी केवल पायाजी, च्यारूं घातिक कर्म खपायाजी ॥ पारश. ॥ पांपां पद अविकारैजी, जिनजी लोकालोक निहारैजी ॥ पारश. ॥ १० ॥ पांच तीसकी शाल चोमासोजी, कोई साहे पुरै लीनो वासोजी ॥ पारश. ॥ नथमल कै प्रभू माहाराजी, एतो जगत जीवन आधाराजी ॥ पारश. ॥ ११ ॥ इति. ॥



१०२ राग-सावण आयो हो मांरा कमधजीया उमराव भमरजी सा० ॥

अरज सुणीजे हो, मारा नव भवरा भरतार, प्रभुजी, अरज सुणीजे हो, दरशन दीजे हो, साम्र सेग देजीरानंद, सागरिया, दरशन. ॥टेर॥ ॥ जान वनाई हो, प्रभु, आगे वजाय निसान, नेंसीसर अर्ज.॥ हरि हलधर साहो, साये वडा वडा राजान ॥ सांवरी. ॥१॥ ॥ त्रिभुवन मांही हो, प्रभु, प्रगटयो हर्ष अपार, नेमी० ॥ नेम सरिखा हो, प्रभु, बींदराज लसीनार, ॥ साव. ॥ २ ॥ ॥ तोरण आया हो, जद पसूंनां करीरे पुकार, नेमी० ॥ तेल चढीनै हो प्रभु त्याग चल्या

गिरनार, सांव० ॥३॥ ॥ यानहि जाणी हो, प्रभु, जासोमोय छिटकाय, नेमी. ॥ गूथ्या मनोरथ हो, मारा रह्या मनरा मनमांय, साव, सांव० ॥ ४ ॥ विण अवलापर हो, प्रभु, क्यू करो इतनो रोस, नेमी. ॥ जोतजणी विचारी हो, प्रभु, तोरे काढयो छु तो दोस, साव० ॥५॥ नवभव न्यारी हो, प्रभु, नकरी रापी पास, नेमी. ॥ दशमा भवमे हो, प्रभु, कांइरे करोछो निरास, साव० ॥ ६ ॥ अब पाछा पधारो हो, प्रभु, मतिरे हसावो लोग, नेमी. ॥ इम घरत जीयां हो, प्रभु, न मिले सिव वधु योग, नेमी. ॥ ७ ॥ पुरुष पनोता हो, प्रभु, तुम जादवकुल भाण, नेमी. ॥ इम हठ ताण्या हो, प्रभु, जन हासी घरहाण, साव० ॥ ८ ॥ अनला दुपणी हो, प्रभु, चीव पडयो जजाल, नेमी. ॥ दया दिल नाणो हो, प्रभु, वाजो दीन दयाल, सांव० ॥ ९ ॥ इम जूरणा कीधा हो, सती, ए जल भर भर नैण, नेमी. ॥ फिरमल समजायो हो, सती, मेटी भव दुखद हैण, .सांव. ॥ १० ॥ पिव पहली हो, सिवपहुंती कर्म खपाय, नेमी. ॥ शाल छतीसै हो, मुनि नथमलगुण गाय, साव० ॥ ११ ॥ भाद्रव मासे हो, कोई वदीतीस सुविलास॥ मेदनिपुरमें हो, कोई सुपे रह्या चउमास ॥ सांव० ॥ १२ ॥ इति ॥



१०३ राग-(नाथ कैसें गजको फद छुडायो.)

जिणद मोरी करणी नाहि निहारो, थांरो विरुद निचारी नै तारो ॥ जि० ॥ टेर ॥ हिंसा झूट अदत्त मिथुनमें, राच रह्यो मन मारो, पाप अठारामें एक न छूटो, छु अवगुन आगारो ॥ जि० ॥ १ ॥ तपजप लेश वनै नहि मोसू, नवनै पर उपगारो, करत करत परतात गतदिन, वीतत मोहिज मारो ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रिकथा वात कुशास्त्र तनी रुच, आगम लगत न प्यारो, हिंसा धर्म अमृत सम लागै, दया

धर्म लागै पारो ॥ जि० ॥ ३ ॥ इंद्री पांचू प्रबल होय रही अपने अपने विकारो, एकही इंद्री वस नहि मोरै, सो दीसै वहुल संसारो ॥ जि. ॥ ४ ॥ पुदगलके रंग रातो मातो वांध्यो पापको भारो, ग्यान क्रियाकी रुच नहि मनमें, सो कैसें व्हैगो निस्तारो ॥ जि. ॥ ५ ॥ पिउ पिउ शब्द रटै ज्यू पपइयो, नाम रटू तिम थांरो, अवरतो साज सकल डूवणको, एकयोही आधारो ॥ जि० ॥ ६ ॥ वेकर जोरी नथमल निनवै भक्तवछल अवधारो, पतित उधारन विरुद तुमारो, तो मो सम पतित उधारो ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥



१०४ [राग—टोडी]

वागुर कोउर ध्यान हमारै सो भव सायर पार उतारै ॥ वा. ॥ टेर ॥ तिनतिय हार अहिमणि किंकर, शत्रु मित्र सकल इक सारै, समित गुपत युत, इष्ट सवनकू, मीष्ट वचन मित सहित उचारै ॥ वा. ॥ १ ॥ रक्तरहत नितमन सजममें लहु दीर्घ दूषण सव टारै, न करै अजन नैन मजन तन, भव दुख भजन सो अन गारै ॥ वा. ॥ २ ॥ भरमत महरन विरुद भानको, खाडो हाथ ग्यानको धारै, विक्रम रस वैराग्य आन उर कर्म सवल दल मारथ छारै ॥ वा. ॥ ३ ॥ सीत घाम पावस ऋतु केसव, सहै परिस हन सोच लिगारै, मासुक भोगी साचा जोगी तपो घनी तन ममत्त्व निवारै ॥ वा. ॥ ४ ॥ गुणसत वीस सहित दीपत नित भक्तवछल करुणा भंडारै नथमल नमत जास पद पकज भव दुख फास पलक्रम टारै ॥ वा. ॥ इति ॥ ५ ॥

१०५ (राग—टोडी)

सुगरुकि सीख सुनो चतुरारे तोड डारो मोहदा पिंजरारे ॥ सु. ॥ टेर. ॥ ए ससार असार दुखालय, जानत नहि जीवरा, अघरा रे, हो रहे वे हाल कुटुंबनी संगतैं, वा जीगरका ज्यूं बंदरारे ॥ सु. ॥ १ ॥ तन धन जोवन अथिर पतग रग, व्योम माहि जैसें बदरारे, विखरेत वैर कछु नही लागत, क्यू सूतो गाफल निदरारे ॥ सु. ॥ २ ॥ विषय व्यामोह होय व्यामको, मानत सुरत मनमे मधुरारे, फल किं पाक समान विषय घन, नर्क निगोद तणी जदुरारे ॥ सु. ॥ ३ ॥ जिन चक्री हरि हलधर सुरपत स्वर्ग निवासी सहु अमरारे, सकल जगत ग्रासी जव आया नहि नलखत ऐसे नमरारे ॥ सु. ॥ ४ ॥ एह जान भयो बोधजा सहिय टीये डाड सकल लफरारे, करसिर धार नमत नथमल जिन सोध लीया मारग अपरारे ॥ सु. ॥ ५ ॥ इति. ॥

---

१०६ (राग—चलत)

अब तू चेतरे भाई, हारे तोनें सत गुरु वाट वताइ ॥ अ. ॥ टेर ॥ काल अनत कर्म वस भटक्यो, लक्ष चौरासी माही, नाना भव करता मूसकलसूं मानव देह या पाई ॥ अ. ॥ १ ॥ नरभव रतन मिल्यो गनीको, खोवै क्यू निरथाइ, काच साटे नर पाच गमावै, कांकरीये निठुराई ॥ अ. ॥ २ ॥ लडक पनै खेल्यो अरु दोड्यो भोलपणामें भाई, आपापरकी समज न मनमें का जान धर्म वाई ॥ अ. ॥ ३ ॥ जो वन जोरै द्रव्य वहु जोरे, घर करके कपटाई, कै विषया ध होय अवरहीयो, ललना रग लपटाई ॥ अ ॥ ४ ॥ जो

वन चटको छै दोय दिनको, खटको राख पहलाई, आई जरा जोबन जब विगड्यो, दूर गई वैलाई ॥ अ. ॥ ५ ॥ सिर आये धोला तन थया खोला, दशनर हे मुंहनाई, परणी नार प्यार नहि पेखत, पातग्ला नमन मांई ॥ अ. ॥ ६ ॥ अैसी जान समज मन जीवड़ा काल लगाई धाइ, पलक एकमें लेत ऊटक कें, बगम छरीकी दाई ॥ अ. ॥ ७ ॥ इकतीसे वैशाख वनेहै वारु ढाल वनाइ, कै नथमल धर्म आराध्या, जन्म मरण मिट जाइ ॥ अ. ॥ ८ ॥ इति ॥



१०७ (राग–कटाय डालूंनींबूवा)

समज मन जीवडा ४, हारे गुरु उपदेश ॥ स. ॥ टेर ॥ या जग अपनो को नहि रे ४, स्वार्थीयो परिवार ॥ स. ॥ सुखमें सब सीरी हुवे रे, दुखमे दगा दार ॥ स. ॥ १ ॥ तन धन जोबन कारमोरे, जैसो रग पतग ॥ स. ॥ दोय दिनूमें देखतां, पर तरगमें भग ॥ स. ॥ २ ॥ कायाका गर्भ कहा करै रे, जो वो सनतकुमार ॥ स. ॥ सुरपति रूप प्रसंसीयोरे, देखायेकर नदिदार ॥ स. ॥ ३ ॥ चक्रीमान कीयो घणो रे, बिगर गयो सवरूप ॥ स. ॥ कृमिकुल पूरित तन थयोरे, भये वैरागी जब भूप ॥ स. ॥ ४ ॥ धनका गर्भ कहा धरै रे, जो वो कृष्ण ने राम ॥ स. ॥ प्रभुता तो त्रिहुं खंडनी रे, कमलापत जाको नाम ॥ स. ॥ ५ ॥ जिनकूही जिनने छेह दयो, कुमलागनिका नार ॥ स. ॥ कौसंवी वनमें पगारीया, सही विपत अपार ॥ स. ॥ ६ ॥ जोबन गर्भ कहा करै रे, चटको दिन दोय ॥ स. ॥ जरा आयां तन जोसरोरे, जत्न करता होय ॥ स. ॥ ७ ॥ काला काहू वा उजलारे ऊजले गये भाज ॥ स. ॥ साठी बुध नाठी

कहैरे। जरा गमाई लाज ॥ स. ॥ ८ ॥ एहवी जाणी भव्य प्राणी– यारे। आराहो जिनधर्म ॥ स. ॥ दुख दोहग दूरे टले रे। पावो सिवसर्म ॥ स. ॥ ९ ॥ पालीमे पूजय धागीयारे। तीसा केरी साल ॥ स. ॥ होली चउमासी करी रे। नथमल जोडी ढाल ॥ स. १० ॥

१०८ [राग—हीडेकी.]

लख चउरासीमाहे रुलतां काल अनंत गमायोरे ॥ पूर्व पुण्य करीनें प्राणी, रुडो नरभव पायोरे ॥ चेतन चेतोरे चेतन चेतोरे ॥ थारे काल भवांतर झटके लेसीरे ॥ चेतन. ॥ १ ॥ आरजखेत्र उत्तम कुल जनम्यो, देह निरोगी पाईरे ॥ शुध आचारी सतगुरु मिलीया, गुण्यमें कसरन काईरे ॥ चेतन. ॥ २ ॥ मानव भव चिंतामणि सरिखो, जो कीजे सो होवेरे ॥ मूरख विषया रसके माही, अहल जमारो खोवेरे ॥ चेतन. ॥ ३ ॥ बालपणो लडकाके साथे व्यर्थी खेल गमायोरे ॥ भरजोवनमें आधो हूवो, तरणी संग लपटायोरे ॥ चेतन. ॥ ४ ॥ जोवन मटके झूले गर्भमें, मनमें बहु मगरूरीरे ॥ देह तणे खेलागण नहि दे, राखे फिटक सिंदूरीरे ॥ चेतन ॥ ५ ॥ जोवन वीता जराज व्यापी, सिरपर धोळा आयारे ॥ नैणज टोनूं झरवा लागा, कपन लागी कायारे ॥ चेतन ॥ ६ ॥ न्यातीं गोती सार न पूछे, सब मतलबके गरजीरे ॥ डोकरीगो अब मरजो वाल्हे, करें रामस् अरजीरे ॥ चेतन. ॥ ७ ॥ काल बलि केहने नहि छोडे, क्यों रांजा क्या रागारे॥ परभवमें पकडी लेजावे, चीडी भणिसोचा– णारे ॥ चेतन ॥ ८ ॥ एहवी जाणीनें भव्य प्राणी, धर्मध्यान जो धरज्योरे ॥ परभवमाहीं सुखीया होवो, शिवरमणीनें वरज्योरे ॥ [illegible]

१११ राग-जाडानी. ॥

गूफामें ध्यान धर्‍यो रहनेम, देख राजल जाग्यो प्रेम ॥ दूषण लागेलो ॥ कहे रहनेम तजी कुल लाज, मेल मिल्यो भल आज ॥ दू. ॥ १ ॥ ए तुज रूप अनूपम गात, सची सम साक्षात ॥ दू. ॥ तू हरि सम भोगव भोग, सारीखो संयोग ॥ दू. ॥ २ ॥ सती डरी जाणी पुरुष कुपात्र, बैठी संकोची गात्र ॥ दू. ॥ समुद्र बीजे सुत रहनेम, आडर धरमन प्रेम ॥ दू. ॥ ३ ॥ दुर्लभ मानवको अवतार, सुख विलसो सुजलार ॥ दू. ॥ भर जोवन विलसीनें भोग, पाछे ले साजोग ॥ दू. ॥ ४ ॥ जाणि रहनेम सति चिते चीत, भय नहि छे या भीत ॥ दू. ॥ जातवत ये अश्व समान, जानव देइमवान ॥ दू. ॥ ५ ॥ सुण सुण हो मोटा मुनिराय, महाव्रत भागेलो, महाव्रत थांरो भागेलोजी, मुनि मन राखो इक ठाम ॥ दू. ॥ स्वप्नामें न धरूं मन पाप, आवे सुरपत आप ॥ दू. ॥ अगंधन कुल अहिजारे देह, वमियो विष न लेह ॥ दू. ॥ ६ ॥ अजसजीवी तुजने धिःकार, वाछै वमीयो विकार ॥ दू. ॥ मर्न सिरे नहि या श्रेय वात, देख देवर कुल जात ॥ दू. ॥ ७ ॥ भो जग नृप पौत्रीमें जोय, अंधक पौत्र तूं होय ॥ दू. ॥ गंधन कुलका सर्प समान, मत होय समता आन ॥ दू. ॥ ८ ॥ घरघर जासो लेन अहार, देख सो सुंदर नार ॥ दू. ॥ रूप देख धर सोउन माद, तो कुण कहसी साद ॥ दू. ॥ ९ ॥ इडना माया टपपर जोय, अथिर आतम तुज होय ॥ दू. ॥ इन कारन कहूं में धर राग, मान वचन महा भाग ॥ दू. ॥ १० ॥ पचास रभा सरखी नार, तजलीयो सजम भार ॥ दू. ॥ रमणी रूप देखी मत भूल, नारी दुखांरो छे मूल ॥ दू. ॥ ११ ॥ नर्कनी दीवी कही जिनराज, पाप सरोवर पाज ॥ दू. ॥ सर्वापदनो है संकेत, कलह दालिद्रनो खेत ॥ दू. ॥ १२ ॥ असुच अग मलमूत्रनी खान,

हींगा देवी समान ॥ द्रू. ॥ नारी नहि या विषकी बेल, देवै नरकां-मेल ॥ द्रू ॥ १३ ॥ एह वचन सुन सती तणा ताम, रूप कीया दृढ परिणाम ॥ द्रू. ॥ अकुश कर करि आवै ठाम, तिम आयो संजम धाम ॥ द्रू. ॥ १४ ॥ दोनूं भुगत गये कर्म तोड, नयमल नमे कर-जोड ॥ द्रू. ॥ महा नद बीज मेडता माय. प्रणम्या पातिक जाय ॥ द्रू.॥ ॥ १५ ॥ इति. ॥



११२ राग—चलित ॥

रटीये नाम नीरजनकोरे ॥ र. ॥ टेर ॥ कर्म काष्ठ जारन हुत भुगसम, मृगपति मृग अघ गजनको ॥ असनि समान नाम जिनव-रनो, सकल दुखा चल भजनको॥ र.॥ १ ॥ कुमति रमाकी केलको बाधक, साधक सिव मग साधनको ॥ भवोदधि तारन मनमथ मारन, कारन पतित ऊधारनको ॥ र. ॥ २ ॥ मिथ्या मयल मलिन हृदय चरव, अजन सम जस मजनको ॥ कै कर जाडो नथमल मधुकर, मञ्जु-पद रूपी कजनको ॥ र. ॥ ३ ॥ इति ॥



११३ राग–चलित ॥

वृथा जन्म गमायो जिनेसर ॥ वृ. ॥ टेर ॥ क्रोध मान माया महि उलज्यो, लालचमें ललचायो हो ॥ दान शील तप भाव, इत्या-दिक कछु शुक्रतवन नायो हो ॥ वृ. ॥ १ ॥ पर वचनकी धर उर आसा, धर्मी नाम धरायो हो ॥ बुगला भगत जगतमें ननकर, पूज्य कहि पूजायो हो ॥ वृ. ॥ २ ॥ निजगुन पर अवगुन सुन भुज मन,

१२२ राग–गीतनी ॥

हांजी प्रभुजी लख चोरासी मांही जिणंदमे वहु दुख पायो हांजी हां जगतपति वहु दुख पायो हांजी हां कृपानिधी वहु दुख पायोजी दिलरा प्यारा त्रिभुवन साहिवाजी ॥ टेर ॥ हा. ॥ प्र. ॥ नव २ कीना भेख ॥ जि. ॥ अव सरणे आयो ॥ हांजी हां कृपानिधि अव सरणे आयो ॥ जी. दि ॥ १ ॥ हां. ॥ अपनो विरुद विचार ॥ जि.॥ मोहिताऱ्यो चहीये ॥ हाजी हां कृपानिधि ताऱ्यो. ॥ हाजी प्र ॥ तुमसा समरथ छोड अवरने किणने कहीये ॥ हांजी हां कृपा. ॥ जी दिल. ॥ २ ॥ हाजी प्र. ॥ हू सेवक तुमसांम अवरस् काम न कोई ॥ हाजी हां कृपा. ॥ चातक जलधर जेम ॥ जि. ॥ मांरी मनसा मोही ॥ हांजी हां कृपा. ॥ जी दिल. ॥ ३ ॥ हाजी प्र. ॥ थारा सेवक आज ॥ जि. ॥ फिर दुःखित रहीये ॥ हांजी हा कृपा. ॥ दु. ॥ हांजी प्र. ॥ नीकी नहिया वात नाथ दिल सोची चहिये ॥ हांजी हा कृपा आ सोची. ॥ जी दिल. ॥ ४ ॥ हाजी प्र. ॥ अम सरखानें देख लाज जो दिलमें लावो ॥ हा जी हा कृपा. दिल. ॥ हा जी प्र. ॥ निज गुनकी वगसीस करो किन कृपन कहावो हाजी हा कृपा. ॥ जी दिल. ॥ ५ ॥ हांजी प्र. ॥ नरम गरम सुन वचन वडा तो कवहू न खीजे ॥ हाजी हा कृपा. कर. ॥ हाजी प्र. ॥ वालक मुखकी वात लात तो सुनकर रीजे ॥ हाजी हा कृपा. सुन. ॥ जी दिल. ॥ ६ ॥ हां जी प्र. ॥ कै नथमल जिनराज काज मुज पेस करीजे ॥ हांजी हां कृपा. पेस. ॥ हां जी प्र. ॥ नवके उपर दोय जिणद किरपा कर दीजे ॥ हाजी हां कृपा. किर. ॥ जी दिल. ॥ ७ ॥ इति ॥

१२३ (राग–चांदा थांरी चानणी यासी रातरे)

समवसऱ्या कोसंबी श्री जिनराज रे कोई प्रभुजी रेक प्रभुजी जंगम सुरतरु उदायन नृप वदन केरे काजरे कोई आयो रेक जेसे कोणिक नरवरु ॥ १ ॥ वीरागम सुन जयवती गुन गेहरे कोई दुल सी रेक २ रोमांचित थई प्रभुजी सेती अधिको धर्म सने हरे कोई दोडीरे कहोमभोजाइ पेंगइ ॥ २ ॥ प्रभावती सू भापे वचन रसा-लरे कोई आव्या रेक २ प्रभुजी बागमे जर बेठाही गगा आवी चा-लरे कोई कसर न रेक कसरज अपना भागमे ॥ ३ ॥ काने सुणतां गोत्र अने अभिधानरे तिणफल रेक तिणफलरो कहिणो कीसू ॥ ४ ॥ सुण भोजाई पाछी भापे एमरे बाइजी ढोक कीनी तुम किरपा घणी जाण्यो थारो आज ए पूरण प्रेम हो कोइ दीनी हो कदीनी भली वधामणी ॥ ५ ॥ स्नानादिक कर हो गई शीघ्र तयार रे कोई घरना रेक घरना कारज वीसरी रथ वेठीने दास्याने परिवाररे कोइ नणदलरे भोजाइ जढन नीसरी ॥ ६ ॥ अभिगमनादिक साचव स-घली रीतरे कोइ आवी रेक समवसरण आनद भरी तीन प्रकारे प्राणी अधिकी प्रीतरे नृप आगल रेक करने सेवक रे खरी ॥ ७ ॥ मोहन गारा चोवीसमा जिण चद्रे कोइ त्रिभुवन रेक त्रिभुवनमें बीजूं नही सकल जगतना शुभ पुद्गलना खदरे कोइ जिनतन रेक जिनतन लागा छे सही ॥ ८ ॥ शाति सुधारस अमृतमइ अनूपरे कोइ मूरत रेक मूरत भव दुःख सोधनी अनमिख नयणे निरखे प्रभुनो रूपरे कोइ विकसी रेक शशिनें देख कमोदनी ॥ ९ ॥ धर्म कथा प्रभु भापे चार प्रकार रे कोइ राजा रेक नणद भोजाइ सांभळे अमृत धुन जिनवानी को वि-स्तारे कोइ सुणतां रेक सुणता सब ससय टले ॥ १० ॥ राजा राणी आव्या जिण दिश जायरे जयवती रेक पूछ्या पश्न ए भगवती शतकबारमे द्वितीय देश कमायरे कोइ उत्तर रेक भिन्न मेल भाप्या

जगपती ॥ ११ ॥ धन्य जयवंती लीधो संजम भार रे कोइ अनुक्रम रेक कर्म क्षय कर शिव वसी नथमल कहे विक्रम पुरमे झारे मधुमास ज रेक शुक्ल पक्ष तिथि द्वादशी ॥ १२ ॥ इति. ॥



१२४ (राग-कर्म समो नहि कोइ)

निदक सम पापी नही जगमें नीत शास्त्रमें गाई सर्व चंडालामें वो मुखियो ओर ओपम दे काईरे ॥ १ ॥ निंदा कर पराई रे भाई तू निंदा ॥ टेर ॥ सामाइक पोसा पडिक्रमणा तपस्या कर देह ताई एक निंदा कोप डगयो चालो डूबी सर्व कमाइ रे ॥ भाई तू. ॥२॥ साच झूठको राख हिये डर दुरगत है दुखदाई उहां पोल चाले नही गुगणा लेखो राई राई रे ॥ भा. ॥ ३ ॥ समज दिल अतर स्याणा सतगुरु सीख सुनाई कै नथमल जो निदाही करणी तो करो अपनी भलाई रे ॥ भाई तू. ॥ ४ ॥ इति ॥



१२५ राग- गुजराती गीरबो ॥

में तने बरजू रे स्याना परनारी सग मति जानां ॥मे.॥टेर॥ परनारी सगेरे जाता कोई भुगते ओजकारातां जस कीरत खोवेरे आथा ज्यांरी लोक करे मुख वाता ॥ मे. ॥ १ ॥ परनारीसूहि बडोरे रीसे जिन पर जन दांतज पीसे कोई दिन भूंडोरे दीसे जद पडे बजारां सीसे ॥ में. ॥ २ ॥ राज सिपाईरे आवे झद मुसक्या बांध ले जावे पग खोडामेंरे फावे परनारी सग यां थावे ॥ मे ॥ ३ ॥ जनरो पापजरे फुटे ऊंधो टेर कोरडासे कूटे लोहीकी सेडीरे छुटे

बलिधन घरको सब लूटे ॥ मैं. ॥ ४ ॥ लागतीका दुखियारे होवे कर ऊंचो मुख नही जोवे जीवत पति नारीरे रोवे लपट सब बात विगोवे ॥ मैं ॥ ५ ॥ परभव दुर गतिरे जावे जमदेव जहा स्वाद चखावे अग्निमय पुतलीरे करावे लपटने बाथ भरावे ॥ मैं. ॥ ६ ॥ परनारी दुखनोरे खेत है सर्वापद संकेत शिवपुर द्वार जरे देत जिके क्रियो परनारीसू हेते ॥ मैं ॥ ७ ॥ कौडीनो पुरखजरे बाजे ऊमावे पर त्रिय काजे इगनचतन खोनेरे लाजे कौडीरी कीमत भाजे ॥ मैं. ॥ ८ ॥ परनारीके चालेरे लागन या निरची बुरी ज्यू बागन विषभरी कालीरे नागन नथमल धन्य करे जे त्यागन ॥ मैं ॥ ९ ॥ इति.॥



१२६ राग–यारांसे प्रीत लगाय मती ॥

मानव भव निष्फल हार मती सेत गुरुकी सीख बिसार मती ॥ मा. ॥ टेर ॥ मुसकल लाधा नरभव नही बाजा कादामें दे सर डार मती ॥ मा. ॥ १ ॥ तन धन योवन थिर नही सजन बिन जनसे बगन खार मती ॥ मा. ॥ २ ॥ सतगुरुकी सेवा कर नित मेवा कुगुरु कुदेवा धार मती ॥ मा ॥ ३ ॥ नारी सग मोचे इगभर जोवे खोवे ज्यूं बाजी पैठ उती ॥ मा ॥ ४ ॥ भापे नथमल ज्ञान क्रिया बल सुनो सकल जन नही मुगती ॥ मा. ॥ ५ ॥ इति. ॥



१२७ अथ पूज्यगुणाष्टक ॥

पूज कनीरामजीरो जाप करो, दुख दोहग सोगने दूर हरो, धन धान्य तणा भडार भरो, घर प्यार हिय भवी ध्यान धरो ॥ १ ॥ जस

राक्षस भूत अलग जावे, डांकनी सांकनी नही संतावे, तावते जरो नही आवे, पूज नाम लीया सता पावे ॥ २ ॥ राज काजमे जाय रुपे, दील ध्यान धर्या अरी होत दफे, तेजे करी सबमे तेह तपे, जो पुज तणो मन जाप जपे ॥ ३ ॥ लक्ष्मी बहु वीण जे लाभ लहे, दालिद पापनो मूल दहे, रस रग सदासुजरहे, बेठा गृहमांहि गंग वहे ॥ ४ ॥ टामण ड्डमण अहि दूर टले, गड गुबड द्वेसी तुरत गले, चोर चूगल वलि नाह छले, पुज नाम मनोरथ माल फले॥५॥ कपटी धुत्तारा कपट करे, पेखे छलछिद्र चोफेर फीरे, उण नियाँ चाढ करे हिवडे, डग भरीने सके पलमाहि डरे ॥ ६ ॥ अन्य मंत्र मुधा कुण आराधे, सद नाम पुजनो जे साधे, लीलायुत पुत्र कलित्र लाधे, वसुधा जसवाण घणो वाधे ॥ ७ ॥ गछ नायक गुणगण स्तवन गुणो, श्रोताजन चीत्त लगाय सुणो, दुरीत घटे पुन्य वांधे घणो, नथमलके नहचो पुज नाम तणो ॥ ८ ॥ इति ॥

---

१२८ अथ पुन्हा पूज्यगुणाष्टक ॥

पुज नाम तणी महिमा भारी, नीत ध्यान धरो तुम नरनारी, दुख मिट जावे तनमनगे, पुज कनीराम जीशे जाप करो. ॥ १ ॥ पुज नाम रटे जो शुध भावे, जिण धरमे टोटो नही आवे ॥ विन जे चहू लाभ लेहे धनगे ॥ पु. २ ॥ अष्ट भय नेडा न आवे वली उपजे ॥ भय विनसीजावे, मन इच्छत काज सरे सघलो॥ पुज० ॥ ॥३॥ कृष्न अष्टमी दिन जाया, वलि ऊणही दिन सुरपद पाया, इण कारण अष्टमी दिन, सखरो ॥ पुज ॥ ४ ॥ उपवास आंबिल एक भक्त करो, अथवा विगज सब दूरहरो, निशि भोजन टालो शील खरो ॥ पुज ॥

॥ ५ ॥ इमया क्रिमयानेकिमढेरो पुज नामतणी माला फेरो, पारनरहें युग भवसुखरो ॥ पुज ॥ ६ ॥ एक माला नित नेम रखो, पुज नाम सजीवन जाण पक्रो, धक्रो न उपजें तिल जितरो ॥ पुज ॥ ७ ॥ स्वामी-दास गच्छ नायक्रो, स्वशिष्यने सदा सहायक्रो, नथमलजी ध्यान धरे नितरो ॥ पुज ॥ ८ ॥

॥ अथ मूर्खखट् तीसी. ॥



१२९ (राग-श्रावक धर्म करो सुखदाइ)

बालकसूतो भीतफरे जिन, कारज परघर जावेजी, गुरु माय तनें नीच कहि बोलें व्यर्था पाप कमावेजी ॥ १ ॥ या लक्षणासु मूर्ख जाणो ॥ टेर ॥

विना प्रयोजन करे लडाई, दान देतानें पालेजी परने दुख दे, वडा नर वैठा आडो अवलो सवलो हालेजी ॥ या ॥ २ ॥ धर्म कथा विच वाता मोर्डे नेह नीचसू राखेजी वडाको अविनय करे तियसू छांनी वात जे दाखेजी ॥ यां ॥ ३ ॥ वृक्षतले जगल जे जावे, वडांसूं सामो जे वोलेजी झुठ वदे दरवारमें परतियसेती करतकितोलैजी ॥ यां ॥ ४ ॥ चाकरसू जे करे दुसमणता, वेढ करता यात करावेजी गुरु राजा आगे पदमासण नीच तिया घर जावेजी ॥ या ॥ ५ ॥

[२३] जान सोनारसूं प्रीत करे वलि, [२४] जाण कुकर्मनें ठानेंजी, वाद करें [२५] पंडितसु [२६] रामतमें, गुरुनो [२७] कथन नही मानेजी ॥ यां ॥ ६ ॥ नृप [२८] विश्वास करे मार्गमें, जातीतिय[२९]वत लावेजो ॥ वेद्यने पहली [३०] रोगकी पूछै, डर फिर [३१] मारग जावेजी ॥ या ॥ ७॥ एक घणासूं [३२] वाद करे वात कहता हुंकारो [३३] न देवेजी. आप [३४] वात कहि आप हसै अरु भणता [३५] प्रमादनें सेवेजी ॥ या ॥ ८ ॥ उकडु नेसें जे [३६] वहुवारे, अणजांण्या [३७] साथ सिधावेजी ॥ निर्बुद्धिसु [३८] मिसलत वाधे, ऊकडु वेसीने [३९] खावेजी ॥ यां ॥ ९ ॥ [४०] राजपथमे नेठ करें, [४१] खाता ऊठे नें वेठेजी ॥ लाजरहित करे सुखवाता, [४२] धर्म [४३] करता आलसमें पेठेजी ॥ या ॥ १० ॥ दाढी [४४] समारता जे मुख बोले, शकुन [४५] पालता चालेजी ॥ विन [४६] अपराधे गाली काढे, दीपथी [४७] अग्न प्रजालेजी ॥ यां ॥ ११ ॥ लडतां [४८] पहली चोट जे घाले, अण [४९] भातो जे खावेजी ॥ घडता [५०] खाती पासे वेसें, उंडे पाणी [५१] तेरूविन जावेजी ॥ यां ॥ १२ ॥ जीमतां [५२] भणतां [५३] रोस करे, जाता [५४] साप सिंघनें [५५] छेडेजी, असवार [५६] विना ??सारी करें, परवार जावे विन [५७] तेडेजी ॥ ॥ या ॥ १३ ॥ [५८] आपणा गुणनो गर्भ करे नर, मंत्रीनें [५९] अपमानेजी दांन देईनें [६०] मान करे, [६१] पखवालासूं वाद जे तानेंजी ॥ यां ॥ १४ ॥ छती स-

गत नर [62]धर्म करे नहीं, [63]धर्म करताने पालेजी॥ [64]गुह्मकी वात कहे घणा आगे
[65]धन कारण चोरी विचारेजी ॥ यां ॥ १५॥ तुरत [66]पांणी पीवे जीमीनें,
[67]राह चालता खावेजी ॥ [68]पारकी निंदा करे मुखसेती, [69]शिष्य [70]नेटानें
घणो लडावेजी ॥ यां ॥ १६ ॥ [71]बेठा मनुपने शिक्षा देवें, [72]परने झ-
गडो करावेजी ॥ [73]रूपवती तियसू करें परचो, [74]लायलागा साकडो
जावेजी ॥ या ॥ १७ ॥ वेद्य विना जे वेद्यपणो करे, [75]कूप [76]वापी [77]कठे
हासैजी ॥ [78]वे जणा वात करे जिहा जावे, निज तिय मर्म [79]प्रकासेजी
॥ या ॥ १८ ॥ राजा रंक [80]देता नटे, करे वेश्यासु प्रीत [81]अथागेजी ॥
[82]राजा [83]गुरु [84]मायतना अवगुण, बोले जे किण आगेजी ॥ यां ॥ १९ ॥
लौकिकनो [85]व्यवहार उठावे, हितकी [86]कथासु कोपेजी ॥
[87]आलसी गुणवतकी व्यावचमें, [88]उपगार कीया ने लोपेजी॥ या॥ २०॥
[89]पाप करी हर्ष पामे, चालता करे [90]प्रमाद उजारेजी॥ [91]निगर नोतराया स-
भामे बोले वलि नृपने [92]दरवारेजी ॥ यां ॥ २१ ॥ [93]दंपति नेठा छाने
जाने, [94]चडतो आल शिर लेवेजी ॥ [95]सगत विना जो करे तपस्या, पर-
[96]नारीनू मैथुन सेवेजी ॥ या ॥ २२ ॥ अपनी [97]किर्ति आपही बोले,
मंत्री उ [98]कर कठेसेजी ॥ जातो साथ छोडी [99]रहे पाछौ, [100]करे अजाण्यो

ऐसेजी ॥ या॥ २३ ॥ पंचा माहे [१०१]झठ वदे [१०२]देव[१०३]गुरुकी निंदा ठानेजी ॥ धनके [१०४]अर्थ जुवा जे खेले, [१०५]चोरीकी वस्तु आनेजी ॥ यां ॥२४॥ मानके कारण [१०६]धन जे खरचे, व्यर्था [१०७]क्लेश करे घरमेंजी ॥ दुःख आव्या बहु [१०८]दीनपणो करे, [१०९]फूले आया समेंजी ॥ यां ॥ २५ ॥ [११०]धन उपजांत करे आडंबर, ग्रामेसरने [१११]रीसावेजी, अप्रतीत [११२]कारयासु व्योहार करे, आप [११३]आपनो वैर जितावेजी ॥ यां ॥ २६ ॥ पाणी पीकर [११४]काम करे जे, पूर्व [११५]क्लेश ऊदीरेजी ॥ नृपसूं [११६]बहु मत्रीपणो मांडे, सोवे जे [११७]अग्नि तीरेजी ॥ २७ ॥ वडां तणो कथन [११८]नहि मांनें [११९]रेसाणने धन खरचेजी, [१२०]विश्वासघात अरू [१२१]अपघात करें, [१२२]कुगुरु [१२३]कुदवने अरचेजी ॥ यां ॥ २८॥ परने [१२४]खोटी सला देवे, [१२५]धर्म अर्थे जीव हणावेजी॥ [१२६]हिंस्यामांही धर्म परूपें, [१२७]तपस्या कर पछतावेजी ॥ या ॥ २९ ॥ अरि [१२८]विश्वास [१२९]धनवंतसुं लंडाई, करे [१३०]करणी करनें निहाणोजी, [१३१]गुरु [१३२]मायतसु अतर राखें, [१३३]चाकरको वधावे मानोजी ॥यां॥ ३० ॥ साकडी [१३४]गलियांमाही दोडे, सीख [१३५]कुगुरुकी मानेजी, राजा [१३६]सेती करे साटशता, लीधा [१३७]सोगन भानेजी ॥ या ॥ ३१ ॥ छती [१३८]जोगनाई दान न देवे, दान देई [१३९]पछतावेजी ॥ [१४०]ओछा राजके वास वसे नो, ते निश्चे दुख पावेजी

॥ या ॥ ३२ ॥ देख्याविन[१४१] जो सगपण कीजे, कपटी[१४२] विश्वास धरी जेजी॥ तपसी[१४३] रडाका[१४४] अवगुण जोदे, ओछो[१४५] नोरो करीजेजी ॥या॥३३॥ क्रोधी[१४६] राकसु[१४७] वाद करे, होडा होडे[१४८] द्रव्य गमावेजी, अरथ विना[१४९] वैरीने छेडे, काम बिगड्या[१५०] पीछे पछतावेजी ॥ या ३४ ॥ एव टेढसौं बोल मूर्खना, ग्रथमें नहि देख्या चाल्याजी॥ पत्रमाही लिखी थोडा वाच्या, एक ढालमाही घाल्याजी ॥ या ॥ ३५ ॥ सवत् उगणीसे पैंतीसें, सादपुरे चोमासेजी॥ मूर्ख ब्वइतीसी चतुर सुणीजो, नथमल इम भासैजी ॥ या ॥ ३६ ॥ इति ॥

१३० [राग–नाजकडी व्याहण आवे]

ऋपभ अजित संभव अभिनदन, सुमत पद्म सुखकारी ॥ सुपा-रसजीने चदा प्रभुजी, जामन मरण नीवारीरे ॥ १ ॥ मैं जिन चौवीसें वदु, भव भव पाप निकदुरे, ॥ मैं ॥ टेर ॥

सुबुद्धि शीतल श्रेयाश वासपुज, विमल विमलमतिदाता ॥ अनत धर्म श्रीशातिजिनेश्वर, वरताई सुखदाता ॥ मैं ॥ २ ॥ कुथु अरह मल्लि मुनिसुव्रतजी, भवोदधि तारणहारो॥ नमि नेम पार्श्व महावीरजी, सासणना सिणगारो ॥ मैं ॥ ३ ॥ ए चौवीसे जिनवर मोटा, अजरा-मर पद पाया, लोक शिखर प्रभु जाय विराज्या, जठे कर्म नहीं कायारे ॥ मैं० ॥ ४ ॥ ए चोवीसे जे नर समरें, मन वच तन शुध करने ॥ ते नर निश्चे शिवपद पामैं, महा भवोदधि तरनेरे ॥ मैं ॥ ॥ ५ ॥ ईण भव दुख दोहग नहि आवे, ध्यावे जो शुध भावे ॥ कमला केल करे तसु घरमैं, सुख सपत बहु पावै ॥ मैं० ॥ ६ ॥ सरपख निधि भूसालमें विचरत, शहर क्रश्नगढ आया ॥ माघ कृष्ण एकम दिन जिनना, नथमल गुण गाया ॥ मैं० ॥ ७ ॥ इति ॥

१३३ (राग—लावणी.)

भला गुरु सोहीहे जगमे. २ तृष्णा लोभ त्याग परिग्रह तज,
खडा मुक्त मगमे. ॥ भला. ॥ टेर ॥
ध्यान मस्त अवधूत भेषमें, सत्य वचन बोलें,
संसय ग्रंथ जगत जीवनके—अंतरको खोले ॥ भला गुरु. ॥ १ ॥
तेजवंत अति शांत क्रांत युत, करुणा अधिकारी,
भव्यजीव तारनको मिथ्या, पकर पटक मारी ॥ भला गुरु. ॥ २ ॥
कर्म बंधन काटनको अतिशय, सुध मारग ज्यांका,
चंपा राम सरणे लेयाकी, जनम सफल ताका ॥ भला गुरु.॥ ३ ॥

१३४ (राग—पूर्ववत्—लावणी)

श्रावक सबही हे सचा, इष्ट कष्ट लखि नष्ट होत नही,
श्री जिनका कचा ॥ टेर ॥
विना शक्ति सजमतें न्यारे, भक्ति सुरस पीवे,
स्वल्प नेम व्रत धारे केते, शुभ ऊद्यम जीवे ॥ श्रावक० ॥ १ ॥
द्वादश व्रत धरे गुरु मुखतें, कि ते करे ध्यान,
सिद्धान्त के शरने केते, सुने केते पुरान ॥ श्रावक०॥ २ ॥
निजगुरु चरण शरण सबहीने, गहिसे वारा ते,
पच परमपद चउवीसे जिन, या समझत माते ॥ श्रावक० ॥ ३ ॥
मिथ्यामत जो मिले जगतमें, सो माने नही एक,
यथा ज्ञान समकित दश सुचये लहि पकरेऽटेक ॥ श्रावक० ॥ ४ ॥
कालपाय शुभ पहुचें शिवपद, जितने ए भाइ,
चपा राम प्यार सबसे, करनीकी चतुराइ ॥ श्रावक. ॥५॥



१२५ [राग-पूर्ववत्-लावणी]

वडा गुण शीलतणा जगमे, २ जेसा सोभितपूर्ण चन्द्रमा,
नभ गामी खगमे. ॥ टेर ॥

इन्द्र नरिंद्र शेष सब पूजे, पग वाही जनके,
जोत्रिय भोगत्याग फुन त्यागे, भवविकार मनके॥वडा गुण शील.॥१॥

अगनि नीर पौंन विष आयुध, ना लगे कोई,
चपाराम शील धारी सम, वडा नहि कोई ॥वडा गुणशील० ॥ २ ॥



१३६ (राग--पूर्ववत्-लावणी)

भलाहे दांन सदा दैना २, देश क्षेत्र अरु काल पात्र लखि,
सेवा फल लैना ॥ टेर ॥

जैसा पुरुष मिले तैसी विध, उचित्त भक्ति लीजै,
असनवसन औषधि अरु महिमा, यथा शक्ति कीजै॥भलाहे दांन० ॥१॥
दुःखित क्षुधित दीन हीनपें, करुणां चित दीजे,
चपाराम सुजस सुख परभव, सुधापान पीजे ॥भलाहे दांन० ॥ २ ॥



१३७ (राग-पूर्ववत्-लावणी)

सजन तप निहचें कर तपनां, २ देह नेहकू त्याग देत फिन,
ए नांहि अपना ॥ सजन० ॥ १ ॥
गढ मढ कोट महल जल थलकी, जेती ए धपनां,
काल पाय नासत खिनमें, जैसे निशि सपना ॥ सजन० ॥ २ ॥

कर वैराग देख समतातै, अंत समें खपना,
चंपाराम कालसैं डर नित, ईष्ट नांम जपनां ॥ सजन० ॥ ३ ॥

१३८ (राग–पूर्ववत्–लावणी)

सुज्ञानी जबलग मन गंधा, तबलग कोड उपाय करे. किन,
सब झूठा धंधा ॥ १ ॥ टेर॥
क्रोध मांन लोभ मायातें, चित तेरा मैला,
एक लाख शुरू करे क्यो न तू नहि मिले गैला ॥ सुज्ञानी ॥ २ ॥
यातें मोह महा भ्रमतजके, भाव शुध करना,
चंपाराम बनेतां केवल, भवसागर तिरना ॥ सुज्ञानी० ॥ ३॥

१३९ [राग–पूर्ववत्–लावणी]

सजन सुन क्रोध नहि करनां २, क्रोधपाय राजनकों जुधकर,
परया नरक परना ॥ टेर ॥ १ ॥
जाके काज क्रोध तिन कीना, सोसवरी छोडी,
जमी जायनां धन सतति त्रिय, कर ममता जोडी ॥सजन सुन० ॥ २॥
सरना जोर नहि काउका, जमदेवे मारे,
चंपाराम क्रोध शूली भोगे, ना कोउ टारे ॥सजन सुन० ॥ ३ ॥

१४० (राग– पूर्ववत्–लावणी)

सजन सुन मांन वेग त्यागो, मान कियो रावण निज वलकों,
सीस चक्र लागो ॥ टेर ॥ १ ॥
मांन ठांन सब घरकूं खोया, दुर्योधन मानी,
सोर अपने भाईनकों, टेकक्यु मन ठानी ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥

मांनविपाक नीच कुल उपजें, भव भव दुख पावे,
चपारांम सीख आगम, सुन सबको समझावै ॥सजन सुन० ॥ ३ ॥

१४१ [राग–पूर्ववत्–लावणी]

सजन सुन माया दुखदाता, २ मायाके परसग पलकमें,
प्यार टूट जाता ॥ टेर ॥ १ ॥
मात तात भ्रात सुत घरकें, अरु जेते प्यारे,
माया कपट कूड छल बल लखि, सब होते न्यारे ॥सजन सुन० ॥२॥
माया देख मित्र ममता तज, तुरत शत्रु होवे,
माया विमाया सबसूं कर, वृथा जन्म खोवे ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥
यहतो जानतहे सब कोई, ज्ञानी इम बोले,
चंपारांम पाय पशुगति, जनम जनम डोले ॥सजन सुन० ॥ ४ ॥

१४२ [राग–पूर्ववत्–लावणी]

सजन सुन लोभ दुष्ट भारी, आठों पहर पिंड नहि छोडे,
अतिही दुखकारी ॥ टेर ॥ १ ॥
ईन्द्र चन्द्र धरणेंद्र सुरासुर, याहि नांहि छोडे,
याहिके परसग जगतमें, पड्यो जीव खोडें ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥
कौडी मात्र परिग्रह नांही, आतम रस पांगे,
चपारांम पूज्य सबहीको, जो यांकू त्यागे ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥

१४३ [राग–पूर्ववत्–लावणी]

फकीरी या विधि ते साची ॥ फ० ॥ दुनिया हवस त्यागके रसनां,
फलमां पढ़िनाची ॥ फकीरी० ॥ १ ॥

जरब मारके दिलको खोले, समजी करे फाका,
करे पोर परतीत रीततें, ध्यान करे ताका ॥ फकीरी. ॥ २ ॥
खुदी छांड खुद खुदा पिछाने, अरु कुरान कहणा,
सीखे सीखवेन दुनियाको, सगरहित रहना ॥ फकीरी० ॥ ३ ॥
रंग जंगमे फिकर खुसी नही, साफ चित्त रहनां,
टुकडा मिले तव कल सेती, जो अपना लहना ॥ फकीरी० ॥ ४ ॥
ताको खाय सुरत अल्लामें, लगा रूह धोवे,
वैठ एकंत शांति समतातें, ध्यान जोत जोवे ॥ फकीरी० ॥ ५ ॥
चंपाराम परम मो दिलका, मुसलमान पावे,
दरजा पाय पीर कामलमें, ला मकान जावे ॥ फकीरी० ॥ ६ ॥



१४४ (राग पूर्ववत्–लावणी)

सजन तू गाफल किस वलतेंरे ॥ सजन० ॥
धन संपति उपजे विनसें सब ज्योंल हरे जलतें ॥ सजन० ॥ १ ॥
छिनही छिन तेरी आयु जातहै, ज्यों प्रवाह जलका,
जोवन जोर जरा नहि ठहरे, ज्यों विजली भलका ॥ सजन० ॥ २ ॥
मंत्र तंत्र देव यातें, कछु नही विचार होवे,
काल तीन लोककों जालिम, समे समे खोवे ॥ सजन० ॥ ३ ॥
चंपाराम प्रमाद पलकहू, करे नाही ज्ञानी,
तेही धन्य सुध सतगुरुकी, आज्ञा पहचानी ॥ सजन० ॥ ४ ॥

१४५ (राग चलत–लावणी)

जै शिव कामि निकंत वीग भगवत, अनत सुखाकरहै,
विधिगिर गंजन बुध मनरजन, भ्रम तम भंजन भास्करहै ॥ टेर० ॥

जैन उपदेशौ द्विविध धर्मजो, सो सुर सिद्धि रमाकरहै,
भवि उर कुमुद नमोदन भव तप, हरण अनूप निशाकरहै॥ जै शिव०॥१॥
जासो अनंत सुगुणगणको नित, गणति गणी गण थाकरहै,
इंद्र फणींद्र खगेंद्र चंद्र जग, ठाकुर जांके चाकरहै ॥ जै शिव० ॥ २ ॥
परम विराग रहें जगतें पै, जग जंतु रक्षा करहै,
जा प्रभुके पद नव केवल लिब्धसू, है कमला कमलाकरहै ॥जैशिव॥३॥
जांके ध्यान कृपा न राग रुष फासी हरण समता करहै,
दौलतमे पदकू हरण भव, बाधा शिव राधाकरहै ॥ जै शिव. ॥ ४ ॥



१४६ [राग मरहटी–लावणी]

खी जिनचंद छवी थारी, भर्म बुधि आज गई म्हारी ॥ टेर. ॥
ासिका अग्र दृष्टि जोहे, नेत्र चंचलता अव रोहै,
र्म समरसी भावसोहै, भविक नर सुर मुनि मन मोहै,
र्म वैराग्य भावकारी ॥ भर्म. ॥ १ ॥
ान आवरणी विधि नास्यो, लोक अरु अलोक परगास्यो,
्व्य गुण परज भाव भास्यो, नित्य निज आतममें वास्यो,
ाांति रस उछरत हितकारी ॥ भर्म ॥ २ ॥
रस बल वीर्य अतुल धारे, अभ्यंतर गुण समुद्र भारे,
अल्पमति कवि किम उच्चारे, शेषगण पति कथ कथ हारे,
बडी कमला अचिरज कारी ॥ भर्म. ॥ ३ ॥
प्रभू तनपर कांति छाजे, कोटि रवि मदन छवी लाजे,
छत्र त्रय मस्तकपर राजे, लख ततखिणही अघ भाजे,
समव शरणादि लच्छि न्यारी ॥ भर्म. ॥ ४ ॥
वस्त्र शस्त्रादी सब डारे, सकल रागादि भाव टारे,

ध्यान वरकर कृपा न धारे, महा भठ मोह राय मारे,
भयो निर आकुल सुख भारी ॥ भर्म. ॥ ५ ॥
नही कोइ तुम समान देवा, इन्द्र शक्र करत चरण सेवा,
भवार्णव पोत परम खेवा, रत्न त्रय निधि निधीश देवा,
परम जस कीरति विस्तारी ॥ भर्म ॥ ६ ॥
कर्म वश भव भय भटकाई, तुम्ही सब जानत जिनराई,
आजि मम समय लब्धि आई, लह्यो जिन दर्शन सुखदाई,
काज सब सरे सुहितकारी ॥ भर्म. ॥ ७ ॥
तुंही जिनराज पतित पावन्, तुंही सिव मारग दरसावन्,
तुंही विधि पर्वत केढावन्, तुंही जर भरण हरण जामन्,
वसत मान कमन छविधारी ॥ भर्म. ॥ ८ ॥



१४७ [राग–चलित–लावणी]

जात वत शिक्ष हुवे सुपातर सवइक सरखे मत जानोरे
भाई सब इक सरखे मत जानो ॥ विनय वत गुरु इगित ग्याता
के एसे शिष्य गुन खानो ॥ टेर ॥
ग्यानी ध्यानी वडे वयरागी, नीची दृष्ट करी चाले,
गुरु वहु वेर काज फरमावे, नाकमा यसल नही घाले,
तहत कहिनें करे अंगी कृत्य, आप वचन है परिमानो ॥ जात. ॥ १ ॥
पदपद यत्न करे श्री गुरुके, दर्श देख दिलमें फूले २
खान पान अरु सयनासनमें, गुरु भक्ति कू नहि भूले,
सवकार जत जयासे तिष्टे, जब गुरु बांचे ब्याख्यानो ॥ जात. ॥ २ ॥
गुरु अवनीत शिष्य जो होवे, ताकूं सुख नहि वतलावे २
वाकी सग कीयें तें आपही संगत जैसा फल पावे,
विगरै पय काजी निंदूतें एह बात उरमें आनो ॥ जात० ॥ ३ ॥

रात दिवस गुरु पासे तिष्ठे, विन यासन कर मृदुनाई,
सभा मांहि गुरु निच नहि रोले, चितमें जाके चतुराई,
जो होय व्यग वातमें, सोतो गुरुसे नहि रखे छानो ॥जात० ॥ ४॥
गुरु असभव वात कहे जो सोही सीस चढालेवे,
गुरु वचनकी रखे आसता, पीछा उत्तर नहि देवे,
सर्प माप शिष्य हुवो, निरुजतन, ए निश्चय करके मानो॥जात.॥५॥
ऐसे विनयवत शिप गुरुके, सो जिन मारग दीपावे,
सूत्रगिनाता ध्येन पचमे, पथककी ऊपम यावे,
नयमल युगभव भलाजो चाहो, तो गुरुका विनय ठानो॥जात.॥६॥



१४८ [राग–चलित–लावणी)

अव अवनीत शिष्य भयज एसे, कथन गुरुका नहि करता,
महा मद मस्त वडे अविवेकी, लोक लाजसे नहि डरता ॥ टेर ॥
माहो माही गुरु भाईमें, अतस हेत नहि धरता,
छिन में राजी घूटेन वाता, लजा तज छिनमें लरता ॥ अव० ॥१॥
रस इद्रीके भये लोलपी, महिप जेम शशिदिन चरता,
गुरु देवनकी सार करे कुन, पेहले पेट अपना भरता ॥ अव० ॥२॥
थानक सेती गुरु देवनसू, विन पूछयाही नीसरता,
घरघरमें गलियार तणी परे, विना प्रयोजन वे फिरता ॥ अव ॥ ३॥
सीखनकी वुधसिरे शास्त्रकी, तो पिण उद्यम नहि करता,
सूता रहना वार्ता करना, रात दिवस एमे गरता ॥ अव. ॥ ४॥
हित शिक्षाकी वात करे गुरु, श्वान जेम भुस भुस करता,
कीच वीच पाथर डारेंते, मुख वसन अपना भरता ॥ अव. ॥ ५॥

गुरु व्यावचके डरके भारे, न करे गुरू पासे स्थिरता,
अदृष्ट होय दृष्टके तिष्टे, कहो गुरुके दिल किम ठरता ॥ अव. ॥६॥
अकृत्य देख गुरु देत सिक्षामन, कटुक वचन पीछा झरता,
गुरु भाईके सगे म समझो, जो जन गुरुसे नही टरता ॥ अव. ॥७॥
उत्तरा ध्येन अध्येन प्रथममें, एसे कुशिष्य नही तिरता,
नथमल वा शिष्यकी बलिहारी, गुरु आंण सिर पर धरता ॥ अव. ८॥



१४९ [राग-चलित-लावणी]

करामात कलजुगमें थोडी भोले खाते गोता है,
निज पुर स्वारथ कोंतज कातर, जन जन आगल रोता है ॥ टेर. ॥
भेख देख मत भूले भोला, हिरदे क्यों नही जोता है,
असन वसनको फिरे झीकते, उनसे कहो क्या होता है ॥ करामात ॥१॥
परकू यंत्र मंत्र लिख देवे, आप सिद्धाई जोता है,
इतनो सोचो क्यू नही दिलमे, नागा कहा निचोता है ॥ करामात ॥२॥
लागवता कर सिद्ध बने फिर, भोले जनको मोता है,
मिले उस्ताद भेद जब पावे, वधी पैठ डबोता है ॥ करामात. ॥ ३॥
साचा सिद्ध प्रगट नहि होता, ठग बाजीगर बोता है,
थोथा ढग वशा कर मूरख, बीज दुर्गतका बोता है ॥ करामात ॥ ४॥
हिमिया किमिया फिरे हेरते, हाथे जात विगोता है,
जो इस चाले लागे जगतमें, तन धन अपना खोता है ॥ करामात ॥ ५॥
आसा तृसना जीते सो सिद्ध, और सिद्ध सब थोथा है,
नथमल साचा उत्तमी सद्गुरु, निजपर आप भोता है ॥ करामात. ॥६



१५० [राग मुसलमानी—लावणी]

अरे बागुवा गुलमत करे गुलसें गुलको हसने दे,
में गरीव बुल बुल मेराई, इस गुलचेमे घर वसने दे ॥ टेर ॥
झुझलाके वोलीयु बुल बुल, नया एक तु है माली,
एह वोही बागहै यांपर, कितनेही करूर गये रखवाली,
जिन कलीयोकू तू काटेया, वडी दुखांसूं है पाली,
लोसल देखिये खुलेंगे फूल, झुकेगी सब डाली,
मान कयाले बिछावू दावन, आब जोलसके फसने दे ॥ में गरीब. ॥ १ ॥
आपही अपनी फसल पेसाखी, सब दरखतकी फूटेंगी,
बोहोत सीकलियां खीलेंगी जब, खुदवा खुद यह टूटेंगी,
जब ए क्यारा भरेगा जलसे, नहरे जिस वक्त छूटेंगी,
इसी चिमनका हमेसां मजा बुल बुल लूटेंगी,
वैरी नागन डसे है तनकू, मती मनेंकर डसने दे ॥ में गरीब. ॥ २ ॥
छूटेंगे जब होद फुंवारे, च्यारो तरफसे व्है जारी ॥
छूटेंगी चद्दर बोलेंगे, मोर सोर व्हैंगे भारी ॥
अनेक तरेंके बोले ज्यानवर, हूक लगे उनकी प्यारी ॥
सुनकर यहां पर, आवेंगे सब नर नारी ॥
दे दरवाजा खोल बागका, सारी खलकको धसने दे ॥ में गरीब. ॥ ३ ॥
रसाल गिरजी कहेंके इकदिन, यह बुल बुल उडजावेगा ॥
इसी चिमन पे निजर भर, फेर निजर नहीं आवेगा ॥
जसु सिंध कहे कोई मालकसें ध्यान लगावेगा ॥
तुम सुनो जगनजी अपनी आवा गमन मिटावेगा ॥
कसता है वो अपने भक्तको, मती मनेकर कसने दे ॥ में गरीब. ॥ ४ ॥



१५१ [राग–लावणी]

नाम प्रभुका दिलसें प्यारे कबी भूलाना ना चहिये,
पाकर नरका वदन रतनको, खाकमिलाना ना चाहिये ॥ टेर ॥
सुंदर नारी देख पियारी मनको लुभाना ना चहिये,
जलती अगनमें जान पतग समान जलाना ना चहिये,
बिन जाने परिणाम कामको हाथ लगाना ना चहिये,
कोई दिनका ख्याल कपटका जाल बिछाना ना चहियें
॥ नाम प्रभुका. ॥ १ ॥
यह माया विजलीका चमका मनको जमाना ना चहिये,
बिछडेगा सजोग भोगका रोग लगाना ना चाहिये,
लगे हमेशा रंग संग दुर्जनके जाना ना चाहिये,
नदी नावकी रीत किसीसें प्रीत लगाना ना चाहिये ॥ नामप्रभुका.॥ २॥
बाधव जनके हेत पापका खेत जमाना ना चाहिये,
अपने पैरपर अपने कर कर चोट लगाना ना चाहियें,
अपना करना भरना दोप किसीपर लाना ना चहिये,
अपनी आंख हे मद चंदको दोष बतलाना ना चहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥३॥
करना जो शुभ काज आजकर देर लगाना ना चहिये,
कल जाने क्या हाल कालको दूर पिछाना ना चहिये,
दुर्लभ तनको पाय जाय विषयोंमें गमाना ना चहिये,
भवसागरमें नाव पाय चक्करमें डुबाना ना चहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ४॥
दारादिक सबगेर फेर तिनमें अटकाना ना चहिये,
करि वमनके उपर फिरकर दिल ललचाना ना चहिये,
जान आपनो रूप कूप गृहमें लटकाना ना चहिये,
गुरुको खोज मझबका बोझ उठाना नाचहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ५॥

वचा चाहे पापनसे मनसे मौत भुलाना ना चहिये,
जो है सुखकी लागतो कर सब त्याग फिराना ना चहिये,
जो चाहेतु ज्ञान विषय के वाण विंधाया ना चहिये,
जो है मोक्ष आश सगकी पाश फसाना ना चहिये ॥ नामप्रभुका.॥ ६॥
परमेश्वर हेतनमे वनमें, खोज न जाना ना चाहिये,
कस्तूरी है पास मिरगको, घास सुगाना ना चहिये,
कर सतसग विचार निहार, कभी विसराना ना चहिये,
विनसत जनसे कोटि जतनसें, पर पर पद पाना ना चहिये ॥ ७ ॥
॥ नाम प्रभुका. ॥
आतम सुखको भोग, भोगमें फिर भटकाना ना चाहिये,
पाई जिसको खाड, छाड तिस्को खल खाना ना चहिये,
यह जग स्वपना जांन ध्यानसें, मनको झुलाना ना चहिये,
प्रमानदकों हेर फेर भवमें भरमाना ना चहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ८ ॥



१५२ (लावणी-लंगडी)

सुन दिल प्यारे भज करले जिनवरका वारवारा ॥ टेर.॥
इस दुनियांमे एक वगीचा रग रगके फूल खिले,
कोई सानत कोई क्षुरजे कोई आजकेहे निकले,
आगे पीछे खिर जावेंगे वारी वारीमें सगले,
कोइ किसिका सग न साथी आवत जावत हे ईकले,
इनसे प्रीत करे क्या मूरख ईकदिन होजासी न्यारा ॥सुनदिल.॥ १॥
इस दुनियांमे एक रतन है, मिलता वारवार नही,
जैसे फूल गिराडा लीसे, फिर होता गुलजार नही,
उस्की किमत हैवडी भारी, जानत लोग गँवार नहि,

परमेश्वरके मिलनेका, फिर उस्के निन दुवार नही,
काच खरीद करे वदले में देकर उस्कु मति मारा ॥ सुनदिल. ॥ २॥
इस दुनियामे ईक पूतलीने एसा भारी जाल रचा,
स्वर्ग लोक पाताल जमीपर, कोई न उस्के हात वचा,
क्या जोगी क्या पीर पगंवर, सवकों उसनें दीया नचा,
फसा नहि जो उस वधनमें, सोइ है गुरुदेव सच्चा,
मोक्ष मारगके जानेमें, सो ठग जानो लुटनहारा ॥ सुनदिल. ॥ ३॥
इस दुनियामे एक अचवा, हमने देखा है जो वडा,
एक छोडकर चला जमीकु दुजा करता है जगडा,
वो नहि मनमें समजे मूर्ख, मे भी जावन हार खडा,
घडी पलकका नही ठिकाना, किसके भरोसे भूल पडा,
आगे जाना समान करले, तियार नहि करवारा ॥ सुन दिल. ॥ ४॥
ईस दुनियामें एक कूप है, जिस्का पार कोई नहि पावे,
तिसके भरने कारन प्राणी, देश दिगंतर कौ जावे,
ध्यान भजन चिंतन ईश्वरका, उस्के कारण विसरावे,
दीन भया पर घरमें जाकर, सेवा कर कर मर जावे,
जिसने वनाया सोई भरेगा शोच फिकर तज देशारा.
॥ सुन दिल. ॥ ५ ॥
इस दुनियामे एक वृक्षपर पछी करत वसे राहे,
सांज पडे जब सव मिल जावे, विछुरे होत सवे राहे,
चार घडीके रहने कारण, करते मेरा मेरा हे,
एसी वात न मनमें लावे, वस वस गया वडेराहे,
क्याले आ क्या ले जासी, वृथा करत हे अंकारा ॥ सुनदिल ॥ ६॥
इस दुनियाके वीच निरंतर, एक नदी चलती भारी,
दिन दिन पल पल छिन छिन उसका वेग वडा हे वलकारी,

पसु पक्षी नरदेव मनुज, उसमें दुनीया वहती सारी,
जमे न उस्मे पैर कीसीका, करके जतन सब पचहारी,
विना ईश्वरके सुमरन तेरा, कभी न होगा निस्तारा॥ सुनदिल॥७॥
ईस दुनियामें एक अधारा सबोंकी आखो मे छाया,
जिस्के कारन सूझ पडे नही, कोन हु मे कांसे आया,
कोन दिसामें जांना मुझकु, जिस्कु देखकर ललचाया,
कोन मालिक हे इस दुनियाका, किसने रची है या माया,
ब्रह्मानंद ज्ञान विनकबहु मीटे नहि यह ससारा॥सुनदिल.॥८॥



१५३ [राग–लावणी–सरल)

करो प्रभुका भजन जन्म यह, बार बार फिर नहि आता,
दिनदिन पलपल छिनछिन नलिनी दल जल लवचचळ जाता॥टेर॥
बालपणे केली रस रसियो, योवन तरुणी मद माता,
वृद्ध भयो तब चिंता जलयो, पलयो ढलयो सब गाता,
माला लेकर चले भजनको, जले भवन जलखो दाता,
मणीका पेरे मन चउ फेरे, हेरे मरकटके भ्राता॥करो प्रभुका.॥१॥
कोटी पाप करकर धन सचय, मरणेसे नही डर पाता,
जिनके कारण करत दुरित नर, सग तेरे कोई नही आता,
यह सब पथ समागम जानो, भ्रात तात काता माता,
जगमे जीवन जान सुजान समान, पाणि जल चल आता॥करो प्रभुका॥२॥
पुनरपि जनन पुनरपि मरण पुनरपि जननी जठराता,
विना हरिके भजन कुजन, नरकानल जल विन जल जाता,
गेर रतन बहु काम तमाम, निकाम काचपर ललचाता,
गया दाव नहि आवे पुनरत्तर मरकर मूरख पछताता॥करो प्रभुका.॥३॥
गर्भावासका काल सभाल, हवाल नाल क्यो विसराता,

भोग जोगकी आश, पाश, मायाके मूर्ख फस जाता,
ब्रह्मानंदके वाक मनाक चलाक जबी दिलमें लाता,
पाश मायाकी तोर मरोर सजोर गगन तल चल जाता ॥करो प्रभुका.॥४॥

१५४ (राग-लावणी)

गर्भवासमे कौल किया था, मेने प्रभुके गुन गानेकी ॥
में भूला तुजको, प्रभुजी मेने देखी मौज जमानेंकी ॥ टेर ॥
बालपनेकी कहूं हकीकत, बडी मौजमें सूतेथें,
कईपर हस्ते कईपर खडे खडे हम रोते थे,
उद्दम धूम मचाते थे, पांनीमे लगाते गोते थे,
चकरी भँवरा गोलिया खेल खेल दिन खोते थे,
नित लडाई लाते थे, तकमारी चोट निसानेकी ॥ मेंभूला. ॥ १ ॥
बालपना गया गुजर प्रभुजी, अब ज्वानीका नूर चढा,
मे बिलकुल भूला जैसे काम क्रोधका पूर चढा,
जाहातहां गली कुचामे, पर स्त्रीया संग घूर खडा,
संग खडा मे अलग जिनराज भजनसे दूर खडा;
सारी बात विसर गया प्रभुजी, फिकर वसरई कमाने खानेकी
॥ में भूला. ॥ २ ॥
बुढापनकी कहू हकीकत, सब दुरबल हो गया शरीर;
गई जवानी जैसे ढलक गया नदियोंका नीर,
हात पांव इंद्री थकित भई, अब चलती नही है ततबीर,
अब तो भरोसा आसरा तेरा मुजे है महावीर,
अब दिलमे लगन लगी है तेरे चरन लिव लानेकी ॥ में भूला. ॥ ३ ॥
बडी फजरका भूला भटका एजी काई हो जावे शांम,
भूला मुझे मिलता नही है कई आंराम,

रामचंद्र कहे अरे तुम रटा करो जिनवरका नाम,
जिननाम रटेसे सकल हो वांछित पूरण काम,
हर्षचंद्र प्रभु राखो लाज पत यहि जैन वे वरनेकी ॥ मैं भूला० ॥ ४ ॥

१५५ [राग-लावणी]

श्री जिन नाम निज सार मंत्र है, जिनको विसरना ना चहिये,
प्रभु नाम छोडके, ओरके गुनकू गाना ना चहिये ॥टेर॥
गंगा जमुना छोड नदी नालोमें, न्हाना ना चहिये,
जंगलके कुवेपर देर लगाना ना चहिये,
घरकि स्त्रियांकू छोड माल वेश्याकू खिलाना ना चाहिये,
ओर रूसो तो रूसो भलाई भगवंत रूठा ना चाहिये ॥ प्रभु नाम० ॥ १ ॥
हात शस्त्र न होय शेरसूतेको जगाना ना चहिये,
दान पुण्य कर पीछे पस्ताना ना चहिये,
शूरवीर हो लडे कैदमें पीछे हटाना ना चहिये,
विना साथके देश प्रदेशकू जाना ना चहिये ॥ प्रभु नाम० ॥ २ ॥
अपने घरकी त्रियाकू दिलका भेद वताना ना चहिये,
अपने घरके पास वैरीकू वसाना ना चहिये,
होवे काला सर्प जिनोकू गोद खिलाना ना चहिये,
सर्पके हलकमें अंगुली डालना ना चहिये,
अपने करके नीचे डंक विछूका दवाना ना चाहिये, ॥ प्रभु नाम० ॥ ३ ॥
क्षत्रीके घर जन्म पायके रणमें भगना ना चहिये,
ब्राह्मण होके उसीको वेद छोडना ना चहिये,
वनियाको व्यापार शूद्रको खेति छोडना ना चहिये,

धर्मकूं वढाकर धर्म घटाना ना चहिये,
रस्ते चलते सुनो कवही खाना पीना ना चहिये ॥ प्रभु नाम ॥ ४॥
चाहे जैसा अमीर होय के गरीबकूं सताना ना चहिये,
अपने दिलका दर्द मित्रसे छुपाना ना चहिये,
देवद्वार अरु राजद्वारमें झूट बोलना ना चहिये,
और गुरुकी सेवा कपटसे करना ना चहिये ॥ प्रभु नाम ॥ ५॥
दानासूं दुश्मनता मीतना दानसू करना ना चहिये,
वेश्याके जाय कभी उस्के वश होना ना चहिये,
साधु संत अरु जती सती राजासे अडना ना चहिये,
अपने हातसूं सर्पकूं दूध पिलाना ना चहिये,
कहे सद्गुरु भविक जन प्रभु नाम भूलना ना चहिये॥ प्रभु नाम॥६॥

---

१५६ [राग–लावणी–सरल]

त्रिया सात घरोंसे निकली, जल भरण, कुवेपर सुज्ञानी,
नसेवाज मातोंके पिया दुख, रोती जाय भरे पानी ॥ टेर ॥
पहली सखीयों कहे सखीरी, मेरा पिया भंग पियां करे,
पीकर भंग जंग हम सेती, नाहक क़िस्सा कियां करे,
ओर रहे भर चुल्लुंमे उल्लु वे लोटे लियां करे,
ना जानू क्या मजा उन्हे सब घरके ताने दियां करे,
अच्छे घरमें लाडला, कैसी कीनीहकताला,
यो भग पिये रहे मतवाला, एसेसें पडा मेरा पाला, २
पाला योंही चली ज्वानी ॥ नशेवा. ॥ १ ॥
सखी दुसरी कहे सखीरी मेरा पियाने चरस पिया,
ी फजरसें पिया चरस पीपीके कलेजा फुक दिया.

जे पीना हो छोड पिया कुछ चंद रोज तुम चाहो जिया,
कफ खांसी बुरी उनको दई मारे चरसनें जोर किया,
वे पिये चरस जिठानी, नहीं कही हमारी मानी,
लाचार हूई खिसयानी, गई इसी फिकरमे ज्वानी,
ज्वानी सखीरी बीतत उनकी नहि जानी ॥ नशेवा. ॥ २ ॥

सखी तीसरी कहे पियानें अफीमका सीखा खाना,
सुका दिया तन बदन जिस्मका, गया खून फिर नहिं आना,
बहु तेरा समझाया पियाकों कया हमारा नहि माना,
बहुत बुराहे सोक अफीमका नहि छूटेगी संग जाना,
सुंदरकी किसमत फूटी, टूटीको नहि लगे बूटी,
ना अफीम उनसे छुटी, ज्वानी योंही बीती,
सखीरी योंही लिखि मेरे खवानी ॥ नसेवा. ॥ ३ ॥

सखी चोथी यों कहे सखीरी बहुत बुरा गांजा पीना,
मेरे पियानें बहुत पिया रंग जरद गांजेनें करदीना,
यही वरफ गांजेका सखीरी फुंका जिगर जल गया सीना,
नहि ताकत कुछ रही बदनमें थका जोर मुशकल जीना,
गांजेकी उन्हें घत भारी, भर भरके पीये हरवारी,
उनका या जला दई सारी, है उमर हमारी वारी,
है उमर हमारी सखीरी यही मुशिबत पडी उठानी ॥ नशेवा. ॥ ४ ॥

सखी पांचमी कहे पिया मेरा सराबका पीनेवाला,
भर प्याली बोतल कर खाली, घरका पट परकर डाला,
हो गाफिल रहे पडा मुझे दुःख बडा ओर कहे भरवाला,
रहे नशेमें चूर सखीरी दिनभर वो तो मतवाला,
पीपी सराबकी प्याली, करडाली बोतले खाली

काया हुइ जल भुन काली, कहि कहिके उनसें मैं हारी,
कहि कहि सखीरी ए नोबत सुन कहानी ॥ नशेवा. ॥ ५ ॥
छठी सखी यों कहे पिया मेरा, छान पोस्त पियें वडी फजर,
कहे सो करना पडे सखीरी हमें हुकमसे क्या है उजर,
लगे पिंग वेहोस नशेमें, चूर जो देखे भरके नजर,
इसी फिकरमें सुनो सखीरी, जल भुन काया हो गइ पिंजर,
उन पोस्त पिया मन भाया, सुख जरा न हमनें पाया,
कोसो जिन्होंने पिलवाया, सब जनम योंही गमाया,
गमाया पियानें सार हमारी नहि जानी – ॥ नशेवा. ॥ ६ ॥
सखी सातमी कहे पिया मायाके नशेमे चूर रहे,
वोही नसा अकसीरक जिस्से दुःख दालिदर दूर रहे,
लाखो करे खुशामद उनकी खिदमतगारीमें हजूर रहे,
रामचन्द्रजी महाराज हमारे सदा ज्ञान भरपूर रहे,
हर्षचंद्र मुनियों फुरमाते, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष साते,
तजो नशा भविक मानी ॥ नशेवा. ॥ ७ ॥



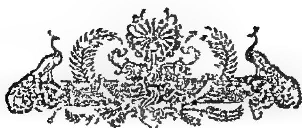
१५७ (राग-लावणी)

वे वे कर्मोके हात अंट लिखनेका
कछु राइ घटेना तिल नहि बधनेका ॥ टेर ॥
कइ रथ पालखी वगी बैठ फिरता है,
कइ सिरपर बोजा लियां लियां फिरता है ॥ वे वे. ॥ १ ॥
कइ थिरमा शाल दुशाल ओढ फिरता है,
कइ गरीब गुरबा ठंडि लेर मरता है ॥ वे वे. ॥ २ ॥
एक लख्खि सेठ लख्खोंका विनज करता है,
जब पड जावे टोटा, इधर उधर फिरता है ॥ वे वे. ॥ ३ ॥

एक राजहंस समुद्रोंके बीच रहता है,
पूरबले पुण्यसे मोति चुग खाता है ॥ वे वे ॥ ४ ॥
एक अजब शेर गुलजार अयो या भारी,
दशरथके घरमे रामचंद्र अवतारी ॥ वे वे ॥ ५ ॥
एक पिता वचनसे वन खंड लिया है धारी,
एक लारे लक्ष्मण रामके सीता नारी ॥ वे वे. ॥ ६ ॥
एक सूर्य चद्रमा दोनू ज्योति जगता है,
जग पडजावे फीका ग्रहण आय लगता है ॥ वे वे. ॥ ७ ॥
कीडीकू कण हस्तीकू मण मिलता है,
पूरबले पुण्यसे अपना पेट भरता है ॥ वे वे. ॥ ८ ॥
एक तुकन गिरी उस्ताद यो कहता है,
सायबको हिरदे धार वहिस्त जाता है ॥ वे वे. ॥ ९ ॥

इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ प्रथम खण्डे
लवण्याभिधं पंचमं प्रकरणं
समाप्तम् ॥





प्रकरण-छट्ठा-होरी

१५८ ॥ दोहा ॥

प्रथम पुरुष राजा प्रथम प्रथम तीर्थंकर देव ।
श्री नाभेय अमेय गुण चरण कमल प्रणमेव ॥ १ ॥
सस मुख वांणी भारती नमी सरस्वती मात ।
चतुर मासिक होलिका कथा कहू अवदात ॥ २ ॥
मांहे तो माता सुणे बाहिर सुणे ते बाप ।
होली कलहेको मूल है बोले ज्यादा पाप ॥ ३ ॥
होली कलहनो मूलहै अकलहीन नर थाय ।
बालक तो जिहा तिहा रहो अकल बुढाकी जाय ॥ ४ ॥
आतम निंदा होलियें कीधी वारंवार ।
तेह कथा हिवे वर्णऊ, लिखित कथा अनुसार ॥ ५ ॥

(ढाल १ राग-तुमे तो भले विराजोजी)

आतम निंदा करियें प्राणी जैसे कीधी होली ।
गुण नही ग्रह्यो अवगुण आदरीयो ऐसी दुनिया भोली ॥ १ ॥
तुम तो आछा लागोजी आतम निंदा करके परनी निंदा त्यागोजी ॥ टेर ॥

वसतपुर पत्तननो स्वामी, जितशत्रु महीपाल
राणी गोमती पुत्र गगेवो, अरीयण कद कुंदाल ॥ तुम. ॥ २ ॥
देवश्रम ब्राह्मणनी नारी, देवानदा नामे ।
पांच पुत्रों परि छठी पुत्री, होली नाम निकामे ॥ तुम. ॥ ३ ॥
रुपलावण्य सोभाग सुंदरी, चतुराई गुण जाण ।
ओर नारीसूं उणहीज नगरे, इणकी इणकि वखाण ॥ तुम. ॥ ४ ॥
स्त्री कला चोष्ट सविजाणे, गीत नृत्य बहु राग ।
विनय भावसू सव लोगनपे, तेहनो है सौभाग ॥ तुम. ॥ ५ ॥
पिण कुमारी सील वर्जीता, एहीज मोटी खोड ।
कोई न करीये केहनो हासो, कर्म तणो एनिचोड ॥ तुम. ॥ ६ ॥
मात पिता भाई ने मामा, लोक करे मुख मोड ।
करि वालागाए परणावो, जिम तिम जोडो जोड ॥ तुम. ॥ ७ ॥
मालव देश उजेणी नगरी, गोविंदने परणावी,
घणो दत्तदाय जो लेकर, होली सासरे आवी ॥ तुम. ॥ ८ ॥
सासू सुसरो जेठ देवरियो, नणदी नें जेठांणी ॥
भक्ति भाव भोजन सतोपे, पाछे पीवे पाणी ॥ तुम. ॥ ९ ॥
सविने सूता पाछे निशनी, द्वार खोल उठ जावे ।
उच नीच पुरुषाथी राचे, कर्मए नाच नचावे ॥ तुम. ॥ १० ॥
न्यात जात भाई ने वधव, गोविंदने समजावे ।
आपना कुलने एह विडवे, रात्रनि वाहिर जावे ॥ तुम. ॥ ११ ॥
गोविंदरी सकरीने वरजे, दांते कडकडी वांटी ।
होली हांस करीने हसती, रडिरे मोल्या माटी ॥ तुम. ॥ १२ ॥
गोविंद जाणी नही घर लायक, पीहरडे पुहचावी ।
सव कोई छयल हूवा मन राजी, होली पिहर आवी ॥ तुम. ॥ १३ ॥
उच नीच सवहीसू राजी, लोक करे वहु कथनी ॥
यातो मनमे काइ न आणे, फिरे घुमनी हथणी ॥ तुम. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

पिता परम दुख पावही, माता राखे मोह ।
घर बाहिर काढी परी, एहनो स्यु संदेह ॥ १ ॥
पिण माता मोही थकी, चाली तेहनी लार ।
झोली करे कुटीरका, नगर तणे हिवे बार ॥ २ ॥

[ढाल २ राग–यतनीकी]

रहे राग तणे रग राती, होली निज फागनें गाती ॥
माता पिण रहती न्यारी, करी पाचसे छयलस्यु यारी ॥ १ ॥
गावे टुकडा मृदग वजावे, प्याला भर भर भांग पावे ॥
मदमाती रहे निसदीस, नित बेसे उघाडे सीस ॥ २ ॥
कोटवाल सुणी ए वात, देखो होलीरा अवदात ॥
राजासू अरजी कीधी, राजा वालवानी आज्ञा दीधी ॥ ३ ॥
पहली डोकरडीने जाली ज्यो, पछे होलीने वालीज्यो ॥
यह आदेश दीधो राय, क्रोधथी इम कर्म वधाय ॥ ४ ॥
पांचसे पुरुष छे तेहनें सघाते, यातो सूती सुखभर राते ॥
तिन समे कोटवालज आई, मातानी कुटील गाई ॥ ५ ॥
सह हा हा करनें जाग्या, होलीनें फुकण लाग्या ॥
कोई नीसरवा नहीं पाया, पाचसे दोय मनुष्य जलाया ॥ ६ ॥
आर्तध्यान करीने मूवा, राक्षस राक्षसणी हूवा ॥
पूर्व भवनो वैर जणावे, वेक्रय करी रूप वणावे ॥ ७ ॥
कटेला सरीखो माथो, भोगल सारीखो हाथो ॥
छाजले सरीखा कान, ज्यारो मुहडो गुफा समान ॥ ८ ॥

कुदाला सरीखा दात, उडो अति पेट अत्यत ॥
आख ऊंडी आतुर हूवा, जाणे साठीका कूवा ॥ ९ ॥
ज्यारे लूकडी पूंछसी मूछे, भूहरा तालोडीरी पूछ ॥
पग जेहवा पथरना लोट, जिणरा ऊठ सरीखा होट ॥ १० ॥
राजा वसंत रमवाने आयो, राक्षसाने कूराठ उठायो ॥
राजा जिम करे गाढो, सच सहे जनरो लाठो ॥ ११ ॥
लोक सगही दिसोदिस भागा, राक्षस चोडे रमवा लागा ॥
हासी हस सहूने बिहावे, तेहने सामो कोइ न आवे ॥ १२ ॥
राजा मनवादीनें बुलाया, राक्षस ते हाथ न आया ॥
मत्र यंत्र न लागे टूणो, वैर मागे राक्षस दूणो ॥ १३ ॥
मनुपाने भक्षीया जावे, राजानें उदासी आवे ॥
हिवेस्यो होवे पिछताणें, हमनें वाल्या किसेगनाहणें ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर तिहा आवीया, पाचसे मुनी परवार ॥
श्री गुणाकरसूरजी, करता पर उपगार ॥ १ ॥
तिण वन आवी ऊतऱ्या, कहे नगरना लोक ॥
स्वामी इहा न रहीजिए, राक्षस तणे सजोग ॥ २ ॥
साधु कहे भय एहनो, अम ऊपर नहीथाय ॥
राक्षस राक्षसणी सुलभ, ते देस्या समझाय ॥ ३ ॥



[ढाल ३ मांरो प्रिउ ब्रह्मचारी]

राक्षस राक्षसणी तव आया, गवर्षे ते याया हो॥ साधूजी गुणधारी॥
अट्टहास करवा लागा, खांडा जेहनें हाथे नागाहो ॥ साधुजी. ॥१॥

ध्यान धरीनें मुनिवर बैठा, राक्षसडा चितमे पैठा हो ॥
वीतरागवा धर्म प्रसादे, सहू थथ्या चित उन्मादे हो ॥साधुजी.॥२॥
होली पूछे तुम कुण होई, धर्म दया बतावो सोई हो ॥ साधु. ॥
समज समज मनमा हेस याणी,ए आपणोही अवगुण जाणीहो॥साधुजी॥३॥
कर अब तू आतम निंद्या, होलीयें सद्गुरु वंद्या ॥ साधु. ॥
नगर राय लोक सब बोलावी,कहे मुज घट समकित आवीहो॥साधुजी॥४॥
हाथ जोडी पूछ्यो सब लोके, एह उपद्रव्य केहवे थोकेहो ॥ साधु.॥
पहली तुममें अमे अवगुण जाण्यो गुरु वचनें आपो पिछाण्यो हो ॥सा.॥५॥

॥ दोहा ॥

अमचो अवगुण ए लह्यो, तुमचो दोस न कोय ॥
हिव एकार्य तुम करो, जिम मन राजी होय ॥ १ ॥
में पापणी निखीयावसे, कीधा पाप अघोर ॥
ते तुम सहूने सुणावजो, मुहसे करी वकोर ॥ २ ॥
फागण सुद पूर्णिमा दिने, होलीए हवे नाम ॥
मोटी करी कुटीरका, मिलजो सारो गाम ॥ ३ ॥
छोटी कुटीरका मातनी, तेहनें प्रथम जलाय ॥
गाल राड करनें घणी, दीजो होली लगाय ॥ ४ ॥



(ढाल ४ गिरनारके पहाडीपरे)

सहुको राक्षसरूप धरनें, राक्षस रंग पहरी चोरी ॥ १ ॥
आपणो अव पाप प्रकाशे होरी ॥ टेर ॥
अव निंदारी एह जगतमें, फेरा फिरज्यो मुज टोरी ॥ अपणो. अव.॥२॥
चैत्र वद एकमनें दिवसे, धूल उडावज्यो भरजोरी ॥अपणो.अव.॥३॥

अनाचार एहवो आदरसे, तेहनें सिग्पर ए ढोरी ॥अपणो.अव.॥४॥
चावल दाल लापसी लाडू, तुम जीमी ज्यो मिल टोरी ॥अपणो.अव.॥५॥
केहनो सोग संतापन राखो पापण इसी गई फोरी ॥अपणो.अव.॥६॥
वरसां वरस एही तुम करज्यो, आतम निंद्या है मोरी ॥अपणो.अव.॥७॥
भला वस्त्र पहरी तिण वासर, सहुनें नमज्यो मद छोडी ॥अपणो.अव.॥८॥
देव गुरु अने धर्म आराधो, सुणीयो पुरुष अने गोरी ॥अपणो.अव.॥९॥
जो नही समजा एहमे, तो तेहनें भवथितहे बहुरी ॥अपणो.अव.॥१०॥
आतम निंदा एहवी कीधी, होरीनें भवथित करी थोरी ॥ अ.अ.॥११॥
महाविदेहमे मुक्ति जासी, आठुई कर्मके दुख तोरी ॥अ.अ.॥१२॥
अजर अमर पदवी पापसे, अनंत सुखाकी लगी डोरी ॥अ.अ.॥१३॥
अविनासी अविकार निरंजन विनयचंद कहे करजोरी ॥ अ.अ.॥१४॥

॥ इति होलीनो चौढालियो ॥



१५९ [होरी-राग-नाथ कैसे गजको फंद छुडायो]

रासस रूप बनें सब दुनिया लाज रहे नहि थोरी ॥
विकलवके जिम कूकर नाईं, लाज रहे नहि थोरी ॥
हमारे कुण खेले ऐसी होरी॥जामें आवागमनकीडोरी ॥ हमारे.॥१॥
तात मात अरुगुरु लोकनकी, मर्यादा सब तोरी,
निन मद पानकि येंही मूरख, करतो फिरत वकोरी ॥ हमारे. ॥ २॥
रासभ वाहन स्याम मुख करके, चमर बुहारी ढोरी,
धारत छत्र छाजको सिरपर, आगें बजे डफ डोरी ॥ हमारे. ॥ ३ ॥
गलीयें गलीयें फिरत उडावत, धूरनकी भर झोरी
मानत मोज माननी मनमे, मलमूत्रन जल ढोरी ॥ हमारे. ॥४॥

विनही हेर धन सांग चोरको, वनत पापको धोरी,
जमके चोर कंत हे मेरो, ऐसें चिंतत गोरी ॥ हमारे. ॥ ५ ॥
रमत गेहर जिम नरक निवासी, मार मची घन घोरी,
कोई डडल कुट पाहनते, नाखत पर सिर फोरी ॥ हमारे. ॥ ६ ॥
ऐसे काममें कहत वडो दिन, ऐसी दुनिया भोगी,
रेखराज कहे या होरीतें, दूर सदा विचरोरी ॥ हमारे. ॥ ७ ॥

१६० (होरी राग-पूर्ववत्)

हमारे एसी होरी मन भावें, जातें आवागमन मिट जावे ॥ टेर ॥
अपूर्व करन आगए दर्शन, सप्त कर्म जरावे
चेतन भूलकी भस्म ऊडाई, शुध मन मंदिर आवे। ॥हमारे.॥ १ ॥
संवर अंवर भलपन भूषन शुध श्रृंगार सजावे,
क्रिम तमो क्रिया कुशम छरी लेकरमें रमन स्वसहज रमावे ॥हमारे.॥ २ ॥
निरमम नीर चरन गुन चंदन, करन कपुर मिलावे,
करूणा केशर अवीर अध्यातम, अद्भुत रग रचावे ॥हमारे.॥ ३ ॥
वानक वसंत वीराग वनवारू अनुभो आवास सुहावे,
सुमती सखी संग समरस पीकें, चेतन फागवनावें ॥हमारे.॥ ४ ॥
पर अवगुण त्याग पकर पिचकारो, भरभर रग चलावें,
सुबुध सखी सग रीझ्यो चेतन, ग्यांन गुलाल ऊडावे ॥हमारे.॥ ५ ॥
शुभ चित्त चंग मृदग मार्दव, भेरी भावना भावे,
सुरत शरणाई जयाणा झाझा, प्रभु गुन पडह वजावें ॥हमारे.॥ ६ ॥
धर्म कथादि धमाल रागनी, गहिरेस्वर कर गावें,
निकट भव्य ख्याली सुनश्रवणे, रोम रोम विकसावे ॥हमारे.॥ ७ ॥

अनुक्रम जोगनीरूधी लेश्या, सयलेशी पद ठावे,
रेखराज एसी होरी तें, अजर अमर पद पावे ॥ हमारे० ॥ ८ ॥
रस परव निधि भूपालनगीनें, फागुन मास सुहानें,
शुक्ल चतुर्दशी यें पद कीयो, सुन श्रोता विकसानें ॥ हमारे० ॥ ९ ॥



१६१ [होरी–राग–मति ताको नार वीरांणी]

या विधि होरी मचावे, जब जियरा सुख पावे, ॥ टेर ॥
तत्वारथ चरचा चर चोवा, मलि मलि अंग लगावे,
शाति सुधारस रग राचकर, राग गुलाल ऊडावे ॥ जब जियरा. ॥१॥
श्री जिन आगम धुनि सुपान कर, मन वच तन छक जावे,
सुमति नार जुत हर्ष हर्षके, श्री जिनके गुण गावे ॥ जब जियरा. ॥२॥
जिनवर गुण वा निज स्वरूपको, एक रूप दरसावे,
निरमल सरधा धर्म दिढाई, ग्रह तन नेक अघावे ॥ जब जियरा. ॥३॥
परतें त्याग दान करतें जब, निजमें निज विरमावे,
मानकर्यो बड भाग खेल कर, आवागमन मिटावे ॥ जब जियरा. ॥४॥

१६२ (होरी–राग–पूर्ववत्)

सुमति गृहे होरी मचाई, चतुर चित चेतन राई ॥ टेर ॥
ईतमें सुमति राधिका ठाडी चित चिदरायकनाई,
काल लब्धि यह ऋतु वसतमें दपती मिल निहसाई,
हरख अग अंगन समाई ॥ सुमति० ॥ १ ॥
ज्ञान सलीलद्दग केशररग छिरकत मानु घन वरपाई,
राग गुलाल अबीर ऊडावत सुख मद छकनिछकाई,
बहुत भ्रमतपन बुझाई ॥ सुमति० ॥ २ ॥

नय ध्वज नृत्य कारणी नाचत, स्यात्पद सुर जब जाई,
गुरु उपदेश ताल मधुरि धुनि, होत श्रवण सुखदाई,
भलि विधि नीज गुणगाई, ॥ सुमति० ॥ ३ ॥
यह विधि होरी रचावत दपत, सोभा बरणी न जाई,
विलखत कूर कुमति देसो मूढनके चित भाई,
बहुत दुरगति दुखदाई, ॥ सुमति० ॥ ४ ॥
आज सुमति गृह आनंद मंगल बहु विधि होत वनाई,
मानक धन्य चतुर चेतन तिन, सुमति सुनी अपनाई,
भयो त्रिभुवनकोराई ॥ सुमति० ॥ ५ ॥



१६३ [होरी–राग–पूर्ववत्]

या कहा आदत पिय तोरी, नित खेले कुमति सग होरी ॥ टेर ॥
कुमति क्रूर कुवला सग राच्यो, लाज सरम सब छोरी ॥ नित. ॥ १ ॥
राग द्वेष मय धूलि लगावें, नाचे ज्यों चकडोरी,
मोह महा मद छाक छाकके, पायो दुख करोरी ॥ नित. ॥ २ ॥
तुच्छ विषय रंसगभर पिचकारी, कुमति कुतिय संग दोरी,
जा प्रसंग दखि गये फिर, प्रिति करत वर ज्योरी ॥ नित. ॥ ३ ॥

१६४ [होरी आत्मापर–राग पूर्ववत्]

शाम कैसी खेलत होरी, अचरज खुब बनोरी, कोई जन भेद लहोरी ॥टेर॥
तनरग भूमिबनी अति सुंदर, बालन बाग लगोरी,
नाडी जहा अनेक गली शोभत, खेले तहां सांवरोरी,
सग वृषभान किशोरी ॥ शांम कैसी० ॥ १ ॥
गाच सखी मिल, पाच रगभर देतवहोर वहोरी, राधिका लेकर डारे सामपर,
सब तन दियो भिगोरी, कृष्ण मनमोद भयोरी ॥ शाम कैसी० ॥ २ ॥
होरीमे मोद मान कर शामने राधिका भेप धरोरी, मिल सखियन सग फाग मचायो,
खेलत मगन भयोरी आप सुधी भूल गयोरी ॥ शांम कैसे० ॥ ३ ॥
खेलत खेलत जान न पायो, दीर्घ काल गयोरी, वनवन फिरत मिले
जय सतगुरु सखियन सग विछोरी शांम ब्रह्मानद मिलोरी ॥शांम कैसी.॥४॥

१६५ (होरी आत्मापर–राग पूर्ववत्)

आयो वसत सखीरी, मिल खेलीये होरी ॥ टेर ॥ आयो वसंत. ॥
परके भूल गई गृह काजन मनमे तापरयोरी,
जिन जिन खेली होरी शांमसग तिन वड भाग लयोरी, ॥ आयो वसत. ॥ १ ॥
नज सब काज आज घरकेरें लाजको दूर धरोरी,
फागुनके दिन वितेजातहें फिर पीछे पछतोरी ॥ आयो वसत. ॥ २ ॥
सतसगति वृंदावन जाकर, शामको खोज करोरी,
मकर विचार जुगति वेरो जानन पावे वहोरी- ॥ आयो वसत. ॥ ३ ॥
मन पचकारी पकड कर सुंदर ध्यानको रग भरोरी,
प्रेम गुलाल मलो मुख उपर ब्रह्मानद रसलोरी ॥ आयो वसत. ॥ ४ ॥

१–आत्मा २–बुद्धि ३–इन्द्रिय ४–विषय

(ढाल १ ली. राग-सुपनारी तथा उमादे भटयाणीकी.)

पहलडै सुपनैजी कांइ देख्यो वृषभ धड़कतो, गाजतो गजराज, तीजे तो सुपनेजी खंधालो दीठो केहरी, श्री देवी सुभ साज ॥ १ ॥ आदीश्वर जयकारी हो, सुखकारी स्वप्न दिखाइया ॥ टेर ॥ पाचमे मालाहो सुविशाला कुसुम तणी भली, रसमें पूरण चन्द, सातमे दिनकर हो तम हरतो निर्मल ऊगतो, आठमे धूज महेंद ॥ आ० ॥२॥ नवमे तो निरख्यो मन हरख्यो, कुंभ सुहामणो, पद्म सरोवर सार, एकादशमे उदधि हो जल पूरण वहु परिजारसूं, देवयान सुखकार ॥ आ० ॥ ३ ॥ षोडश जातीहो वहु भांती राशज रत्नी, अग्नि शिखादी पत, निरखी हरखे राणी हो चतुर्दश स्वप्न सुणावीया, फल दाखो मुज कंत ॥ आ० ४ ॥ सुखदायक जगनायक हो, मन भायक सुत तुम जनमस्यो, होसी मगल माल, सुण राणी सुख पाईहो, हिव करती गर्भनी पालना, पूरण पहली ढाल ॥ आ० ५ ॥

दूहा.

असित चतुर्थि आसाढकी, चवीया आदि जिनद ।
चैत असित अष्टमी दिने, जन्म्या त्रिजगानद ॥ १ ॥
आवी छप्पन कुमारिका, शक्र आदि अधिकार ।
जबुद्वीप पन्नत्तीये, उच्छवनो विस्तार ॥ २ ॥

ढाल २ (राग--दलालीकी देशी)

जिन जननीको आनद निरखन, आवे शचिनको साथ
करजोरी कहै धन्य हो माता, तें जायो जगनाथ ॥
आज आनद भयो भरत खेत्रमे धर्म दिवाकर प्रगट भयो ॥ टेर ॥ १ ॥

सीस नमावे जिनगुण गावे, भावे नृत्य करत,
अनमिखने न भया जिन निरखन, तन मन धन विकसत ॥ आ० ॥ २ ॥
सुरपति जगपति जननी प्रणमी, कहे धन्य हो तुम मात,
रतन कुक्ष धारणी धोरणी, महिमा कहियन जात ॥ आ० ॥ ३ ॥
धरणेंद्र नरसारे कंचन, रत्न अखंडित धार,
तिहू लोक आनंद भयो है, मुख मुख जयजयकार ॥ आ० ॥ ४ ॥

(ढाल २ राग—सिवाके नंदना.)

नाभजूके नंदन, जाऊ बलिहारी ॥ मरुदेव्या नंदन ॥ जा० ॥
तुम सिव सुखके दातार ॥ ना० ॥ टेर ॥
सुपन तणे अणुसारथी, ऋषभ दियो जिन नाम,
चंद्र कला जिम वाधतो, रूप महा अभिराम ॥ ना० ॥ १ ॥
सुरनारी कर कमलमे, मधुकर ज्यू विचरंत,
रमण हसन चलने करी, माता मन मोहत ॥ ना० ॥ २ ॥
घम घम बाजे घूगरा, ठम ठम ठुमके चाल
मेरे छगन मगना, राच रयो अति ख्याल ॥ ना० ॥ ३ ॥
कबहू आख अजावतो, परहो छिटकी जाय,
र्स्यायोही फिर नावही, माता पकडे धाय ॥ ना० ॥ ४ ॥
तब रहे प्रभु रीसायके, तब कल कलिकराय,
युगलिक सुरनर मानवी, सबही रहे रिंजाय ॥ ना० ॥ ५ ॥

दूहा.

क्रीडा करण पाणी ग्रहण, पुरि निवसन परिवार ॥
कला रचन आदिक सकल, आइ चरित्र अधिकार ॥ १ ॥

राग—छप्पय.

प्रभू परण्या पद्म निदोय, सुमंगला ने सुनदा,
सुनंदानेंनंदे हुवानि नाणु अमंदा, सुमंगलानें एक टेक
अविचल बाहूबल, ब्राह्मी सुंदरि धीय सती,
सत्यवती निरमल, पाटोधर श्री भर्तजी,
सो पुत्रांके माय, शालि वृक्ष परिवार त्यूं महिमा कहिय न जाय ॥१॥

चौपाई

बीस लाख पूरव परिमाण, कुमर पदे रहिया भगवान,
तरेसठ लाख पूरव रही राज, पाछे सान्या आतम काज ॥ १ ॥

ढाल ४ राग–बन्नाकी

हांजी.प्रभु लोकांतिक सुर आवीया ॥ हां ॥ दे जिननें उपदेश ॥हां॥ अठारे कोडा कोडिनो ॥ हां ॥ मेटो अग्यान कलेश ॥ १ ॥ आद-नाथजीनी शिविकावनी अति सोहति ॥ टेर ॥ हां ॥ रत्नजडित र-लियामणी ॥ हां ॥ चिहुं दिश लटके लूंब ॥ हां ॥ रत्नजडित आसन विचे ॥ हां ॥ सिरपर लटके झूंब ॥ आ. २ ॥ हां ॥ सुदर्शन नामें सिविका ॥ हां ॥ बैठा आद जिणद ॥ हां ॥ भूषण सहु जिन तन धऱ्या ॥ हां ॥ साथे सुरनर वृंद ॥ आ० ३ ॥ हां ॥ इंद्र धरी प्रभु पालखी ॥ हां ॥ गीत नृत्य नहि अंत ॥ हां ॥ सिधारथ उद्यानमे ॥ हां ॥ आव्या श्री भगवंत ॥ आ० ४ ॥ हां ॥ चतुमुष्टी लोचन करी ॥ हां ॥ अशोक तरु तल साम ॥ हां ॥ चार सहस नृप संगसू ॥ हां ॥ संजम लीनो स्वाम ॥ आ० ५ ॥

दूहा.

चेत वद अष्टमी दिने, बेलानो पचखाण ।
सुभ ध्यान मन ध्यावतां, उपनो चोथो ग्यान ॥ १ ॥

कीयो विहार विनिता थकी, लारे बहु परिवार ॥
प्रभु वदी घर आवीया, साले विरह अपार ॥ २ ॥

सोरठा.

मौन्य धरी महाराज, विचरे पुर बहु गाममे,
तोडन कर्म इलाज, सहे परिसह नाथजी ॥ ३ ॥

[ढाल ५ शुक्रत करले रे मूंजी.]

भिक्षा कारण श्री जग तारण घर घर गोचरि जावे, भोला जन मन भेद न समजे, ओर वस्तु ले आवे ॥ १ ॥ काइ फल्योजी २ आदीश्वर स्वामीकां ॥ टेर ॥ जुगलिक नरनो वारो नेडो, किणहीन मांगी भिक्षा, केम मुनीनें दानज दीजे, किणहीन देखी दिक्षा ॥ कां० ॥२॥ कन्या कवारी अति सिणगारी भूषण सोहे भारी, ए प्रभु लीजे ढील न कीजे, मानो अरज हमारी ॥ कां० ३ ॥ गज सिणगारी हो दो ...ारी, गल रतननकी माला, ए प्रभु लीजे आप चढीजे ॥ कांई ...करो ये पाला ॥ कां० ४ ॥ हयवर मातो चाले तातो, रगमे रातो ...ीको, रत्न जडित पलान सुहातो, लीजे मुज मन तीखो ॥ कां० ॥ ॥ ५ ॥ रथ वाहनी सिवका पीनस, जे चाहे ते लीजे जग नायक ...ुम अतरजामी, पाला नही फिरीजे ॥ कां० ६ ॥ मुक्ताफल भर ...ाल विशालहि, प्रभुके सन्मुख आवे, कचन रतन भाजन मन गमता, ...्यो तो मन सुख पावे ॥ का० ७ ॥ भुजबंध कठी एह अंगुठी, कण...दोरो ने माला हार अर्द्धहार ए रूडा ल्यो, थिरमा ने दुसाला ॥ कां ॥ ॥ ८ ॥ फूल गुलाब केवडा ने चपा, गूथ २ नें ल्यावे पिण प्रभुजी मनमें नही वांछे, तव मनमें अकुलावे ॥ कां० ९ ॥ चारोली बिदाम ने पिसता, श्रीफल ओर सुपारी, वरक लगावै बहु विध ल्यावै ॥

अरु बीडी पानारी ॥ का० १० ॥ सचित अचितनो भेद न समजे, न मिल्यो शुद्ध अन पाणी ॥ च्यार हजार चेला चिंत चिंतै वांकै करडी ताणी ॥ कां० ॥ ११ ॥ च्यार हजार चेला प्रभु गोडै, का बाला कूका ॥ ये मुख नवि बोलो मून न खोलो ॥ म्हे मरांछां भूखा ॥ का ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

कछ महा कछ आद दे, लिंग अनेरो धार ॥
भूखा मरता भागीया, साधु चार हजार ॥ १ ॥
पूरबली अंतरायथी, बीता बारै मास ॥
हिवै पधार्‍या गजपुरे, काज करण श्रेयांश ॥ २ ॥
बाहूबलनो सुत सुखद, सोमप्रभ राजान ॥
तस सुत श्री श्रेयांश ए, युवराजा गुण खान ॥ ३ ॥

(ढाल ६–राग पणिहारी)

श्री श्रेयांश सुपनो लह्यो ॥ जग नायकजी ॥ लागो सुदर्शन काटहो ॥ सुख दायकजी ॥ मे निज हाथथी धोइयो ॥ ज० ॥ दूर कियो निर्घाट हो ॥ सु० ॥ १ ॥ टेर ॥ सोम प्रभ पुरपति लह्यो ॥ ज० ॥ सुभट करत संग्राम ॥ हो. ॥ घेर्‍यो मिल शत्रु घणा ॥ ज० ॥ कुमर सहाज दियो ताम ॥ हो. ॥ २ ॥ सुबुधि सेठ रवि कीरणने ॥ ज. ॥ भूमि पतन करत ॥ हो. श्रेयांशे भुज बल करी ॥ ज० ॥ मंडल मांहि धरत ॥ हो. ॥ ३ ॥ तीनू मिल नृपनी सभा ॥ ज० ॥ कीयो एह निदान ॥ हो. ॥ कुमरजी श्रेयांशजी ॥ ज० ॥ लहिसें लाभ महान ॥ हो. ॥ ४ ॥ इत्तरै भमता गोचरी ॥ ज. ॥ आय गया जिनराय ॥ हो. ॥ श्रेयांश देख गवाक्षथी ॥ ज० ॥ चित आनंदित थाय ॥ हो. ॥ ५ ॥

॥ दूहा ॥

जाती समरण ग्यान तद, उपजीयो सुखकार ॥
नव भवना सबधनो, जाण कीयो अधिकार ॥ १ ॥

[ढाल ७-राग जीलानी]

स्वामी ललितांगज देव हुवारिध भारीजी ॥ सुखकारी जिनराज ॥ स्वा. ॥ स्वयमभा मेंहूती मभुनी प्यारिजी ॥ जि० ॥ स्वामी वज्र जघ भूपमें श्रीमति राणीजी ॥ सु. २ ॥ तीजे भवमें युगल युगल निजाणीजी ॥ जि० ॥ १ ॥ सुधर्म स्वर्गमे मित्र तणो पद पाया हो ॥ सु० २ ॥ पचम भव प्रभु आनद वैद्य कहायाजी ॥ जि० ॥ सेठ पुत्रमें केशव नाम धरायोजी ॥ सु० २ ॥ रसमें भव अच्युत मित्रपणो मन भायोजी ॥ जि० ॥ २ ॥ सामी साम भवमे वज्रनाभ नर देवाजी ॥ सु. २ ॥ भूप तणो सुत सारथी व्हे करि सेवाजी ॥ जि० ॥ अष्टम भवमें परम अनूत्तर वासीजी ॥ सु. २ ॥ नवमे भवमे हुवा ऋषभ सुविलासीजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ में पिण मभुको पर पोतो कहिवायोजी ॥ सु. २ ॥ नाम श्रेयांशण देख दर्श सुख पायोजी ॥ जि० ॥ गोखथी उतरी चरणे सीस नमायोजी ॥ सु २ ॥ फली मनोरथ सफल सफल दिन आयोजी ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥

गोख थकी उतर तदा, मणमें प्रभुना पाय ।
तीन प्रदक्षणा देयनें, आण्या निज घर माय ॥ १ ॥
इखु रस घट भेट नृप, आण्या जन तिण वार ।
करै विनती स्तवन युता, श्री श्रेयांशकुमार ॥ २ ॥

(ढाल ८–राग मरहटी लावणी)

तू पुरुषोत्तम त्रिजग उत्तम तुंहि विधाता सुखदाता । सब जग त्राता सबको ग्याता ॥ तव गुण पार नही पाता ॥ टेर ॥ तूही बुध तुंही सुध निरंजन तूं शंकर ईश्वर धाता, तुहिज विष्णु तू जग जिष्णूं, तूं चतुरानन विधाता ॥ तूं० ॥ १ ॥ तूं सुख करता सब दुख हरता, तूं शिव भर्ता शिवगामी ॥ तूं अविकारी महिमा भारी, जग वच्छल अंतरजामी ॥ तूं० ॥ २ ॥ तूं मन मोहन तूं जग सोहन । कोहन मोहन नवि माया, नहि तुज लोहन सब जग थोहन द्रोहन रंचन शिव राया ॥ तूं० ॥ ३ ॥ करुणा कीजे मेहर धरीजे । इक्षुरस हमपें लीजे । लाभ ए दीजे हम मन रीझे । जगजीवन पावन कीजे ॥ तूं० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ कवि चतुराई.

दाहिन कर वोल्योतिसै । करुणा निधि अवधार ॥
मुज कर भोजन लीजीए । मै तुम आग्याकार ॥ १ ॥

॥ कवत ॥ सवइया २३

बालपनेही तें सेव धरो चित्त । अंगुष्ठ तें अमी पान करायो ॥
इक्षु ग्रहे हीतें वंश चल्यो । तुम तिलक कीयो जब राज दिरायो ॥
भरतादि निज नंदनकूं । अरुये रेही शुभ लंछन सुखदायो ॥
भोजन पूजन सज्जन दानन । लोचनमें फिर आडोही आयो ॥ १ ॥

॥ वामकर उक्तः दोहा ॥

रेरे नीच निठुर निलज । वृथा धरै अभिमान ॥
अपनि आपो [illegible] । होउन नहीं प्रधान ॥ २ ॥

आद धरी भेला वस्या । छानो नही गिमार ॥
मांपे गुन मोसालको । करतन लजत लिगार ॥ २ ॥

॥ सवइया २३ ॥

ढालकू राख बचावत स्वामीकू चाप धरूं अरु वीर तापाऊं ।
अकनको गिनत्रो हमतें अरु वामेही गर्दभ काज कराऊ ॥
वामेही पास सोये सुख पावत । भोजन करत मे माखी उड़ाऊं ।
व्याहन भोजन रहत अकेलो चोर जुवारी किते गुण गाऊं ॥ २ ॥

॥ दूहा ॥

करत विवादहि करवींडू । निज २ गुरूना मान, ॥
मानूं याते वर्ष लग । भूख मरे भगवान ॥ १ ॥
कहे श्रेयास कृपा करो । द्यो अवद्रोह मिटाय ॥
होय भले अवलीजीए । मुज मन वंछित थाय ॥ २ ॥



[ढाल ९—ख्यालकी]

ऋषभ जिनेसर कीयो पारणो । मारी रस सेलडी ॥ म. टेर ॥ घडा एकसो आठ सेलडी । रस भरीया छैनीका ॥ दान दीयो श्रेयास कुमरजी । माडलीया मशुन् काजी ॥ मा० ॥ १ ॥ देव बजावे दुदुभी सने । सोनइयानी विरषा । कीयो पारणो आद जिनेसर । मिटी भूख नें तिरखाजी ॥ मा० ॥ २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनो कामना । घर २ मगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा ॥ मारे आखातीज तिंवारजी ॥ मा० ॥ ३ ॥ सकट काटो विपत विडारो । राखो हमारी लाज । नानूराम करजोडी करता । ऋषभदेव महाराजजी ॥ मा० ॥ ४ ॥

(ढाल ८–राग मरहटी लावणी)

तू पुरुषोत्तम त्रिजग उत्तम तुंहि विधाता सुखदाता । सब जग त्राता सबको ध्याता ॥ तव गुण पार नही पाता ॥ टेर ॥ तूही बुध तूही सुध निरंजन तू शंकर ईश्वर धाता, तूहिज विष्णु तूं जग जिष्णूं, तूं चतुरानन विधाता ॥ तूं० ॥ १ ॥ तूं सुख करता सब दुख हरता, तूं शिव भर्ता शिवगामी ॥ तूं अविकारी महिमा भारी, जग वच्छल अंतरजामी ॥ तू० ॥ २ ॥ तू मन मोहन तूं जग सोहन । कोहन मोहन नवि माया, नहि तुज लोहन सव जग थोहन द्रोहन रंचन शिव राया ॥ तूं० ॥ ३ ॥ करुणा कीजे मेहर धरीजे । इक्षुरस हमपें लीजे । लाभ ए दीजे हम मन रीझे । जगजीवन पावन कीजे ॥ तूं० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ कवि चतुराई.

दाहिन कर बोल्योतिसै । करुणा निधि अवधार ॥
मुज कर भोजन लीजीए । मै तुम आग्याकार ॥ १ ॥

॥ कवत ॥ सवइया २३

बालपनेही तें सेव धरो चित्त । अगुष्ठ तें अमी पान करायो ॥
इक्षु ग्रहे हीतें वश चल्यो । तुम तिलक कीयो जब राज दिरायो ॥
भरतादि निज नंदनकू । अरूमे रेही शुभ लंछन सुखदायो ॥
भोजन पूजन सन्नन दानन । लोचनमें फिर आडोही आयो ॥ १ ॥

॥ वामकर उक्तः दोहा ॥

रेरे नीच निठर निलज । वृथा धरै अभिमान ॥
॥ १ ॥

आद थकी भेला वस्या । छानो नही गिमार ॥
मार्पे गुन मोसालको । करतन लजत लिगार ॥ २ ॥

॥ सवइया २३ ॥

दालकूं राख वचावत स्वामीकू चाप धरू अरु वीर तापाऊ ।
अक्रनको गिनरो हमतें अरु वामेही गर्दभ काज कराऊ ॥
वामेही पास सोये सुख पावत । भोजन करत मे माखी उडाऊं ।
व्याहन भोजन रहत अकेलो चोर जुवारी किते गुण गाऊ ॥ २ ॥

॥ दूहा ॥

करत विवादहि करवांहू । निज २ गुरुता मान ॥
मानूं पाते वर्ष लग । भूख मरे भगवान ॥ १ ॥
कहे श्रेयांश कृपा करो । द्यो अवद्रोह मिटाय ॥
होय भले अवलीजीए । मुज मन वछित थाय ॥ २ ॥

[ढाल ९—ख्यालकी]

ऋषभ जिनेसर कीयो पारणो । मारी रस सेलडी ॥ म. टेर ॥ घडा एकसो आठ सेलडी । रस भरीया छैनीका ॥ दान दीयो श्रेयांश कुमरजी । माडलीया प्रभुनू काजी ॥ मा० ॥ १ ॥ देव वजावे दुदुभी सने । सोनइयानी विरषा ।कीयो पारणो आद जिनेसर । मिटी भूख नें तिरखाजी ॥ मां० ॥ २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनो कामना । घर २ मगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा ॥ मारें आखातीज तिंवारजी ॥ मा० ॥३॥ सकट काटो विपत विडारो । राखो हमारी लाज । नानूराम करजोडी कहता । ऋषभदेव महाराजजी ॥ मा० ॥ ४ ॥

॥ छप्पय ॥

वरस सहस छदमस्थ । रह्या जिन त्रिभुवन भूषण । मास फाल्गुन असित पक्ष ग्यारस निरदूपन । प्रात समय महाराज सकड सुख नाम उपानदी । निगोध वृक्ष तल नाथ धर्यो जब तुरिय ध्यानहि । अष्ट भक्त तपनें विषै उपनो पंचम ग्यान । अब परिवार वखान हू । सूनो मन निश्चल आन ॥ १ ॥ चऊरासी गणसार चउरासी गणधर कहिये । मुनि चउरासि हजार । लाख तिहूं समणी लहिये । श्रेयांश प्रमुख तीन लाख अरु पांच हजारहि । श्रावक उत्तम जान व्रत द्वादश शुध धारही । सुभद्रा आदे करी श्रावकणी परिवार । पांच लाख अरु उपरै कही चोपन हजार ॥ २ ॥ सहस चार शत सात पचास मुनि पुरवधारी । अवधिग्यानी नव सहस्र केवली वीस हजारी । वैक्रयी वीस हजार शतही पट उपर जानो । विपुल मति-वारे हजार सार्द्ध शत पटहि प्रमाणो । एताही वादी मुनिए अनुत्तरो पपाती जान । सहस वावीस पट् सत भला भणमूं गुण मणि खाण ॥३॥

चंद्रायणो

माघ मास पक्ष असित तिथी तेरस दिनें । गिर अष्टापद शिखर स्वाम पद्मासने ॥ पट् उपवास संथार प्रातःसमय सही ॥ अरिहा ॥ दश सहस मुनी साथ नाथ शिव गति लही ॥ ४ ॥

॥ अथ घनकी चाल ॥

जपो तुम नाभिनंद भगवान । नाम तें होय जावें कल्याण । प्रभूकी महिमा है असमान ॥ धरो तुम उजल चित्तसें ध्यान । जिनुसे खुलेगी सुखकी खान । वचन एक रलीजे परमाण । प्रभूकू एक चित्त ध्यावें । आपदा जडहीतें जावैगी ॥ १ ॥ जपो तुम मरुदेव्याके नंद । जिनुसे

होय जावे आनद । जाय टरे कर्मनके सब फद । प्रगट होय जावे सुखके कद । छोरद्यो जूठा ए जग धध । खुलेगी निज गुणकी मकरंद सीख ए मेरी मुन लीजे । जिनेंदका जाप सदा कीजेजी ॥ २ ॥ नगीनें नगर बीच आया । वसें जिहां जिन धर्मी भाया ॥ अक्षय तृती-याका दिन पाया । जनि ए जिनके गुण गाया । सुनतही ज्ञान हुल-साया । मंदमती मनमें सुर जाया । चरित्र ए रेखंराजजी गावे । प्रभु गुण भव्यने मन भावेजी ॥ ३ ॥

इति अक्षय तृतीया व्याख्यान.

॥ २ छन्द ॥

श्री ऋषभ जिणेसर जगत सिरे । सुरनर सम भर तू एण. अरे हित सागर नागर विघ्न हरे । इम दास सदा तुज आस धरै ॥ १ ॥
अही अग्नि उदक भय हेल हटे । अरि करि हरि रोग निरोग मिटे । जिण जाप किया सताप फटे । तिण ऋषभ २ सहु लोक रटे ॥ २ ॥
विकराल अकाल जिम काल धसे । जणवीहै सुखदोइ जीहलसे । विषहर आसी विषके मदसे । तुज चरण कमल चित जासबसे ॥ ३ ॥
गिरि गहन सघन वन जन न मिले । बहु सावज साच पिसाच छले । घस वस दावानल प्रबल वले । प्रभु समरण सकट तेह टले ॥ ४ ॥
दरियो भरियो जन देखि डरे । फिर गिर सम मगर अनेक फिरे । उछले जल जोर जिहाज भरे । तो विनकुण तेहथी सहाय करे ॥ ५ ॥
सूरा पूरा खग हाथ गहै । कायर वायु जिम धूज रहै ॥ धडके धड रुधिर प्रवाह वहै ॥ प्रभु पउतिहांजइलउल है ॥ ६ ॥
परतख गिरिपर इ उचपणे । ए रावण जिम घर इंद्र तणे । कुंजर मद झर बहु लोक हणै । तुज सेवक गज अज जेम गिणे ॥ ७ ॥
जाहर नाहर जे निज जपे । आपड चापड गयगड कंपे । नख-

॥ छप्पय ॥

वरस सहस्र छदमस्थ । रह्या जिन त्रिभुवन भूषण । मास फाल्गुन असित पक्ष ग्यारस निरदूषन । प्रात समय महाराज सकड सुख नाम उग्रानही । निगोध वृक्ष तल नाथ धर्यो जब तूरिय ध्यानहि । अट्ट भक्त तपनें विषे उपनो पचम ग्यान । अब परिवार वखान हू । सुनो मन निश्चल आन ॥ १ ॥ चऊरासी गणसार चउरासी गणधर कहिये । मुनि चउरासि हजार । लाख तिहूं समणी लहिये। श्रेयांश प्रमुख तीन लाख अरु पाच हजारहि । श्रावक उत्तम जान व्रत द्वादश शुध धारही । सुभद्रा आदे करी श्रावकणी परिवार । पांच लाख अरु उपरै कही चोपन हजार ॥ २ ॥ संहस चार शत सात पचास मुनि पुरवधारी । अवधिग्यानी नव सहस्र केवली वीस हजारी । वैक्रयी वीस हजार शतही पट उपर जानो । विपुल मति-वारे हजार सार्द्ध शत पटहि प्रमाणो । एताही वादी मुनिए अनुत्तरो पपाती जान । संहस बावीस पट् सत भला प्रणमूं गुण मणि खांण ॥३॥

चंद्रायणो

माघ मास पक्ष असित तिथी तेंरस दिनें । गिर अष्टापद शिखर स्वाम पद्मासने ॥ पट् उपवास सथार प्रातःसमय सही ॥ अरिहां ॥ दश सहस्र मुनी साथ नाथ शिव गति लही ॥ ४ ॥

॥ अथ घनकी चाल ॥

जपो तुम नाभिनद भगवान । नाम तें होय जावें कल्याण । प्रभूकी महिमा है असमान ॥ धरो तुम उजल चित्तसे ध्यान । जिनुसे खुलेगी सुखकी खान । वचन एक रलीजे परमाण । प्रभूकू एक चित्त ध्यावें। आपदा जडहीनें जावैगी ॥ १ ॥ जपो तुम मरुदेव्याके नद । जिनुमें

होय जावे आनंद। जाय टरे कर्मनके सब फंद। प्रगट होय जावे सुखके कंद। छोरवो जूठा ए जग धंध। खुलेगी निज गुणकी मकरद सीख ए मेरी सुन लीजे। जिनंदका जाप सदा कीजेजी ॥ २॥ नगीनें नगर बीच आया। वसें जिहां जिन धर्मी भायां॥ अक्षय त्रुती-याका दिन पाया। जवि ए जिनके गुण गाया। सुनतही ज्ञान हुल-साया। मंदमती मनमें झुर जाया। चरित्र ए रेखराजजी गावे। प्रभु गुण भव्यने मन भावेजी॥ ३॥

इति अक्षय तृतीया व्याख्यान.

॥ २ छन्द ॥

श्री ऋषभ जिणेसर जगत सिरे। सुरनर सब भर तुं पण अरे हित सागर नागर विघ्न हरे। इम दास सदा तुज आस धरे॥ १॥
अही अग्नि उदक भय हेल हटे। अरि करि हरि रोग निरोग मिटे। जिण जाप किया संताप कटे। तिण ऋषभ २ बहु लोक रटे॥ २॥
विकराल अकाल जिम काल धसे। जणवीहे सुखदोइ जीहलसे। विषहर आसी विषके मडसे। तुज चरण कमल चित जासवसे॥ ३॥
गिरि गहन सघन वन जन न मिले। बहु सावज साच पिसाच छले। धस वस दावानल प्रबल बले। प्रभु समरण संकट तेह टले॥ ४॥
दरियो भरियो जन देखि डरे। फिर गिर सम मगर अनेक फिरे। उछले जल जोर जिहाज भरे। तो विन कुण तेहथी सहाय करे॥ ५॥
सूरा पूरा खग हाथ गहे। कायर वायु जिम धूज रहे॥ धड्के धड रुधिर प्रवाह वहे॥ प्रभु पछतिहांजइलछल है॥ ६॥
परतख गिरिपर इं उचपणे। ए रावण जिम घर इंद्र तणे। कुंजर मद झर बहु लोक हणे। तुज सेवक गज अज जेम गिणे॥ ७॥
जाहर नाहर जे निज जपे। आपद चापद गयगड कंपे। नख-

भर मोती घर २ भंजे । जनते जिनते मृगपति गंजे ॥ ८ ॥ वध पडीयो रोह रुडीयो छूटे । वेडी पिण घण नेडी तूटे । हय कडियां पाय जडीयां छूटे । प्रभु नाम लीया लील्या लूंटे ॥ ९ ॥ जष्ठु अंगज लोदर सगनमें । प्रतिकूल सदा सिर शूल खमे । अति कुष्ट गती अति दुष्ट समे । प्रभु व्याधि उपाधि असाधि गमे ॥ १० ॥ धन धान्य निधान घणी संपे । चतुरंग चमू घर २ चंपे केविसुणधाकहीये कंपे । जो नेह धरी निज जन जपे ॥ ११ ॥ वहु चाकर वृंद चलै केडै । नरपति पिण अति हित कर तेडै । जिणरै समरथ साहिव-नेडै । तीन भवनमें तस कुण छेडै ॥ १२ ॥ गज गामिनी भामिनी भाग भरी । अति रूप निरूपम जानपरी । जिण देव खरी मुज सेव-करी । तिणरे घर घरणी सतीसखरी ॥ १३ ॥ विलसे जग भोग जिसा भावे । सुखफद दोगंधक सुरदावे । परभव पिण अति श्रुद्ध गति पावे । धन नाभ नृपत सुत जे ध्यावे ॥ १४ ॥ तुज सुजस करी त्रिभुवन छायो । तूं आगम निगम आगम गायो । पट् दरसण पिण तूंहिज ध्यायो । इम जान सुजान शरण आयो ॥ १५ ॥ अति दीन दयाल कृपाल इसो नहि नायक लायक राज जिसो । जिनराज अवरसूं काज किसो । निरखो मुनि जर भर दास दीसो ॥ १६ ॥ जिणसे सतणे फण सहस्र सही । फण २ वलि दोय २ जीहलही । गुणं छेहन पावे तेह अही मुख एक सक्र मे केम कही ॥ १७ ॥ गु-छराती लूका गछ घणी । सिवपाट दिपे सिधराज गणी । तसु सीस कृपाल ये हित भणी । किर्ति ए इम मुनि कृष्ण भणी ॥ १८ ॥

३ [अथ खंदक पट्त्रिशो—राग चंद्रगुप्त राजा सुनो.]

सावत्थी नगरी वसे । कात्यायनी खंदक नामरे । परिव्राजक पंडित महा । ज्ञाता मृदु परिणामरे ॥ १ ॥ मन वसीयोजी महावीरमें ॥ टेर ॥ वेसालिक श्रावक भलो, वसे पिंगल निर्ग्रंथरे, पूछे आय खदक भणी । लोक सांत अनतरे ॥ म० ॥ २ ॥ जीव सिद्धि अरु सिद्धजी, सांत अनत वतायरे, हानि वृद्धि संसारनी, कवन मरनथी थायरे ॥ म० ॥ ३ ॥ पाचही प्रश्न पूछता, शकित व खितहोयरे, पुनः पुनः पिंगल पूछीयो । नावै उत्तर कोयरे ॥ म० ॥ ४ ॥ मून करी जब मुनी गयो । खदक मन दिलगीररे, इतरे निसुणि पधारीया कयगलाये वीररे ॥ म० ॥ ५ ॥ जाता जन देखी हर्पीयो । फलिया वछित आजरे । भ्रमर तिमिर हरवारवी । पूछूं जई जिनराजरे ॥ म० ॥ ६ ॥ वदन नमन विधी करी । प्रश्न अर्थ सहेतुरे । चिंतवी आश्रम जइ लीया उपकर्ण चवदे समेतुरे ॥ म० ॥ ७ ॥ आवै अति उमंगसू । जिन गोयमनें भाखेरे । पूर्व सगति ताहरो । मिलसी धुर अवि लाखेरे ॥ म० ॥ ८ ॥ पूछें कुण किन कारणें । मिलमी किति यक वाररे । जिन कहे खदक आवीयो। दाख्यो सर्व विचाररे ॥ म० ॥ ॥ ९ ॥ अत्रैव मिलसी जिन कहै । पूछे वलीगणधाररे । प्रभु सजम ग्रहि याके नही । हताहुसी अणगाररे ॥ म० ॥ १० ॥ इतरे निकटज आवीयो । गोतम सनमुख जायरे । द्रव्य निक्षेपस रागथी । वाजिन ज्ञान दिपायरे ॥ म० ॥ ११ ॥ खदक भलाही तू आवियो । वचन सराग प्रकाशरे । पिंगल प्रसन पूछियां ।नाया आयो त्रिमासरे ॥ म० ॥ ॥ १२ ॥ साची छैकए वारता हता सत्य निसदेहरे । किम जाणी मुज मन तणी । कहै वीर वचनथी ए हरे ॥ म० ॥ १३ ॥ धरमा चारज माहरा, सववेता जगनाथरे। कहै खदकतप्र वदवा । चालु तां-

हरी सांथरे ॥ म० ॥ १४ ॥ जथा सुख जेजकरोमती । आवे गोसम संगरे । देख्यो ढिंदारज वीरनो उपज्यो उत्कृष्ट उमंगरे ॥ म० ॥ ॥ १५ ॥ वियटभोजी वीरजी । अविभूषित सोभायरे शुभ पुदगल सहु लोकनां । लागा जिनतन आयरे ॥ म० ॥ १६ ॥ दोष रहित सब गुण भऱ्या । समता सिंधु जिनेंदरे दोपसिंधु अन्य देव है । कहां खद्योत दिनेंदरे ॥ म० ॥ १७ ॥ विधिपूर्वक वंदन करी । कथी जिन गोयम जेमरे । मनगत भाव बतावीयो । उपज्यो पूरण पेमरे ॥ म० ॥ १८ ॥ अमृत ध्वनि जिन दाखवे । प्रश्नोत्तर विस्ताररे । लोक जीव सिद्धि सिद्धजी । द्रव्यादि चतुः प्रकाररे ॥ म० ॥ १९ ॥ द्रव्य क्षेत्रथी सांत है काल भावथी है अनंतरे । बाल पंडित द्विभेदथीं । मरण कहें भगवंतरे ॥ म० ॥ २० ॥ चलितादि द्वादश बालना । मरनथीं भ्रमण संसाररे । पंडित द्विभेदें करी । जीव लहे भव पाररे ॥ म० ॥ २१ ॥ एम सुणी प्रतिबुद्धियो । कहै दाखो जिन धर्मरे । निसुणीं मन वयरागीयो । मिट गयो मिथ्या भ्रमरे ॥ म० ॥ २२ ॥ संजम ग्रही शुद्ध भावसूं । भणिया अंग इग्याररे । प्रतिमा गुणरत्न संवछरे । तप कीयो विविध प्रकाररे ॥ म० ॥ २३ ॥ थांकी शक्ती शरीरनी । धन्ना जेम शरीररे । आज्ञा लही अनसन कीयो । वेभारगिर परधीररे ॥ म० ॥ २४ ॥ दीक्षा द्वादश वर्षकी । अनसन मास प्रमाणरे । उत्कृष्टायु स्वर्ग बारमे चवि विदेहे निरवानरे ॥ म० ॥ २५ ॥ पचमांग दूजा शतकमे । आदि उद्देशानुसाररे । ढाल करी खाचरो दमें । खदकनो अधिकाररे ॥ म० ॥ २६ ॥ कलश ॥ पूज्य श्री कनीरामजीको चरणकंज सेवक सदा । कहै कीर्तन खंदक मुनिकी । सुनतही लहे सपदा ॥ वेद भू अंक शिवही सवत् असित नवमी असाढमें वार मगल करन मंगल सुनत श्रोता मन गमे ॥ १ ॥

इति खदक पट्त्रिंशी.

१—वैभराज.

४ (अथ फाटका निषेध.)

॥ दोहा ॥

अहो एह कलियुग विषै, तज्या सकल व्यापार ॥
मेहलीला मरु फाटको, इनहीको अधिकार ॥ १ ॥
सधन थकी निरधन हुवे, स्ववस पर आधीन ॥
सन्नीपात किसी ठगा, भये दीन परवीन ॥ २ ॥

(ढाल एक)

सुणियोरे चातू० ए देशी ॥ सुणियो नरस्याणा मतिय करो तुम फाटका, घरकार होय न घाटका । देवे छे सतगुरु चाटका ॥ सु०॥ मत पिवै जहेर भर वाटका, ख्याल बनाहै जाटका ॥ सु० ॥ टेर. ॥ आरत ध्यान रहै नित मनमें, धर्म ध्यान नहि सूजे, जोको मिलै अलिया गलियामे, प्रथम भावकी बूजेरे ॥ सु० १ ॥ अब कै भैया तेजी भारी सुण जीव होय गयो राजी, घरमे आय कहै सुन प्यारी। करो रसोई ताजीरे ॥ सु० २ ॥ कचनमई करायू बाजू करधू पीरी जर्द, भूषण सर्व भातका भारी । तो जाणी ज्यो मर्दरे ॥ सु. ॥ ॥ ३ ॥ भागा घोटे तार जमावे, बाजारा विच जावे, इतराहीमे मंदीहाली, छाने डुसक्या खावेरे ॥ सु० ४ ॥ देख कामिनी बोले कंता । दीसै वदन उदासी । बोल्यो सटक खोलदे गेणा, नही तो खाऊ फासीरे ॥ सु. ५ ॥ बोली त्रिया पहला मे वरज्या, चगो नहि ए चालो, गहणो सर्व सामूका कर को, इणकी वाट न नालोरे॥ सु० ॥ ६ ॥ नैन लाल कर बोल्यो त्रडकी, खोले छे के नाई, थारा बापको नही छे गहणो, तुजकठासू ल्याइरे ॥ सु० ७॥ जो मुजसे तू करै जिंदगी, तो कूवे पड जाऊ. हाथ जोड बोल्यो सुण प्यारी,

हरी सांथरे ॥ म० ॥ १४ ॥ जथा सुख जेजकरोमती । आवै गोतम संगरे । देख्यो दिदारज वीरनो उपज्यो उत्कृष्ट उमंगरे ॥ म० ॥ ॥ १५ ॥ वियटभोजी वीरजी । अविभूषित सोभायरे शुभ पुदगल सहु लोकनो । लागा जिनतन आयरे ॥ म० ॥ १६ ॥ दोष रहित सब गुण भन्या । समता सिंधु जिनेंदरे दोषसिंधु अन्य देव है । कहां खद्योत दिनेंदरे ॥ म० ॥ १७ ॥ विधिपूर्वक वंदन करी । कथी जिन गोयम जेमरे । मनगत भाव बतावीयो । उपज्यो पूरण पेमरे ॥ म० ॥ १८ ॥ अमृत ध्वनि जिन दाखवै । प्रश्नोत्तर विस्ताररे । लोक जीव सिद्धि सिद्धजी । द्रव्यादि चतुः प्रकाररे ॥ म० ॥ १९ ॥ द्रव्य क्षेत्रथी सात है काल भावथी है अनंतरे । बाल पंडित द्विभेदथी । मरण कहें भगवंतरे ॥ म० ॥ २० ॥ चलितादि द्वादश बालना । मरनथी भ्रमण संसाररे। पंडित द्विभेदें करी जीव लहे भव पाररे॥ म० ॥ २१ ॥ एम सुणी मतिबुद्धियो । ...खो जिन धर्मरे । निसुणी मन वयरागीयो । मिट गयो मिथ्या ... ॥ म० ॥ २२ ॥ संजम ग्रही शुद्ध भावसू । भणिया अग... प्रतिमा गुणरत्न संवछरे । तप कीयो विविध प्रकाररे ॥ म० ... थांकी शक्ती शरीरनी । धन्ना जेम शरीररे । आज्ञा लही ... यो । वेभारगिर परधीररे ॥ म० ॥ २४ ॥ दीक्षा ...

अनसन मास ... स्वर्ग बारमे चवि

...नरे ॥ म० ॥ २५ ॥ ... शतकमे । आदि

ढाल करी खाचरो ... अधिकाररे ॥ म० ॥

...ख ॥ पूज्य श्री क... ...न सेवक सदा ।

खंदक मुनिकी । ... भू अंक शिवही

नवमी असाढमें वार ... श्रोता मन

१—देखराज.

छप्पन दिसा कुमारिका, नमी मात उमंग ।
नृत्य गीत करवा भणी, आणि हिये उमंग ॥२॥

॥ढाल १ ली–राग चलत.॥

ताल मृदंग रंग चंग वाजे, मादल भेरीनै वंसरी, वीणा ढ
ढोल वाजे, धऊ २ करत धऊसरि॥१॥ ढकण ताल कंसाल तली
कास वाजित्र कीकरी ॥ संख घंटा वंश वाजे ॥ खुरमुहीनें पुरपु
॥ २ ॥ रणसिंघो रणतूर वाजे ॥ मेरु कड उडयरी ॥ सुरणाइ सु
नाद वाजे ॥ मजरीनें खजरी ॥ ३ ॥ आरवी अरबाण वाजे ॥ र
वाजा झल्लरी ॥ सतारो ने तूंन वीणा ॥ तदुरो हुलहालरी ॥ ४
सारंगी रबाब वाजे ॥ खभायचोनें रणतुरी॥ नोबत गाजा घोर वाजे
गानानो अति सुर करी ॥ ५ ॥ झणणथी झणकार हुवे ॥ तण
वीणा ततरी ॥ वाजानें झणकार माहे ॥ मधूर मधुर सुर वसरी ॥६

दोहा

गीत विनोद करे घणा, रूप अनूपम सार ॥
अचरिज पामें देखतां, नाटिकना झिणकार ॥१॥

॥ ढाल–तेहिज ॥

फकैक सकत, खखैख भक्ति गगै घूंमर देतरी ॥ घघै वाज
घोर वाजै, फिर २ फेरी लेतरी ॥१॥ ननै नाचत कुमर कुमरी, चं
अति चू पेकरी ॥ जजे अतिही जोत दीपै, सोभे अति रूपे क
॥२॥ जजे अति जणकार करती, ननै नाटिक सुंदरी, टटै टपं
ठिमक ठिमके, ठठे ठाव पुरदरी ॥३॥ डडे डंबर अति भारी, ढं
ढणकंत झामरी, रणणा टरणकार करनी, ततां थइ २ करी ॥ ४

वेगो एह छोडाऊंरे ॥ सु० ८ ॥ ज्यूं त्यूं छली चालियो छानै, अव वोहरापें आवे, दूणो द्रव्य व्याज अरु दूणो, कांटो लार लगावेरे ॥ सु० ९ ॥ इते मुणी वन्द आव्यो अवधू, नेन पलक नही खोले, फरक अंक उनसे नहि छाना, जो कुछ वचन ज वोलेरे ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ लटका कर कर करे डंडोता, जो कुछ वात वतावै, जावै वजार पेडा ले आवे, गांजा चडस पिलावेरे ॥ सु० ११ ॥ पलक खोल कहै सुनरे वच्चा । माई शक्ति हुकुम सुनाया, इतना फरक धर कमती रख्खे. फिरतो अलख जगायारे ॥ सु० १२ ॥ जाजा कही सिख जव दीनी, किनकूं नही सुनाटो, आय सदन धन सव चूचायो, वावो कर गयो वावोरे ॥ सु० १३ ॥ मुल्ला फकीर ज्योतिषी जिंदा, भाव भैरूंका गावे, अकलवध सवहीकू धोखे, फिर दुलिद्र जोग नहि जावैरे ॥ सु० १४ ॥ इनभव एह फजीति होवे, परभवमें दुख पावे, तो पिण भोले नर नहि समजे, अंदर ज्ञान न आवेरे ॥ सु० १५ ॥ साल वयाल उगणीसेकाती, चवदश चोमासि चारु, नवेनगर हुलकरमि हितकूं, वदी ढाल एवारूरे ॥ सु० १६ ॥ रेखराजजी कहै सदा सुख चावो, तो इणनें छिटकावो, लाभ ज्ञान करमा अनुसारे, धर्म ध्यान लय ल्यावोरे ॥ सु० १७ ॥

इति फाटका निषेध.



५ (अथ दीपमालिकापर महावीर स्वामिनो जन्म कल्याण.)

दोहा.

कुंडनपुरवर अवतर्या, सिद्धारथ महाराय ॥
रत्नकूख तसलासती, प्रगट हूवा जिन आय ॥ १ ॥

छपन दिसा कुमारिका, नमी मात उमग ।
नृत्य गीत करवा भणी, आणि हिये उमंग ॥२॥

॥ढाल १ ली-राग चलत.॥

ताल मृदग रग चग वाजे, मादल भेरीनै वसरी, वीणा तूणा ढोल वाजे, थऊ २ करत थऊसरि॥१॥ ढकण ताल कसाल तलीया, काख वाजित्र कीकरी ॥ संख घटा वश वाजे ॥ खुरमुहीनें पुरपुरी ॥ २ ॥ रणसिंघो रणतुर वाजे ॥ भेरु कड उडवरी ॥ सुरणाइ सुरनाद वाजे ॥ मजरीनें खजरी ॥ ३ ॥आरत्री अरत्राण वाजे ॥ रणक वाजा झल्लरी ॥ सतारो ने तुच वीगा ॥ तदुरो हुलहालरी ॥ ४ ॥ सारगी रवात्र वाजे ॥ खभायचीनें रणहुरी॥ नोवत वाजा घोर वाजे ॥ वाजानो अति सुर करी ॥ ५ ॥ झणणथी झणकार हुवे ॥ तणण वीणा ततरी ॥ वाजानें झणकार माहे ॥ मधूर मधुर सुर वसरी ॥६॥

दोहा.

गीत विनोद करे घणा, रूप अनूपम सार ॥
अचरिज पामें देखतां, नाटिकना झिणकार ॥१॥

॥ ढाल-तेहिज. ॥

फकैक सकत, खखैख मकित गगै घूमर देतरी ॥ थयै वाजा घोर वाजे, फिर २ फेरी लेतरी॥१॥ नने नाचत कुमर कुमरी, चचे अति चूं फेकरी ॥ जजे अतिही जोत दीपै, सोमें अति रूपे करी ॥२॥ जजे अति जणकार करवी, नने नाटिक सुदरी, टटै टपके टिमक ठिमके, ठठे ठाव पुरदरी ॥३॥ डडे डंबर अति भारी, ढढे ढमकत धामरी, रणणा टरणकार करनी, तता थइ २ कारी ॥४॥

ायेथिरमू नाच करतां, ढदे ताली दे करी॥ धधे धरती हेतधरमू, नने
करी लेतरी ॥५॥ पपे पल २ फके फीर, बवे वाहस वारती ममे
ोटी राग कर २, कोयल शब्द सुणावती ॥ ६॥ जजे जपती नाम
ाभुको, ररे रामतभैरमे ॥ लले ल्यावे रूप नव २ देख मन सहू के
ामे ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

धन तसलादे तो ॥ भगी हे, धन कुक्ष घन अवतारो ॥ धन
ूप तुमारी ॥ देवंगणा मिल इम कहे हैं ॥ गांवे मंगल दो चारो
।धन० ॥१॥ पूर्व पुण्य कीजा घणा है ॥ तैं जायो तिलोकीरो नाथ
। ध० ॥ रतन कुखतें ऊर धर्यो है ॥ जग तारग जगनाथ॥ ध०॥
२॥ देइ प्रदक्षिणा भावसुं हे॥ ढेव्यां वैठी आगणमायो॥ ध०॥ मधुर
स्वर गावती है ॥ वले ढोले सीतल वायो ॥ ध० ॥ ३॥ महा
ुण्यवत तूं सही है । घनकुंप रत्नारी सांग ॥ ध० ॥ दरसण दीठो
ाहरो हे ॥ थाये कोड कल्याण हे ॥ ध० ॥४॥ धन माता मोटी
ाती है ॥ पुत्रत्रार्थ एह ॥ ध० ॥ एक सहस्र आठ लक्षण धणो
॥ वालक सोवन वरणी देह ॥ ध० ॥५॥

॥ ढाल ३ री–राग अंबलारी वाडी बनडी ॥

कीरत वधारी हे माता जगतमें भारी ॥ सुरत थारी हे वारी मैं
ालिहारी हे माता ॥ तूं पुण्यवंत मोटी ॥ १ ॥ पुत्र रतन जायो जग
ास पायो ॥ देव इंद्राणी मिल मगल गायो हे माता ॥ तु० ॥ २॥
ाताने भावे जेहवा मंगल गावे ॥ हर्ष वधावे इंद्र तुम गुण गावे हे
ाता ॥ तु० ॥ ३ ॥ मधुरीतो २ देव्या बोले छे वाणी ॥ राजा
सिद्धारथ घर, तिसलादे राणी हे माता ॥ तू० ॥ ४॥ प्रभुजीनी
ाता हे, रयण कुख धारिणी ॥ वैकुंठ वासो ताहरी मोटी करणी हे
ाता ॥ तूं० ॥५॥

॥ ढाल ४ थी—राग तेल चढी मृगानेणी हो. ॥

दान सुपात्र दीधो हे ॥ तिसलादे राणी ॥ सेव्या केइसा घरसाल जीवदया दिल आणी हे ॥ ति० ॥ तो घर मंगल माल ॥ १ ॥ सील सदा ते समगत धारी हो ॥ ति० ॥ कीधा केइ व्रत रसाल ॥ तप्पतप्पा केइरूडा हे ॥ ति० ॥ तोडया केइ कर्मना जाल ॥ २ ॥ भाव भगत सतगुरनी हे ॥ ति० ॥ सुणिया केइ ज्ञान रसाल ॥ व्रत बारे तें पाल्या हे ॥ गति० ॥ अतिचार सहु टाल ॥ ३ ॥ इद्र आवीने गुण गावे हे ॥ ति० ॥ जोडी चले दोनुही हाथ ॥ रतन कूख घर मोटी हे ॥ ति० ॥ जन्म्या श्री जगनाथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५ वी—राग वाडी तो खुली ला० ॥

हिवे माता तो पोढे पारंग महिल मेंहे ॥ सेज्या तो अति सुख माल हे माता ॥ पुण्यवंत जस जग ताहिरो ॥ माता जायो तें पुण्यवंत बाल हे माता ॥ पुत्र रतन तें जनमियो ॥ १ ॥ सुख करता त्रिहु लोकमें, पुण्य पोर सौ जाण हे माता ॥ सर्वे लक्षण कर सोभतो, सपनो गर्भमे आण हे ॥ माता पु० २ ॥ माता अवर नाही काइ तो जिसी ॥ र्तीण स्वर्ग मृत्यु पाताल हे माता ॥ इंद्र नरेंद्र सहुथी वडो ॥ ए छे नाथ त्रिलोकी बाल हे माता ॥ पु० ३ ॥ मुक्ति मारग देखाडसी ॥ दुखियाने सुख आधार हे माता ॥ रोग ने सोग निवारिसी ॥ भव देसी पार उतार हे ॥ माता ॥ पु० ४ ॥ माता धीरज मोटी ताहरी ॥ आयो धीरज पुरुष अवतार हे० ॥ प्रभुजी तूठा आप समा करे ॥ मोटा सिवपुरना दातार हे० ॥ पु० ५ ॥

॥ ढाल ६–राग काफी ॥

सोहमसुरपतमन इम चिंतवे ॥ हिरण गमेखी बुलाऊंरे ॥ प्रभुजीरो जन्म भयो हे ॥ जिन मुख निरखण जाऊंरे ॥ १ ॥ जांणकि मांण चणाय मनोहर ॥ घंट सुघंट बजावुंरे ॥ प्र० २ ॥ संपत सहित निरखण माता मुख ॥ चरणे सीस नमाउंरे ॥ प्र० ३ ॥ अपछर सर्व लगी एक ओले ॥ निरख हरख सुख पाऊं रे ॥ प्र० ४ ॥ ७

॥ ढाल ७–राग दाइना गीतनीः ॥

पछि वधो घर पास ॥ माता अंकथी लियेरेहां ॥ पंच रूप कर संच ॥ सिखर पर आविया हां ॥ १ ॥ मिलिया चोसट इंद्र ॥ अति उछव करे हा ॥ अठ सहस चोसट कलस जलसुं ॥ भरेरेहां ॥ २ ॥ ढाले श्री जिन सीस, नाटक नव २ रमेरेहां ॥ कर २ राग छतिस ॥ सहूने मन गमेरेहा ॥ ३ ॥ शक्र वृषभ कर रूप ॥ उछव करै मन रलीरेहां ॥ लाया जननी पास ॥ आस पूगी भलीरेहां ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥

वस्त्र जोडो कुंडल जुगल । कोड वचिस सोवन ॥
हुकम थकी उसके अमर । भरै भंडार रतन ॥ १ ॥
नंदीश्वर सगला अमर । मोछव करै अपार ॥
दीदी वधाइ नृप भणी । घर २ मगलाचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ८–राग हिरणी जव चरे ॥

धन सिद्धारथ राजवी ॥ ललना ॥ ललाहो धन तसलादेजी नार ॥ जिनवर जनमिया ॥ ललना ॥ ओछव मोछव करे घणा ॥ ॥ ललना ॥ बोलाव्यो सहु परिवार ॥ जिन ॥ १ ॥ करे दसोटण भावसू ॥ ललना ॥ भोजन विविध प्रकारे ॥ जिनवर

अथ दसोटण भाषा.

मांडयो उत्तंग तोरण माडवो॥तेतो नीपजाव्यो तुरत नवौ॥वली बैसिवानैा आंगणो ॥ तेतो नील रतन तणैा॥ सगासणीजा घरें आया॥ सिद्धार्थराजानें मन भाया॥ सखरा मांड्या आसण॥ बैसता किसी विमासण॥ आगे मूकी सोनानी आडणी॥ ते किम जायै छाडणी॥ ऊपरि सोनाना थाल॥ अत्यंत घणुं विसाल॥ बिचमे चउसटि वाटकी। लिगार नही जाति काटकी॥ गंगोदक दीधा॥ थालक चोलाने हाथ पवित्र कीधा॥ सगली पांती बैठी॥ तिसरे परुसण हारी पैठी॥ ते केहवी छे॥ सोले श्रृंगार सज्या॥ बीजा काम तज्या॥ हाथनी रूडी॥ विहुं बाहे खलके चूडी॥ लघु लाघवी कला॥ मन कीधा मोकला॥ चित्तनी उदार॥ अति घणुं दातार॥ दौलतनी हाथ॥ परमेसर देजे तेहनो साथ॥ घसमसती आवी॥ सगलानें मन भावी॥पहिली फलहली परुसें॥ सगला नाही याईसे॥ पाका आंबानी कातली॥ते बूरा खांडसूं भरी वली पातली॥ पाका केला॥ ते वली खांडसु कीधा भेला॥ सरवरा करणा॥ ते वली पीला वरणा॥ नीला नारंगा॥ रनै दीसता सुरंगा॥ नी कोयली रायण॥ परुसी भायणि॥ दाडिम कुली॥खांता पूजैरली॥ निमजानें अखोड॥ खाता पूजै कोड॥ दाख नें बिदाम॥ केई कागदी अनेकेईस्याम॥ सीलेमी खारक ने खिजूर॥ ते पिण परुस्या भरपूर॥ नालेरनी गरी॥ ते मालवी गुलसु भरी॥ नींबु खाटा नें मीठा॥ एहवा कदे न दीठा॥चारोलीनें पिसता लोक जीमें हसता॥ वली सेलडीने सदाफल॥ ते पिण परुस्या परिघल। हिवै पकवान आणै॥ ते केहवा वखाणै॥ सतपुडा खाजा॥ तुरत ना कीधा ताजा॥ सहलानें साज्या॥ मोटा जाणे प्रासादना छाजा॥ पछै

॥ ढाल ६-राग काफी ॥

सोहमसुरपतमन इम चिंतवे ॥ हिरण गमेखी बुलाऊंरे ॥ प्रभुजीरो जन्म भयो हे ॥ जिन मुख निरखण ज ाऊंरे ॥ १ ॥ जांणविमांण वणाय मनोहर ॥ घंट सुघंट बजावुंरे ॥ प्र० २ ॥ संपत सहित निरखण माता मुख ॥ चरणे सीस नमाउंरे ॥ प्र० ३ ॥ अपछर सर्व लगी एक ओले ॥ निरख हरख सुख पाऊं रे ॥ प्र० ४ ॥ छ

॥ ढाल ७-राग दाइना गीतनीः ॥

पहि वधो घर पास ॥ माता अंकथी लियेरेहां ॥ पच रूप कर संच ॥ सिखर पर आविया हां ॥ १ ॥ मिलिया चोसट इंद ॥ अति उछव करे हां ॥ अठ सहस चोसट कलस जलसूं ॥ भरेरेहां ॥ २ ॥ ढाले श्री जिन सीस, नाटक नव २ रमेरेहां ॥ कर २ राग छतिस ॥ सहूने मन गमेरेहां ॥ ३ ॥ शक्र वृषभ कर रूप ॥ उछव करै मन रलीरेहां ॥ लाया जननी पास ॥ आस पूगी भलीरेहा ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥

वस्त्र जोडो कुंडल जुगल । कोड बत्तिस सोवन ॥
हुकम थकी उसके अमर । भरे भंडार रतन ॥ १ ॥
नंदीश्वर सगला अमर । मोछव करै अपार ॥
दीदी वधाइ नृप भणी । घर २ मंगलाचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ८-राग हिरणी जव चरे ॥

धन सिद्धारथ राजवी ॥ ललना ॥ ललाहो धन तसलादेजी नार ॥ जिनवर जनमिया ॥ ललना ॥ ओछव मोछव करे घणा ॥ ॥ ललना ॥ बोलाव्यो सहु परिवार ॥ जिन ॥ १ ॥ करे दसोटण भावसूं ॥ ललना ॥ भोजन विविध प्रकारे ॥ जिनवर

अथ दसोटण भाषा.

मांड्यो उत्तग तोरण मांडवो ॥ तेतो नीपजाव्यो तुरत नवौ ॥ वली बैसिवानै आंगणो ॥ तेतो नील रतन तणो ॥ सगासणीजा घरे आया ॥ सिद्धार्थराजानें मन भाया ॥ सखरा मांड्या आसण ॥ बैसता किसी विमासण ॥ आगे मूकी सोनानी आडणी ॥ ते किम जाये छांडणी ॥ ऊपरि सोनाना थाल ॥ अत्यंत घणुं विसाल ॥ विचमे चउसटि वाटकी । लिगार नही जाति काटकी ॥ गगोदक दीधा ॥ थालक चोलाने हाथ पवित्र कीधा ॥ सगली पाती बैठी ॥ तितरै परुसण हारी पैठी ॥ ते केहवी छे ॥ सोले श्रृंगार सज्या ॥ बीजा काम तज्या ॥ हाथनी रुडी ॥ बिहुं बांहे खलके चूडी ॥ लघु लाघवी कला ॥ मन कीधा मोकला ॥ चित्तनी उदार ॥ अति घणुं दातार ॥ दौलतनी हाथ ॥ परमेसर देजे तेहनो साथ ॥ धसमसती आवी ॥ सगलानें मन भावी ॥ पहिली फलहली परूसें ॥ सगला नाही याहीसे ॥ पाका आंबानी कातली ॥ ते बूरा खाडसूं भरी वली पातली ॥ पाका केला ॥ ते वली खाडसु कीधा भेला ॥ सरवरा करणा ॥ ते वली पीला वरणा ॥ नीला नारंगा ॥ रंगे दीसता सुरगा ॥ नी कोयली गयण ॥ परूसी भायणि ॥ दाडिम कुली ॥ खांतां पूंजेरली ॥ निमजानें अखोड ॥ खाता पूंजे कोड ॥ दाख नें बिदाम ॥ केई कागदी अनेकेईस्याम ॥ सीलेमी खारक ने खिजूर ॥ ते पिण परुस्या भरपूर ॥ नालेरनी गरी ॥ ते मालवी गुलसुं भरी ॥ नींबु खाटा नें मीठा ॥ एहवा कदे न दीठा ॥ चारोली नें पिसता लोक जीमें हसता ॥ वली सेलडीने सदाफल ॥ ते पिण परुस्या परियल । हिवै पकवान आणे ॥ ते केहवा वखाणे ॥ सतपुडा खाजा ॥ तुरत ना कीधा ताजा ॥ सदलानें साज्या ॥ मोटा, जाणे मालादना छाजा ॥ पढै

परूस्या लाड्ड ॥ जाणे नान्हा गाड्ड ॥ कुण २ ते नाम ॥ जीमता म
रहे ठाम ॥ मोतिया लाड्ड ॥ दालिया लाड्ड ॥ सेविया लाड्ड ॥ कीटी
लाड्ड ॥ नांदोलिरा लाड्ड ॥ तिलना लाड्ड ॥ मगरीया लाड्ड ॥ जग
रिया लाड्ड ॥ सिंह केसरीया लाड्ड ॥ वली वीज्या आण्या पकवान
जीमतां वाधइ मुखनोवान ॥ कुण २ जाति ॥ नवी २ भांति ॥ दहि
वडा ॥ गूदवडा ॥ फीणा ॥ अति घणु जीगा ॥ सखरा सोट ॥ माहे
नही खोट ॥ पातली सेव ॥ परूसी रूडी टेव ॥ तरताऊ घेवर ॥ कीधा
घेवर ॥ तल्या गूद ॥ श्वेत जाणे मुचकुंद ॥ कुंडलाकृत जिलेबी ॥ ते
पिण सहुंइलेवी ॥ सीरां नें पूरी ॥ इस न रह अधूरी ॥ मीठो मगद ॥
आओ माल नगद ॥ वले परूसी मुरकी ॥ जीम डिखांवानें फुरकी
॥ वले खांडनो चूरमो ॥ साकरनो चूरमो ॥ पछे आंणी लापसी ॥
नान्हा मोटा सहुको धापसी ॥ पछे परूसी साली ॥ ते जिमीये विचाल ॥
ते कुण २ भेद ॥ सांभलतां उपजै उमेद ॥ सुगधशाली ॥ सुवर्ण-
शाली ॥ धवलीशाली ॥ रातीशाली ॥ पिलीशाली ॥ शुद्ध
शाली ॥ कौमुदीशाली ॥ कमलशाली ॥ कुंकणिशाली ॥ देवजीर-
शाली ॥ राय भोग शाली ॥ वले साठी खोखा ॥ अखंड
चोखा ॥ निवली स्त्री खांड्या ॥ सनली स्त्री उड्या ॥ हलवे हाथ
सोह्या ॥ नखवती स्त्री वीण्या ॥ उत्तम स्त्री उन्या ॥ सुघड स्त्री ओ-
साया ॥ सुजाण स्त्री उतान्या ॥ एहवा अणियाला ॥ सुगध सरस
फरहरा कूर परूस्या ॥ वले परूसी दाली ॥ ते पिण घणु रसाल ॥
कुण २ अने केहवी ॥ मंडोवरा मुंगानी दाली ॥ कावली चिणानी
दाली ॥ गुजराथी तूवरनी दाली ॥ आलरनी दाली ॥ मटरनी दाली ॥
वरणें पीली ॥ परिणामें सीली ॥ वले परूस्या घिरतपरिघल ॥
जे खाधा होइ अतिनिल ॥ पिण ते केहवा ॥ आजना ताव्या घी ॥
अंसना घी ॥ मजीठ वरणा घी ॥ केसर वरणा घी ॥ सूरहा घी ॥

नाकपेय घी ॥ सदा आदेय घी ॥ हिवे पोली परूसी पिण ते केहवी २ ॥ आछी पोली ॥ घीमांहे अबोली ॥ फूंकरी मारी फलसे जाय ॥ इकस पोलिनो एक कवलीयो थाय ॥ हिवे सालणा परूस्या पिण ते केहा २ ॥ नीली छमकाई डोडीना सालणा ॥ टींडोरीना सालणा ॥ टीडसीना सालणा ॥ चीभडाना सा० ॥ कोहलाना सालणा ॥ करेलाना सालणा ॥ कंकोडाना सालणा ॥ करमदाना सालणा ॥ कालिंगडाना सालणा ॥ केलाना सालणा ॥ आपरियाना सालणा ॥ तोरियाना सालणा ॥ मुठ कचराना सालणा ॥ खरबूजा सालणा ॥ मतिराना सालणा ॥ मोगरीना सालणा ॥ नीबुना सालणा ॥ आबोलना सालणा ॥ वालहोलना सालणा ॥ वले चवलानी फलीना सालणा ॥ सरघूनी फलीना सालणा ॥ सांगरीना सालणा ॥ आंमलाना सालणा ॥ कैरना सालणा ॥ फूलना सालणा ॥ फोगना सालणा ॥ नीली मिरिचाना सालणा ॥ नीली पींपरना सालणा ॥ वले रायता सालणा ॥ खाटा सालणा ॥ खारा सालणा ॥ मीठा सालणा ॥ गरया सालणा ॥ तल्या सालणा ॥ वघार्या सालणा ॥ धुगार्या सालणा ॥ छमकाया सालणा ॥ वले परूसी भाजी ॥ ते उपरि सहु कोराजी ॥ ते कुण २ ॥ सरसवनी भाजी ॥ सोवानी भाजी ॥ मूलानी भाजी ॥ वथुवानी भाजी ॥ चिणानी भाजी ॥ चिल्हनी भाजी ॥ चदलेवानी भाजी ॥ मेथीनी भाजी ॥ हिवे वडा आवे ॥ ते सहूने भावे ॥ ते केहवा २ ॥ मिरिचाला वडा ॥ तल्या वडा ॥ कोरा वडा ॥ काजीना वडा ॥ घोल वडा ॥ मूंगाली दालीना वडा ॥ मोठानी दालीना वडा ॥ उडदानी दालीना वडा ॥ घणे घोलेना भीना ॥ घणे तैले सीना ॥ मरीचाना घणा चमतकार ॥ अत्यंत सुकुमार ॥ हाथि लीधां ऊछलै ॥ मुहडै घाल्या सुरत गलै ॥ घणु स्यु स्वर्गना देवता देवी पिण खावानें मन टलै

वले ॥ हिवै पलेव आवे ॥ पिण ते केहवी ॥ चोखानी पलेव ॥ जवारनी पलेव ॥ बाजारीनी पलेव ॥ हलदीया पलेव ॥ पीपरिया पलेव ॥ सूंठिया पलेव ॥ सरडकीया पलेव ॥ हिवै भोजन विचे पीवाना पाणी आवे ॥ ते केहवा ॥ साकरना पाणी ॥ दाखना पाणी ॥ गगाना पाणी ॥ पालर पाणी ॥ कपूर वासत पाणी ॥ एलची वासत पाणी ॥ ताढा हिमवत पाणी ॥ हिवे दही अने दहीना घोल आवे ॥ ते केहवा ॥ गायना दही ॥ भैंसना दही ॥ काढा जाम्या दही ॥ मधुरा दही ॥ वले सखरा सजीराला ॥ सलवणा ॥ जाडा घोल ॥ तेहना भर्या कचोल ॥ चावलासू जिमता थया रगरोल ॥ वले सखरा करवा ॥ भरी आण्या झरवा ॥ माहे घगी राई ॥ जीमता ढील नही कांई ॥ उपरि जीरालूंणनो मतिवास ॥ करणहारी पिण खास ॥ हिवै चलूना पाणी आवे ते केहवा २ ॥ केवडाना पाणी ॥ काथाना पाणी ॥ कपूर वास्या पाणी ॥ पाडल वास्या पाणी ॥ चदन वास्या पाणी ॥ एलची वास्या पाणी ॥ सुगध पाणी ॥ गगोदक पाणी ॥ पालर पाणी ॥ तिणसू चलू कीया ॥ हिवै मूखण दीजे ॥ ते केहवा ॥ वांकडी सोपारीनी फल ॥ चिकल सोपारीनी फल ॥ ते पिण केंसर कपूर वासित ॥ वली तीखा लवग ॥ जावत्री नें जायफल ॥ कोटा डोडा ॥ पाका नागरवेलना पान ॥ घणा आदर ने मान ॥ घणा गीतमें गान ॥ घणा तान नें मान ॥ पछें भलु वस्त्र पहिराया ॥ ते कूण २ ॥ देव दुस्य वस्त्र ॥ रत्न जडित वस्त्र ॥ पाभडी वस्त्र ॥ क्षीरोदक वस्त्र ॥ अटाण वस्त्र ॥ खासा वस्त्र ॥ महमूंदी वस्त्र ॥ अधोतर वस्त्र ॥ नरमा वस्त्र ॥ सेल्हा वस्त्र ॥ कपूरधूली वस्त्र ॥ मलमल वस्त्र ॥ कसबी वस्त्र ॥ जरवाफ वस्त्र ॥ मुखमल वस्त्र ॥ चीणी वस्त्र ॥ बुलबुल चसमा वस्त्र ॥ मसंजर वस्त्र ॥ कथीपा वस्त्र ॥ पाटू वस्त्र ॥ टसरिया वस्त्र ॥ रेसिणिया वस्त्र ॥ भैरव वस्त्र ॥ नारीकुंजर वस्त्र ॥ श्री साप वस्त्र ॥ पीतांबर प्रमुख,

वस्त्र दीया ॥ पचरगा वागा पहिराया ॥ वलि काशमीरी केसरना छांटणा कीधा, वलि भला विलेपन सुगंध लगाया ॥ वळे बावना चंदनना विलेपन कीधा ॥ अरगजा लगाया ॥ वली सखरा चोवा ॥ चंपेल । केवडेल । मोगरेल । जवादिपोईसडा लगाडया ॥ वळे जाई । जुई । कुंद । मचकुंद । केवडो । चपो । मरवो । मोगरो । दमणो । केतकी । मालती । प्रमुखना फूल पहिराया, पछे वली मुगट । तिलक । कुंडल । हारदोर । वीरवलय । अगद वहिरखा । नवग्रही । मूंदडी । कदोरा । हाथना सांकला । पगना सांकला प्रमुख पहिराया । इत्यादि ॥

॥ अथाग्रे ढाल तेहिज. ॥

जीम्या सहु जन रगसूं ॥ ललना ॥ ललाहो असणादिक आहार कें ॥ जि० २ ॥ वस्त्रभूषन सगने देई ॥ ललना ॥ ललाहो दीधी सीख जीवारके ॥ जिन० ॥ चिरजीव रहो नाथजी ॥ ललना ॥ ललाहो दे आसीसनरनारके ॥ जिन० ॥ ३ ॥ जोवन वय जुगतसूं ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ परण्या पदमण नार ॥ जिन० ॥ सुख विलस्या ससारना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ सर्व पुण्य प्रकार ॥ जिन० ॥४॥ कर अणसण आराधना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ मातापिता कीयो काल ॥ जिन० ॥ बारमें कल्पे ऊपना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ वरत्या मगलमाला । जिन० ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ९ मी—राग जोगणीकी जोगमाया० ॥

हांजी प्रभु लोकांतकसुर आवीयो ॥ हाजी प्र० ॥ एम करै उपदेश ॥ महावीरजीकी सीखावणी अति शोभती ॥ हां० ॥ समगत जोग प्रकासीये ॥ हां० ॥ मेटो अग्यानकलेस ॥ मा० ॥ १ ॥ हा० ॥ रत्न जडित रळियामणी ॥ हा० ॥ चिहुंदिसि लटके टूर ॥ मा० ॥ हां० ॥

तयासी ॥ स्याइरा ढीगला कीजेजी ॥ हाथी अवावाडी वरोवर तरै चवदै पूर्व लिखीजेजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥

॥ दोहा. ॥

जगपति जगमे विचरिया । करता पर उपगार ॥
समणी संहस छतीसजी । मुनिवर चवदे हजार ॥ १ ॥

॥ढाल १३ वी–राग तीरथ ते नमूरे ॥

पावापुरिय पधारिया भवतारियारे ॥ जगपति दीन दयालके वीर सासण धणीरे ॥ चर्म चोमासो कीजीयै ॥ ग्यान दीजीयेरे ॥ अरज करै महिपालके ॥ वी० ॥ १ ॥ सिंघासण आसणठवै सुर चिंतवैरे ॥ मिलिया चोसट इंदके ॥ सिर आसोक ॥ सुहामणो ॥ रलियांमणोरे ॥ तिण तलै वीर जिणंदके ॥ वी० ॥ २ ॥ सघला मिल सेवा करे ॥ सिव सुख वरैरे कर २ आतम काम ॥ वी० ॥ देवश्रमण मति वोधवा ॥ कर्म रुंधवारे ॥ मुकिया गोतम स्वांमके॥ वी० ॥ ३ ॥

॥ढाल १४ वी–राग मेदिना गीतनीः॥

नवमली नवलछीराय ॥ देस अठारे राजीया ॥ श्री वीर समीपे आय पखी पोसा ठावीया ॥ १ ॥ गोतमने मेल दीया महावीर देव समण मति वोधवा ॥ उत्तध्येन अध्येन छत्तीस ॥ काती वद अमावस कह्या ॥ एकसो नें दश अध्येन ॥ सूत्र विपाक तणा लह्या ॥ गो० ॥ २ ॥ छेलो चर्म जोग निरोध ॥ मुगत नगरमे सचरे ॥ ओतो मिट गयो भाव उद्योत ॥ द्रव्य उद्योत राजा करै ॥ ॥ गो० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

विलख वदन सुरवर मिल्या । दीठा गोतम साम ॥
वीर पहुंतां मुगतमें । चिंतातुर थयो तांम ॥ १ ॥

॥ ढाल १५ वी–राग धन्यासरी ॥

जाण्यो थारो भावहो प्रभुजी ॥ जां ॥ गोतम अरज करे प्रभु सेती ॥ मेल्यो इण मस्तावहो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ १ ॥ शिव नगरी कायमकी वेला ॥ मोसू कर गया डाव ॥ प्र० ॥ जा० ॥ २ ॥ बालक भाव करी तुमसेती ॥ करतो नही अटकाव हो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ ॥ ३ ॥ एक रुखी मिति करे किम चेतन ॥ इण मेलावनसावहो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ ४ ॥ लही केवल निजरूप रतन निज ॥ मेट चपल चित भावहो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ ५ ॥

॥ इति महावीर जन्म कल्याण समाप्ति ॥



७ (अथ मृषावाद पर सत्यघोप चरित्रं)

॥ दोहा. ॥

॥ गुरु गोतम वांदू सदा। कदा न उपजे क्लेश ॥
पदपकज प्रणम्यां लहे । चारु बुद्धि विशेष ॥ १ ॥
महाव्रत पावूं कठिन । पालेवा नही सेज ॥
दूजो अति दुकर माहा। पालता सचमेज ॥ २ ॥
सत्यवत नर वाजके । झूंठ वचन बोलंत ॥
सत्यघोप विमनी परै । पामें दुःख अनन ॥ ३ ॥
सत्यघोप ते किम हुवो । वोल्यो केम अलीक ॥
तेह कथा हिव भवि जना । सुणज्यो दिल धरपीक ॥ ४ ॥

॥ ढाळ १ ली. नित करूं ए साधुजीनें वंदना ॥ ए देशी.

सकट देश रलियामणो ॥ सिधपुर नगर उदारो ए ॥ महल मदिर कर सोभतो ॥ भू भामनि गलहारो ए ॥ भाव धरी भवियण सुणो ॥ १ ॥ सिंहसेन नृप दीपतो ॥ रामदत्ता पटराणी ए ॥ रूपशील सत्य सुध भली ॥ वारु जेहनी वाणी ए ॥ भा० ॥ २ ॥ धाय माय मानी जती ॥ निपुण मति अभिधानो रे ॥ यथा नाम तथा गुणा ॥ राणीनैं मांग समानोरें ॥ भा० ॥ ३ ॥ श्रीभूत मोहित भलो ॥ श्रीदत्ता मोहीताणीरे ॥ इक दिन आव्या विचरता ॥ मुनिवर निरमल नाणीरे ॥ भा. ॥ ४ ॥ मृषावादनें निंदीयो ॥ पातक जगमें मोटारे ॥ झूट सरीखो को नही ॥ इण देखतां सवही छोटोरे ॥ भा. ॥५ ॥ मोहित निज मुखथी कीया ॥ त्याग गुरुजन सारवीरे ॥ अंतःकरणतो सुध नही ॥ माया मनमें राखीरे ॥ भा. ॥ ६ ॥ लोक दीयो सत्यघोषजी ॥ नाम झूठ कहे नाही ए ॥ राखै कतरणी जने उमे ॥ जनमें ठगाई जमाई ए ॥ भा. ॥ ७ ॥ लोकवोक समुझे नही ॥ धन २ करीये वरवानै ए ॥ महिमा सारा सहरमें ॥ पूरी मतीत राजानें ए ॥ भा. ॥ ८ ॥ पद्म खंड पुरवासीयो ॥ सुमित्र सेठ उदारो ए ॥ परटोटो आव्यो जरां ॥ कीयो मदेश विचारो ए ॥ भा. ॥ ९ ॥ रत्न पाच तिणरै कनै ॥ रस्तामें सिधपुर आयों ए ॥ रत्न मेंलूं कोई साहपैं ॥ इम चिंतव्यो मनभायोए ॥ भा. ॥ १० ॥

॥ दोहा. ॥

मध्य वजारें आयनें । पूछे जनजे कोक ॥
सत्यवादी कुण नगरमें । लोक कहे सत्यघोप ॥ १ ॥
परधन समझे धूल सम । मवा नही तिलमात ॥

प्राण तजे झूठ न वदे । वसुधा माही विख्यात ॥ २ ॥
सुणी वात पुरजनतणी । पाम्यो हर्ष अपार ॥
सत्यघोष घर आवीयो । बोलै वचन विचार ॥ ३ ॥



॥ ढाळ २ री—राग मीरीयानी. ॥

सेठ कहे सुणो देवजी ॥ पांच रतन मुझ पास ॥ मोहितजी ॥ राखो जे ए तुम कने ॥ ए माहरी अरदास ॥ मोहि० से० ॥ १ ॥ मैं जाऊ प्रदेशमें ॥ कमावणने काज ॥ मो० ॥ पाछो आय लेजावसू ॥ जितरे राखो महाराज ॥ मो० ॥ से० ॥ २ ॥ इम सुणनें सत्यघोषनैं ॥ उठी लोभनी ज्वाळ ॥ मो० ॥ एतो रत्न पचावणा ॥ अछै अमामो माल ॥ मो० से० ॥ ३ ॥ कपटी कपट करी कहे ॥ परधन राखा नाय ॥ सेठजी ॥ निद्रा वेची ओजको ॥ कुण घाले घरमांहि ॥ से० ॥ मोहित कहै सुणो सेठजी ॥ ४ ॥ सिर भूषण धर चरणमें ॥ बोल्यो दीन वचन ॥ मो० ॥ मया करो मो ऊपरै ॥ राखो एह रतन ॥ मोहि० ॥ से० ॥ ५ ॥ थारा हाथसू जायनै ॥ घरजावो डानामाय ॥ सेठजी ॥ पाछा थारा हाथसू ॥ लेई ज्याजो आय ॥ से० ॥ मो० ॥ ६ ॥ पिण किणनें कहीज्यो मती ॥ रत्न राखणकी वात ॥ से० ॥ आज तलक राखी नही ॥ मैं किणहीरी आथ ॥ से० ॥ मो० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

रत्न धर्या मोहित कनें । मनमें हर्ष अपार ॥
ज्याझ माझ तन बैसने । चाल्यो समुद्र मंझार

हित देखीनें ओलख्यो ॥ रत्न पचावन काजरे ॥ लाला ॥ लोकानें कहै रातनें ॥ मैं सुपनो दीठो आजरे ॥ लाला. भा. १२ ॥ इक पांच रतन मोपें मांगीया ॥ इक नर इसो सहिनानरे ॥ पहली वांकवथानें करू ॥ सहू कहै धन थारो ज्ञानरे ॥ लाला. भा. १३ ॥

॥ दूहा ॥

इते सेठ कहे आयनें । आपो पांच रतन ॥
डूबी जिहाज समुद्रमें । डूबो सघलो धन ॥ १ ॥

तुम प्रसादथी ए बच्या । नांतर जाता एह ॥
ए उपगार भूलू नही । जब लग थिर रहै देह ॥ २ ॥

सत्यघोप कहै नागडा । हमको देत कलंक ॥
पहिरण फाटा चीथरा । रत्न कहांतेरंक ॥ ३ ॥

लोका मिल धुरकारियो । पहली कही महाराज ॥
कै धूरत कै वावलो । नागो दिल नही लाज ॥ ४ ॥

॥ ढाल ४ थी—राग निहालदेमे ॥

सुमित्र मनमें चिंतवेजी ॥ कांई ॥ अब कहो कुण आधार ॥ जाण्यो विप्र सत्यवादीयोजी ॥ जां. ॥ निकल्यो धूरत चंडाल ॥ भवि जन तजवो मुसकल लोभनोजी ॥ १ ॥ आथज डूबी उदधिमें ॥ कां० ॥ ते दुख हुतो अपार ॥ रत्न पाच इण दाबीयाजी ॥ दाधां ऊपर खार ॥ भ० २ ॥ जाय पुकारू रायनैजी ॥ का० ॥ और न काइ उपाय ॥ इम चिंतव गयो राव लैजी ॥ कांई ॥ अरज सुणो महाराय ॥ भ० ३ ॥ रत्न धन्या सत्यघोषपैजी ॥ काई ॥ जाणी नै परतीत ॥ अब मांगू आपे नहिजी ॥ काई निपट विगारी नीत

॥ भ० ४ ॥ नृप दापै सत्यघोपनैजी ॥ कांई ॥ पर धन धूल समान ॥ मन करनै वांछे नही ॥ कांई ॥ अरज करो कोई आंन ॥ ॥ भ० ५ ॥ सुमित्र चित चिंता वढीजी ॥ कांई ॥ नृपना सुणी पुकार ॥ आस निरास अन ए हूओजी ॥ कांई ॥ फिरतां नगरमेंझार ॥ भ० ६ ॥ दयावन्त नर इक मिल्यो ॥ कांई ॥ पूछ्यो सब कही वात ॥ तेह कहे राणी जिनाजी ॥ कांई ॥ रत्न न लागै हाथ ॥भ०॥ ॥७ ॥ राणी महिल पीछो कडैजी ॥ कांई ॥ अंब वृक्ष सुविलास ॥ प्रातकाल चढै तिण परैजी ॥ कांई ॥ नित्त करीये अरदास ॥ भ० ॥ ॥ ८ ॥ (यतः) पांच रतन मुझ दासीया ॥ सत्यघोष भंडार ॥ कोइ दिरावो करमया ॥ ए मोटो उपगार ॥ (ढालः) नितप्रत इमकू कारैजी ॥ कांई ॥ इक दिन राणी तांम ॥ वातायन वैठी थकीजी ॥ सुण तेड्यो निज स्वाम ॥ भ० ९ ॥ कर जोडी राणी कहैजी ॥ कांई ॥ न्याव करीजे साच ॥ सत्यघोप दाव्या अछैजी ॥ कांई ॥ एहना रत्न ए पाच ॥ भ० १० ॥ राय कहै छे वावरोजी ॥ कांई ॥ झूठो लेतसु नाम ॥ सत्यवादी सत्यघोषछेजी ॥ कांई ॥ दूजो नहि इण गाम ॥ भ० ११ ॥ राणी सुण गइ घरेजी ॥ यो नित्य करै पुकार ॥ फिर राणी सुण चिंतवैजी ॥ हैया वात विचार ॥भ० १२॥

॥ दोहा ॥

धाय भणी कहे जायने । वणिक भणी इणवार
रत्न दिरासी ताहरा । मत कर सोच लिगार ॥ १ ॥
राणी फिर नृपसूं कहै । निसुणो नाह सुजान ॥
वणिक न्याव प्रभु कीजीये । एह नही कफ खान ॥ २ ॥
राजा राणीसूं कहे । एह करो तुम न्याव ॥
रत्नदिरावो एहना । देखा बुद्धिप्रभाव ॥ ३ ॥

राणी कहै सत्यघोष संग । रमसूं पासा सार ॥
रत्न दिदाऊ एहना । नही संदेह लिगार ॥ ॥ ४ ॥
धाय भणी राणी घणी । समजावी ससनेह ॥
करणो कारज इणपरे । कठे नाम नवि लेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ वी-राग सासू कहे रीसाइजी ॥ ए देशी ॥

राणी धाय पठाईजी ॥ कहे जा विम पासे ॥ त्याजे इहां बोलाईजी ॥ ऊंचो आवासे ॥ १ ॥ धायजी चाली आईजी ॥ तव सत्यघोप घरे ॥ वारू वात जणाईजी ॥ राणी याद करे ॥ २ ॥ सत्यघोप थयो राजीजी ॥ राणी बोलायो ॥ एह वात तो ताजीजी ॥ तव् तिण उमायो ॥ ३ ॥ ऊचो महलमें आयोजी ॥ हर्ष भर्यो हीयो ॥ आसनपर बैठायोजी ॥ आदरमान दीयो ॥ ४ ॥ राणी कहे तुम भेलूंजी ॥ पासा मारसही ॥ हर्ष धरीनें खेलूंजी ॥ ए मुझ हूस थई ॥ ५ ॥ सत्यघोप कहे ठीकजी ॥ रमिये वेग सही ॥ मारे मन पिण पीकजी ॥ तिल भर ढील नही ॥ ६ ॥ एकज सका आवैजी ॥ मोमन असमानै ॥ जीत दोनूं राजावैजी ॥ राजा जो जाने ॥ ७ ॥ तव वलती कहै राणीजी ॥ नृपनें पूछ लीयो ॥ बोली मधुरी वाणीजी ॥ हुकसराखो हीयो ॥ ८ ॥ वाजी प्रथम लगाईजी ॥ मुदरीजीपलई ॥ ए सहि नाणि दिखाईजी ॥ आणो रत्न सही ॥ ९ ॥ धाय मुद्रिले आवैजी ॥ तव सत्यघोप घरे ॥ विप्रजी रत्न मगावैजी ॥ मुद्री आगे घरे ॥ १० ॥ वेही आय लेजासीजी ॥ मोनें खबर नही ॥ फिर गइ धाय विमासीजी ॥ राणीनें आय कही ॥ ११ ॥ रामतमें थयो सवादोजी ॥ जोसरख्वा जरमें ॥ राणी भेद ए लायोजी ॥ रत्न अछे घरमें ॥ १२ ॥ बीजीवार कै याही जी ॥ कतरणी वाजी ॥ जीतीनें फेर पठाईजी ॥ धाय आई भाजी ॥ १३ ॥ कैंची साँप दिखाईजी ॥ कह्-

॥ भ० ४ ॥ नृप दापै सत्यघोपनैजी ॥ कांई ॥ पर धन धूल समान ॥ मन करनै वांछे नही ॥ कांई ॥ अरज करो कोई आंन ॥ ॥ भ० ५ ॥ सुमित्र चित चिंता वढीजी ॥ कांई ॥ नृपनां सुणी पुकार ॥ आस निरास अब ए हूवोजी ॥ कांई ॥ फिरतां नगरमेंझार ॥ भ० ६ ॥ दयावन्त नर इक मिल्यो ॥ कांई ॥ पूछ्यो सब कही बात ॥ तेह कहे राणी जिनाजी ॥ कांई ॥ रत्न न लागै हाथ ॥भ०॥ ॥७ ॥ राणी महिल पीछे कहैजी ॥ कांई ॥ अंब वृक्ष सुविलास ॥ प्रातकाल चढै तिण परैजी ॥ कांई ॥ नित करीये अरदास ॥ भ० ॥ ॥ ८ ॥ (यतः) पांच रतन मुझ दाबीया ॥ सत्यघोप चंडार ॥ कोइ दिरावो करमया ॥ ए मोटो उपगार ॥ (ढालः) नितप्रत इमकू काकरैजी ॥ कांई ॥ इक दिन राणी ताम ॥ वातायन बैठी थकीजी ॥ सुण तेड्यो निज स्वाम ॥ भ० ९ ॥ कर जोडी राणी कहैजी ॥ कांई ॥ न्याव करीजे साच ॥ सत्यघोप दाब्या अछैजी ॥ कांई ॥ एहना रत्न ए पांच ॥ भ० १० ॥ राय कहै छे बावरीजी ॥ कांई ॥ झूठो लेतसु नाम ॥ सत्यवादी सत्यघोपसोजी ॥ कांई ॥ दूजो नहि इण गाम ॥ भ० ११ ॥ राणी सुण गइ करोजी ॥ यो नित्य करै पुकार ॥ फिर राणी सुण चितवैजी ॥ हैयां बात विचार ॥भ० १२॥

॥ दोहा ॥

धाय भणी कहे जायने । वणिक भणी इणवार
रत्न दिरांसी ताहरा । मत कर सोच लिगार ॥ १ ॥
राणी फिर नृपसूं कहै । निसुणो नाह सुजान ॥
वणिक न्याव प्रभु कीजीये । एह नही कफ खान ॥ २ ॥
राजा राणीसूं कहे । एह करो तुम न्याव ॥
रत्नदिरावो एहना । देखा बुद्धिप्रभाव ॥ ३ ॥

राणी कहै सत्यघोष संग । रमसूं पासा सार ॥
रत्न दिखाऊ एहना । नही संदेह लिगार ॥ ॥ ४ ॥
धाय भणी राणी घणी । समजावी ससनेह ॥
करणो कारज इणपरे । कहै नाम नवि लेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ वी-राग सासू कहै रीसाइजी ॥ ए देशी ॥

राणी धाय पठाईजी ॥ कहै जा विप्र पासे ॥ ल्याजे इहा बोलाईजी ॥ ऊचो आवासै ॥ १ ॥ धायजी चाली आईजी ॥ तव सत्यघोष घरे ॥ वारु वात जणाईजी ॥ राणी याद करे ॥ २ ॥ सत्यघोष थयो राजीजी ॥ राणी बोलायो ॥ एह वात तो ताजीजी ॥ तत् खिण उमायो ॥ ३ ॥ ऊचो महलमें आयोजी ॥ हर्ष भर्यो हीयो ॥ आसनपर वैठायोजी ॥ आदरमान दीयो ॥ ४ ॥ राणी कहे तुम मेलुंजी ॥ पासा सारसही ॥ हर्ष धरीनें खेलुंजी ॥ ए मुझ हूंस थई ॥ ५ ॥ सत्यघोष कहै ठीकजी ॥ रमिये वेग सही ॥ मारे मन पिण पीकजी ॥ तिल भर ढील नही ॥ ६ ॥ एकज सका आवैजी ॥ मोमन असमानै ॥ जीन दोनू राजावैजी ॥ राजा जो जाने ॥ ७ ॥ तव वलती कहै राणीजी ॥ नृपनें पूछ लीयो ॥ बोली मधुरी वाणीजी ॥ हुकम आखो दीयो ॥ ८ ॥ वाजी प्रथम लगाईजी ॥ मुदरीजीपलई ॥ ए सहि नाणि दिखाईजी ॥ आणो रत्न सही ॥ ९ ॥ धाय मुद्रिले आवैजी ॥ तव सत्यघोष घरे ॥ विप्रजी रत्न मगावैजी ॥ मुद्री आगे धरे ॥ १० ॥ वैही आप लेजासीजी ॥ मोनें खबर नही ॥ फिर गइ धाय विमासीजी ॥ राणीनें जाय कही ॥ ११ ॥ रागतमें वडो सवादोजी ॥ जोसरखा जरमें ॥ राणी भेद ए लाधोजी ॥ रत्न अछै घरमें ॥ १२ ॥ बीजीवार कैमाही जी ॥ कतरणी वाजी ॥ जीतीनें फेर पठाईजी ॥ धाय आई भाजी ॥ १३ ॥ कैंची ताम दिखाईजी ॥ कह

मांही अछे ॥ आणी आवै नांईजी ॥ पिछतासी पछे ॥ १४ ॥ एक वार फिर जावोजी ॥ जितरे हू हेरूं ॥ तीजी सहनाणी ल्यावोजी ॥ पाछे नही फेरूं ॥ १५ ॥ फिर आया तव धाजीजी ॥ कहै अरज मांरी ॥ अवके तो रमल्यो वाजीजी ॥ फिर मरजी थारी ॥ १६ ॥ तीजी वारकै मांहीजी ॥ जनेऊल्याई ॥ धाय धावती आईजी ॥ विप्रणी धवराई ॥ १७ ॥ रत्न काढ तिय सूंप्याजी ॥ धायकै करमांई ॥ आय राणीनें आप्याजी ॥ कारज सिध थाइ ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

सीख समापी विप्रनें । राणी कर सतकार ॥
हारीतेसूं पीति हु । राणी महर भंडार ॥ १ ॥
राणी नृपनें तेडनें । भाखे करि जतन ॥
सत्यघोपके पासथी । आण्या एह रतन ॥ २ ॥
नृप नारीनें इम कहे । तुमहो मति भंडार ॥
न्याव भलो नींको कीयो । विरली थां सम नार ॥ ३ ॥

॥ सोरठो ॥

फिर बोल्यो महिपाल ॥ वचन तुमारो राखवा ॥
घरसू रत्न निकाल ॥ सांचो कीधो वणिकनें ॥ १ ॥
राणी कहै महाराय ॥ रत्नथालमे रत्न ए ॥
भेली सेठ बोलाय ॥ ओलखावो रूवरूं ॥ २ ॥

॥ ढाल ६ वी.-राग यतनीनी ॥

नृप वारू सभा बनाई ॥ सहू जवरीनै लीधा बोलाई ॥ पांचू रत्न देखाया ॥ सहि नाण करी ओलखाया ॥ १ ॥ उमरावांनें कीना

साखी ॥ जोवो राणीकी मति पाकी ॥ बांकी न रही कांइ मांसारू ॥ राणी न्याय कीयो छै घारू ॥ २ ॥ भडार सूं रत्न कढाया ॥ पाचू ते माहि मिलाया ॥ सुमित्र भणी वो लाई ॥ नृप भाखै निसुणो भाई ॥ ३ ॥ रत्न थालथी रत्न ॥ थारा टालीले करि जतन ॥ सुण सेठ हुवो कुस्याली ॥ निज रतनानें लीधा टाली ॥ ४ ॥ सहुको मन अचीरज पाई ॥ राणीकी बुध सराई ॥ रत्न लेई करी परणाम ॥ सुमित्र गयो निज ठाम ॥ ५ ॥ नृप दाखे दातज पीसी ॥ अब आणो विप्रनें घीसी ॥ दुष्ट नगरी के माही ॥ इण ऐसी ठगाई जमाई ॥ ६ ॥ जन जमसा होयनें ध्याया ॥ सत्यघोष सदनें आया ॥ कहै किहां गयो सत्य बोलो ॥ लाग्यां पैजारां सिरहोसीपोलो ॥ ७ ॥ सुणी बात धूजवानें लाग्यो ॥ मनमें भय रतलारो जाग्यो ॥ नारी पैं मांगे आई ॥ जब धाय आइसो सुनाई ॥ ८ ॥ विप्र चिंतै राणी मत्र मतऱ्या ॥ छाने २ कानज कतऱ्या ॥ अबै कांई होवै पिछताया ॥ एतो पाप उदै मांरे आया ॥ ९ ॥ सेंठी करनें विप्रनी काया ॥ चोटी पकडी नृपपैं ल्याया ॥ नृप देख क्रोधमें जलियो ॥ मांनूं पावकमें घृत मिलियो ॥ १० ॥ राय भाखै सत्यव्रती यनें ॥ तैं ठगिया घणारा धननें ॥ घणा दिन तो पाप छिपाया ॥ पिण आज भेद मे पाया ॥ ११ ॥ है तो एहवो प्राण गमाऊं ॥ पिण विप्र हत्या भय पावूं ॥ नृप तीन दड फुरमावै ॥ लीजे दिल दायजो आवै ॥ १२ ॥ कै तो घरको धन सब दीजे ॥ कैमल मुठी तीन खाईजे ॥ कै भैंस गोवर तीन थारे ॥ खाई जे विप्र विचारे ॥ १३ ॥ धन गया मूंनां समानें ॥ मल मुठीथी जावै मानें ॥ गोवर खायो यो चोखो ॥ मिट जासी सघलोही धोखो ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

विप्र कहे स्वामी सुणो । मंगावो भर थाल ॥
गोबर खाऊ जन सहू । हसन लग्यो महिपाल ॥ १ ॥
भैंस तणो गोबर नृपत । मंगायो भर थाल ॥
अब वेगो आरोगीये । गर्म २ ततकाल ॥ २ ॥

॥ढाल ७ वी.--राग देवकीनंदन जगत सिरोमण ॥ए देशी॥

एक थाल तो दोरो सोरो ॥ विप्र बापडै खायो ॥ अब तो कठा उतरे नाही ॥ खातो २ अघायो ॥ १ ॥ झूठ न बोलो ॥ झूठ महा दुखदाई ॥ समझोरे सब भाई ॥ पहिलां तोलो ॥ टेर ॥ हाथ जोड कहे निसुणो स्वामी ॥ अब खाणी नही आवै ॥ नृप कहै सत्यव्रत जे पाल्यो ॥ तेह तणो फल पावै ॥ झू० ॥ २ ॥ नृप कहै दोय पांति धन दीजे ॥ कै दोय मुष्टी खाईजे ॥ दोय मांयथी दाय आवैजे ॥ एक दंडहिवलीजे ॥ झू० ॥ ३ ॥ विप्र चिंते धन तो नहि देणो ॥ मुष्टी महारज खांणो ॥ कर उपचार साजो होय जासूं ॥ लोभमें देखो लोभाणो ॥ झू० ४ ॥ राय हुकमथी मलतव धाया ॥ थर २ धरणी धूजाता ॥ होट डसंता दांत घसता ॥ रोस करीनें राता ॥ झू० ५ ॥ पहेली मुष्टी लागत पड्यो नीचो ॥ दूजीमें माणज नाठा ॥ मर नृप कोस सर्पपणे उपनो ॥कर्मारा फल छे माठा ॥झू०॥ ॥ ६ ॥ भव अनेक तणो छे वरनन ॥ श्री हरि वंश पुराणें ॥ कीयो सवध इहां इतरोही ॥ सुणज्यो चतुरसुजाणै ॥ झू० ७ ॥ धन आडो कछु नायो कांइ ॥ इन भव बहु दुख पायो ॥ परभव मांही घणोहिज रुलसी ॥ श्री जिनवर फुरमायो ॥ झू० ८ ॥ एहवो जाणीनें भव्य माणी ॥ झूठ वचन तज दीज्यो ॥ परधन कैनेड़ा मति जाज्यो ॥

सुगुरु शीख मानीज्यो ॥ श्रु० ९ ॥ पूज श्री कनीरामजी मोटा ॥ ज्ञानमें गौतम जेवा ॥ तत शिक्ष ज्ञान गेह रेखराजजी॥ तेहनां गुण कहु केवा ॥ श्रु० १० ॥ तस पद पंकजनो मधुकर ॥ नथमल कथा प्रकाशी ॥ विद्वज्जन होवै सो वाची ॥ मत कीज्यो मांरी हांसी ॥ श्रु० ॥ ॥ ११ ॥ समत उगणीसै वरस एकवीसे ॥ मास फाल्गुन वदि सातै ॥ सहर सुभटपूरमें ए भाखी ॥ ढाल सात विख्यातें ॥ श्रु० १२ ॥

॥ इति मृषावाद पर सत्यघोष चरित्र ॥

८ (अथ मुम्मन श्रेष्ठी चरित्रं)

॥ दोहा ॥

अर्हंतादि पंच पद । प्रणमूं ऊठ प्रभात ॥
सुधै मन करं समरता । पातिक दूर पुलात ॥ १ ॥
चतुर्गति संसारको । हेतू च्यार कपाय ॥
रजमांही तज कादता । अधिको लोभ कहाय ॥ २ ॥
सकल पापको मूल है । नाखै नर शिर काय ॥
ए ओलाणो जगतमें । लोभ पापको बाप ॥ ३ ॥
लोभी जन धन जोडवा । तत्पर होत अपार ॥
असह कष्ट नित प्रत सहे। करे नीच आचार ॥ ४ ॥
तिणपर मुम्मन सेठकी । कथा सुणो भवि लोय ॥
लोभी नर ऐसा हुवे । सुणतां अचिरज होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल १ ली–राग इण सखरियारी पाल ॥ ए देशी ॥

जंबू भर्त्तमे मग्धदेश महिमा निलोहो ॥ लाल ॥ दे० ॥ सर्व समृद्धिगृह राजगृह पुर भलोहो ॥ लाल ॥ रा० ॥ श्रेणिक नामे राय शुद्ध समकित मतीहो लाल ॥ शु० ॥ न्याय निपुण जिन भक्तिमांही अधि कीरती हो ॥ लाल ॥ मां० ॥ १ ॥ चेलणा पटनार धर्ममें निरमली हो ॥ लाल ॥ ध० ॥ रूप कला पति प्रेम गुणे कर आगली हो ॥ लाल ॥ गु० ॥ मत्री अभयकुमार जेष्ठ सुत नृपतणो हो ॥ लाल ॥ ॥ जे० ॥ च्यारु बुद्धि निधान सुजसपुरमें घणो हो ॥ लाल. ॥ ॥ सु० ॥ २ ॥ तिण पुर निवसे सेठ कोटीश्वर छै खरो हो ॥ लाल ॥ ॥ को० ॥ मुम्मन सेठनो नाम कृपण शिरसे हरो हो ॥ लाल ॥ कृ० ॥ सरस खान सतपान करत छाती फटै हो ॥ लाल ॥ क० ॥ चाहे ज्यु भरणो पेट रखे घर धन घटै हो ॥ लाल ॥ र० ॥ ३ ॥ नही दान सनमान आयारो नहि करै हो ॥ लाल ॥ आ० ॥ पडेजी मावणो भात ॥ कै इण दु.खसू डरै हो ॥ लाल ॥ इ० ॥ पाडोसी घर देखजीमतो पावणो हो ॥ लाल ॥ जी० ॥ चालें पेटमें पीड लगे अलखावणो हो ॥ लाल ॥ ल. ॥ ४ ॥ करत दान भल भोजन देख, दिलधर कही हो ॥ लाल ॥ दे० ॥ याचक मुख स्वनाम सुणी नवि हरखही हो ॥ लाल ॥ सु० ॥ स्नान नहि नहि वस्त्र धापन क्रिया तनपरै हो ॥ लाल ॥ क्रि० ॥ श्रीपिन इसडे सदन जाय वासो करैहो ॥ लाला ॥ जा० ॥ ५ ॥ यतः

॥ दोहा ॥

देव गुरु धर्म तत्त्वनी । श्रद्धा नाही हजूर ॥
पंचेरात दिन धधमे । माया तणो मजूर ॥ १ ॥

॥ ढाल २ री–राग शंकर बसैरे कैलाशमे ॥ ए देशी ॥

लोभग्रसित हुवो करे ॥ अजुक्तो व्यापाररे ॥ नील गुली वेचै निरदई ॥ साजी साबू खाररे ॥ लोभ बुरोरे ससारमें ॥ १ ॥ खेती करावे खातसू ॥ पोट्या आप फिरावेरे ॥ लाभ दीसे जिण काममे ॥ सोही विनज करावैरे ॥ लो० ॥ २ ॥ इण विध पचता सेठजी ॥ बहुलो द्रव्य कमायोरे ॥ जतन करन रतनामई ॥ वृषभ एक करायोरे ॥ लो० ॥ ३ ॥ ऊपर गृह स्थापन कीयो ॥ जतन करीनें भारीरे ॥ क्षण इक गाफल ना रहै ॥ पूजी प्राणथी प्यारीरे ॥ लो० ॥ ४ ॥ बीजो वृषभ करन भणी ॥ विविध उपाय बनावैरे ॥ एतले प्राहट ऋतु भली ॥ घन उमटते आवैरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ वर्षामे धन जोडवा ॥ अन्य उपाय न पायोरे ॥ आधी रात घन वर्षता ॥ वाजे शीतल वायोरे ॥ लो० ॥ ६ ॥ तन कोपीनज बाधनें ॥ घोर अधारा माहीरे ॥ थर२ कांपत आवीयो ॥ पुर बाहिर चल माहीरे ॥ लो० ॥ ७ ॥ सरिता तट ऊभो खडो ॥ वाट काष्ठनी जोवैरे ॥ आवे वहतो तो ग्रहूं ॥ लाभ घणेरो होवैरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एतले काष्ठज आवीयो ॥ भारी घाव उठावैरे ॥ माथे घरनें चालियो ॥ राज भवन तल आवैरे ॥ लो० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर वातायनें । श्री श्रेणिक नरनाथ ॥
राणी संगरसरंगमें ॥ बैठा दंपति साथ ॥ १ ॥

॥ ढाल ३ री–राग म्हारो पिउ ब्रह्मचारी ॥ ए देशी ॥

हूवो उद्योत विद्युतनो जवही । चेल्लणा निरखे तवहीहो ॥ कोई नर दुखियारो ॥ मस्तक भार नगननन कंपे ॥ राणी नृपसू जपेहो ॥

की संगति गह रे, जिनवांणीकू सरदहरे, एह कुटुंब सब स्वारथका, भलो तु करले निज जीवनका ॥ गाफल. ॥ १ ॥ हांरे क्रोध निच डोले, मेरी जान क्रोध वस डोले, मानवसुं छकीयो बोले, मायाकी गांठ न खोले, लालचसूं झुकतो तोले, भण्या तूं किताब काजीका, तमासाचेहरवाजीका ॥ गाफल. ॥ २ ॥ हांरे जुग विच बडे बडे रायाके, होय गयी वादलकी छाया तुजे कहा वाडा बनवाया, दिल विच खोज ना कीजे, लाहास मरणका लीजे ॥ गाफल. ॥ ३ ॥ हांरे मथुराको राजा कसे, ते उपजो यादव वंशे, पकड्यो उग्रसेन अनतसे, कुलकी मरजादा मेटीके, परण्यो जरासिंध बेटी ॥ गाफल ॥ ॥ ४ ॥ हांरे एकदिन सभा पूरांणी, तिहां आव्यो जोतिक नाणी, तिहां बोले भूपति वांणी, नही कोई जगतमें ऐसा के, हमसें जंग करे जेसा ॥ गाफिल. ॥ ५ ॥ तब विबुध वचन इम बोले, भूपतना श्रुत पट खोले, तू भोले भावे भूले, जो जादव वंस उधारेगा, सोही भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफल. ॥ ६ ॥ हांरे पूतना दमसी, महाराज पूतना दमसी, जाकी सुंघी है जमसी, सो वृंदावनमें रमसी, गोवरधन धारेगा सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफल. ॥ ७ ॥ हांरे नाग है काली, नायेगा नाथने झाली, अरिजन पर निजर कराली, गोकल गांव वधारेगा, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गा. ॥ ८ ॥ हांरे जुगलसें जगी, सूरति सोहे इकरंगी, जाकी जगतमें कीरति चंगी, जो गज-दत उखालेगा. के, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गा. ॥ ९ ॥ हांरे सो वैनागकी सेज्या, जाकी सतभामा हुवे भज्या, धरे तीन खंडकी ल-ज्या, जो मल्लमांन विडारेगा. के, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफिल.॥ ॥ १० ॥ हांरे सारग धनुष चढावे, जो गदाको मद्री वावे, सख पं-चायण बजावे, फूलकी माला अमलागी, आग्या तीन खंड मांनी ॥ गाफल. ॥ ११ ॥ हांरे देवकी नंदा, वसुदेव तनु आनदा, द्वारापति

तेज दिनदा, एह सुणी विशुद्धतणी वाणी, कंसकी छाती धुजांगी ॥ गा. ॥ १२ ॥ श्री वसुदेवपें आवे, करीवातासू ललचावे, वसुदेव भेद नही पावे, मांग्या गर्भ देवकीका, कस तूं तीन भुवन टीका ॥ गा. ॥ १३ ॥ हांरे सुलसादेवत समरी, जिण माग्या कुमरा कुमरी, हिरणमेखी 'सक्ति है जवरी, छउ नदन उठवाया, शेठघर महोत्व मंडवाया ॥ गाफल. ॥ १४ ॥ हारे जव जन्मे सारगपाणि, कसकी धरती धुजाणी, तालांकी झल फाजल फाणी, सींहांकी दाढा वंधाणी, ऐसें पुण्यवत जाणी के, जमुना भेद दीयो पांणी ॥ गाफल. ॥ १५॥ मुरारी नंद घरे आया, गवालन नाला गवराया, जसोदा हाये दुलराया, कानजी कुमर पद खेले. क, माखणगोरसमें रेले ॥ गा. ॥१६॥ कदही सापण कू साहे, कदही आंगण जल वाहे, कदही जमुना तट जावे, फिरे लालजी निसका, वजावे कस पग डका ॥ गा. ॥ १७ ॥ कदही साड पकड आंणे, कदही महिप पीलांणे, कदही अग उलहांणे, अधरपर वसरी राखे, दांण महियनको मांगे ॥ गा. ॥ १८ ॥ देवकी दरसणकू जावे, नवि नवि वस्तू ले आवे, भले भले वस्त्र पहीरावे, चिरजीवो नंदलाला, वैरियां भंजण जदुपाला ॥ गा. ॥ १९ ॥ गोवर्धन धार्यो निज हाये, काली नागकू नाये, गोप्या फिरती हर साये, ऐसे पुन्यके पुजे, फिरते मधुवनके कुंजे ॥ गा. ॥ २० ॥ भाइ वलभद्र सहाई, किसीकी संक नही काइ, गवालनि दधि वेचन जाइ, मुरारी काण नही राखे के, दधिभर आगुलिया चाखे॥ गा. ॥ ॥ २१ ॥ लालजी मुजकू मत छेडे, कंसकी नगरि अती नेडे, वळजो तु गुजरके खेडे, कंसकी चढतिपुन्याइ. के, फिरती तीन खड दुहाइ ॥ गा. ॥ २२ ॥ कहे कान्ह कैसे म्हैं डरहू, कसकू फीटो म्हैं करहू, अत्ररनकू राजपद धरहू, जाय पुकारे कसके आगे, मोर्दे दाग महियनको मागे. ॥ गा. ॥ २३ ॥ इम उरस सोळे जव वीते, कसकू याना सन चिंते, भामाका व्याव मनाय लीजे, सव भूपति वुलवाया

किलंगी अद्भूत सोहे, देखतही मन मोहे,
माधव मोहनलाल रगको तो सावरो ॥ दे. ॥ २ ॥
शुद्ध बुध भूल गई, मेरे दिल वस रही,
देखूरे सूरत रवि उगेरे ऊंतावरो ॥ दे. ॥ ३ ॥
पांनीके मपंच कर, देखे आय गिरधर,
नाचतो निरख रग उलटयो ऊछावरो ॥ दे. ॥ ४ ॥
नादको अस्वाद पाय, कुरगगन रहे धाय,
नाचत भुजंग सग, अनगज गावरो ॥ दे. ॥ ५ ॥
देखे मथुराके वासी, मिळे जिम त्रण प्रासी,
होवत हुलास अति पारन उमावरो ॥ दे. ॥ ६ ॥
छिनमें जमुनाके पार, छिनहीमे घरद्वार,
छिनमें गोपनिसंग वनमें उतावरो ॥ दे. ॥ ७ ॥
लूटके माखन खाय, वरज्योही रहे नाय,
चाखे सवथर नही रापे डर रावरो ॥ दे. ॥ ८ ॥

३ (अथ रुखमणीको कागद—राग वासंत)

पत्री लिखी रुपमण प्यारी, वांचत है कृष्ण मुरारी ॥ प. ॥ टेर ॥ सिधश्रीनें सकल शुभोपम, लायक, तुम गिरधारी, कुदनपुरथी लिखत आपको. दासी निज चरणारी ॥ प. ॥ १ ॥ अत्र कुशल है प्रभु कृपाथी, तुम कुस भगती सारी, चाहत मोमन निशदिन ऐसें, ज्यू चातक जलधारी ॥ प. ॥ २ ॥ अपच एह समाचार तुम, वांचीयो सु-विचारी, पनिहारी घटनटके वर्ततिम, मम तुमसें इकतारी ॥ प. ॥ ३ ॥ नारद वचनें प्रेम लग्यो मुज, देख्या चाहू दिदारी, आज्यो वेग मिटाज्यो विरह, मोपरमेहर विचारी ॥ प. ॥ ४ ॥ क्राचित वसत गणेश·

रुशंकर, काचित भेरू मातारी, मोमन वसत माधव माधो, मनकी जानत श्री बिग्रनारी ॥ प. ॥ ५ ॥ मुख जवानी कुशल दूतपें, पूछीयो प्रभु समाचारी, लाख वातकी एक वात है, आवो वेग गिरधारी ॥ प. ॥ ६ ॥

॥ इति रुखमणी पत्रिका ॥

॥ अथ लिग्यते राम चरित्रांतर्गत ॥

१ ॥ रावणं प्रति सचिव वाक्यं ॥ लावणी ॥

॥ कहे मंत्री शरनाथ वात हम मानो २ सीताकी छोडो गेलटेक मतितानो ॥ टेर ॥ पद्मनो प्रबल प्रताप ऊगतो भानो २ सौमित्री बलवत जगत नहि छानो ॥ भामडल सुग्रीव आदिराजानो २ बल गइ बहु चमू वधू पलटानो ॥ पाजी जन लागे लरनदशन पिछानो २ ॥सी. ॥ १ ॥ कुण जानि नाथ नृप हस्त महस्त कट जासी ॥ कुण जानी ऊण वीचराक्षस घट जासी ॥ कुण जानी सुग्रीव आदि छुट जासी कुण जानि विभीखण राज्य मणी फुट जासी ॥ देखो फिर तुम नद भ्रात रखानो ॥ सी. ॥ २ । कुण जानी जनू मालीनद मर जासी २ ॥ कुणजानी लक दमदर कपि कर जासी ॥ कुण जानि शक्ति प्रहार खाली टल जासी २ ॥ कुण जानि मनोरथ राम तणा फल जासी ॥ तव नदन बधन छूटन नहि ठिकानो २ ॥ सी० ३ ॥ सीया पाछी दिया वात वन जावे २ ॥ नदन बधव छूट अपन घर आवे ॥ जो अमची ए नाथ वात नहि भावे २ ॥ तो ल्हेसो फल चाख सचिव समजावे ॥ अपना दुःखथी नाथ आन दुख जानो ॥ सी० ४ ॥ नरम गरम बहु भाति कही इम वानी २॥ रावणपकडी

टेक एक नही मानी ॥ जगजवरोहोवनहार लाग्यो है आनी २ ॥ नथमल अब रावणकी काल निसानी ॥ टारी न टरे कोय कही भगमानो ॥ क० ॥ सी० ५ ॥

॥ इति ॥

२ ॥ राग गहरो फूल गुलाबरो. ॥ ए देशी ॥

पाछी आई मदोदरि राणी ॥ मोरा साहिबा ॥ समजावेजी निज नाथने ॥ थारी बुध क्रांत लोपाणी ॥ मो. ॥ जाणली बीजी इण वातनें ॥ १ ॥ थांसू अरज करूं रढियाला ॥ मोरा साहिबा ॥ हठिला ॥ मो० ॥ थेमांनो मो० ॥ परत्रिय प्रेम न कीजीये ॥ टेर ॥ थेतो रामचंद्रजीरी रानी ॥ मो० ॥ जाने उठायरे ल्यावीया ॥ यातो बुध करी नहि स्यानी ॥ मो० ॥ जगमें लपट कहावीया ॥ थां० २ ॥ थे तो राज काज सब भूल्या ॥ मो० ॥ शुद्ध नहीजी किण वातरी ॥ हू तो रात दिवस दुखमें झूलू ॥ मो० ॥ देखदशाजी थारी नाथरी ॥ ॥ था. ॥ ३ ॥ थेतो हिवडारे मांहि विचारो ॥ मो० ॥ ऊठ आछी नही पारकी ॥ थांरे रमणी छे सहस्र अढारो ॥ मो० ॥ प्रतक्ष रंभा सारखी ॥ था० ॥ ४ ॥ थारो सीतासूं मन क्यू उमायो. ॥ मो० ॥ धवल दिन कीनी रातडी ॥ थानें सासुजी जणीनें कांइ खायो ॥ मो० ॥ मानो नहीजि मांहरी बातडी ॥ थां. ५ ॥ थानें सू सगलारा कह्यो मानो ॥ मो० ॥ सूंप आवो जी पाछी जानकी ॥ थे तो इसडी टेक मतितानो ॥ मो० ॥ सीतायाग्राहक मांनकी ॥ थां० ६ ॥ जोइतरी कह्यां ही नही मानो ॥ मो० ॥ तोहो नहार ज्यो हो वसी ॥ थासी घणारें घर हांनी ॥ मो० ॥ लोक तमासा जो वसी ॥ था. ७ ॥ राणी थाक गई समझाई ॥ मो० ॥ दशकंधर भरतारनें ॥ नथमल

कहे जग माई ॥ मो० ॥ भविजन ॥ कू न टाले जीहो नहारने ॥ ॥ थां० ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

३ ॥ राग—नरवो ॥

कैसे आवेरी इणठाय ॥ मुदरिया ॥ कैसे आवेरी इणठाय ॥ टेर ॥ एह मूदरी प्रभुजिके करकी ॥ इक भर अलगे न थाय ॥ मु० ॥ १ ॥ पेख मूंदरी प्रति सिय इन पर ॥ बोलत मुखसें गाय ॥ मु. २ ॥ अरी मूद्री तूभी विछुरी ॥ प्रभुकी सगी हुईनाय ॥ मु० ॥ ३ ॥ आज थकी अवतिय जातकी ॥ सही प्रतीत नसाय ॥ मु० ४ ॥ एह मुदरी अलग होइसो ॥ प्रभु विपतकेमाय ॥ मु० ५ ॥ एम कहत चित अत अकुलानी ॥ नैनोमें पानी चवाय ॥ मु० ६ ॥ देख उदासी हनु तव प्रगटे ॥ लागे सियाके पाय ॥ मु० ७ ॥ प्रभूजी के कुशल लक्ष्मणके ॥ मानो सुख तुमे माय ॥ मु० ८ ॥ नथमल वचन सुनत शिय हनूके ॥ आनद उपज्यो आय ॥ मु० ९ ॥

॥ इति ॥

४ ॥ राग—मायरानो ॥ देशी ॥

रावणप्रति शूर्पनखा वाक्य ॥ ॥ वीरा सीता २ रो रूप अपार हो ॥ वीरा ॥ इद्रानी नखनें अंकुरैजी ॥ थांरी राण्या २ सहस्र अठार हो ॥ वीरा ॥ सीतारै जोडै कुन जुरैजी ॥ १ ॥ वीरा मुखडो २ पुनमचद हो ॥ वीरा ॥ पिकवयनी गजगामनीजी ॥ वीरा काया २ कोमल कदहो ॥ वीरा मृगनयणी राणी रामनीजी ॥ २ ॥ वीरा कहा

लग २ करूं वखान हो ॥ वीरा ॥ हरिहर व्रह्मा थक रहैजी ॥ वीरां राणीमै रत्न समान हो ॥ वीरा वाणी एक गुण कुण कहैजी ॥ ३ ॥ वीरा जेहना २ जवरा भागहो ॥ वीरा ॥ तिणघर एहवी पदमनीजी वीरा जावो २ ल्यावो घर राग हो ॥ वीरा ॥ वाजो छो त्रिखंड ध-णीजी ॥ ४ ॥ वीरा देख्या २ पडसी तोलहो ॥ वीरा विगर देख्यां मालुम किसीजी ॥ वीरा ॥ मनडो ॥ वीर आघो पाछा मति डोलहो ॥ वीरा त्रिभुवन नारी नहि इसीजी ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ३१ सा. ॥

इंद्रकी परीहै किधू धरी है विधाता आप चद्रमांते चीर काढी ॥ सीर अमि पानकी ॥ कंचन वरन तन रचन दिखात पोर ॥ सावन कीतीजमानु वीज असमानकी ॥ रूपको वखान भ्रात ॥ वानी तें कह्यो न जात ॥ करत मसम्म मेधा भ्रमत सुरानकी ॥ स्वरग पताल लोक नरलोक ढूंढ देखो ॥ कामनी न दूजी ऐसी जैसी नाथ जानकी॥१॥

॥ ढाल तेहिज ॥

वीराभ्यासो २ करसों विलास हो ॥ वीरा पाछे पडसी खवर सहीजी ॥ वीरा मुझने २ देश्यो स्यावासहो ॥ वीरा ॥ वैनडरी वुध मै कसर नहीजी ॥ ६ ॥ रावण निसुणी २ अमृत पीध हो ॥ चित-माही लागी चटपटीजी ॥ वेनड भलीए २ वधाई दीधहो ॥ वैनड वोल्यो भूधव झटपटीजी ॥ ७ ॥ वेनड जासू २ जलदी चालहो ॥ वैनड राम लक्ष्मणने मारसूंजी ॥ वेनड ल्यासू २ सीता रसाल हो ॥ वैनड तिण सगे सुख विलसूंजी ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

५ ॥ राग-उंची हवेलीवालो ॥ ए देशी ॥

वीनवै नरनारो ॥ पाछा नाथ पधारो ॥ सीया वरजीहो ॥ हो जी रघुपतजीहो ॥ आछा भूमिपतजीहो ॥ वीनतडी अवधारो ॥ वीनतडी अवधारो ॥ वनवासै मतिए पधारो ॥ सि. ॥ वी० ॥ टेर ॥ राज करीजे थारो ॥ तुम विन कुण आधारो ॥ सी० १ ॥ शशि विन रजनी कारी ॥ विन दीपक जाग अधारी ॥ सी० ॥ प्रभु विन नगरी सारी ॥ धणिया विन भयकारी ॥ सी० २ ॥ भर्त अयोध्या स्वामी ॥ नहि सोहै अंतरजामी ॥ सी० ॥ अश्व अनूपम होवै ॥ गज भारतो गजनेही सोवै ॥ सी० ॥ ३ ॥ राणीजी वर मांग्यो ॥ राजाजी पण नहि भांग्यो ॥ सी० ॥ आप मुखे फुरमायो ॥ ऋण उतर्‍यो पच नमन भायो ॥ सी० ४ ॥ नाथ विचारो ऊडी ॥ नारी कलहकी कूडी ॥ सी० ॥ सब जन आपने केमी ॥ ओलंभा तुम सिर रेसी ॥ सी० ॥ ५ ॥ परजाराजा नें राणी ॥ विनवै गद २ वाणी ॥ ॥ सी० ॥ म्हरततो विलखाणी ॥ नरसैनें नामें पाणी ॥ सी० ॥ ६ ॥ धार २ अमे वारा ॥ नही मानसो तो रहसा लारा ॥ सी० ॥ इण विध हव सहु करता ॥ राम लार सचरता ॥ सी० ७ ॥ राम कहै मति आवो ॥ निज २ स्थानक जावो ॥ सी० ॥ राज भर्त्त भाई करसी ॥ मारो वचन नही फिरसी ॥ सी० ८ ॥ राम न मानी वातै ॥ तब कहे कोसल्या मातै ॥ सी० ॥ सीता छै कोमल काया ॥ जतन करीयो जाया ॥ सी० ९ ॥ वाटमें धीमा वहियो ॥ तजनै आगै मत जइयो ॥ सी० ॥ मारी निसुत शुध लहियो ॥ आता साथ सदेसो कहियो ॥ सी० ॥ १० ॥ पुरजन पाछा आया ॥ प्रभु तीनू आगे सिधाया ॥ सी. ॥ नथमल गत करमारी ॥ छत्रधारी हुवा वन चारी ॥ सी० ११ ॥

॥ इति ॥

६ ॥ढाल–राग हेलीवालार महेल दीयो वले ॥ ए देशी॥

देखो सहेल्यां, सीरी राजाधिराजा, राम पधारीया, निरखो अजोध्याना नाथ ॥ दे० ॥ टेर ॥ ऊंचे सिंघासन रामजी ॥ सन्मुख लक्ष्मण भ्रात ॥ विहूं पासै हे विहु वधवा ॥ सोभा तो वरणी न जात ॥ दे० १ ॥ हाथ्यारो हलकोहे आगलै ॥ लारै छे घुडलांरी धूम ॥ लक्खापत कपिपत आढढे ॥ साथे राजानीं घणी धूम ॥ दे० २ ॥ सीता विसल्या पटरागनी ॥ आदे राणी बहु लार ॥ मोत्या हीरारा चकडोलमें ॥ केई कासां असवार ॥ दे० ३ ॥ राक्षसी वानरी पलटना ॥ मुग्गल नव २ थाट ॥ गिर छत्र रवि जिम फावतो ॥ चमरांकी उड रही जाट ॥ दे० ४ ॥ दाजै नगारा नैं नोवतां ॥ फर रह्या उतंग निसान ॥ वदीजन जस अति बोलतां ॥ ज्यानें देवै छै नृप दांन ॥ दे० ५ ॥ चांदी सोनारा घोटानें छड्या चालै लाखां छडीदार ॥ बोलै वीदावली गूंजता ॥ अमृत ध्वन धूकार ॥ दे० ६ ॥ सहिये सुहागण सामठी ॥ भर २ मोत्यांना थाल ॥ आवै वधावै महाराजनै ॥ दे आसीस रसाल ॥ दे० ७ ॥ अविचल रहिजो ए सपदा ॥ च्यारु भायांरी है जोड ॥ कोड वरस चिरजीवज्यो ॥ पूरजो प्रजाना कोड ॥ दे० ८ ॥ इणविध प्रभुजी पधारीया ॥ आजोध्यामें कियो प्रवेश ॥ नथमल कहै माया पुण्यनी ॥ कीजो भाई पुण्य विशेष ॥ दे० ९ ॥ इति ॥

७ ॥ राग–असवारीनी ॥

सीयावरकी देखण दो असवारी ॥ परी हो जा, वैरणमारी ॥ रघुपतनी, निरखण दे असवारी ॥ टेर ॥ इकना इक २ परतें ॥ बोलत मुखसे गारी ॥ कौतुक निरखण प्रेम प्रगटियो ॥ शूर बुध

सर्व विसारी ॥ सी० ॥ १ ॥ इचरज कीधा इण अवसरमें ॥ नगर तणी जे नारी ॥ कटिमेखल तो पहियों गलेमें ॥ हार दियो कटिहारी ॥ सी० ॥ २ ॥ मजन छाड अधूरो आज्यो ॥ अजन इकनै नारी ॥ आधो परुस्यो भोजन भाणे ॥ छाड चली भरतारी ॥सी०॥ ॥३॥ सीस गूथावत भाज चली निच ॥ उतावलकी मारी ॥ चूटिया वंध दीये नही पूरे ॥ नाय न वकत विचारी ॥ सी० ॥४॥ इण विध नार उतावल करती ॥ निज २ सायणलारी ॥ उण आगैवा उण आगैवा ॥ भीड मची अति भारी ॥ सी० ॥५॥ धन कौसल्या मात सुमित्रा ॥ जनम्या सुत अवतारी ॥ तात थकी तो भाग सवायो ॥ सूरतरी वलिहारी ॥ सी० ६ ॥ च्यारू भाइ, से जोडै सोहै ॥ सूरत मोहनगारी ॥ इंद्र थका पिण अधिका दीपै ॥ सो गयो गगने हारी ॥ सी० ॥ ७ ॥ इति.

८ ॥ राग—चलित ॥

वेगा जावो गधा बुलावो ॥ लिछमन मान बचावो हो ॥ हनुमत ॥ गद २ वयण राम फुरमावे ॥ छाती भरी २ आवै हो ॥ वे०॥ ॥ १ ॥ लछमन मरें हमभि मरजैहैं ॥ सीया सुन तजे देह ॥ सबके प्राण उबारो ॥ पवन सुत ॥ इतनो सुजस अवलेह ॥ वे० ॥ २ ॥ एतला दिनथो सेवक मारो ॥ आजथी बंधु समान ॥ लछमन जीवाया थी मानू मोरू ॥ दीवो जीत व दान हो ॥ वे० ॥ ३ ॥ लछमनको जलदी, जीवावो तो जानु ॥ कीयो दीर्घ उपगार ॥ दीन वचन रघुनदन दाखै ॥ हो तुम करुणा भडार ॥ वे० ॥ ४ ॥ एम सुणी भामडल हनुमत ॥ बोले सीस नमाय हो ॥ सोच न करीये प्रभु प्रसादे ॥ आना विसल्या उठाय हो ॥ वे० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

९ ॥ राग चलित. ॥

कहत कैकै सुनो श्री राम॥ अविचार्यो कीयो काम॥ तुममे सुत गुणमणि आवास॥ ताको दीयो वनवास॥१॥कौशल्या सौमित्रामाय॥ दोनूंने हुई दुखदाय॥अरु नगरजन दुखी घोर॥ अजस लह्यो जगजोर ॥२॥कलहकारी नारीजात ॥ प्रगट शास्त्रमे वात ॥ कृत्या कृत्य कोन करे विचार ॥ माहा अविवेक आगार ॥ ३ ॥ दोणी सोतो होगइ नाथ ॥ हो नहार के साथ॥ अव तुम होउ समुद्र अगाध ॥ क्षमोमात अपराध ॥ ४ ॥ वीनती ए मुझ वारवार॥ पाछा पुर पाधार ॥ गादी विराज करीजेजी ॥ माहरी तुमनें लाज ॥ ५ ॥ भक्तिवत छे भर्त्त सुभाय ॥ रहसी सेवामाय ॥ मानीजे करुणा भडार ॥ माय तणी मनुहार । ६ ॥

१० ॥ राग चलित ॥

तुम घर जावो मोरा वीर ॥ भरत भाई ॥ तु० ॥ हमभी चलेंगे तुमभि चलोगे ॥ जननी क्यू धर है धीर ॥ भ० १ ॥ मात चिहू की आणमे रहीयो ॥ प्रजाको हरियो पीर ॥ भ० २ ॥ मर्याद भग सगनी चनकी ॥ मत जइयो परदाराकी तीर ॥ भ० ३ ॥ पर धन तोप रोपक पूजनमें ॥ विपत मे धरियो धीर ॥ भ० ४ ॥ पुर जनकी आसीस लीज्यो ॥ कीज्यो जतन शरीर ॥ भ० ५ ॥ लघुबध व प्रिय शत्रुघनकों ॥ मत करियो दिलगार ॥ भ० ६ ॥ जननी जनक अरुवश दिपाज्यो ॥ एही है वात अखीर ॥ भ० ७ ॥ एह वचन सुन भर्त रामके ॥ नेना भरानें नीर ॥ भ० ८ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ नेमचरित्रातर्गत तृतीयोपरि सखी प्रति राजुल वाक्यम् ॥

१ ॥ कवित्तं ॥

शृगारकी चरचं तन केसेरी, आंखकु आज मेंदी दोउ हातें ॥
तरोल करी मुख केसें रगु, भालकु तिलक, नाककु नाथें ॥
चीर बनाय, विलास करू, सखि बात करू रहु कोनके साथे ॥
नेमतो आनेकु नेमकियो, अलि बीज पडो इण तीजके माथे ॥ १

२ ॥ दीप मालिकोपरि राजुल वाक्यम् ॥

मुदर सदिर ढोर मनोहर, चित्र विचित्र किवी चित्रशाली ॥
मेरेतो घोर अधार पिया विन, भावतनां दिलमे दुदिपाली ॥
आठ भवोकी स्नेहकी आथ, वढायनमे भव नाहि सभाली ॥
राजुल कहे सखि आउ दिपालीपें नेम विना मोरे फीकी दिवाली॥ २

३ ॥ होरीपर राजुल वाक्यम्॥

फागुनमेंज मुहागन, भागन खेलत होरि पिया मग गोरी ॥
लाल गुलाल उडात चलात, भरी पिचकारी ॥ अबीरजु घोरी ॥
गावत राग धमाल बजावत ताल कसाल रसाल घनोरी ॥
राजमती कहे नेम विना मेरे, होरि नहीं हिय उठत हेरी ॥ ३ ॥

४ ॥ गण गोर पर राजुल वाक्यं ॥

बालपनैहिते गोरीकू पूजिमैं, गायके गीत शवी सग मोरी ॥
दो वहरी २ आनधरी, नित, व्रत कीये तोही जोरी विखोरी ॥ नाही डरू सजनी इन तैं अब, तूसजहो किनरू सर होरी ॥ नेम तो छोरी गये फिर नावत ॥ गोरि निगोरी कै आगल गोरि ॥ ४ ॥

५ ॥ कवित्वं. ॥

पियकी महिमा सुनके, जलिके सुख, हर्ष वढयो हियरा भरके ॥ कब व्हें दिन आंखिसे देखु, दिदार मनोरथ मार रहा करके ॥ निरखी हरखी प्रभुको जड तें, अरि दाहिण नैन बुरो फुरकै ॥ जगनाथ मिलै न मिलै सजनी ॥ अब कांह कहूं छतियां धरके ॥ ५ ॥

६ ॥ राजमती प्रति सखि वाक्य. ॥

एशी वरात करी जदुनाथनें ॥ इंद्र घटा जिम घोर खरोरी ॥ फैली रही महिमा त्रिहु लोकमें, नेमशोवीद नही दुसरोरी ॥ तोरणपें प्रभु आय गये, अब नाहक क्यू मन लूखो करोरी ॥ कहैत सखी तुम बोलत वाइजी, चूको मति सुख थूंको परोरी ॥ ६ ॥

कीये विलाप बहु मन वालके ॥ चरन ग्रह्यो संसारकूं छोडी ॥ मुक्ति वनीमूं उमाय रहे, प्रभू राजुलसें चितकू लियो चोरी ॥ पीवके पैलियो मुक्ति गई नथमल्ल कहे सती कर्मकूं तोरी ॥ राजलके मन मोद वढयो ॥ शिव शोकको रूप विलोकन कोरी ॥ ७ ॥

॥ इति नेमिचरित्रांतर्गत कवित्व सप्तकम्. ॥

॥ सवैय्या. ॥

(१) नमूं श्री अरिहत ॥ कर्मोको कियो अंत ॥ हुवाशो केवलवत ॥ करुणा भडारी है ॥ अतिशय चौतिसधार ॥ पतीस वाणी उच्चार ॥ समजावे नरनार ॥ परउपगारी है ॥ शरीर सुदर आकार ॥ सुर जेसो झळकार ॥ गुणहै अनत सार ॥ दोष परिहारी है ॥ कहतहें त्रिलोकरिख मन वच काया करी ॥ लुळ लुळ वारवार ॥ वदना हमारी है ॥ १ ॥

(२) सकल करमटाल ॥ वस कर लियो काल ॥ मुगतीमे रय्या माल ॥ आत्माको तारी है ॥ देखत सकल भाव ॥ हुवा है जगतराव ॥ सदाहि क्षायक भाव ॥ भये अविकारी है ॥ अचल अ-

टलरूप ॥ आवे नहि भव कूप ॥ अनुप सरूप उप ॥ ऐसे सिद्ध धारी है ॥ कहत है तिलोकरिख ॥ बताओ ए वास प्रभु ॥ सदाई कगते मुर ॥ वदना हमारी है ॥ २ ॥

(३) गुण है छत्तीसपुर ॥ धरत धरम उर ॥ मारत करमकूर ॥ सुमति विचारी है ॥ शुद्धसो आचारवत ॥ सुदर हे रूपकत ॥ भणिया सविसिद्धत ॥ वांचणी सुप्यारी है ॥ अधिक मधुर वेण ॥ कोइ नहि लोपे केण ॥ सकल जीवाका सेण ॥ कीरत अपारी है ॥ कहत हे तिलोकरिख ॥ हितकारी देत सीख ॥ एसा आचार्ज ताकु ॥ वंदणा हमारी हे ॥ ३ ॥

(४) पढत इग्यारा अग ॥ करमासू करे जंग ॥ पाखंडीको मान भग ॥ करण हुस्यारी है ॥ चऊद पुरवधार ॥ जानत आगम सार ॥ भविनके सुखकार ॥ भ्रमता निवारी है ॥ पढावे भविकजन ॥ थिरकर देतमन ॥ तप करि तावे तन ॥ ममता निवारी हे ॥ कहत हे तिलोकरिख ॥ ज्ञान भानुपरतिख ॥ एसे उपाध्याय ॥ ताकु वदणा हमारी हे ॥ ४ ॥

(५) आदरी सजम भार ॥ करणि करेअपार ॥ सुमति गुपति धार ॥ विकथा निवारि हे ॥ जयणा करे छैकाय ॥ सावद्य न बोले वाय ॥ बुजाई कपायलाय ॥ किरिया भडारी हे ॥ ज्ञान भणे आठों जाम ॥ लेवे भगवत नांम ॥ धरमको करे कांम ॥ ममताको मारी हें ॥ कहत हे तिलोकरिख ॥ करमाको टाले विख ॥ एसा मुनिराज ताकुं ॥ वदणा हमारी हे. ॥ ५ ॥

॥ इति पचपरमेष्ठी देव स्तुतिः ॥

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ
प्रथम खण्डे
व्याख्यानाभिधं सप्तम् प्रकरणम्.

इति श्री

सिद्धान्त शिरोमणि

प्रथम खंड.

॥ समाप्तिः ॥

श्लोकः

रचितमिदममोघं पुस्तकं चारु चारु

प्रकरण बहुभिः श्री कुंदनांघ्रिप्रसादात्

निज गुरु पदिदत्त रामचंद्रेण सर्वं

भवतु किल जिनस्य श्रावकानां विभूत्यै ॥१॥



द्वितीय खंडः ॥



प्रकरण पहिला–नवतत्व ॥



हवे विवेकी सम्यक्त्व दृष्टि जीवने । नव पदार्थ जेहवा छे । ते हवा । तथा रूप बुद्धि प्रमाणे गुरु आम्नायथि धारवा ॥ ते नव पदार्थना नाम कहे छे ॥ जीव तत्व ॥ १ ॥ अजीव तत्व ॥ २ ॥ पुण्य तत्व ॥ ३ ॥ पाप तत्व ॥ ४ ॥ आश्रव तत्व ॥ ५ ॥ संवर तत्व ॥ ६ ॥ निर्जरा तत्व ॥ ७ ॥ बंध तत्व ॥ ८ ॥ मोक्ष तत्व ॥ ९ ॥

॥ अथ जीवतत्वना लक्षण ॥

जीवतत्व ते केहने कहियें ॥ चैतन्य लक्षण ॥ सदा सउपयोगी ॥ असंख्यात प्रदेशी । सुख दुःखनो जाण ॥ सुख दुःखनो वेदक तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ जीवनो एक भेद ॥ सकल जीवोनु चैतन्य लक्षण एक छे ॥ माटे संग्रहनये करि एक भेदे जीव कहिये ।

तथा जीवना दो भेद ॥ त्रस १ अने थावर २ ॥ तथा ॥ सिद्ध ॥१॥ अने ससारी ॥ २ ॥ तथा जीवना तीन भेद ॥ स्त्री वेद ॥ १ ॥ पुरुष वेद ॥ २ ॥ नपुसक वेद ॥ ३ ॥ तथा भव सिद्धिया ॥ १ ॥ अभव सिद्धिया ॥ २ ॥ नो भव सिद्धिया । नो अभव सिद्धिया ॥ ३ ॥ अथ जीवका चार भेद ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ मनुष्य ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा ॥ चक्षु दर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षु दर्शनी ॥ २ ॥ अवधि दर्शनी ॥ ३ ॥ केवल दर्शनी ॥ ४ ॥

॥ अथ जीवना पांच भेद ॥

एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥ ३ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ४ ॥ पचेंद्रिय ॥ ५ ॥ तथा ॥ सयोगी ॥ १ ॥ मन योगी ॥ २ ॥ वचन योगी ॥ ३ ॥ काय योगी ॥ ४ ॥ अयोगी ॥ ५ ॥

॥ अथ जीवना छे भेद ॥

पृथिवी काय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउ-काय ॥ ४ ॥ वनस्पति काय ॥ ५ ॥ त्रस काय ॥ ६ ॥ तथा ॥ स क-षायी ॥ १ ॥ क्रोह कषायी ॥ २ ॥ मान कषायी ॥ ३ ॥ माया कषायी ॥ ४ ॥ लोभ कषायी ॥ ५ ॥ अकषायी ॥ ६ ॥

॥ अथ जीवना सात भेद ॥

नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ तिर्यंचणी ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥ मनुष्यणी ॥ ५ ॥ देवता ॥ ६ ॥ देवी ॥ ७ ॥

॥ अथ जीवना आठ भेद ॥

सलेशी ॥ १ ॥ कृष्ण लेशी ॥ २ ॥ निल लेशी ॥ ३ ॥ कापुत लेशी ॥ ४ ॥ तेजु लेशी ॥ ५ ॥ पद्म लेशी ॥ ६ ॥ शुकल लेशी ॥ ७ ॥ अलेशी ॥ ८ ॥

॥ अथ जीवना नव भेद ॥

पृथवी ॥ १ ॥ अप ॥ २ । तेउ ॥ ३ ॥ वाउ ॥ ४ ॥ वनस्पति ॥ ५ ॥ बेइंद्रिय ॥ ६ ॥ तेइंद्रिय ॥ ७ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ८ ॥ पचेंद्रिय ॥ ९ ॥

॥ अथ जीवना दश भेद ॥

एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥ ३ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ४ ॥ पंचेंद्रिय ॥ ५ ॥ ए ५ ना अपजाप्ता । अने । पजाप्ता । एव दश भेद जाणवा ॥ १० ॥

॥ अथ जीवना इग्यारे भेद ॥

एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥ ३ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ४ ॥ नारकी ॥ ५ ॥ तिर्यंच ॥ ६ ॥ मनुष्य ॥ ७ ॥ भवनपति ॥ ८ ॥ वाणव्यतर ॥ ९ ॥ ज्योतिषी ॥ १० ॥ वैमानिक ॥ ११ ॥

॥ अथ जीवना बारा भेद ॥

पृथवी काय ॥ १ ॥ अपकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पति काय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ ए ६ अपजाप्ता । ने पजाप्ता ॥ एव बारा भेद जाणवा ॥ १२ ॥

॥ अथ जीवना तेरा भेद ॥

कृष्ण लेशी ॥ १ ॥ निल लेशी ॥ २ ॥ कापुत लेशी ॥ ३ ॥ तेजु लेशी ॥ ४ ॥ पद्म लेशी ॥ ५ ॥ शुकल लेशी ॥ ६ ॥ ए ६ अपजाप्ता । अने । पजाप्ता । एव ॥ १२ ॥ अने ॥ एक अलेशी ॥ एव ॥ १३ ॥

॥ अथ जीवना चवदा भेद ॥

सूक्ष्म एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १ ॥ नें प्रजाप्तो ॥ २ ॥ बादर एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ४ ॥ बेइंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ५ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ६ ॥ तेइंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ७ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ८ ॥ चउरिंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ९ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥ असंज्ञी पचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १२ ॥ सज्ञी पचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १४ ॥ एव जघन्य जीवना चवदा भेद जांणवा ॥

॥ अथ उत्कृष्ठ जीवना पांचसो त्रेसट (५६३) भेद कहे छे ॥ तेमा नारकीना १४ भेद ॥ तिर्यंचना ४८ भेद ॥ मनुष्यना ३०३ भेद ॥ देवताना १९८ भेद ॥ एव सर्व मिली (५६३) भेद जांणवा ॥

॥ हिवे नारकीना १४ भेद कहे छे ॥

॥ सात नारकीकें नाम ॥

रत्नप्रभा ॥ १ ॥ सर्कर प्रभा ॥ २ ॥ वालु प्रभा ॥ ३ ॥ पक प्रभा ॥ ४ ॥ धूम्र प्रभा ॥ ५ ॥ तम प्रभा ॥ ६ ॥ तमातम प्रभा ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ रत्नप्रभा किसको कहिये ॥ पेहली नारकीमें १६००० योजनको १ एक रत्नकरड हैं ॥ जिसकी प्रभा पडती है । जिसको रत्नप्रभा कहते हैं ॥ दुसरीमें तीक्ष्ण ककर है । जिसको सर्करप्रभा कहते हैं ॥ तिसरीमे तपतपती धूल हैं । जिसको वालु प्रभा कहते हैं ॥ चौथीमें कर्दम हैं । जिसको पक प्रभा कहते है ॥ पाचवीमें धुंवा है ।

जिसको धूम्रप्रभा कहते हैं ॥ छठीमें अधारा है। जिसको तमप्रभा कहते हैं॥ सांतवीमें महान् अधारा है। जिसको तमातम प्रभा कहते हैं॥ ये सात नारकीना अप्रजाप्ता अने प्रजाप्ता॥ एव चौदो भेद जाणवा॥

॥ अथ सात नारकीनो यंत्र करी नाम गोत्रादि दिखाते हैं॥

नारकी	नारकी नाम	नारकीना गोत्र	नारकीना पिंड	नारकी-रा पाथडा	नारकी-रा आंतरा	नरका वासा
१	घमा	रत्न प्रभा	१८००००	१३	१२	३००००००
२	वसा	सर्कर प्रभा	१३२०००	११	१०	२५०००००
३	सीला	वालु प्रभा	१२८०००	९	८	१५०००००
४	अंजना	पंक प्रभा	१२००००	७	६	१००००००
५	अरीठा	धूम्र प्रभा	११८०००	५	४	३०००००
६	मघा	तम प्रभा	११६०००	३	२	९९९९५
७	माघवती	तमातमप्रभा	१०८०००	१	नथी	५

॥अथ तिर्यचना ४८ भेद कहे छे॥

बेइंद्रियना २ भेद ॥ अप्रजाप्ता १ प्रजाप्ता २ ॥ तेइंद्रियना २ भेद॥ अप्रजाप्ता १ प्रजाप्ता २ ॥ चउरिंद्रियना २ भेद ॥ अप्रजाप्ता १ प्रजाप्ता २ ॥ एव ६ ॥

॥ अथ पंचेंद्रियना २० भेद कहे छे ॥

जिस्का मूल भेद २ । सम्मूर्छिम (१) गर्भेज (२) गर्भेजरा-मूल भेद(५)जलचर(१)स्थलचर (२)खेचर(३)उर्पर (४) भुजपर (५)

(१) जलचर किसको कहिये ॥ जलमे उपजे ते जलचर ॥ कच्छ । मच्छ । इत्यादि अनेक नाम जाणवा ॥

(२) स्थलचर किसको कहिये ॥ पृथ्वीपर चाले ते स्थलचर ॥ जिसका ४ भेद ॥ गंडी पदा । सनह पदा ॥ गंडी पदा ते गेंडा हाथी प्रमुख अनेक नाम जाणवा ॥ सनह पदा ते सिंह–श्वान प्रमुख अनेक नाम जाणवा ॥

इखुरा ॥ दुखरा ॥ इखुरा ते अश्व–खर और खचर इत्यादि ॥ दुखुरा ते गाय–भेंस–बैल–मृग इत्यादि अनेक नाम जाणवा ॥

(३) खेचर किसको कहिये ॥ आकाशमे चाले ते खेचर ॥ जिसका चार भेद ॥ रोम पखी ॥ १ ॥ चर्म पखी ॥ २ ॥ समुग पखी ॥ ३ ॥ वितत पखी ॥ ४ ॥

रोमपखी ते रोमवाली पांखां ॥ सुवटो–मैना–कोयल–हंस चिडी–कमेडी–इत्यादि अनेक नाम जाणवा ॥

चर्मपखी ते चामडारी पांखा ॥ वागल–चमचेड इत्यादि अनेक नाम जाणवा ॥ समुग पंखी ते डाबाराढकणा सरीखी पाखा ॥

विततपखी ते अरटियारी ताडियां सरिखी पाखां ॥ अढाई द्वीपमें तो चर्मपखी–रोमपखी ए २ जातना पंखी छे ॥ अने अढाई द्वीपके बारे न्यारुई जातना पखी है ॥

(४) उरपर किसको कहिये ॥ पेटसे चाले ते उरपर ॥ उरपरमे सर्प इत्यादि जाणवा ॥

(५) भुजपर ते भुजासे चाले ॥ भुजपरमे नौलिया-किरकांटिया--कोल--गूसा इत्यादि जाणवा ॥ ए पांच सन्नी--पांच असन्नी॥ इनका अपजाप्ता अने पजाप्ता ॥ एव २० ॥

॥ अथ एकेंद्रियना २२ भेद कहे छे ॥

पृथ्वी कायना ४ भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ अने वादर २ ॥ अपजाप्ता ३ ॥ पजाप्ता ४ ॥ अपकायना चार भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ वादर २ ॥ अपजाप्ता ३ ॥ पजाप्ता ४ ॥ तेउकायना चार भेद ॥ सूक्ष्म १॥ वादर २ ॥ अपजाप्ता ३ ॥ पजाप्ता ४ ॥ वाउकायना चार भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ वादर २ ॥ अपजाप्ता ३ ॥ पजाप्ता ४ ॥ वनस्पति कायना छे भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ साधारण २ ॥ अने प्रत्येक ३ ॥ ए तीनोका अपजाप्ता अने पजाप्ता ॥ एवं सर्व मिली तिर्यंचना ४८ भेद जाणवा ॥

॥ अथ मनुष्यना ३०३ भेद कहे छे ॥

॥ १५ ॥ कर्म भूमिना मनुष्य ॥ ३० ॥ अकर्मभूमिना मनुष्य ॥ ५६ ॥ अंतरद्वीपना मनुष्य ॥ एव ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना गर्भेज मनुष्यना ॥ अपजाप्ता नें पजाप्ता ॥ एवं ॥ २०२ ॥ ने एकसोने एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्यना अपजाप्ता ॥ एव ॥ ३०३ ॥ भेद मनुष्यना ॥ हिवे कर्म भूमि ते कहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृषी ॥ ३ ॥ ए ३ प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्म भूमिनां मनुष्य कहिये ॥ ते कर्म भूमिना क्षेत्र केटला छे ॥ ५ ॥ भरत ॥ ५ ॥ इरवत ने ॥ ५ ॥ महा

विदेह । एव ॥ १५ ॥ ते कर्म भूमि किहा छे ॥ एकलाख योजननो जंबुद्विप छे ॥ तेहमां ॥ १ ॥ भरत ॥ १ ॥ इरवर्त ॥ १ ॥ महाविदेह ए ३ क्षेत्र कर्म भूमिना जबुद्विपमां छे ॥ तेहने फरतो ॥ बे लाख योजननो लवण समुद्र छे ॥ तेहने फरतो चार लाख योजननो धातकी खडद्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ ॥ भरत ॥ २ ॥ इरवत ॥२॥ महाविदेह छे ॥ तेहने फरतो ॥ ८ ॥ लाख योजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥ तेहने फरतो ॥ ८ ॥ लाख योजननो । अर्ध पुष्करद्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ भरत ॥ २ इरवर्त ॥ २ महाविदेह छे ॥ एव । ३ दु ॥ १२ ॥ ने ॥ ३ ॥ पनर कर्म भूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे ३० अकर्म भूमिना मनुष्य कहे छे ॥ अकर्म भूमि ते केहने कहिये ॥ ३ कर्म रहित दश प्रकारना कल्पवृक्षे करीने जीवे तेहने अकर्म भूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केटला छे ॥ ५ ॥ हेमवय ॥ ५ ॥ हिरणवय ॥ ५ ॥ हरिवास ॥ ५ ॥ रमकवास ॥ ५ ॥ देवकुरु ॥ ५ ॥ नुतर कुरु ॥ एव ॥ ३० ॥ हवे जंबुद्विपमा ॥ १ हेमवय ॥ १ हिरणवय ॥ १ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ १ देवकुरु ॥ १ नुतर कुरु ॥ एव ॥६॥ क्षेत्र जबुद्विपमां छे ॥ धातकि खडमां बे बे जाणवा ॥ एवं ॥ १८ ॥ अर्द्ध पुष्कर द्विपमा बे बे जाणवा ॥ एवं ॥ ३० ॥ अकर्म भूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे छपन अंतरद्विपना मनुष्य कहे छे ॥ जंबुद्विपना भरत क्षेत्रनि मर्यादानो करणहार ॥ चुल हिमवत नामा पर्वत छे ॥ ते पीला सोनामय छे ते सो योजननो उचो छे ॥ सो गाउनो उंडो छे ॥ एक हजार बावन योजनने बारे कलानो पहोलो छे ॥ चोविश हजार नवशें बत्रिश जोजननो लांबो छे ॥ तेहने पूर्व पश्चिमने छेहडे बे बे डाढा निकली छे ॥ एकेकि डाढा चोराशीशें–चेराशीशें जोजननी झाझेरी लांबी छे ॥ ते एकेकि डाढा उपरे ॥ सात-सात अतरद्विपा छे ॥ ते अतरद्विपा किहा छे ॥ जगतिना कोट

थकी ।। ३०० ।। जोजन लवण समुद्रमां जाइये ।। तिवारे पहेलो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ।।३००।।जोजननो लांबो ने पहोळो छे ।। तिहाथी ।। ४०० ।। जोजन जाइये ।। तिवारे बिजो अंतरद्विपो आवेते ।। ४००।। जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ तिहांथि ।। ५०० ।। जोजन जाइये तिवारे ।। त्रिजो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ।। ५०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ।। तिहाथि ।। ६०० ।। जोजन जाइये तिवारे ॥ चोथो अंतरद्विपो आवे ते ।। ६०० ।।जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ तिहाथी ॥ ७०० ।। जोजन जाइये तिवारे ।। पांचमो अंतरद्विपो आवे ।। ते ।। ७०० ।। जोजननो लांबो ने पहोळो छे ।। तिहांथी ।। ८०० ।। जोजन जाइये तिवारे ।। छठो अंतरद्विपो आवे ।। ते ।। ८०० ।। जोजननो लांबो ने पहोळो छे ।। तिहांथी ।। ९०० ।। जोजन जाइये तिवारे ।। सातमो अंतरद्विपो आवे ।।ते॥ ९०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ।। एव । सात चोक ॥ २८ ।। अंतरद्विपा जाणवा ॥ एमज इरवर्त क्षेत्रनी मर्यादानो करणहार शिखरी नामा पर्वत छे ॥ ते चुल हिमवंत शरिखो जाणवो ॥ तिहा पण ॥ २८ ॥ अंतरद्विपा छे ॥ अठाविश दु ॥ ५६ ॥ अंतरद्विपा जाणवा ॥ अंतरद्विपाना मनुष्य ते केहने कहिये ॥ हेठे समुद्र छे ॥ अने उपर अधर डाढामां द्विपाना रहेनार छे ।। माटे अंतर द्विपाना मनुष्य कहिये ।। हिवे ।। १०१ ॥ क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्य ।।१४।। स्थानकमां उपजे छे ते कहे छे ।। उचारे सुवाते–वडिनितमां उपजे ॥ १ ।। पासवणे सुवाते–लघुनितमां उपजे ।। २ ।। खेले सुवाते–बलखामां[1] उपजे ।। ३ ।। सघाणे सुवाते–लिटमां[2] उपजे ।। ४ ।। वते सुवाते–वमनमां ऊपजे ।। ५ ।। पीते सुवाते–निला पिला पीतमां उपजे ।। ६ ।। पुइएसुवाते–परूमां[3] उ-

१–खेंखार २–नाकनो मैल ३–रसी

पजे ॥ ७ ॥ सोणिए सुवाते–रुद्धिरमां उपजे ॥ ८ ॥ सुक्के सुवाते–विर्यमां उपजे ॥ ९ ॥ सुक पोगल परिसाडिए सुवाते–विर्यादिकना पुद्गल सुकाणा ते फिरि भिना थाय तेहमां उपजे ॥ १० ॥ विगय-जीव कलेवरे सुवाते–मनुष्यना कलेवरमां उपजे ॥ ११ ॥ इत्थि पुरिस सजोगे सुवाते–स्त्री पुरुषना संजोगमां उपजे ॥ १२ ॥ नगर निधमणे सुवाते–नगरनी खालोमां उपजे ॥ १३ ॥ सव्वे सुचेव असुइठाणे सुवाते–सर्व मनुष्य सवधि अशुचि स्थानकोंमां उपजे ॥ १४ ॥ एवं ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्य अमजाप्ता ॥ एव सर्व मिली ॥ ३०३ ॥ भेद मनुष्यना कह्या ॥

॥ हिवे देवताना १९८ भेद कहे छे ॥

मूळ भेद चार ॥ भवनपति (१) वाणव्यतर (२) ज्योतिषी (३) विमानिक (४)

उत्तरभेद (१९८) ते कहे छेः–भवन पतिना दस भेद–असुर कुमार (१) नाग कुमार (२) सुवर्ण कुमार (३) अग्नि कुमार (४) विद्युत् कुमार (५) दीप कुमार (६) उदधि कुमार (७) दिशा कुमार (८) पवन कुमार (९) स्तनित कुमार (१०)

॥ हिवे १५ परमाधामी कहे छे ॥

अंबे (१) अंबरसे (२) सामे (३) रुद्दे (४) विरुद्दे (५) काले (६) महाकाले (७) सबळे (८) धनु (९) कुंभे (१०) वालु (११) वैतरणी (१२) असिपत्ते (१३) खरस्वर (१४) महाघोषे (१५)

॥ हिवे सोळे प्रकारके वाणव्यंतर देव कहे छे ॥

पिशाच्च (१) भूत (२) यक्ष (३) राक्षस (४) किन्नर (५) किं-

पुरुष (६) महोरग (७) गंधर्व (८) आणपन्नी (९) पाणपन्नी (१०) इसीवाई (११) भुईवाई (१२) कंदिय (१३) महाकंदिय (१४) कोहंड (१५) पयग देव (१६)

॥ हिवे दस प्रकारके तिर्यक् जंभका देव कहे छे ॥

आण जंभका (१) पाण जभका (२) लयन जभका (३) सयन जंभका (४) वत्थ जभका (५) फल्ल जमका (६) पुष्फ जमका (७) फल पुष्फ जभका (८) अग्गी जभका (९) वीह्य जभका (१०)

॥ हिवे दस प्रकारके ज्योतिषी देव कहे छे ॥

चंद्रमा (१) सूर्य (२) ग्रह (३) नक्षत्र (४) तारा (५) ए ५ चर ते अढिद्विपमां छे ॥ नें ५ स्थिर ते अढिद्विप बाहिर छे ॥ एवं ॥ १० ॥

॥ हिवे तीन प्रकारके किल्विपि देव कहे छे ॥

त्रण पलिया ॥१॥ त्रण सागरिया ॥२॥ तेर सागरिया ॥३॥

॥ हिवे नव लोकांतिक कहे छे ॥

सारस्वत (१) आदित्य (२) विन्हि (३) वरुण (४) गर्दतोया (५) तोपिया (६) अव्याबाधा (७) अगिचा (८) रिष्ठ (९)

॥ हिवे बारे देवलोक कहे छे ॥

सुधर्म (१) इशान (२) सनत्कुमार (३) माहेंद्र (४) ब्रह्म लोक (५) लंतक (६) महाशुक्र (७) सहस्रार (८) आणत (९) प्राणत (१०) आरण (११) ~

॥ हिवे नव ग्रीवेक कहे छे ॥

भद्दे (१) सुभद्दे (२) सुजाए (३) सुमाणसे (४) पियदर्शणे (५) सुदर्शने (६) आमोहे (७) सुपडिवद्धे (८) जशोधरे (९)

॥ हिवे पांच अनुत्तर विमान कहे छे ॥

विजय (१) विजयत (२) जयत (३) अपराजित (४) सर्वार्थसिद्ध (५)

चौदे नारकीना ४८–तिर्यचना ३०३–मनुष्यना १९८–देवताना एव सर्व मिली ५६३ जीवना भेद जाणवा ॥

॥ इति जीवतत्व समाप्त ॥

॥ अथ अजीवतत्व कहे छे ॥

अजीव किसको कहिये ॥ अजीव जड लक्षण सुख दुखने जाणे नही, साता असाता, वेदे नही, उपयोग रहित, परजा माण रहित, जिसको अजीवतत्व कहिये ॥

॥ अजीवतत्वके जगन्य १४ भेद ॥

धर्मास्तिकायका ३ भेद ॥ स्कंध (१) देश (२) प्रदेश (३) अधर्मास्तिकायका ३ भेद ॥ स्कध (१) देश (२) प्रदेश (३) आकाशस्तिकायका ३ भेद ॥ स्कध [१] देश [२] प्रदेश [३] एव [९] दसमो काल ॥ ए (१०) भेद अरुपि अजीवना कह्या ॥ हिवे रुपि अजीवना (४) भेद कहे छे ॥ पुद्गलास्तिकायका (४) भेद ॥ स्कध (१) देश (२) प्रदेश (३) परमाणु पुद्गल (४) एव ॥ १४ ॥

॥ उत्कृष्ट अजीवतत्वका (५६०) भेद तेहमा (३०) भेद अजीव अरूपीना कहे छे ॥

धर्मास्तिकाय-द्रव्य थकी एक द्रव्य (१) क्षेत्रथकी लोक प्रमाणे (२) काल थकि अनादि अनंत (३) भावथकि अवर्णे अगंधे--अरसे-अफासे-अमूर्ति [४] गुणथकि चलण सहाय [५] अधर्मास्ति काय--द्रव्यथकी एक द्रव्य [६] क्षेत्रथकि लोक प्रमाणे [७] कालथकि अनादि अनत [८] भावथकि अवर्णे-अगंधे-अरसे--अफासे--अमूर्ति [९] गुण थकि स्थिर सहाय [१०] आकाशास्ति काय-द्रव्यथकि-एक द्रव्य [११] क्षेत्रथकि लोकालोक प्रमाणे [१२] काल थकि अनादि अनत (१३) भावथकि अवर्णे--अगंधे--अरसे--अफासे--अमूर्ति [१४] गुण थकी ॥ अवगाहनादान [१५] हिवे काल--द्रव्यथकी अनेक द्रव्य [१६] क्षेत्रथकि-अढिद्विप प्रमाणे [१७] काल थकी-अनादि अनत [१८] भावथकि अवर्णे-अगंधे-अरसे-अफासे-अमूर्ति [१९] गुणथकि वर्तना लक्षण [२०] एव ॥ २० ॥ और धर्मास्ति अधर्मास्ति आकास्ति इन तीनोके तीन तीन भेद अने एक काल एव सर्व मिली अरूपि अजीवना [३०] भेद कह्या ॥

हिवे रूपि अजीवना [५३०] भेद कहे छे ॥

वर्ण पांच—काळो [१] नीलो [२] रातो [३] पीलो [४] धोळो [५] एक एकेका वर्णमाही वीस वीस भेद लाभे ॥ ते कहे छे ॥ दोय २ गध-पाच ५ रस-पाच ५ सठाण-आठ ८ स्पर्श एव वीस [२०] पचा शो ॥ १०० ॥

हिवे गध दोय २ ॥ ते दुर्गंध [१] सुगध [~

मांही तेवीस तेवीस भेद लाभे-पांच ५ वर्ण, पांच ५ रस, पांच ५ सठाण, आठ ८ स्पर्श एव २३ दु-छियालीस [४६].

हिवे रस पांच ५-तीखो [१] कडुवो (२) कषायलो [३] खाटो [४] मीठो (५) एकेका रसमाही वीसवीस भेद लाभे–पांच ५ वर्ण, दोय २ गंध, पांच ५ सठाण, आठ ८ स्पर्श एवं वीस पचा सो [१००]

हिवे संठाण पाच ५–परिमडल सठाण (१) वटसंठाण (२) त्रंस सठाण (३) चौरस संठाण (४) आयतन सठाण (५) एकेका सठाणमाही वीस वीस भेद लाभे–पांच ५ वर्ण, दोय २ गध, पाच ५ रस, आठ ८ स्पर्श एव वीस पचा सो (१००)

हिवे स्पर्श ८ आठ -खरखरो (१) सुंहालो (२) हलको (३) भारी (४) ठंडो (५) ऊनो (६) लुखो (७) चोपडयो (८) एकेका स्पर्शमाही तेवीस तेवीस भेद लाभे-५ पाच वर्ण, २ दोय गंध ५ पांच रस, ६ छे स्पर्श, ५-पाच सठाण* एवं (२३) तेवीस अठा (१८४)

एवं सो (१००) वर्णना--छिंवालीस (४६) गधना–सो (१००) रसना–सो (१००) सठाणना एकसो चैाराशी (१८४) स्पर्शना ए पाचशे तीस [५३०] अजीव रूपीना और तीस [३०] अजीव अरूपीना [जे पूर्व कह्या ते] सर्व मिली (५६०) अजीवना भेद जाणवा ॥

॥ इति अजीव तत्व समाप्तम् (२) ॥

---

* खरखरामे–खरखरो और सुहालो ए दोय स्पर्श वर्जवा-एम

॥ अथ पुण्य तत्व कहे छे ॥

पुण्य तत्व ते दुःखे दुःखे बांधे सुखे सुखे भोगवे जिसको पुण्य तत्व कहिये ॥

पुण्य तत्वके जघन्य नव [९] भेद ते कहे छेः—

अन्न पुन्ने [१] पाण पुन्ने [२] लयण पुन्ने (३) सयण पुन्ने (४) वत्थ पुन्ने (५) मन पुन्ने [६] वचन पुन्ने [७] काय पुन्ने (८) नमस्कार पुन्ने (९)

ए (९) नव भेदे पुण्य उपार्जे और उत्कृष्टा (४२) भेदे पुण्य भोगवे ते कहे छेः—

शाता वेदनीय (१) उच्च गोत्र (२) मनुष्य गति (३) मनुष्यानुपूर्वी (४) देवतानि गति (५) देवानुपूर्वी (६) पचेंद्रियनि जाति [७] उदारिक शरिर [८] वैक्रेय शरिर (९) अहारक शरिर (१०) तैजस शरिर (११) कार्मण शरिर (१२) उदारिकना अग उपांग [१३] वैक्रेयना अग उपांग (१४) आहारकना अग उपांग (१५) वज्ररिषभ नाराच संघयण [१६] समचउरश सठाण [१७] शुभवर्ण (१८) शुभगध (१९) शुभरस (२०) शुभस्पर्श (२१) अगुरु लघुनाम (२२) पराघात नाम (२३) उस्वास नाम [२४] आताप नाम (२५) उद्योत नाम (२६) शुभ चालवानि गति (२७) निर्माण नाम (२८) त्रस नाम (२९) बादर नाम (३०) प्रजाप्त नाम (३१) प्रत्येक नाम (३२) स्थिर नाम [३३] शुभ नाम (३४) सौभाग्य नाम (३५) सुस्वर नाम (३६) आदेय नाम (३७) जशो कीर्ति नाम (३८) देवतानुं आउपू (३९) मनुष्यनु आउपू (४०)

गल वत् (४१) तिर्थंकर नामकर्म ॥ ४२ ॥ एव (४२) भेद पुण्यना जाणवा ॥

॥ इति पुण्य तत्व समाप्नम् ॥ ३ ॥

अथ पाप तत्व कहे छे ॥

पाप तत्व ते सुखे सुखे बाधे और दुःखे दुःखे भोगवे जिसको पाप तत्व कहिये ॥

पाप तत्वके जघन्य अढारा (१८) भेद.—

प्रणातिपात (१) मृषावाद (२) अदत्तादान (३) मैथुन (४) परिग्रह (५) क्रोध (६) मान (७) माया (८) लोभ (९) राग (१०) द्वेष (११) कलह (१२) अभ्याख्यान (१३) पैशून्य (१४) परपरिवाद (१५) रति अरति (१६) माया मोसो (१७) मिछादंसण सल्ल(१८)

ए अढारे प्रकारे पाप उपार्जे और उत्कृष्टा (८२) प्रकारे पाप भोगवे ॥ ते कहे छेः—

मतिज्ञानावरणिय (१) श्रुतज्ञानावरणिय (२) अवधिज्ञानावरणिय (३) मनपर्जव ज्ञानावरणिय (४) केवलज्ञानावरणिय [५] दानांतराय (६) लाभांतराय (७) भोगांतराय (८) उपभोगांतराय (९) वीर्यांतराय (१०) निद्रा (११) निद्रानिद्रा (१२) प्रचला (१३) प्रचला प्रचला (१४) थीणद्धिनिद्रा (१५) चक्षु दर्शनावरणिय (१६) अचक्षु दर्शनावरणिय (१७) अवधि दर्शनावरणिय (१८) केवल दर्शनावरणिय (१९) निच गोत्र (२०) वेदनीय [२१] मिथ्यात्व मोहनिय (२२) [२३] [२४] अप्रजा-

ापणु [२५] साधारणपणु [२६] अस्थिर नाम [२७] अशुभ नाम [२८] दौर्भाग्य नाम [२९] दुःस्वर नाम (३०) अनादेय नाम [३१] अजशोकीर्ति नाम (३२) नरकनि गति [३३] नरकनु आउपू [३४] नरकानुपूर्वी (३५) अनंतानुबंधि क्रोध (३६) मान (३७) माया (३८) लोभ (३९) अपच्चखाणावरणिय क्रोध (४०) मान (४१) माया (४२) लोभ (४३) पच्चखाणावरणिय क्रोध (४४) मान (४५) माया (४६) लोभ (४७) सजलनो क्रोध (४८) मान (४९) माया (५०) लोभ (५१) हास्य (५२) रति (५३) अरति (५४) भय (५५) शोक [५६] दुगछा (५७) स्त्रीवेद (५८) पुरुषवेद [५९] नपुंसकवेद (६०) तिर्यंचनी गति [६१] तिर्यंचनी अनुपूर्वी (६२) एकेंद्रियपणु (६३) बेइंद्रियपणु (६४) तेइंद्रियपणुं [६५] चउरिंद्रियपणु (६६) अशुभ चालनानी गति (६७) उपघात नामकर्म (६८) अशुभ वर्ण (६९) अशुभ गंध(७०) अशुभ रस (७१) अशुभ स्पर्श (७२) ऋषभ नाराच सघयण (७३) नाराच सघयण (७४) अर्द्धनाराच सघयण (७५) किलिका सघयण (७६) छेवट्ठ सघयण (७७) निगोह परिमंडल सठाण (७८) सादियो सठाण (७९) वामन सठाण (८०) कुब्ज सठाण (८१) हुडक सठाण (८२) एव (८२) भेद पाप तत्वना जाणवा ॥

॥ इति पापतत्वं समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ आश्रव तत्व कहे छे ॥

आश्रव तत्व किसको कहिये ॥ जीवरूपीयो तलाव कर्म रूपीयो पानी आश्रवरूपी नाला करीनें आवे जिसको आश्रव तत्व कहीये॥

आश्रव तत्वके जघन्य वीम (२०) भेदः—

मिथ्यात्व आश्रव [१] अव्रत आश्रव [२] प्रमाद आश्रव

गल वत् (४१) तिर्थंकर नामकर्म ॥ ४२ ॥ एव (४२) भेद पुण्यना जाणवा ॥

॥ इति पुण्य तत्व समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ पाप तत्व कहे छे ॥

पाप तत्व ते सुखे सुखे बांधे और दुःखे दुःखे भोगवे जिसको पाप तत्व कहिये ॥

पाप तत्वके जघन्य अढारा (१८) भेदः—

प्रणातिपात (१) मृषावाद (२) अदत्तादान (३) मैथुन (४) परिग्रह (५) क्रोध (६) मान (७) माया (८) लोभ (९) राग (१०) द्वेप (११) कलह (१२) अभ्याख्यान (१३) पैशून्य (१४) परपरिवाद (१५) रति अरति (१६) माया मोसो (१७) मिछादंसण सल्ल(१८)

ए अढारे प्रकारे पाप उपार्जे और उत्कृष्टा (८२) प्रकारे पाप भोगवे ॥ ते कहे छेः—

मतिज्ञानावरणिय (१) श्रुतज्ञानावरणिय (२) अवधिज्ञानावरणिय (३) मनपर्जव ज्ञानावरणिय (४) केवलज्ञानावरणिय [५] दानांतराय (६) लाभांतराय (७) भोगांतराय (८) उपभोगांतराय (९) वीर्यांतराय (१०) निद्रा (११) निद्रानिद्रा (१२) प्रचला (१३) प्रचला प्रचला (१४) थीणद्धिनिद्रा (१५) चक्षु दर्शनावरणिय (१६) अचक्षु दर्शनावरणिय (१७) अवधि दर्शनावरणिय (१८) केवल दर्शनावरणिय (१९) निच गोत्र (२०) अशाता वेदनीय [२१] मिथ्यात्व मोहनिय (२२) स्थावरपणुं [२३] सूक्ष्मपणुं [२४] अपजा-

अथ संवर तत्व कहे छे ॥

संवर तत्व किसको कहिये ॥ जीवरूपी तलाव, कर्मरूपी पानी, आश्रव रुपिया नाला करी आवतांने रोके जिसको संवर तत्व कहिये ॥

संवर तत्वके जघन्य वीस (२०) भेदः—

समकित संवर [१] व्रतपच्चखाण संवर [२] अप्रमाद संवर (३) अकषाय संवर (४) शुभजोग संवर (५) प्रणातिपात–ते जीवकी हिंसा नही करे तो संवर (६) मृषावाद–ते झूठ नही बोले तो संवर (७) अदत्तादान–ते चोरी नही करे तो संवर (८) मैथुन नही सेवे तो संवर (९) परिग्रह नही राखे तो संवर (१०) श्रोत्रेंद्रिय वश करे तो संवर (११) चक्षुइंद्रिय वश करे तो संवर (१२) घ्राणेंद्रिय वश करे तो संवर (१३) रसेंद्रिय वश करे तो संवर (१४) स्पर्शेंद्रिय वश करे तो संवर (१५) मन वश करे तो संवर (१६) वचन वश करे तो संवर (१७) काया वश करे तो संवर (१८) भंड उपगर्ण जयणासें लेवे जयणासे मुके तो संवर (१९ सुई कुसग जयणासे लेवे जयणासें मुके[1] तो संवर (२०)

उत्कृष्टा (५७) भेदः—

इर्या सुमति (१) भाषा सुमति (२) एषणा सुमति (३) आयाण भंडमत्त निखेवणा सुमति (४) उच्चार पास वण खेल जल सिंघाण पारिठावणीया सुमति (५) ॥ ए ॥ ५ ॥ सुमति ॥ अने ॥ (३) गुप्ति ॥ मन गुप्ति (१) वचन गुप्ति (२) काय गुप्ति (३) ॥ ए (८) हिवे

१–मेले

[३] कषाय आश्रव [४] अशुभजोग आश्रव [५] प्राणातिपात आश्रव [६] मृषावाद आश्रव [७] अदत्तादान आश्रव [८] मैथुन आश्रव [९] परिग्रह आश्रव [१०] श्रोतेंद्रिय वसंन करे तो आश्रव [११] चक्षुइंद्रिय वसन करे तो आश्रव [१२] घ्राणेंद्रिय वसन करे तो आश्रव [१३] रसेंद्रिय वसन करे तो आश्रव [१४] स्पर्शेंद्रिय वसन करे तो आश्रव (१५) मन वसन करे तो आश्रव [१६] वचन वसन करे तो आश्रव (१७) काय वसन करे तो आश्रव (१८) भड उपगर्ण अज्जयणासें लेवे अज्जयनासें मेले तो आश्रव (१९) सुई कुसग अज्ञयणासे लेवे ओर अज्ञयणासे मेले तो आश्रव (२०)

उत्कृष्टा (४२) भेदः—

पांच (५) आश्रव ओर पांच (५) इंद्रियके भेद (पूर्व कथा जे) एव दस (१०) क्रोध (११) मान (१२) माया (१३) लोभ (१४) और तीन (३) अशुभ जोग ते मन (१५) वचन (१६) काया (१७) और (२५) क्रिया तेहना नांमः—

कायिया (१८) अधिगरणिया (१९) पाउसिया (२०) पारितावणिया (२१) पाणाइ वाईया (२२) आरंभिया (२३) परिग्गहिया (२४) मायावत्तिया (२५) अपच्चखाणवतिया (२६) मिछादंशणवत्तिया (२७) दिठीया (२८) पुठिया (२९) पाडुचिया (३०) सामतो वणिया (३१) नेसथिया (३२) सहथिया (३३) अणवणिया (३४) विदारणिया (३५) अणाभोगी (३६) अणवकंखवतिया (३७) अनापउगी (३८) सामुदाणी [३९] पेजवतिया [४०] दोसवतिया (४१) इरियावहिया क्रिया (४२) एव (४२) भेद आश्रव तत्वनों जाणवा ॥

॥ इति आश्रव तत्व समाप्तम् ॥ ५ ॥

निर्जरा तत्वके जघन्य (१२) भेदः–

अनसण (१) अणोदरी (२) भिक्षाचरी (३) रस परित्याग (४) काय क्लेश (५) पडिसलीणया (६) ए ॥ ६। भेद बाह्य तपना कह्या ॥ हिवे ॥ ६ ॥ भेद अभ्यंतर तपना कहे छे। प्रायश्चित्त [७] विनय [८] वेयावच [९] सजाय [१०] ध्यान [११] काउसग्ग [१२] ए ॥ १२ ॥

हिवे विस्तार करी निर्जराना भेद कहे छेः–

[१] अनसण–ते तीन (३) अहार तथा चार [४] अहारको त्याग करे ॥ तिणरा दोय [२] भेद ॥ ईतरिय [१] और आव[२]। ईतरिय–ते उपवासादि छै-महिने तक तप करे जिणने ईतरिय कहिये ॥ १ ॥ आव–ते जाव जीवतक अहारनो त्याग करे जिणने आव कहिये ॥ २ ॥

तिणरा (२) भेद ॥ पादोपगमन (१) भक्त प्रत्याख्यान (२) पादोपगमन किणने कहिये । पडिया वृक्षनी डालनी परे हाले चाले नही । जिणरा (२) भेद । व्याघात थकी (१) निरव्याघात थकी (२) ॥ व्याघात–ते उपद्रव उपज्यां करे (१) निरव्याघात–ते विना उपद्रव उपज्यांही करे (२) चोविहारनें पडिक्रमणा रहित । भगत प्रत्याख्यान–ते तीन अहारका तथा चार अहारका त्याग करे। तिणरा (२) भेद । व्याघात थकी (१) नें । निरव्याघात थकी करे [२] ॥ हलन चलनकी क्रिया करे। पडिकमणा सहित सथारो करे जिणनें भगत प्रत्याख्यान कहीजें ॥ २ ॥ इति अणसण ॥ १ ॥

(२२) परिसह कहे छे ॥ क्षुधा परिसह (१) तृषा परिसह (२) शीत परिसह (३) ताप परिसह (४) दश मश परिसह [५) अचेल परिसह (६) अरति परिसह (७) स्त्री परिसह (८) चरिया परिसह (९) निसिया परिसह (१०) सेजा परिसह (११) आक्रोश वचन परिसह (१२) वध परिसह (१३) जाचना परिसह (१४) अलाभ परिसह (१५) रोग परिसह (१६) त्रणस्पर्श परिसह (१७) मेल परिसह (१८) सत्कार पुरस्कार परिसह(१९) प्रज्ञा परिसह(२०) अज्ञान परिसह (२१) दर्शण परिसह (२२) ॥ ए ॥ २२ ॥ नें ॥ ८ ॥ पूर्वे कह्या ते ॥ एवं ॥ ३० ॥ खंति (३१) मुत्ति (३२) अज्जवे (३३) मद्दवे (३४) लाघवे (३५) सचे (३६) संजमे (३७) तवे (३८) चियाए (३९) बंभचेर वासे (४०) ॥ ए ॥ १० ॥ प्रकारे जति-धर्म आराधवो ॥ नें ॥ १२ ॥ भावना भाववी ॥ ते कहे छे ॥ अ-नित्य भावना (१) अशरण भावना (२) संसार भावना (३) एकत्व भावना (४) अन्यत्व भावना (५) अशुचि भावना (६) आश्रव भावना (७) संवर भावना (८) निर्जरा भावना (९) लोक भावना (१०) बोध भावना (११) धर्म भावना (१२) ॥ ए ॥ ४० ॥ नें. ॥ १२ ॥ ५२ ॥ सामायक चारित्र (५३) छेदो पस्थापनिय चारित्र ॥ ५४ ॥ परिहार विशुद्ध चारित्र (५५) सुक्ष्म संपराय चारित्र ॥ ५६ ॥ जथाख्यात चारित्र ॥ ५७ ॥ ए ॥ ५७॥ भेद संवर तत्वना जाणवा ॥

॥ इति संवर तत्व समाप्तम् ॥ ६ ॥

॥ अथ निर्जरा तत्व कहे छे ॥

निर्जरा ते देस थकी कर्म तोडीने देस थकी जीवने ऊज करे ॥ तिहको निर्जरा तत्व कहिये ॥

नकी प्रतीत राखे ॥ १ ॥ रागद्वेष अल्प करे ॥ २ ॥ करमका फलको विचार करे ॥ ३ ॥ दीप समुद्रादिक क्षेत्रको विचार करे ॥ ४ ॥

धर्मध्यानरा ४ लक्षण:—

जिनाज्ञा प्रमाणे रहे ॥ १ ॥ समकित निश्चल राखे ॥ २ ॥ उपदेशरी रुचि राखे ॥ ३ ॥ सूत्र सिद्धांतरी प्रतीत राखे ॥ ४ ॥ धर्मध्यानरा (४) आलंबन ते किसा ॥ २ ॥ वाचना ते वाचणीरो लेवो ॥ १ ॥ पुच्छणा ते सदेहनो पुछिवो ॥ २ ॥ परियट्टणा ते ज्ञानको चितारवो ॥ ३ ॥ धरम कथा ते धरमनो कहिवो ॥ ४ ॥

धर्मध्यानरी ४ अनुप्रेक्षा ते कहे छे:—

अनुप्रेक्षा-ते अर्थको चिंतववो तिणरा चार भेद ॥ ओ ससार सर्व अनित्य छे ॥ इण रीतसु विचारवो ॥ १ ॥ इण ससारमें किणहीरो सरणो नथी ॥ २ ॥ ओ जीव एकलो आयो एकलो जावसी । कोई लारे चाले नथी ॥ ३ ॥ ससार चार गति दुखनो भडार छे ॥ ४ ॥ इति धर्मध्यानरा १६ भेद सपूर्ण ॥ शुक्र ध्यानरा [४] भेद ॥ शब्द अर्थको भेद विचारवो ॥ १ ॥ एक द्रव्यको द्रव्य गुण पर्यायको विचारवो ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया रुधवी ॥ ३ ॥ समस्त जोग लेश्या रुधवी ॥ ४ ॥ शुक्र ध्यानरा (४) लक्षण ॥ देह थकी आतमा जुदी चिंतवे ॥ १ ॥ सर्व ससारको त्याग करे ॥ २ ॥ देवादिकका उपसर्गसू चले नही ॥ ३ ॥ ममत भावमें मुरजे नहीं ॥ ४ ॥

हिवे शुक्र ध्यानका [४] आलंबन ते किसा ॥ क्षमा ॥ १ ॥ निरलोभता ॥ २ ॥ सरलता ॥ ३ ॥ निराभिमानता ॥ ४ ॥

लौकीक मवधी विनयका (७) भेद ॥ गुरु समीपे वरतवो [१] गुरांकी मरजी प्रमाणें रहिवो (२) ज्ञानादिक निमतें भात पांणी आणि देवो (३) ग्यांननो दातार जाणी विनय करिवो (४) ऊपसमते समताभाव राखिवो (५) प्रस्ताव ते अवसर देख वरतवो (६) सर्व कारजमें सन्मुख वरतवो (७)

व्यावचका (१०) भेद । आचार्यजी [१] ऊपाध्यायजीकी (२) नवदीक्षत शिष्यकी [३] रोगी ग्लांनीकी (४) तपसीकी (५) थिवरजीकी [६] सधरमीकी (७) कुलकी (८) गणकी (९) संघकी[१०]॥ इणं दसोंकी व्यावच करे। एव व्यावचका भेद (१०) हिवे सजायका (५) भेद ॥ वाचणा ते गुरु समीप वाचणी लेवे (१) पडी पुछणा ते संदेहनो पूछवो (२) परियट्टणा ते वारंवार गुणवो (३) अणुप्येहाते अर्थनो चिंतविवो (४) धरम कथा ते धरम कहिवो (५) ॥ हिवे ध्यांनका चार [४] भेद ॥ आर्त्तध्यान [१] रुद्र ध्यान (२) धरम ध्यांन [३] शुक्ल ध्यांन (४) आर्त्त ध्यानरा [४] भेद ॥ अमनोज्ञ शब्द । रूप–रस–गंध फरसनो विजोग चिंतविवो ॥ १ ॥ मनोज्ञ शब्द । रूप–गंध–रस–फरसनो सजोग चितविवो ॥ २ ॥ रोगादिक उपनां विजोगनो चितविवो ॥३॥ काम भोगादिकना सजोगनो चिंतविवो ॥४॥

हिवे आर्त्त ध्यानरा ४ लक्षण कहे छेः—

मोटे सादे विलापनो करिवो ॥ १ ॥ दीनपणो आणिवो ॥२॥ आंसु नांखवो ॥ ३ ॥ निसासो मेल्हवो ॥ ४ ॥ ॥ रुद्र ध्यानका चार (४) लक्षण ॥ हिंस्याका भाव प्रवर्ते ॥ १ ॥ कुशास्त्र हिंस्या दिढावे ॥ २ ॥ हिंस्यामें लवलीन रहे ॥ ३ ॥ हिंस्या करि जाव जीव लगे पश्चात्ताप नहीं करे ॥ ४ ॥ धरम ध्यानका ४ भेद ॥ जिन वच-

नको प्रतीत राखे ॥ १ ॥ रागद्वेष अल्प करे ॥२॥ करमका फलको विचार करे ॥ ३ ॥ दीप समुद्रादिक क्षेत्रको विचार करे ॥ ४ ॥

धर्मध्यानरा ४ लक्षण.—

जिनाज्ञा प्रमाणे रहे ॥ १ ॥ समकित निश्चल राखे ॥ २ ॥ उपदेशकी रुचि राखे ॥ ३ ॥ सूत्र सिद्धातरी प्रतीत राखे ॥ ४ ॥ धर्मध्यानरा (४) आलंबन ते किसा ॥ २ ॥ वाचना ते वाचणीरो लेवो ॥ १ ॥ पुछणा ते सदेहनो पुछिवो ॥ २ ॥ परियट्टणा ते ग्यानको चितारनो ॥ ३ ॥ धरम कथा ते धरमनो कहिनो ॥ ४ ॥

धर्मध्यानरी ४ अनुप्रेक्षा ते कहे छे—

अनुप्रेक्षा-ते अर्थको चितववो तिणरा चार भेद ॥ ओ ससार सर्व अनित्य छे ॥ इण रीतसु विचारजो ॥ १ ॥ इण समारमें किणहीरो सरणो नथी ॥ २ ॥ ओ जीव एकलो आयो एकलो जावसी । कोई लारे चाले नथी ॥ ३ ॥ ससार चार गति दुखनो भडार छे ॥ ४ ॥ इति धर्मध्यानरा १६ भेद सपूर्ण ॥ शुक्ल ध्यानरा [४] भेद ॥ शब्द अर्थको भेद विचारवो ॥ १ ॥ एक द्रव्यको द्रव्य गुण पर्यायको विचारवो ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया रुधवी ॥ ३ ॥ समस्त जोग लेश्या रुधवी ॥ ४ ॥ शुक्ल ध्यानरा (४) लक्षण ॥ देह थकी आत्मा जुदी चिंतवे ॥ १ ॥ सर्व ससारको त्याग करे ॥ २ ॥ देवादिकका उपसर्गसू चले नही ॥ ३ ॥ ममत भावमे मुरजे नहीं ॥ ४ ॥

हिवे शुक्ल ध्यानका [४] आलंबन ते किसा ॥ क्षमा ॥ १ ॥ निरलोभता ॥ २ ॥ सरलता ॥ ३ ॥ निराभिमानता ॥ ४ ॥

शुक्ल ध्यानकी [४] अनुप्रेक्षा ते किसी ॥ अर्थ विचारवो पांच आश्रव द्वार नें अनर्थ हेतु चिंतववो ॥ १ ॥ संसारको असुभपणो चिंतववो ॥ २ ॥ ससारको अनित्यपणो चिंतववो ॥ ३ ॥ ससारको खिणभगुर स्वभाव विचारवो ॥ ४ ॥

काउसग्गका [२] भेद ॥ द्रव्य काउसग्ग ॥ १ ॥ भाव काउसग्ग ॥ २ ॥ द्रव्य काउसग्गका चार भेद ॥ शरीर काउसग्ग ते शरीरको तजवो ॥ १ ॥ गण काउसग्ग ते गछको तजवो ॥ २ ॥ ऊपधी काउसग्ग ते वस्त्रादिक तजवो ॥ ३ ॥ भात पांणी काउसग ते भात पांणीको तजवो ॥ ४ ॥

भावकाउसग्गका (३) भेद ॥ कषाय काउसग्ग ॥ १ ॥ कर्म काउसग्ग ॥ २ ॥ संसार काउसग्ग ॥ ३ ॥ कषाय काउसग्गका ॥ ४ ॥ भेद ते कहे छे ॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ इणां च्यारांको तजवो ॥ कर्म काउसग्ग ते आठुं करमांरो तजवो ॥ ८ ॥ ससार काउसग्ग ते च्यारुं गतिको तजवो ॥ काउसग्गरा भेद सपूर्ण ॥

इति निरजरा तत्वं समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ बंध तत्व कहे छे ॥

बंध तत्व किणनें कहिजे। जीव पुद्गलानें एकठा करे। जिस्को. जिणरा (४) भेदः—

प्रकृति बंध (१) थिति बध (२) अनुभाग बध (३) प्रदेश बध (४) ॥ प्रकृति बध ते सुभाव (१) थिति बध ते कर्माकी थिति [२] अनुभाग बध ते सुभासुभ रस (३) प्रदेश बध ते जीव कर्मारो एकठापणो जिम तिलमें तैल, दुधमें घृत, धातुमें माटी ॥ बध उपर

मोदकनो दृष्टांत जिम लाडुरो सभाव वाय हरे। पित्त हरे। इत्यादिक सभाव ते थिति बंध। लाडुरा रसरी स्थिति। अनुभाग। जिम लाडु मीठो। चरको खारो। इत्यादिक रस प्रबंध ते लाडुरा द्रव्य जिम। करमोंरी प्रकृति ऊपरे। मोदकना दृष्टांतनी परे। च्यारुं बंध जाणवा। प्रकृति ते। आठ कर्मोरो स्वभाव। ग्यांनावरणी कर्मरो सभाव। जिम आख्या आडो पाटो बाध्या दीसे नही। तिम ग्यांनावरणी करमरा उदयसूं ग्यांन आवे नही॥ १॥ दरसनावरणी कर्म पोलीया समान। जिम पोलीयो राजासुं मिलवा न दें। जिम दरसनावरणी कर्म सुद्ध दरसण होणे देवे नही॥ २॥ वेदनी कर्म मधु लिप्त खडा धारा समान॥ ३॥ मोह कर्म ऊपर मदिराको दृष्टांत। मदिरा पीधां कछुही सूझ रेहवे नही। जिम मोह कर्मरे ऊदे समकित चारित्रकी सुधना नही रेहवे॥ ४॥ आउखा कर्म ऊपरि खोडाको दृष्टांत। खोडामांहे पग दीया खोडा बारे निसर सके नही। जिम आउखा करमरी थिति भोगविया विना छूटे नही॥ ५॥ नाम कर्म-ते चितारोके दृष्टांत। जिम चितारो नाना प्रकारका सुभ असुभ चित्राम करे। तिम नाम कर्मके उदय सुभ नाम असुभ नाम पावे॥ ६॥ गोत्र कर्म उपरि कुभारको दृष्टांत। जिम कुभारनो कीयो घडो ऊचके घर गया उत्तम कहावो अनें नीचके घरे गया मध्यम कहावे। तिम गोत्र कर्मके ऊदे ऊच गोत्र नीच गोत्र बाजे॥ ७॥ अंतराय कर्म ऊपरे। राजाका भंडारीको दृष्टांत। जिम राजाको भंडारी दानादिक देवा देवे नही। तिम अंतराय कर्म दानादिक गुण प्रगट होवा देवे नही॥ ८॥ इति प्रकृति बंध लक्षणः॥

हिवे थिति बंध कहे छे। ग्यानावरणी॥ १॥ दरसनावरणी॥ २॥ अंतराय॥ ३॥ इण तीन करमोंरी थिति जघन्य तो अंतर्मुहूर्तकी॥ उत्कृष्टी (३०) कोडाकोड सागरकी। वेदनीकी जघन्य दोय

समयकी ते वीतरागीके होय। उत्कृष्टी (३०) कोडाकोड सागरकी। मोहनी कर्मकी जघन्य अंतर्मुहुर्त्तकी। उत्कृष्टी (७०) कोडा कोड सागरकी ॥ आउखा कर्मकी जघन्य अतर मुहुर्त्तकी। उत्कृष्टी (३३) सागरकी। क्रोडपूरवरो तीजो भाग इयक नाम करम गोत्र करमकी जघन्य (८) मुहुर्त्तकी उत्कृष्टी। (२०) क्रोडा कोड सागरकी ॥ इति थिति बध ॥

हिवे अनुभाग बध; सुभ असुभ रस आठ कर्मामे। च्यार तो घातीया कर्म च्यार अघातिया कर्म ॥ इति अनुभाग बध ॥

हिवे प्रदेस बंध कहे छे ॥ ग्यांनावरणी कर्म छै बोलां करीनें बांधे। ग्यांनको प्रत्यनीक होय ॥ १ ॥ ग्यांनका दातार गुरुनें गोपवे ॥ २ ॥ ग्यांनकी अतराय पाडे ॥ ३ ॥ ग्यांन ऊपर द्वेष करे ॥४॥ ग्यांनकी आसातना करे ॥ ५ ॥ ग्यानको विपरीत उपदेश देवे ॥ ६ ॥ ए ॥ ६ ॥ दरसनावरणी कर्म छै बोलाकरी बांधे। छै बोल एहीजनें ग्यांनकी जागह दरसन केहणो ॥ वेदनी कर्मरा दोय भेद। साता वेदनी [१] असाता वेदनी [२] साता वेदनी [१२] बोलां करके बांधे ॥ प्राण भूत जीव सत्वकी अनुकपा करतो ॥ १ ॥ दुख नही उपजावतो ॥ २ ॥ तापना नही उपजावतो ॥ ३ ॥ पर प्राणीनें सोच नही उपजावतो ॥ ४ ॥ कलेस नही उपजावतो ॥ ५ ॥ परितापना नही उपजावतो ॥ ६ ॥ ए ॥ ६ ॥ बोलतो एक जीव आश्रीनें। एहीज छै घणा जीव आश्री एव ॥ १२ ॥ असातावेदनी बारें बोलां कर बाधे। ऊपर लिखिया जिवं ही (ऊंलटा) कहणा। मोहनीकर्म च्यार बोलांकर बांधे। तीव्र क्रोध करी। तीव्र मांन करी। तीव्र माया करी। तीव्र लोभ करी। आउखो कर्म जीव (१६) बोलाकरी बाधे ॥ च्यार बोला करी जीव नारकीनो आउखो बाधे। मोटो आरभ करे तो

[१] परिग्रहरी मोटी तृष्णा करतो ॥ २ ॥ पचेंद्रीनो वद्ध करतो ॥ ३ ॥ दारु मास आचरे तो ॥ ४ ॥ च्यार बोलां करी जीव तिरजचको आउखो बाधे । तीव्र क्रोध करतो ॥ १ ॥ तीव्र मान करतो ॥ २ ॥ कूडी साख भरतो ॥ ३ ॥ कूडा तोल कूडा माप करतो ॥ ४ ॥ च्यार बोला करी मनुष्यको आउखो बाधे । प्रकृतिको भद्रीक ॥ १ ॥ प्रकृतको विनीत ॥ २ ॥ जीवकी अनुकपा करतो ॥ ३ ॥ अमछर भाव राखतो ॥ ४ ॥ च्यार बोलाकरि देवताको आउखो बांधे ॥ ४ ॥ सराग सजम करके ॥ १ ॥ सजमा संजम करके ॥ २ ॥ बाल तप करके ॥ ३ ॥ अकाम निरजरा करके ॥ ४ ॥

नाम करमरा (२) भेद । सुभ नाम ॥ १ ॥ असुभ नाम ॥ २ ॥ सुभ नाम च्यार बोलां करके बांधे । काय सरल ॥ १ ॥ भावसरल ॥ २ ॥ भाषासरल ॥ ३ ॥ सत्यवादी ॥ ४ ॥ असुभ नाम करम च्यार बोलां करके बांधे । ऊपर लिखिया जिके बोल (ऊलटा) केहणा । गोत्रकर्मका (२) भेद ॥ ऊच गोत्र [१] नीच गोत्र [२] ऊच गोत्र आठ बोलांकर बांधे ॥ आठ मद नही करे तो जाति मद ॥ १ ॥ कुल मद ॥ २ ॥ बल मद ॥ ३ ॥ रूप मद ॥ ४ ॥ तप मद ॥ ५ ॥ लाभ मद ॥ ६ ॥ सूत्र मद ॥ ७ ॥ ठकुराई मद ॥ ८ ॥ ए आठ बोल न करे तो ऊच गोत्र बांधे ने ॥ ए आठ बोल करे तो नीच गोत्र बांधे ॥ अतराय कर्म पाच बोलां करी बांधे । दानकी ॥ १ ॥ लाभकी ॥ २ ॥ भोगकी ॥ ३ ॥ उपभोगकी ॥ ४ ॥ तपस्याकी ॥ ५ ॥ ए (५) अतराय देवे तो अतराय कर्म बाधे ॥ एव आठ कर्म बाधवाका [८५] बोल सपूर्ण ॥

आठ कर्म (९३) भेदे भोगवे ते कहेछे ॥

ग्यांनावरणी कर्म (१०) भेदे भोगवे ॥ सोयावरणे ॥ १ ॥

सोयाविनांग वरणे ॥ २ ॥ इमहीज चक्षु इंद्री ॥ ३ ॥ घ्राण इंद्री ॥ ४ ॥ रस इंद्री ॥ ५ ॥ फरस इंद्री ॥ ६ ॥ इंणारो आवरण नें विज्ञान आवरण। आवरण ते सुंणे नही। विग्यांन आवरण ते समजे नही। ए (१०) दरसनावरणी कर्म नव भेदे भोगवे । चक्षु दरसनावरणी ॥ १ ॥ अचक्षु दरसनावरणी ॥ २ ॥ अवधि दरसनावरणी ॥ ३ ॥ केवल दरसनावरणी ॥ ४ ॥ निद्रा ॥ ५ ॥ निद्रा निद्रा ॥ ६ ॥ प्रचला ॥ ७ ॥ प्रचला प्रचला ॥ ८ ॥ थीणधी ॥ ९ ॥

वेदनी कर्म दोय भेदे भोगवे ॥ साता वेदनी ॥ १ ॥ असाता वेदनी ॥ २ ॥ साता वेदनी आठ प्रकारे भोगवे ॥ मनोज्ञ शब्द (१) मनोज्ञ रुप (२) मनोज्ञ गध (३) मनोज्ञ रस (४) मनोज्ञ स्पर्श (५) मन सुख (६) वचन सुख (७) काय सुख (८) एवं आठ ॥ असाता वेदनी आठ प्रकारे भोगवे ॥ अमनोज्ञ शब्द (१) अमनोज्ञ रुप (२) अमनोज्ञ गंध (३) अमनोज्ञ रस (४) अमनोज्ञ स्पर्श (५) मन दुःख (६) वचन दुःख [७] काय दुःख (८) एवं [८] मोहोनीय कर्म पांच प्रकारे भोगवे ॥ समकित मोहोनी [१] मिथ्यात्व मोहोनी [२] मिश्र मोहोनी [३] कषाय मोहोनी [४] नोकषाय मोहोनी [५] एव पांच ॥

आऊखो कर्म चार प्रकारे भोगवे ॥ नरकनो आउखो [१] आउखो [२] मनुष्यनो आउखो [३] देवतानो आउखो चार ॥

नाम कर्मना दोय भेदः—शुभ नाम कर्म १ और अशुभ नामकर्म [२] शुभ नाम कर्म चवदे प्रकारें भोगवे ॥ भलो शब्द (१) भलो रूप [२] भलो गध (३) भलो रस (४) भलो स्पर्श (५) भली ... (६) भली स्थिति [७] भली लावण्य (८) यशो कीर्ति (९)

इष्ट उठाण (१०) कर्म (११) बल [१२] वीर्य (१३) पुरुषाकार पराक्रम [१४] एव (१४)

असाता वेदनी (१४) चवदा प्रकारे भोगवे ॥ माठो शब्द (१) माठो रूप (२) माठो गंध (३) माठो रस (४) माठो स्पर्श (५) माठी गति (६) माठी स्थिति (७) माठी लावण्य (८) अयशो किर्ति (९) अनिष्ट उठाण (१०) दुष्कर्म (११) निर्बल (१२) निर्वीर्य (१३) अपुरुषाकार पराक्रम (१४) एव (१४)

गोत्र कर्मका दोय भेद ॥ ऊंच गोत्र (१) नीच गोत्र (२) ऊंच गोत्र (८) प्रकारे भोगवे ॥ जाति ऊंच (१) कुल ऊंच (२) बल ऊंच (३) रूप ऊंच (४) तप ऊंच (५) लाभ ऊंच (६) सूत्र ऊंच (७) ठकुराई ऊंच (८) एव (८)

हिवे नीच गोत्र (८) आठ प्रकारे भोगवेः—नीच जाति (१) नीच कुल [२] इत्यादि आठ बोल पूर्ववत् जानना ॥

अंतराय कर्म पांच प्रकारे भोगवे ॥ दानांतराय (१) लाभांतराय (२) भोगांतराय (३) उपभोगांतराय [४] वीर्यांतराय (५) एवं (९३) बोल संपूर्ण ॥

॥ इति बंध—तत्वं समाप्तम् ॥ ८ ॥

॥ हिवे मोक्ष तत्व कहे छे ॥

मोक्ष तत्वके नवद्वारः—सत्पद प्ररूपनाद्वार (१) द्रव्य प्रमाण-द्वार (२) क्षेत्र प्रमाणद्वार (३) स्पर्शनाद्वार (४) कालद्वार [५] अंतर्द्वार (६) भागद्वार (७) भावद्वार (८) अल्पा बहुत्वद्वार [९] एव (९)

हिवे सत्यपद प्ररूपनाद्वार ऊपरे चवदे मार्गणा कहे छे ॥ चार गतीमां मनुष्य गती विना मोक्ष नथी (१) पांच जातमां पचेंद्रिय विना मोक्ष नथी (२) छे कायमां त्रष् काय विना मोक्ष नथी (३) अकषाई विना मोक्ष नथी (४) अयोगी विना मोक्ष नथी (५) अवेदी विना मोक्ष नथी (६) केवलज्ञान विना मोक्ष नथी (७) केवलदर्शन विना मोक्ष नथी (८) यथा क्षायक चारित्र विना मोक्ष नथी (९) शुक्ल लेशा विना मोक्ष नथी (१०) भव्य विना मोक्ष नथी (११) क्षायक समकित विना मोक्ष नथी (१२) सन्नी विना मोक्ष नथी (१३) अनारिक विना मोक्ष नथी (१४)

॥ इति सत्यपद प्ररूपना द्वार ॥ १ ॥

हिवे द्रव्य प्रमाणद्वार कहे छे ॥ निश्चे नैगे तो आठ कर्मांसू छूटा तेहिज मोक्ष कहिजे ॥ और मोक्ष तेही सिद्ध ॥ ते सिद्ध कितने ॥ द्रव्य थकी तो अभव्य जीवसू अनतगुणा पडवाई सम्यग् दृष्टी॥ ते थकी अनत गुणा सिद्ध छे ॥

॥ इति द्रव्य प्रमाणद्वार ॥ २ ॥

हिवे क्षेत्र प्रमाणद्वार कहे छे ॥ सर्वार्थसिद्ध विमानसूं बारा जोजन ऊपरे सिद्ध स्थान छे ॥ ते सिद्ध शिला पेंतालीस लाख योजननी लांबी चोडी छे ॥ और एक क्रोड बयालीस लाख गुणतीस हजार दोयशे गुण पचास योजन जाझेरी तेहनी परधी छे ॥ और छेडे माखीनी पांखथी पतली छे ॥ जिण ऊपर सिद्ध भगवान् विराजमान छे ॥

॥ इति क्षेत्र प्रमाणद्वार ॥ ३ ॥

हिवे स्पर्शना द्वार कहे छे ॥ जेटलो क्षेत्र सिद्ध स्पर्शे छे ॥ ते थकी स्पर्शना इधकी छे॥ एक सिद्ध छे जठें अनंता सिद्धारां प्रदेश छे॥

॥ इति स्पर्शनाद्वार ॥ ४ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे ॥ एक सिद्धा श्री आदी छे पिण अत नही ॥ घणा सिद्धा श्री आदिभी नहीं अतभी नहीं. ॥

॥ इति कालद्वार ॥ ५ ॥

हिवे छठो अतद्वार कहे छे ॥ ते सिद्धामें आंतर नथी ॥ क्योंकी सिद्धपणो पार्मा पछे फिर मिटे नही ॥ तथा सिद्ध भगवानमें कोई सिद्ध उपजे नहीं ॥ और बिरहे पडे तो जघन्य एक समयको उत्कृष्टो छै महिनारो इति अतद्वार ॥ ६ ॥ हिवे भागद्वार कहवे छे॥ सिद्ध भगवान कितने छे ॥ सर्व जीवांके अनतमें भागे॥ पृथ्वीकाय (१) अपकाय (२) तेऊकाय (३) वाऊकाय (४) त्रसकाय (५) इनसें अनतगुणा ज्यादा छे॥ और वनस्पती कायसू अनतमे भाग छे ॥७॥

॥ इति भागद्वार ॥ ७ ॥

हिवे भावद्वार कहे छे ॥ उदय भाव (१) उपशम भाव (२) क्षायक भाव (३) क्षयोपशम भाव (४) मणामिया भाव [५] ए पांच भावमेसू सिद्ध भगवानमें दोय भाव पावे ॥ क्षायक भाव १ और मणामिया भाव २ ॥ एव दोय २ ॥

॥ इति भावद्वार ॥ ८ ॥

हिवे अल्पा बहुतद्वार कहे छे ॥ सर्वसू थोडा नपुंसक लिंग सिद्धा ते थकी स्त्री लिंग सिद्धा सख्यात गुणा ॥ ते थकी पुरुष लिंग सिद्धा सख्यात गुणा ॥ ९ ॥

॥ इति अल्पा बहुतद्वार ॥ ९ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे नवतत्वाख्यं प्रथमं प्रकरणम् ॥





प्रकरण दूसरा–लघुदंडक.

॥ गाथा ॥

शरीर (१) अवग्गहणा (२) सघयण (३) सठाण (४) कसाय (५) तहहुंति सन्नाओ [६] लेसि (७) दीय [८] समुघाए (९) सन्नि (१०) वेदेय (११) पज्जत्ती ॥ १ ॥ (१२) दिठी (१३) दंशण(१४) नाण [१५] अनाणे (१६) जोग (१७) उवओगे (१८) तहाकम्मं आहारे (१९) उववाय (२०) ठिई (२१) समोहाए (२२) चवण (२३) गया गई (२४) पांग (२५) जोगे (२६). ॥ २ ॥

अर्थः—(शरीर-ते ५ उदारीक शरीर (१) वैक्रेय शरीर (२) आहारीक शरीर (३) तैजस शरीर (४) कार्मण शरीर [५].

विवेचनः—उदार कहिये श्रेष्ट तथा मुक्ति इस शरीरसूं जावै, जिसको उदारीक शरीर कहिये. ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीरः-ते मन इच्छित रूप बनावे, जिससें वैक्रेय शरीर कहिये ॥ २ ॥ आहारीक शरीरः-ते चवदे पूर्वधारी मुनिराज ससे हरवाने शरीरमेंसूं पूतलो काढे जिसको आहारीक शरीर कहिये ॥ ३ ॥ तैजस शरीरः—ते आहारादिक पुद्गलकूं पचावे जिससे तैजस शरीर कहिये ॥ ४ ॥ कार्मण शरीर-ते आहारादिक पुद्गलने खाचे जिससे कार्मण शरीर कहिये.॥५॥

(२) अवगहणा–ते २ ॥ भवधारणिक (१) उत्तर वैक्रेय (२)

विवेचनः--भवधारणिक ते मूलगो शरीर। जघन्य आंगुल नें असंख्यातमें भाग। उत्कृष्टी हजार योजन जाझेरी ॥ १॥ उत्तर वैक्रेय ते जघन्य आंगुल ने असंख्यातमे भाग उत्कृष्टी लाख योजननी अवगहणा ॥ २॥

(३) संघयण ते ६ वज्रऋषभ नाराच संघयण (१) ऋषभ नाराच संघयण (२) नाराच संघयण (३) अर्द्धनाराच संघयण (४) कीलीका संघयण (५) छेवट संघयण (६).

विवेचनः--वज्रकी कीली--वज्रको पाटो-वज्रका मर्कट--बंधन हुवे जिसको वज्रऋषभ नाराच संघयण कहिये. ॥ १ ॥ वज्रको पाटो बंधण एदोनू हुवे कीली नहीं जिसको ऋषभ नाराच संघयण कहिये. ॥ २ ॥ नाराच-ते वज्रमयी बंधन हुवे जिणने नाराच संघयण कहिये. ॥ ३ ॥ अर्द्ध वज्रमयी बंधन हुवे जिसको अर्द्ध नाराच संघयण कहिये. ॥ ४ ॥ कीली ते हाड कीली संयुक्त हुवे जिसको कीलिका संघयण कहिये. ॥ ५ ॥ छेवट-ते हाड चर्मसू बंध्या होय-जिसको छेवट संघयण कहिये. ॥ ६ ॥

(४) संठाण-ते ६ सम चौरस संठाण (१) नग्रोध परिमंडल संठाण (२) सादियो संठाण (३) वामन संठाण (४) कुब्ज संठाण (५) हूंडक संठाण (६)

विवेचनः—चारे तरफ बरोबर डोर लागे तथा संपूर्ण अंग शोभायमान हुवे जिसको समचौरस संठाण कहिये ॥ १ ॥ नग्रोध ते वट समान शरीर हो तथा ऊपरलो अंग शोभायमान हुवे जिसको नग्रोध परिमंडल संठाण कहिये ॥ २ ॥ सादीयो–ते नीचलो अंग शोभायमान हुवे, जिसको सादियो संठाण कहिये ॥ ३ ॥ वामन--

(१३) दृष्टी ते ३. ॥ सम्यग् दृष्टि (१) मिथ्या दृष्टी (२) सम्यग् मिथ्यादृष्टी (३)

विवेचनः- सम्यग्दृष्टी--ते देव गुरु धर्म यथार्थ मानैं जिसको सम्यग्दृष्टी कहिये. ॥ १ ॥ मिथ्यादृष्टी--ते अयथार्थ मानैं जिसको मिथ्यादृष्टि कहिये ॥ २ ॥ सम्यग् मिथ्यादृष्टि--ते यथार्थ अयथार्थ दोनूं सममानैं जिसको सम्यग् मिथ्यादृष्टि कहिये ॥ ३ ॥

(१४) दर्शन--ते ४ ॥ चक्षु दर्शन (१) अचक्षु दर्शन (२) अवधि दर्शन (३) केवल दर्शन (४)

विवेचनः--चक्षु--ते नेत्र करी दर्शन ते देखे जिसको चक्षु दर्शन कहिये ॥ १ ॥ अचक्षु--ते नेत्र विना च्यार इंद्री करी दर्शन ते देखे जिसको अचक्षु दर्शन कहिये ॥ २ ॥ अवधिदर्शन--ते अवधि करीनें देखे जिसको अवधि दर्शन कहिये ॥ ३ ॥ केवल द-र्शन--ते सपूर्ण समस्त पदार्थ देखै जिसको केवल दर्शन कहिये ॥४॥

[१५] णाणते ज्ञान--५. ॥ मति ज्ञान (१) श्रुत ज्ञान (२) अवधि ज्ञान (३) मनपर्यव ज्ञान (४) केवल ज्ञान (५)

विवेचनः---मति ज्ञान--ते आपकी बुद्धीसें पचेंद्रिय ओर छठो मन--यहपट् करीनें पदार्थनें जाणे--जिसको मति ज्ञान कहिये ॥ १ ॥ श्रुत ज्ञान ते सुणवा करीनें जाणें जिसको श्रुत ज्ञान कहीये ॥ २ ॥ अवधिज्ञान ते मर्यादा लीया प्रत्यक्ष द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणे जिसको अवधि ज्ञान कहिये ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञान ते सन्नी पचे-द्रीका, मनोगत भाव प्रत्यक्ष जाणें जिसको मनपर्यवज्ञान कहिये ॥ ४ ॥ केवलज्ञान ते संपूर्ण समस्त पदार्थ ओर द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणें जिसको केवलज्ञान कहिये ॥ ५ ॥

[१६] अगाण-ते अज्ञान ३ ॥ मति अज्ञान (१) श्रुत अज्ञान (२) विभंग अज्ञान (३).

विवेचन.—मति अज्ञान ते (५) इंद्रिय ओर छठो मन ये छे करीनें पदार्थनें अयथार्थ जाने जिसको मति अज्ञान कहिये ॥ १ ॥ श्रुत अज्ञान-ते सुणवा करीनें अयथार्थ ज्ञान हुवे जिसको श्रुत अज्ञान कहिये ॥ २ ॥ विभंग ज्ञान-ते विपरीत ज्ञान होय जिसको विभंग ज्ञान कहिये ॥ ३ ॥

(१७) जोग ते (१५) मनका भेद (४) सत्य मनयोग (१) असत्य मनयोग (२) मिश्र मनयोग (३) व्यवहार मनयोग (४) ॥ सत्य भाषा (५) असत्य भाषा (६) मिश्र भाषा (७) व्यवहार भाषा (८) उदारीक काययोग (९) उदारिक मिश्रकायको योग (१०) वैक्रिय काय योग (११) वैक्रिय मिश्रकायको योग (१२) आहारिक काययोग (१३) आहारिक मिश्रकायको योग (१४) कार्मण काय योग (१५) ॥

विवेचनः—सत्य मनयोग—ते यथार्थ चिंतवणा करे (यथा) घटनें घटही चिंतवे• जिसको सत्य मन योग कहिये ॥ १ ॥ असत्य मन योग ते अयथार्थ चिंतवणा करे (यथा) घटनें पट चिंतवै जिसको असत्य मनो योग कहिये ॥ २ ॥ मिश्र मन योग ते सांच झूठ सामिल चिंतवे (यथा) मृत्तिकारा घटनें ताम्र घट चिंतवै जिसको मिश्र मन योग कहिये ॥ ३ ॥ व्यवहार मन योग ते सत्य मृषा दोनूंही नही. जिसको व्यवहार मन योग कहीयें ॥ ४ ॥ ओर सत्य भाषादिक कें च्यार भेद पूर्ववत् जानना ॥एव ॥ ८ ॥ हिवे सात कायाकें योग ॥ उदारिक ते केवल जिस्में उदारिक शरीरको व्यापार होय जिसको उदारिक काययोग कहिये ॥ ९ ॥ उदारिकमें दूजा शरीरनो

व्यापार मिल्यो होय जिसको उदारिक मिश्रकाययोग कहिये ॥१०
वैक्रिय शरीरनो व्यापार होय जिसको वैक्रेय शरीर काययोग कहि
ये ॥ ११ ॥ वैक्रेयका व्यापारमे दूसरे शरीरका सबंध होय जिसक
वैक्रेय मिश्रकाययोग कहिये ॥ १२ ॥ आहारिक शरीरनो व्यापा
होय जिसको आहारिक काययोग कहिये ॥ १३ ॥ आहारिकवं
व्यापारमें दूसरे शरीरका व्यापार होय जिसको आहारिक मिश्र का
योग कहिये ॥ १४ ॥ कार्मण योग ते केवल कार्मण शरीरको व्या
पार हुवे जिसको कारमण योग कहिये ॥ १५ ॥

(१८) उपयोग-ते ॥ १२ ॥ पांच ज्ञान ॥ तीन अज्ञान ॥ चार
दरसण ॥ नांम पूर्ववत् जांणवा ॥

[१९] तहाकम्म आहारे यानें आहार लेवे जिसका दोय
भेद ॥ व्याघात आश्री (१) और निर्व्याघात आश्री [२]

विवेचनः--व्याघात आश्री ते लोकनें अतमें रहे हुवे जीव ज-
घन्य तीन दिसको उत्कृष्टो चार दिशनो तथा पांच दिशनो आहार
लेवे (१) निर्व्याघात आश्री ते लोकके मध्यमें रहे हुवे जीव छै
दिशनो आहार ग्रहण करे ॥ २ ॥ नाम पूर्व दक्षिण
पश्चिम उत्तर ऊंची नीची ॥

विवेचनः—समोहया मरण ते मरणांतिक समुद्घात करी श्रेणी बांधमरे जिसको समोहया मरण कहिये ॥ १ ॥ असमोहया मरण ते विना समुद्घात मरे अर्थात् बंदुकनी गोळीके समान सिधो जाय उपजे जिसको असमोहया मरण कहिये ॥ २ ॥

(२३) चवण ते एक समयमे कितनें जीव चवे जघन्य १–२–३ उत्कृष्टा सख्याता असख्याता अनंता चवे ॥

[२४] गया गई ते गती और आगती.। गती ते आयु पूरण करीनें कितने दंडकमे, जावे उसको गती कहिये ॥ १ ॥ आगती ते आयु पूरण करीनें कीतनें दंडकनो जीव आय कर उपजे उसको आगती कहिये ॥ २ ॥

(२५) प्राण ते प्राण ॥ १० ॥ श्रोतेंद्रिय बलप्राण [१] चक्षुरिंद्रिय बलप्राण [२] घ्राणेंद्रिय बलप्राण (३) रसनेंद्रिय बलप्राण [४] स्पर्शेंद्रिय [५] मन बलप्राण (६) वचन बलप्राण (७) काय बलप्राण (८) श्वासोश्वास बलप्राण [९] आयु बलप्राण (१०)

विवेचनः—बलप्राण ते पराक्रम जाणवो. ॥

(२६) जोग ते समुचय ३ ॥ मनजोग (१) वचनजोग (२) कायजोग (३) ॥ इति गाथार्थः ॥

॥ अथ २४ दंडक ऊपरे २६ द्वार कहे छे–

सात नारकीनो एक दंडक ॥ * सातोंही नारकीमे शरीर पावे तीन ॥ वैक्रीय [१] तैजस (२) कार्पण (३)

---

* ते सात नारकीना नाम–घमा (१) वसा (२) सीला (३) अंजणा (४) रिठा (५) मघा (६) माघवई (७) हिवे सात नारकीना गोत्र–रत्नप्रभा (१) सकरप्रभा (२) वालुप्रभा (३) पंकप्रभा (४) धूमप्रभा (५) तमप्रभा (६) तमातमप्रभा (७) ए सातनो एक दंडक जाणवो ॥

अवग्गाहणा ॥ समुचय सातेही नारकीनी, जयन्य आंगूलके असख्यातमे भाग ॥ उत्कृष्टी पांचशे धनुषनी ॥

उत्तर वैक्रेय अवग्गहणा समुचय जघन्य आंगूलने सख्यातमे भाग ॥ उत्कृष्टी हजार धनुषनी ॥ हिवे न्यारी न्यारी कहे छे ॥

पेहली नारकीनी भव धारणिक अवग्गाहणा पुणा आठ धनुष और छे अंगूलनी ॥ उत्तर वैक्रेय उत्कृष्टी साडा पंधरा धनुष और वारा अंगुलनी ॥ अवग्गहणा ॥ दूजी नारकीमें भव धारणिक साडा पंधरा धनुष और बारा अंगुलनी उत्तर वैक्रेय सवा इकतीस धनुषनी अवग्गहणा ॥

तीजी नारकीमें भवधारणिक सवा इकतीस धनुषनी उतर वैक्रेय साडे वासट धनुषनी अवग्गहणा ॥

चौथी नारकीमें भव धारणिक साडा वासट धनुषनी उत्तर वैक्रेय सवासै-धनुषनी-अवग्गहणा ॥

पांचवी नारकीमें भव धारणिक सवासे धनुषनी उत्तर वैक्रेय अढाईसै धनुषनी अवग्गाहणा ॥

छट्ठीमें भव धारणिक अढाईसे धनुषनी उत्तर वैक्रेय ५०० पांचसे धनुषनी अवग्गाहणा ॥

सातवी नारकीमें भव धारणिक पांचसे धनुषनी उत्तर वैक्रेय हजार धनुषनी अवग्गाहणा ॥ २ ॥

सघयण सातेही नारकीमें नथी ॥ ३ ॥

संठाण सातोही नारकीमे एक हुंडक पावे ॥ ४ ॥

कषाय सातोहीं नारकीमें चारही पावे ॥ ५ ॥

सज्ञा सातोंही नारकीमें चारुही पावे ॥ ६ ॥

छेशा समुच्चय नारकीमें ३ पावै ॥

हिवे न्यारी २ कहे छे॥

पेहली दूजीमे कापोत ॥ तीजीमे कापोत और नील ॥ कापोतका घणा नीलका थोडा ॥ चौथीमे नील ॥ पांचवीमे नील और कृष्ण ॥ नीलका घणा कृष्णका थोडा ॥ छठीमें एक कृष्ण ॥ सातवीमे महा कृष्ण ॥ ७ ॥ इंद्रिय सातही नारकीमें पाच पावै ॥ ८ ॥

समुद्घात–सातोंही नारकीमें चार चार पावें पहली ॥ सन्नी असन्नी पहली नरकका अपर्याप्तामें सन्नी असन्नी दोनूंही पावै असन्नी आय उपजे जिणसु ॥ पहली नारकीना पर्याप्तामें शेष ५–६ नारकीमें सन्नीही जपावे ॥ १० ॥

वेद–साताहीमे एक नपुंसक वेद पावै ॥ ११ ॥

पजत्ते पर्याप्त ५ पावै भाषा मन सायेही पूरी करै जिणसू पांच गिणणी ॥ १२ ॥

दिट्ठी साताहीमें ३ पावे–सातमीरा अपर्याप्तावे १ मिथ्यादृष्टि पावे ॥ १३ ॥

दरसण–साताहीमें तीन तीन पावै केवल दर्शन टल्यो ॥ १४ ॥

नाण–ते ज्ञान सातूहीमे ज्ञान ३ पावै ॥ प्रथम सातमीरा अपर्याप्तामें ज्ञान नास्ति ॥ १५ ॥

अज्ञान–साताहीमें तीन तीन पावे ॥ १६ ॥

जोग–साताहीमें ॥ ११ इग्यारे २ पावे ४ मनका–४ वचनका ३ कायाका वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कारमण एव ११. ॥

उपयोग साताहीमे ९ नव २ पावै ॥ तीन ज्ञान ३ अज्ञान ३ दरसन एव ९ सातमीरा अपर्याप्तामे ६ ॥ तीन ज्ञान नास्ति ॥ १८॥

आहार ६ दिशाको लेवे ॥ १९ ॥

उववाय ऊपजै एक समयमें सातांहीमें जघन्य १--२--३ उत्कृष्टा असख्याता ऊपजे सातूंहीमें ॥ २० ॥

थिती ॥ समुचय जघन्य १० हजार वरसकी उत्कृष्टी ३३ सागरकी न्यारी २ कहै छे ॥

पहिली नारकीनी थितीनें जघन्य १० हजार वरसकी उत्कृष्टी १ सागरकी ॥ १ ॥ दूजी नारकीनी स्थिती जघन्य १ सागरकी उत्कृष्टी ३ सागरकी ॥ २ ॥ तीजी नारकीनी स्थिती जघन्य ३ सागरकी उत्कृष्टी सातसागरकी ॥ ३ ॥ चोथी नारकीनी स्थिति जघन्य ७ सागरनी उत्कृष्टी १० सागरनी ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीनी स्थिती जघन्य १० सागरनी उत्कृष्टी १७ सागरनी ॥ ५ ॥ छट्ठी नारकीनी स्थिती जघन्य १७ सागरनी उत्कृष्टी २२ सागरनी ॥ ६ ॥ सातवी नारकीनी स्थिती जघन्य २२ सागरनी उत्कृष्टी ३३ सागरनी ॥७॥२१॥

समोहया असमोहया ॥ मरण साताहीमें दोय २ पावै ॥ २२ ॥

चवण सातूहीमे एक समयमें जघन्य १–२–३ चवे उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ २३ ॥

गतागत--पहलीसू छट्ठी ताई २ दंडककी गति ओर २ की॥ आगति तिर्यंच पचेंद्री, मनुषकी ॥ सातमीमे आगत २ की एहीज गत १ तिरजच पचेंद्रीकी ॥ २४ ॥

प्राण साताहीमें १० दस २ पावै ॥ २५ ॥

जोग साताहीमे तीन ३ पावै ॥ २६ ॥

॥ इति प्रथम दंडक नरकारन्य ॥

हिवे १० भुवनपतीना १० दस दंडक ॥ *तेमा शरीर पावे ३ तीन ॥ वैक्रेय-तेजस-कार्मण ॥ १ ॥ अवगाहणा ॥ भव धारणीक भवनपतिनी ॥ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी सात हातनी ॥ अने ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो जघन्य अंगुलने संख्या-तमे भाग—उत्कृष्टी लाख योजननी ॥ २ ॥ संघयण नथी ॥ ३ ॥ संठाण पावे एक समचउर संसठाण ॥ ४ ॥ कषाय पावे चार पिण देवताने लोभ घणो ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ पण ॥ देवताकें परिग्रह सज्ञा घणी ॥ ६ ॥ लेशा पावे चार कृष्ण लेशा ॥ नील लेशा--कापुत लेशा—तेजुलेशा ॥ ७ ॥ इंद्री पावे पांच ५ ॥ ८ ॥ समुद्घात पांच पावे ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक ॥ वैक्रेय ने तेज-स ॥ ९ ॥ सज्ञी असज्ञी वे जाणवा ॥ १० ॥ वेद पावे वें स्त्री ने पुरुष ॥ ११ ॥ प्रजा ५ पावे भाषा मन भेला गावे तिण आश्री ॥१२ ॥ दृष्टी पावे तिन ॥ १३ ॥ दर्शण पावे तिन केवल दर्शन नही ॥ १४ ॥ ज्ञान पावे तिन ॥ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे तिन ॥ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगअज्ञान ॥ १६ ॥ जोग इग्यारे ॥ चार मनना, चार वचनना, तिन कायाना ॥ वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग ॥ एवं इग्यारे ॥ १७ ॥ उपयोग पावे नव ॥ तिन ज्ञान ॥ तिन अज्ञान ॥ तिन दर्शन ॥ एवं नव ॥ १८ ॥ आहार ॥ जघन्य ने उत्कृष्टो छ दिसनो छे ॥ १९ ॥ उववाय ते जघन्य एक समये १–२–३ ऊपजे ऊत्कृष्टा असंख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थितीः—

* तेह नाम —असुर कुमार (१) नाग कुमार (२) सुवर्ण कुमार (३) अग्नि कुमार (४) विद्युत कुमार (५) द्वीप कुमार (६) उदधि कुमार (७) दिशा कुमार (८) पवन कुमार (९) स्तनित कुमार (१०) ए दश दंडक भवनपतिना जांणवा ॥

भवन पतिमां दक्षण दिसना ॥ असुर कुमारनी ॥ जघन्य दश हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागरनी ॥ तेहनी देवीनी जघन्य दश हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी साडा त्रण पल्योपमनी ॥ तेहना नवनी कायना देवतानी ॥ जघन्य दस हजार वरसनी उत्कृष्टी दोढ पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी पोंण पल्यनी ॥ उत्तर दिसना असुर कुमारनी स्थिती ॥ जघन्य दसहजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागर झाझेरी॥ तेहनी देवीनी स्थिति जघन्य दशहजार वर्षनी ॥ उत्कृष्टी साडाचार पल्योपमनी ॥ तेहना नवनिकायना देवतानी स्थिति जघन्य दसहजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी बे पल्योपम देस ऊंणी ॥ तेहनी देवीनी स्थिति जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक पल्योपम देस ऊणीनी ॥ २१ ॥ समोहिया असमोहिया ए दोय मरणपावे ॥ २२ ॥ चवण ते जघन्य एक समयमें १-२-३ चवे उत्कृष्टा असख्याता चवे ॥२३॥

गयागई ते गति पाचनी बादर पृथ्वी (१) पांणी (२) वनस्पती (३) तिर्यंच पचेंद्रिय [४] ओर मनुष्य [५] एवं (५) आ गति दोयनी तिर्यंच पचेंद्रिय (१) ओर मनुष्य (२) एवं दोय ॥ २४ ॥ प्रांण दस पावे ॥ २५ ॥ जोग तिन पावे (२६)

॥ इति दस भवनपतिना दस दडक सपूर्ण ॥

॥ हवे पांच स्थावरना पांच दंडक कहे छे ॥

पृथिवी (१) पाणी (२) तेऊ (३) वनस्पति (४) ए चारमें शरीर तिन ॥ उदारिक तेजस नें कार्मण ॥ अने वाउमे शरीर पावे चार ॥ उदारिक वैक्रेय तेजस नें कार्मण ॥ १ ॥ अवघेणा भव धारणिक पृथिवी पाणी तेउ ॥ जघन्य नें उत्कृष्टी अंगुल नें असंख्यातमे

भाग ॥ उत्तर वैक्रय नथी वाऊकायमें भवधारणिक उत्तरवैक्रेय ज० उ० आगुल ने असरव्यातमे भाग अनें वनस्पतिनी जघन्य अंगुल ने असरव्यातमे भाग ॥ उत्कृष्टी हजार जोजन झाझेरी कमल प्रमुखनी उत्तरवैक्रेय नथी ॥ २ ॥ सघयण एक छेवटु ॥ ३ ॥ संठाण एक हुंडक ॥ हिवे पाचेना सठाण न्यारा २ कहे छे ॥ पृथिवीनु संठाण मसुरनी दाल तथा चद्रमाने आकारे ॥ १ ॥ पाणीनु सठाण पाणीना परपोटानें आकारे ॥ २ ॥ तेउनु सठाण सोयना भाराने आकारे ॥ ३ ॥ वायरानु सठाण धजापताकाने आकारे ॥ ४ ॥ वनस्पतिनुं संठाण नाना प्रकारनु ॥ ५ ॥ ४ ॥ कपाय चारे ॥ ५ ॥ संज्ञा चार ॥ ६ ॥ लेशा बादर पृथिवी पाणी वनस्पतिमें चार २ पावे पेहेली ॥ अनें पाचुहिसुक्षाथावरोमे वादर तेऊ वाऊमे लेशा तिन पावे पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्री पावे एक कायाकी ॥ ८ ॥ समुदृघात पृथिवी पाणी तेउ वनस्पतिमें ॥ ३ ॥ पावे वेदनी कषाय मारणांतिक ॥ अने वायरामें समुद्घात च्यार पावे वैक्रेय वधी ॥ ९ ॥ सन्नी ते पांचे थावर असन्नी ॥ १० ॥ वेद पावे एक नपुमक ॥ ११ ॥ पर्यां चार पावे ॥ आहार पर्यां ॥ शरीर पर्यां ॥ इंद्री पर्यां ॥ श्वासोश्वास पर्यां ॥ १२ ॥ दृष्टि पावे एक मिथ्यात ॥ १३ ॥ दर्शन पावे एक अचक्षु दर्शन ॥ १४ ॥ ज्ञान नथी ॥ अज्ञान पावे दोय मति अज्ञान ॥ श्रुत अज्ञान ॥ १५ ॥ जोग पृथिवी पाणी तेउवनस्पतीने तीन पावे ॥ उदारीक ॥ १ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ कार्मण काय जोग ॥३॥ अने वायरामें पांच ते ॥ वैक्रेय वैक्रेयनोमिश्र ॥ एवं वध्या ॥ १६ ॥ उपयोग पावे तीन ॥ दोय अज्ञान ॥ एक अचक्षु दर्शन ॥ एवं तीन ॥ १७ ॥ आहार ॥ जघन्य तीन दिसनो उत्कृष्टी छै दिसनो लेवे ॥ १८ ॥ उववाय ते पृथ्वी अप तेउ वाऊ ए च्यार थावरोंमें पाचूं थावर आश्री समय २ मे असरव्याता उपजे निरतर ॥

वनस्पती आश्री समय २ निरतर अनता ऊपजे (शेष) दडक आश्री पाचेंही थावरोमें जघन्य एक समयमे १–२–३ ऊपजे उत्कृष्टा असख्याता ऊपजे ॥ १९ ॥

स्थिति पृथिवीनी जघन्य अंतर्मूहूर्त उत्कृष्टी २२ हजार वरसनी आउनी जघन्य अंतमू० उत्कृ० ७ हजार वरसनी तेऊनीतंनी ॥ जघ० अतर्मू० उत्कृष्टी त्रण अहोरात्रनी ॥ ३ ॥ वायरानी जघन्य अतर्मूहूर्तनी उत्कृष्टी त्रग हजार वरसनी ॥ ४ ॥ वनस्पतिनी जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी दसहजार वरसनी ॥ २० ॥ समोहिया असमोहिया मरण दोनुही पावे ॥ २१ ॥ चवण ते पृथवी आदि च्यार थावरोमें समय २ असख्याता चवे वनस्पतिमे समय २ अनंता चवे ॥ २२ ॥ गया गई वादर पृथ्वी पाणी वनस्पती ए तीनोकी आगती २३ की नारकी वरजी सुक्ष्म पृथ्वी पाणी वनस्पतीकी गति १० ते [५] थावर (३) विगलेंद्रीय तिर्यंच पचेंद्रिय मनुष्य तेउ वाऊनी नयकी गति ओर दशकी आगती पृथ्वीनी परे ॥ २३ ॥

प्राण पांचे ने चार ॥ एक इंद्रिपणु ॥ १ ॥ कायवल ॥ २ ॥ श्वासो श्वास ॥ ३ ॥ आउखू ॥ ४ ॥ जोग पावे एक काय जोग ॥ २६ ॥

॥ इति पांच थावरना पांच दडक ॥

॥ हिवे तीन विगलेंद्रीयना ३ दंडक कहे छे ॥

वेइद्री तेरद्री चोरिंद्रीमां शरीर पावे तीन ॥ उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥ अवगाहणा भवधारणिक वेइंद्रीनी जघन्य अंगुलनो असख्यातमो भाग उत्कृष्टी वारा जोजननी ॥ तेरिंद्रीनी जघन्य अगूलनो असख्यातमो भाग उत्कृष्टी तिन गाउनी ॥ चउरिंद्रीनी जघन्य अगुलनो असख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी चार गाउनी

उत्तर वैक्रेय नथी ॥ २ ॥ संघयण पावे एक छेवट्ठ ॥ ३ ॥ संठाण पावे एक हुंडक ॥ ४ ॥ कषाय पावे चारे ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चारे ॥ ६ ॥ लेशा पावे तीन पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्री बेरिंद्रीने दोकाया ॥१॥ जिभ (२) तेरिंद्रीनें इंद्री तीन ॥ नासिका वधी ॥ चउरिंद्रीनें इंद्री चार । आख वधि ॥ ८ ॥ समुद्‌घात पावे तीन वेदनी कषाय ने मारणांतिक ए तीन ॥ ९ ॥ संज्ञी नास्ति असज्ञी हे ॥ १० ॥ वेद एक नपुसक पावे ॥ ११ ॥ पर्या पांच पावे मन नही ॥ १२ ॥ द्रष्टी पावे दोय । समकित द्रष्टी नें ॥ मिथ्यात द्रष्टी ॥ १३ ॥ दर्शन बेइद्री तेइद्रीमें एक अचक्षु दर्शन ॥ चउरिंद्रीमें दो दर्शन ॥ चक्षु दर्शन ने अचक्षु दर्शन । ॥ १४ ॥ ज्ञान बे-मति ज्ञान ने श्रुत ज्ञान ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे बे-मति अज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ ॥ १६ ॥ जोग पावे चार उदारिक १ उदारिकनो मिश्र २ कार्मण काय जोग ३ व्यवहार वचन ४ ॥ १७ ॥ उपयोग पावे बेइद्री तेइद्रीनें पांच ॥ बे ज्ञान बे अज्ञान एक अचक्षु दर्शन । ए पांच ॥ चउरिंद्रीनें उपयोग छ ॥ बे ज्ञान बे अज्ञान बे दर्शन ए छे ॥ १८ ॥ आहार ले ॥ जघन्य अनें उत्कृष्टी छ दिसनो छेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते एक समयमे जघन्य १-२-३ उपजे उत्कृष्टा असंख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिति बेंद्रीनी जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी बारे वरसनी ॥ तेइद्रिनी जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ओगण पचास दिवसनी ॥ चउरिंद्रीनी जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी छे महिनानी ॥ २१ ॥ समोहया । अने असमोहिया मरण दोय पावे ॥ २२ ॥ चवण ते एक समयमे जघन्य १-२-३ चवे उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ २३ ॥ गया गई ते दशकी गति० दशकी आगति पाच थावर तीन विकलेंद्री तिर्यंच पचेंद्री ओर मनुष्य ए १० ॥ २४ ॥ प्राण बेंद्रियमे पावे छै. स्पर्श (१) रसना (२) कायाबल [३] श्वासोश्वास [४] आउखु (५) वचन (६) ए छै ॥ तेरिंद्रीनें

सात प्राण । ते नासिका वधी । चउरिंद्रीनें आठ प्राण आंख वधी ॥ २५ ॥ जोग दोय ॥ वचन जोग ने काय जोग ॥ ॥ २६ ॥

॥ इति त्रण विगलेंद्रीना त्रण दंडक ॥

॥ हिवे वीसमो तिर्यंच पंचेद्रियनो दंडक. ॥

जिनरा २ भेद असन्नी तिर्यंच पंचेद्री १ और सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री ॥ २ ॥

हिवे असन्नी तिर्यंच पचेंद्री पर २६ द्वार उतारिये छे ॥ शरीर पावै ॥ ३ ॥ उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥

अवग्गहणा भव धारणीक जघन्य आंगूल ने असख्यातमो भाग उत्कृष्टी हजार योजननी ॥ स्थलचरनी जघन्य आंगूल ने असख्यातमो भाग उत्कृष्टी पृथक् * गाउनी ॥ खेचरनी जघन्य आंगूल ने असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी पृथक् धनुपनी ॥ उरपरनी जघन्य आंगूल ने असख्यातमे भाग उत्कृष्टी पृथक् योजननी ॥ भुजपरनी जघन्य आंगूल ने असख्यातमो भाग उत्कृष्टी पृथक् धनुष्यनी ॥ २ ॥ उत्तर वैक्रेय नास्ति ॥ इंद्रिय पाचोहीमें पांच पांच पावै ॥ ८ ॥

स्थिती–जघन्य पाचोहीनी अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी जलचरनी कोड पूरवनी ॥ स्थलचरनी चौर्याशी हजार वरसनी ॥ खेचरनी वहोत्तर हजार वरसनी ॥ उरपरनी त्रेपन हजार वरसनी भुजपरनी बंयालीस हजार वरसनी ॥ २१ ॥

गति आगति–बावीसनी गती ते विमानिक ज्योतिषी वरजीने शेष बावीस दंडकनी ॥ आगति दशनी चौरेंद्रियवत् ॥ २४ ॥ प्राण पावे नव ॥ श्रोत्र वधो ॥ २५ ॥

शेपद्वार चौरेंद्रियवत् जाणवा ॥ २६ ॥ इति ॥

* पृथक्–दोयसे लेकर नवतक कहिये

॥ हिवे सन्नी पंचेंद्रि उपर २६ द्वार कहे छे ॥

शरीर पावे चार ॥ आहारीक टळशे ॥ १ ॥ अवघहणा जघन्य सर्वनी आगुलनें असख्यातमे भाग उत्कृष्टी जलचरनी हजार योजननी ॥ स्थलचरनी छे गाऊनी ॥ खेचरनी पृथक् धनुषनी ॥ उरपरनी हजार योजननी ॥ भुज परनी पृथक् गाउनी ॥ ये भव धारणिक अवगहणा कही ॥ हिवे उत्तर वैक्रिय अवगहणा सर्वनी जघन्य आगूलने सख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी सर्वनी नवशे योजननी ॥२॥ संघयण छे पावै ॥३॥ सठाण छे पावे ॥४॥ कषाय पावै ४॥५॥ सज्ञा पावै चार ॥ ६ ॥ लेशा पावै छे ॥ ७ ॥ इंद्रीय पावे पाच ॥ ८ ॥ समुद्घात पावे पांच ॥ प्रथम ॥ ९ ॥ सन्नी है ॥ असन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावे तीन ॥ ११ ॥ परजा पावे छे ॥ १२ ॥ दृष्टी पावै तीन ॥ ॥१३ ॥ दर्शन पावै तीन ॥ केवल दर्शन वर्जित ॥ १४ ॥ ज्ञान पावै प्रथम तीन ॥ १५ ॥ अज्ञान पावै तीन ॥ १६ ॥ जोग पावै तेरा ॥ आहारीक वर्जित ॥ १७ ॥ उपयोग पावे नव ॥ तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उपपाय ते एक समयमे जघन्य ॥ १–२–३–उपजे उत्कृष्टा असख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती जघन्य सर्वनी अंतर्मुहूर्तनी ॥ उत्कृष्टी जलचर उरपर भुजपरनी क्रोड २ पूर्वनी (पूरव किसको कहिये ॥ शितर लाख क्रोड वर्ष छप्पन्न हजार क्रोड वर्ष वीते जिसको एक पूरव कहिये ॥) स्थलचरनी तीन पल्योपमनी ॥ खेचरिनी पल्योपमना असख्यातमा भागनी ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण दोनूही पावे ॥ २२ ॥ चवण ते एक समयमे जघन्य १–२–३ चवे उत्कृष्टा असख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति ते सन्नी तिर्यंच पचेंद्रीनी २४ नी गति ॥ आगति २२ नी ॥ २४ ॥

माण १० दश पावे ॥ २५ ॥ जोग ३ पावै ॥ २६ ॥

॥इति तिर्यंच पचेद्रीनो वीसमो दडक ॥

॥ हिवे एकवीसमो मनुष्यनो दंडक कहे छे॥

जिनरा दोय भेद ॥ असन्नी मनुष्य १ और सन्नी मनुष्य २ ॥ सन्नी मनुष्यना भेद २ ॥ कर्म भूमि १ और अकर्म भूमि २ ॥ हिवे असन्नी मनुष्य उपरे २६ द्वार उतारिये छे ॥ शरीर पावै तीन पृथ्वी वत् ॥ १ ॥ अवगहणा भव धारणिक जघन्य उत्कृष्ट आंगूलनें असंख्यातमो भाग ॥ २ ॥ सघयण १ पावे चरम ॥ ३ ॥ सठाण एक पावे चरम ॥ ४ ॥ कषाय चार पावे ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥ लेशा पावे तीन प्रथम ॥ ७ ॥ इद्रीय पावे पाच ॥ ८ ॥ समुद्घात पावै तीन प्रथम ॥ ९ ॥ असन्नी है ॥ सन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावै १ नपुसक ॥ ११ ॥ प्रजा पावै चार ॥ अधूरी प्रथम ॥ १२ ॥ दृष्टी पावै एक ॥ मिथ्यादृष्टि ॥ १३ ॥ दर्शण पावे एक ॥ अचक्षु ॥ १४ ॥* ज्ञान नास्ति ॥ १५ ॥ अज्ञान दोय प्रथम पावे ॥ १६ ॥ जोग पावे ३ । उदारिक उदारिकनो मिश्र कार्मण जोग ॥ १७ ॥ उपयोग पावे तीन तथा चार ॥ पूर्ववत् ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उपवाय ते जघन्य एक समयमे, १–२–३ उपजे उत्कृष्टा असख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्तनी ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण दोनुही पावै ॥ २२ ॥ च्यवण एक समयमें जघन्य १–२–३ चवे उत्कृष्टा असख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति ते असन्नी मनुष्यनी दसनी गति ॥ पाच स्थावर । तीन विकलेंद्री तिर्यंच पचेद्री मनुष्य । एव दश ॥ आगति

* तथा केइ दोइ माने चक्षु, अचक्षु ॥

आठकी ॥ पूर्व कया जिसमेसु तेउ वाउ टल्या ॥ २४ ॥ प्राण पावे आठ ८ ॥ मन वचन प्राण टल्या ॥ २५ ॥ जोग पावे १ कायजोग ॥ २६ ॥

॥ इति असन्नी मनुष्य उपरे २६ द्वार ॥

॥ हिवे कर्म भूमी सन्नी मनुष्य उपरे २६ द्वार कहे छे ॥

तेमां शरीर पावे पाच ॥ १ ॥ अवगहणा भव धारणिक समुचय जघन्य आगूलने असख्यातमे भाग उत्कृष्टी पांचशे धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय समुचय जघन्य आंगुलने सख्यातमे भाग उत्कृष्टी लाख योजननी ॥

पांच भर्त पाच ईरवर्त ये दस क्षेत्रोंमें छे आरा वर्ते । जिसमे अवसर्पणी काल आश्री अवग्गहणा कहे छे ॥

पेहले आरे लागतां ३ गाऊनी अवग्गहणा उतरतां २ गाऊनी ॥ १ ॥ दूजे आरे लागता दो २ गाऊनी उतरता एक गाऊनी ॥ २ ॥ तीजे आरे लागतां एक १ गाऊनी उतरता पाचशे ५०० धनुषनी ॥ ३ ॥ चौथे आरे लागतां पाचशे धनुषनी उतरता सात ७ हातनी ॥ ४ ॥ पांचमे आरे लागतां सात ७ हातनी उतरता एक १ हातनी ॥ ५ ॥ छठे आरे लागतां १ एक हातनी उतरतां एक हात मठेरी ॥ ६ ॥

॥ हिवे उत् सर्पणी काल आश्री अवग्गहणा कहे छे ॥

पेहेलो आरो लागता १ हाथ मठेरी उतरता एक हातनी ॥ दूजो आरो लागता १ हातनी उतरतां ७ हातनी ॥ २ ॥ तीजो आरो लागतां सात ७ हातनी उतरता पांचशे धनुषनी ॥ ३ ॥ चौथो आरो ला-

गतां पांचशे धनुपनी उतरतां १ एक गाऊनी ॥ ४ ॥ पाचमो आरो लागतां १ एक गाऊनी उतरतां २ दोय गाऊनी ॥ ५ ॥ छठ्ठो आरो लागता २ दोय गाऊनी उतरतां ३ तीन गाऊनी ॥ ६ ॥

पांचमाविदेहमें जघन्य आंगूलनें असख्यातमे भाग उत्कृष्टी पांचशे धनुपनी ॥ २ ॥

सघयण पावे छे ॥ ३ ॥ संठाण पावे छे ॥ ४ ॥ कपाय पावे च्यार ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥ लेशा पावे छे ॥७॥ इंद्रिय पांवे पांच ॥ ८ ॥ समुद्घात पावे सात ॥ ९ ॥ सन्नी है । असन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावे तीन तथा अवेदी पिण हुवे ॥ ११ ॥ परजा पावे छे ॥ १२ ॥ दृष्टी पावे तीन ॥ १३ ॥ दरशण पावे चार ॥ १४ ॥ ज्ञान पावे पाच ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे तीन ॥१६॥ जोग पावे पंधरा तथा अयोगी पिण हुवे ॥ १७ ॥ उपयाग पावे बारा ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते जघन्य एक समयमे १-२-३ उपजे उत्कृष्टा सख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती समुच्चय जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी क्रोड पूरवनी ॥

हिवे पांच भर्त्त पांच ईरवर्तमें अवसर्पणी काल आश्री स्थिती कहे छे—

पेहलो आरो लागता ३ पल्योपमनी उतरतां २ पल्योपमनी ॥ १ ॥ दूजो आरो लागतां २ पल्योपमनी उतरता १ पल्योपमनी ॥ २ ॥ तीजो आरो लागतां १ पल्योपमनी उतरतां क्रोड पूरवनी ॥ ३ ॥ चैाथो आरो लागतां क्रोड पूरवनी उतरतां एकसोवीस (१२०) वरसनी ॥ ४ ॥ पांचमो आरो लागतां एकसोवीस (१२०)

वरसनी उतरता वीस वरसनी ॥ ५ ॥ छठो आरो लागता वीस (२०) वरसनी उतरता सोळे [१६) वरसनी ॥ ६ ॥

॥ हिवे उत् सर्पणी काल आश्री स्थिती कहे छे ॥

पेहलो आरो लागता १६ वरसनी उतरता २० वरसनी ॥ १ ॥
दूजो आरो लागतां २० वरसनी उतरतां १२० वरसनी ॥ २ ॥
तीजो आरो लागतां १२० वरसनी उतरतां क्रोड पूरवनी ॥ ३ ॥
चौथो आरो लागतां क्रोड पूरवनी उतरता एक पल्योपमनी ॥ ४ ॥
पाचो आरो लागता एक पल्योपमनी उतरता २ पल्योपमनी ॥ ५ ॥
छठो आरो लागतां २ पल्योपमनी उतरता ३ पल्योपमनी ॥ ६ ॥
पांचमाविदेहमां जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी क्रोड पूरवनी * ॥२१॥

समोहया असमोहया मरण दोय पावे ॥ २२ ॥ चवण एक समयमे जघन्य १–२–३ चवे ॥ उत्कृष्टा असंख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति कर्मभूमी सन्नी मनुष्यनी गत २४ दंडकनी ॥ आगत २२ नी तेऊ वाऊनो दंडक वर्जी ॥ २४ ॥ प्राण पावे दस ॥ २५ ॥ जोग पावे ३ । मनजोग । वचनजोग । कायजोग ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ हिवे युगुलिक मनुष्य ऊपरे २६ द्वार कहे छे ॥

शरीर पावे तीन उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥ अवगहणा भव धारणिक जघन्य पांचशो धनुष जाझेरी उत्कृष्टी ३ गाऊनी कर्म भूमि युगुलिया आश्री कही ॥ हिवे अकर्म भूमी युगुलीया आश्री कहे छे ॥ पांच देवकुरु पांच उत्तरकुरुमे जघन्य देश उणी ३ गा-

* क्रोड पूरवसें अधिक आउखो तथा पांचसो धनुपसें अधिक अवगाहणा युगुलिक मनुष्यके सिवाय अन्य मनुष्यकी न

ऊनीं ॥ उत्कृष्टी ३ गाऊनी ॥ पाच हरिवास पांच रम्यकवासमें जघन्य देश उणी २ गाऊनीं उत्कृष्टी २ गाऊनी ॥ पांच हेमवय पाच हरणवयमे जघन्य देश उणी २ गाऊनी उत्कृष्टी १ गाऊनी ॥ छप्पन अंतर्दीपामें (८००) आठशे धनुषनी ॥ २ ॥ शघयण पावे १ वज्र ऋषभ नाराच सघयण ॥ ३ ॥ संठाग पावे १ सम चौरस ॥ ४ ॥ कषाय पावे चार (४) ॥ ५ ॥ संज्ञा पावे चार (४) ॥ ६ ॥ लेशा पावे ४ पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्रीय पावे पांच (५) ॥८॥ समुद्घात पावे तीन [३] प्रथम ॥ ९ ॥ सन्नी हे असन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावे दोय (२) ॥ ११ ॥ परजा पावे छे ॥ १२ ॥ दृष्टी पावे (१) एक मिथ्यादृष्टी पल्यसूं ऊणां आउखावाळामें ॥ १ पल्योपमसू लेकर तीन पल्योपमनो आउखातांइ दृष्टी पावे (२) दोय ॥ सम्यक्दृष्टी और मिथ्यादृष्टी ॥ १३ ॥ दर्शन पावे [२] दोय चक्षु दर्शन और अचक्षु दर्शन ॥ १४ ॥ ज्ञांन एक पल्योपमसू उणा आउखावाळामें नास्ति ॥ एक पल्योपमसूं तीन पल्योपमना आऊखावाळामे ज्ञान पावै (२) दोय प्रथम ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे दोय (२) ॥ १६ ॥ जोग पावे ग्यारा ४ मनका ४ वचनका ॥ एव ८ ॥ उदारिक ॥ ९ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ १० ॥ कार्मण ॥ एव ११ ॥ १७ ॥ उपयोग १ पल्योपमसू ऊणा आउखावाळामे ४ पावे ॥ अज्ञान दोय, दर्शग दोय ॥ एक पल्योपमना आउखासू ३ पल्योपमना आउखाताइ उपयोग पावे छे ॥ २ ज्ञान २ अज्ञान २ दरसण ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय एक समयमें जघन्य १-२-३ ऊपजे उत्कृष्टा संख्याता ऊपजे ॥ २० ॥ स्थिति जघन्य क्रोड पूरव जाझेरी उत्कृष्टी तीन पल्योपमनी ॥ ये कर्म भूमिक जुगळीया आश्री कही ॥ हिवे अकर्मभूमि आश्री कहे छे ॥ पांच देवकुरुमें ॥ पाच उत्तरकुरुमें ॥

जघन्य देश ऊणी तीन पल्योपमनी उत्कृष्टी ३ पल्योपमनी ॥ पांच हरिवास पाच रमकवासमें जघन्य देश ऊणी २ पल्योपमनी उत्कृष्टी २ पल्योपमनी पाच हेमवय पाच एरणवयमें जघन्य देश ऊणी १ पल्योपमनी उत्कृष्टी १ पल्योपमनी ॥ छपन्न (५६) अतर द्विपाम जघन्य उत्कृष्ट पल्योपमरा असख्यातमा भागनी ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण २ पावे ॥ २२ ॥ चवण एक समयमे जघन्य १–२–३ चवे उत्कृष्टा संख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति एक पल्यसू ऊणा आउखावाला जुगलियाकी ओर छपन (५६) अतरद्वीपकी जुगलियाकी ॥ गति ११ नी १० दस भवनपति ओर वाणव्यतर एव ११ ॥ पाच देवकुरु पाच उत्तरकुरु पाच हरिवास पाच रमकवास पाच हेमवय पाच एरणवय ए (३०) अकर्म भूमि युगलियानी १३ नी गति ॥ ज्योतिपी विमाणीक ॥ ए २ दंडक वध्या ॥ आगति सर्व जुगलियानी २ नी ॥ तिर्यच पचेंद्री (१) ओर मनुष्य (२) ॥ २४ ॥ प्राण १० पावे ॥ २५ ॥ जोग ३ पावे ॥ २६ ॥

इति इकवीसमो मनुष्यनो दंडक ॥

॥ हिवे २२ मो वाणव्यंतराना दंडक उपर २६ द्वार कहे छे ॥

वाणव्यतरनो अधिकार भवनपतीनी परे जाणवो (नवर) आउखानो फेर ॥ वाणव्यंतर देवतानो आउखो जघन्य १० हजार वरसनो उत्कृष्टो १ पल्योपमनो ॥ वाणव्यतरोंनी देवीनो जघन्य १० हजार वरसनो उत्कृष्टो अर्द्ध पल्योपमनो ॥ इति २२ मो वाणव्यतरनो दंडक ॥

॥ हिवे ज्योतिषीनो अधिकार कहिये छे ॥

तेवीस द्वार तो भवनपतिनी परे जाणवा ॥ शेष ३ बोलनो

फेर ॥ लेशा १ तेजू ॥ ८ ॥ सनीहै । असन्नी नास्ति असनी मरी ज्योतिपी विमाणीक्रमे ऊपजे नही ॥ १० ॥ स्थिती ते चंद्रमानी जघन्य १ पल्योपमना चोथा भागनी उत्कृष्टी १ पल्योपम १ लाख वरसनी तेहनी देवीनी जघन्य पल्योपमना चोथा भागनी उत्कृष्टी अर्द्ध पल्योपम पाचसे वरसनी ॥ ग्रहनी जघन्य तो पूर्ववत् उत्कृष्टी १ पल्योपम १ हजार वरसनी तेहनी देवीनी जघन्य पूर्ववत् उत्कृष्टी अर्द्ध पल्योपमनी ॥ नक्षत्रनी जघन्य पूर्ववत् उत्कृष्टी अर्द्ध पल्योपमनी ॥ नक्षत्रनी देवीनी जघन्य पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्टो पल्योपमनो चोथो भाग जाझेरो ॥ तारानी जघन्य पल्योपमना ८ मा भागनी तेहनी देवीनी जघन्य पल्योपमनो ८ मो भाग उत्कृष्टी पल्योपमना ८ मो भाग जाझेरो ॥ ए पांचानी स्थिति जाती आश्री जाणवी ॥ इंद्रनी तो उत्कृष्टीज हुवै ॥

॥ इति २३ मो ज्योतिपिनो दडक ॥

॥ हिवे विमाणिक देवतां उपर २६ द्वार कहे छे ॥

विमाणिक देवतामे १२ तो स्वर्ग तेहनां नाम ॥ सुधर्म देवलोक (१) ईशान देवलोक (२) सनत्कुमार देवलोक (३) माहेंद्र देवलोक (४) ब्रह्मदेवलोक (५) लांतक देवलोक (६) महा शुक्र देवलोक [७] सहस्रार दे० (८) आनत देवलोक (९) प्राणत दे० (१०) आरण दे० (११) अच्युत दे० (१२) हिवे नवग्रीवेकके नामः– ॥ भद्र (१) सुभद्र (२) सुजात [३] सुमानस (४) प्रिय दर्शने (५) सुदर्शने (६) अमोघ (७) सुमति भद्र (८) जसोधर (९) ॥ हिवे पांच अणुत्तर विमाणके नामः–विजय (१) विजयंत (२) जयत (३) अपराजित (४) सर्वार्थसिद्ध (५) एव २६ यामें ॥

शरीर तो ३ पावे वैक्रिय १ तेजस २ कारमण ३ ॥ १ ॥ अवगहणा भव धारणीक समुचय जघन्य आंगुलने असख्यातमे भागनी उत्कृष्टी ७ हातनी ॥ उत्तर वैक्रैय जघन्य आंगुलने संख्यातमे भागनी उत्कृष्टी लाख योजननी ॥ बारमां देवलोक आगे उत्तर वैक्रिय न स्ति ॥

॥ हिवे भवधारणिक उत्कृष्टी न्यारी २ कहे छे ॥

पहिला दूजा स्वर्गमे ७ हातनी ॥ तीजा चौथागे ६ हातनी ॥ पांचमें छट्ठामें ५ हातनी ॥ सातमे आठमामें ४ हाथनी ॥ ९ नवमां दसमां इग्यारा बारामें ३ हाथनी ॥ नवग्रैवेकमे २ हाथनी ॥ पाच अणुत्तर विमाणमें १ हाथनी ॥ २ ॥ संघयण नास्ति ॥ ३ ॥ संठाण भवनपतिनी परे ॥ ४ ॥ कषाय पावे चार ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥ लेशा पावे समुचय ३–तेजू १ पद्म २ शुक्र ३ ॥ हिवे न्यारी २ कहे छे ॥ पहला दूजामे तेजू ॥ तीजा चोथा पाचमांमे पद्म ॥ छट्ठाथी आगे शुक्र ॥ ७ ॥ इंद्रिय पावे पांच ॥ ८ ॥ समुद्घात पावे प्रथम पाच ॥ १२ मा स्वर्गताई प्रवृत्ति रूप है ॥ आगे ३ तो प्रवृत्तिरूप तेजस वैक्रिय सत्तारूप है ॥ ९ ॥ सन्नी है असन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद पहिला दूजामें २ पावे–स्त्री वेद १ पुरुष वेद आगे १ पुरुष वेद ॥ ११ ॥ परजा ५ भवन पतीवत् ॥ १२ ॥ दृष्टी १२ मा स्वर्गताई ३ । नवग्रीवेकमें २ सम्यक् दृष्टी १ मिथ्यादृष्टी २ ॥ पाच अणुत्तर विमानमें १ सम्यग्दृष्टी ॥ १३ ॥ दरसण पावे ३ ॥ १४ ॥ ज्ञान पावे ३ ॥ १५ ॥ अज्ञान ३ नवग्रीवेकताई अणुत्तर विमानमें अज्ञान नास्ति ॥ १६ ॥ जोग ११ चार मनरा ४ वचनरा वैक्रिय वेक्रियना मिश्र कारमण ॥ १७ ॥ उपयोग नव ग्रैवेकताई ९ पावे अणुत्तर वि-

मानमें उपयोग पावे छे ॥ ३ अज्ञान नास्ति ॥ १८ ॥ आहार ज
न्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते ८ मा स्वर्ग
एक समयमें जघन्य १–२–३ उपजे उत्कृष्टा असंख्याता ऊपजे
९ मा स्वर्गसू आगे जघन्य १–२–३ ऊपजे उत्कृष्टा संख्य
ऊपजे ॥ २० ॥ स्थिति समुचय जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी
सागरनी ॥

॥ न्यारी न्यारी कहे छे ॥

पहेला देवलोकमें जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी दो सागरनी
देवीनी जाति होय परिगृहीता १ और अपरिगृहीता ॥ परिगृहीता
स्थिती जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी सात पल्योपमनी ॥ अपरि
हीतानी स्थिती जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी ५० पल्योपमनी
दूजा देवलोकमा जघन्य १ पल्योपम जाझेरी उत्कृष्टी दोसागर जाझे
॥ देवी परिगृहीतानी जघन्य १ पल्योपमनी जाझेरी उत्कृष्टी
पल्योपमनी अपरिगृहीतानी जघन्य १ पल्योपम जाझेरी उत्कृष्टी
पल्योपमनी ॥ तीजा देवलोकमे जघन्य २ सागरनी उत्कृष्टी
सागरनी ॥ चोथा देवलोकमे जघन्य २ सागर जाझेरी उत्कृष्टी
सागर जाझेरी ॥ पांचमे देवलोकमें जघन्य ७ सागरनी उत्कृष्टी १
सागरनी ॥ छठ्ठे देवलोकमें जघन्य १० सागरनी उत्कृष्टी १४ सा
गरनी ॥ सातमा देवलोकमें जघन्य १४ सागरनी उत्कृष्टी १
सागरनी ॥ ८ में देवलोकमें जघन्य १७ सागरनी उत्कृष्टी १
सागरनी ॥ ९ मा देवलोकमें जघन्य १८ सागरनी उत्कृष्टी १
सागरनी ॥ १० मा देवलोकमे जघन्य १९ सागरनी उत्कृष्टी २
सागरनी ॥ ग्यारमा देवलोकमें जघन्य २० सागरनी उत्कृष्टी २
सागरनी ॥ बारमा देवलोकमे जघन्य २१ सागरनी उत्कृष्टी २

सागरनी ॥ प्रथम ग्रैवेकमे जघन्य २२ सागरनी उत्कृष्टी २३ सागरनी ॥ दूजा ग्रैवेकमे जघन्य २३ सागरनी ॥ उत्कृष्टी २४ सागरनी । तिजा गैवेकमें जघन्य २४ सागरनी । उत्कृष्टी २५ सागरनी । चोथा ग्रैवेकमें जघन्य २५ सागरनी । उत्कृष्टी २६ सागरनी। पाचमा ग्रैवेकमें, जघन्य २६ सागरनी । उत्कृष्टी २७ सागरनी । छट्ठे ग्रैवेकमें जघन्य २७ सागरनी । उत्कृष्टी २८ सागरनी । सातवा ग्रैवेकमें जघन्य २८ सागरनी । उत्कृष्टी २९ सागरनी । आठमा ग्रैवेकमें जघन्य २९ सागरनी । उत्कृष्टी ३० सागरनी । नवमा ग्रैवेकमें जघन्य ३० सागरनी । उत्कृष्टी ३१ सागरनी । विजयतादिक चार अनुत्तर विमानमें जघन्य ३१ सागरनी । उत्कृष्टी ३२ सागरनी । सर्वार्थ सिद्ध विमानमें जघन्य उत्कृष्ट ३३ सागरनी ॥२१ ॥ मरण समोहया असमोहया दोनूही पावे ॥२२॥ चवण आठमा स्वर्गताई जघन्य एक समयमें ॥ १–२–३ चवे ॥ उत्कृष्टा असख्याता चवे ॥ नवमा स्वर्गसू लेकर सर्वार्थ सिद्धताई

जघन्य एक समयमें ॥ १–२–३ चवे । उत्कृष्टा सख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति पहिला दूजा देवलोकनी पाचकी गती । बादर पृथ्वी (१) पाणी (२) वनस्पति (३) तिर्यंच पचेंद्रीय [४] मनुष्य (५) एव (५) आगति दोयनी तिर्यच पचेंद्रीय (१) मनुष्य [२] ए दोय तीजा स्वर्गसू लेकर आठमा स्वर्गतांई दोयकी गति दोयकी आगति ॥ तिर्यंच पचेंद्रीय और मनुष्य॥ नवमा स्वर्गमुं लेकर सर्वार्थसिद्धताई एक मनुष्यनी गति और आगति ॥२४॥ प्राण पावे (१०) ॥ २५ ॥ जोग पावे (३) मन जोग । वचन जोग । काय जोग ॥ २६ ॥

॥ इति २४ मो विमानिक देवनो दंडक ॥

हिवे सिद्धनो द्वार कहे छे ॥ शरीर नथी अशरीरी है ॥ १॥ अवग्गहणा जघन्य एक हात आठ आगुलनी ॥ मझम चार हात सोला अंगुलनी ॥ उत्कृष्टी (३३३) धनुष बत्तीस आगुलनी ॥ या आतम प्रदेशांकी अवग्गहणा जाणवी ॥ २ ॥ संघयण नास्ति। असघयणी है ॥ ३ ॥ संठाण नास्ति। अमूर्तिक है ॥ ४ ॥ कषाय नास्ति। अकषायी है ॥ ५ ॥ सज्ञा नास्ति। नो सज्ञा वहूत्ता है ॥ ६ ॥ लेशा नास्ति। अलेशी है ॥ ७ ॥ इंद्रिय नास्ति। अनिंद्रिय है ॥ ८ ॥ समुद्घात नास्ति। असमुद्घाती है ॥ ९ ॥ सन्नी असन्नी नास्ति। नोसन्नी नोअसन्नी है ॥ १० ॥ वेद नास्ति। अवेदीहै ॥ ११ ॥ परजा नास्ति। नोपजाप्त नोअपजाप्त है ॥ १२ ॥ दृष्टी एक सम्यक् दृष्टी है ॥ १३ ॥ दरसण एक केवल दरसण है ॥१४॥ ग्यान एक केवल ज्ञान पावे ॥ १५ ॥ अज्ञान नास्ति ॥ १६ ॥ जोग नास्ति। अयोगी है ॥ १७ ॥ उपयोग पावे दोय केवलज्ञान (१) केवल दरसण (२) ॥१८॥ अहार नास्ति। अणाहारीक है ॥ १९ ॥ उनवाय ते उपजवो नास्ति। एक समयमें सिद्ध हुवे तो १–२–३ उत्कृष्टा (१०८) सिद्ध होवे १ सो ३२ ताईं सीजे तो ८ समाताईं सीजे ॥ तेतीससो ४८ ताईं सीझे तो ७ समाताईं सीझे ॥ गुणंचा-रसीसाताईं सीझे तो ६ समाताईं सीझे ॥ (६१ सो ७२) ताईं सीझे तो ५ समाताईं सीझे ॥ (७३ सो ८४) ताईं सीझे तो ४ समाताईं सीझे ॥ (८५ सो ९६) ताईं सीझे तो ३ समाताईं सीझे ॥ (९७ सो १०२) ताइं सीझे, तो २ समाताइं सीझे ॥ (१०३ सो १०८) ताईं सीझे तो एक समाताईं सीझे ॥ पछे विरह पडे ॥ २० ॥ थिति आयु कर्मनी नास्ति। एकसिद्ध आश्री "साइये अपज्जव सीये" कहिजे। आदिहै / अत नथी । घणा सिद्ध आश्री "अणाईये अपज्जवसीये" (यानें) आदिभी नास्ति

और अतभी नास्ति ॥ २१ ॥ समोह्या असमोह्या मरण दोनूही नास्ति ॥ २२ ॥ चवण नास्ति ॥ २३ ॥ गतागति नास्ति आगति १ मनुष्यना दंडकनी ॥ २४ ॥ प्राण नास्ति । निश्चय प्राण पावे (४) सुख [१] सत्ता [२] बोध (३) चेतन (४) ॥ २५ ॥ योग नास्ति अयोगी है ॥ २६ ॥

॥ इति सिद्ध द्वार ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे लघुदंडकाख्यं द्वितीय प्रकरणम् ॥



पाथडे (१६१६६) सोळे हजार एकसे छासट योजन और एक योजनका त्यायीआ दो भागनो अंतर छे ॥ ४ ॥ पाचमी नारकीके प्रत्येक पाथडे सवा पचीस हजार [२५२५०] योजनको अतर छे ॥ ५ ॥ छट्टी नारकीके प्रत्येक पाथडे साडा बावन्न हजार [५२५००] योजनको अतर छे ॥ ६ ॥ सातमी नारकीमें पाथडो छे पिण अंतर नथी ॥ ७ ॥

॥ इति अतद्वार ॥ ३ ॥

॥ हिवे नरकावासा द्वार कहे छे ॥

पेहेली नारकीना तीस लाख नरकावासा [१] दूजी नारकीना (२५०००००) पचीस लाख नरकावासा (२) तीजी नारकीना [१५०००००] पधरा लाख नरकावासा ॥ ३ ॥ चोथी नारकीना दस लाख [१००००००] नरकावासा ॥ ४ ॥ पाचमी नारकीना तीन लाख (३०००००) नरकावासा ॥ ५ ॥ छट्टी नारकीना एक लाख नरकावासा (१०००००) ॥ ६ ॥ सातवी नारकीना [५] पाच नरकावासा ॥ ७ ॥ एव सर्व मिली सातोंनी नारकीना चवऱ्यासी लाख (८४०००००) नरकावासा जाणवा ॥

॥ हिवे नरकावासा कितना लंबा चौडा छे ते कहे छे ॥

केइएक नरकावासा संख्याता योजनका छे॥ केइ एक असख्याता योजनका है ॥ सख्याता असख्याता योजनको मान कहे छे ॥ एक शीघ्र गतीनो धणी तथा चपल गतीनो धणी देवता आठ लाख पचास हजार सातशे चालीस योजनको एक डग भरे ॥ इसी चालसे छे महिना तक चाले ॥ और चालनां जितनो क्षेत्र स्पर्शे उसको सख्याता

योजन कहिये ॥ और असंख्याता योजनकी गणती नथी॥संख्याता योजनका नरकावासामें सख्याता नारकीका नेरिया छे ॥ और असख्याता योजनका नरकावासामें असख्याता नारकीना नेरिया छे

॥ इति नरका वासा प्रमाण द्वार ॥ ४ ॥

हिवे अलोक द्वार कहे छे ॥ ५ ॥ पेहली नारकीसू वारा योजन पीछे अलोक छे ॥ १ ॥ दूजी नारकीसू वारा योजन ॥ एक योजनको तीन भाग पछे अलोक छे ॥ २ ॥ तीजी नारकीसूं तेरा योजन ॥ पछे अलोक छे ॥ ३ ॥ चौथी नारकीसू चवदा योजन पछे अलोक छे ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीसू चवदा योजनका एक भाग पछे अलोक छे ॥ ५ ॥ छठी नारकीसू पंधरा योजनका दोय भाग पीछे अलोक छे ॥६॥ सातवी नारकीसूं सोला योजन पछे अलोक छे ॥ ७॥

॥ इति अलोक द्वार ॥ ५ ॥

हिवे क्षेत्र वेदना द्वार कहे छे ॥ नारकीमें दस प्रकारकी क्षेत्र वेदना ॥ अनती भूख (१) अनंती तृषा (२) अनतो शीत (३) अनत उष्ण (४) अनतो पराधीनपणो (५) अनतीदहा (६) अनतीखाज (७) अनतोभय (८) अनतो शोक (९) अनती जरा ॥ १० ॥ ये दस प्रकारनी क्षेत्र वेदना नरकना नैरिया शाश्वती भोगवे छे

॥ इति क्षेत्र वेदना द्वार ॥ ६ ॥

हिवें भवनपति द्वार कहे छे ॥ पेहेले नारकीमें वारा आंतरा कह्या जिणमेसू दोय आंतरा छोड दीजे ॥ शेप दस आंतरामे दस प्रकारका भवनपति रहे छे ॥ असुर कुमार (१) नाग कुमार (२) सुवर्ण कुमार (३) विद्युत्कुमार (४) अग्नी कुमार ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार ॥ ६ ॥ उदधि कुमार ॥ ७ ॥ दिशि कुमार ॥ ८ ॥ वायु कु-

मार ॥ ९ ॥ स्तनित कुमार ॥ १० ॥ एव दश ॥ असुर कु राखडीको चिन्ह ॥ नाग कुमारके सर्पको चिन्ह ॥ सुवर्ण कु गरुड पखीको चिन्ह ॥ विद्युत्कुमारके वज्रको चिन्ह ॥ अग्नि रके पूर्ण कलशको चिन्ह ॥ द्वीप कुमारके सिहका चिन्ह ॥ कुमारके घोडाका चिन्ह ॥ दिशि कुमारके हातीको चिन्ह ॥ मारके मच्छको चिन्ह ॥ स्तनितकुमारके वर्द्धमान सरावलाको

ए दश प्रकारना भुवन पतियेंका सात क्रोड बहैत्तर ला वन छे ॥ चार क्रोड छे लाख दक्षिण दिशका भवनपत्याकां छे ॥ न्यारा न्यारा कहे छे ॥

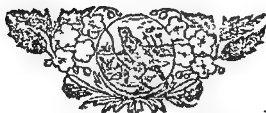
दक्षिण दिशके असुर कुमारके २४००००० चौतिस भवन ॥ नागकुमारके चमालीस लाख भवन ॥ सुवर्ण कुमारके तीस लाख भवन ॥ विद्युत्कुमारके चालीस लाख भवन ॥ अ मारके चालीस लाख भवन ॥ द्वीपकुमारके चालीस लाख भ उदधि कुमारके चालीस लाख भवन ॥ दिशीकुमारके चालीस भवन ॥ वायुकुमारके पचास लाख भवन ॥ स्तनित कुमारके लाख भवन ॥ ए दक्षिण दिशके भुवनपत्याका ॥

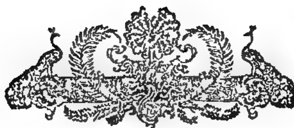
हिवे उत्तरदिशके भवनपत्याका भवनकी

हिवे वाणव्यन्तरद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीनी एक हजार योजनकी ऊपरकी ठीकरी कही ॥ जिणमेसू सौ योजन ऊपर छोडिजे और सौ योजन नीचे छोडिजे॥ वीचमें आठसे योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमें असख्याता "सोळे-जातका" वाणव्यन्तरा देवता ओका नगर छे॥ एक एक नगर जघन्य भरतक्षेत्र प्रमाणें मज्झम महा विदेह प्रमाणें उत्कृष्ट जम्बुद्वीप प्रमाणें मोटा छे ॥ एक एक भवन सवासो सवासो योजनका लंबा चौडा छे॥ जिणमें वारा, तलाव कुवा सरोवर पोखरणी सिद्धायतन ध्वजा पताका वावडी इत्यादिक आदि हे" पांच प्रकारना सुख वाण व्यंतर देव भोग रह्या छे

॥ इति वाणव्यतर देवद्वार ॥ ८ ॥

॥ इति सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे भवन-द्वाराख्यं तृतीय प्रकरणम् ॥





॥ प्रकरण चोथा–ज्योतिषीद्वार ॥



जंबुद्वीपमा दोय चंद्रमा दोय सूर्य एकसो छी अतर्गृह छप्पन नक्षत्र एक लाख तेहतीस हजार नवसे पचास क्रोडा क्रोडी तारा छे॥ सूर्यना एकसो चवऱ्याशी (१८४) मांडला छे ॥ तेमां ६५ पेंसट माडला जंबुद्वीपनी जगतीथी माही एकसो अशी योजन जाइये एटली सुधीमां छे अने जगतीथी ३३० तीनसोतीस जोजन लवण समुद्रमां जाइये एटली सुधीमां एकसो उगुणीस मांडला छे ॥ सर्व मिली पांचशे दश [५१०] योजनमां (१८४) एकसो चवऱ्याशी मांडला रह्या छे ॥ सर्वाभ्यंतर [प्रथम] मंडलथी बाहिरला अने छेला माडला के पाचशे दश योजनकी छेटी छे ॥ एकेक माडलाके परस्पर दो दो योजननी छेटी छे ॥ सूर्यनो विमान एक योजनना $\frac{४८}{६१}$ भागनूं लांबो पहूलो छे ॥ अने $\frac{२४}{६१}$ भागनो जाडो छे ॥ जंबुद्वीपमा सूर्यनो प्रथम मांडलो मेरु पर्वतथी (४४८२०) योजननें छेटे छे ॥ इम मांडछे २ दोदो योजनने $\frac{४८}{६१}$ भाग वधारता छेलुं १८४ मो मांडलो मेरुथी (४५३३०) योजनने छेटे आवे इमज छेला माडलाथी माहिले २ मांडले आवताभा (२) जोजनने $\frac{४८}{६१}$ भाग घटाडता जाय प्रथम मडल (४४८२०) योजननें छेटे आवे ॥ सर्वाभ्यतर (प्रथम) मांडलो

(०९६४०) योजननु लांबु पहोलूं छे ॥ ने तेनि परिधि (३१५०८९) योजन जाझेरानि छे ॥१॥ दूजो मंडलो[९९६४५] योजनने ३५/६१ भागनुं लावू पहोलू छे, ने तेनि परिधि (३१५१०७) योजननि छे इम निकलता लांबपणा पहोलपणामा (५) योजननें ३५/६१ भाग वधारता नें परिधिमां अगारे योजन वधारता छेलुं (१८४) भूमंडलो (१००६६०) योजननुं लांबु पहोलूं छे नें तेनि परिधि (३१८३१५) योजननी छे, इम छेला मंडलथी माहिले माडछे प्रवेश करता पण पूर्वोक्त रीते लांबपणां पहोलपणां परिधिमाथी पूर्वोक्त रीते घटाडतां जाव प्रथम मांडलानु लाव पहोलपणुं तथा परिधि आवे जीवारे सूर्य सर्वाभ्यतर (प्रथम) मडलने आश्रिने गति करे तिवारे एक मुहूर्ते (५२५१) योजननें २९/६० भाग चाले ॥ तिवारे इहाना मनुष्यने (४७२६३) योजननें २१/६० भाग वेगलेथी उगतो सूर्य नजरे आवे ॥ जिवारे दूजा मांडलानें आश्रीनें गति करे तिवारे एक मुहूर्ते (५२५१) जोजननें ४७/६० भाग चाले तिवारे (४७१७९) योजनने ५७/६० भाग वेगलेथी उगतो सूर्य नजरे आवे ॥ इम निकलतां माडछे २ चालमा भाग १८/६० वधारता नें नजरे आवे, तेमां ८४ योजन वधारता २, छेले १८४ में माडले एक मुहूर्ते (५३५०) योजनने १५/६० भाग चाले ने (३१८३१) योजनने ३०/६० भाग वेगलेथि उगतो सूर्य नजरे आवे, इम मांही प्रवेश करता माडले २, मुहूर्त गतिमानें नजरे आवे, तेमा पूर्वोक्तरीते घटाडता २, प्रथम मांडले पूर्वोक्त मान आवे ॥ जीवारे सर्वाभ्यतर (प्रथम) मांडलाने आश्रिनें सूर्य गति करे तिवारे (१८) मुहूर्तनो दिवस नें (१२) मुहूर्तनि रात्रि होय दूजा माडलाने आश्रिने गति करे तिवारे पूर्वोक्तमावी २/६१ भाग दिवसमाथि घटाडता नें रात्रीमां वधारता जाव (७८४) में माडले (१२) मुहूर्त तो दीननें (१८) मुहूर्तनी रात्रि होय

इम छेंले माडलेथी प्रथम मांडले आवता पूर्वोक्त भाग ठीन रात्रीमां वधारता घटाडता (१८) मुहूर्तने दीननें (१२) मुहूर्तनि रात्रि आवे ॥ जीवारे सर्वाभ्यतर (प्रथम) मांडलानें आश्रिने सूर्य गति करे तिवारे तापक्षेत्रनो आकार ऊर्ध्व मुखे कलवु वनस्पतिनां फुलने आकारे माहि सकुचित ॥ वाहिर लवण तरफ विस्तृत मांही मेरु पासे, अर्ध वलयाकारे वाहीर लवण तरफ पहोलो मांहि पलाठीना मुखनें आकारे, वाहिर गाडानि उद्धिनें आकारे ॥ ते तापक्षेत्रनि बे पांसे (२) अवस्थित वाहा छे, ते पीशतालीश २ हजार यौजननी लांबी छे ॥ अने एकेकी ताप क्षेत्र सस्थितरुप वाहानें (२) अनवस्थित वाहा छे, मेरु समीपे सर्वाभ्यंतर वाहा, अनें लवण तरफ सर्व वाहिरली वाहा तेनि सर्वाभ्यंतर वाहा, मेरु पांसे (९४८६) योजनने $\frac{6}{10}$ भाग परिधिपणे छे, ते किम, मेरुनि परिधिने (३) गुणी (१०) भांगे तो पूर्वोक्त मांन आवे ॥ ते ताप क्षेत्र निसर्व वाहिरनि वाहा, लवण पासे [९४८६८] योजन नें $\frac{4}{10}$ भागनी परिधिपणे छे, ते किम, जबुद्वीपनि परिधिनें (३) गुणी (१०) भागता पूर्वोक्त मान आवे ॥ तिवारे ताप क्षेत्र (७८३३३) योजनने $\frac{1}{3}$ भाग लांवपणे छे, सगडनिउद्धिने आकारे छे, तिवारे अंधकार, क्षेत्राकार, ताप क्षेत्राकारनि परें जाणवो ॥ मेरु पासे ते अधकार क्षेत्रनि सर्वाभ्यतर वाहा (६३२४) योजनने $\frac{6}{10}$ भागनि परिधिपणे छे, ते किम, मेरुनि परिधिनें (२) गुणी [१०] भांगता पूर्वोक्त मांन आवे ॥ ते अंधकार क्षेत्रनि सर्व वाहिरनि वाहा लवण समीपें (६३२४५) योजन $\frac{6}{10}$ भाग परिधिपणे छे, ते किम, जंबुद्विपनि परिधिने [२] गुणी (१०) भांगता पूर्वोक्त मान आवे

जीवारे-सूर्य बाहिरला मांडलाने आश्रिने गति करे तिवारे, ताप क्षेत्राकार पूर्ववत् (नवर एटलो फेर) जे अधकारनु प्रमाण वर्णव्यु ते ताप क्षेत्रनु प्रमाण जाणवु ॥

॥ इति सूर्याधिकारः ॥

हिवे, चंद्रमाना (१५) माडला छे ॥ तेमा जगतीथि (१८०) योजनमाही जाइये एटला क्षेत्रमा (५) माडला छे ॥ ने जगतीथि (३३०) योजन लवणमा जाइये एटला क्षेत्रमा (१०) माडला छे ॥ एव सर्व मिली (५१०) योजनमा (१५) माडला रह्या छे ॥ प्रथम माडलाथी छेलु माडलो पण (५१०) योजनने छेटे छे ॥ एकेक चद्रमडलने (३५) योजन ३०/६१ भाग ४/७ भागनु अतर छे, एक मडल ५६/६१ भागनु लाबु पहोळु छे ने २८/६१ भागनु जाडू छे ॥ सर्वाभ्यतर (प्रथम) मडल मेरुथि (४४८२०) योजनने छेटे छे ॥ दूजो मडल मेरथी (४४८५६) योजनने ३५/६१ भागने ४/७ भागने छेटे छे ॥ इम निकलता माडले २, छत्रिस योजनने ३५/६१ भागने ४/७ भाग वधारतार, छेलु पद्रमु माडलु, मेरथी (४५३३०) योजनने छेटे आवे ॥ इम माडले २, माहीली कोरे प्रवेश करता, पूर्वोक्त योजन घटाडता २, प्रथम मडल मेरुथि पूर्वोक्त छेटे आवे ॥ सर्वाभ्यतर (प्रथम) मडल (९९६४०)योजननुं, लांबु पहोळु छे, नें तेनि परिधि (३१५०८९) योजन जाझेरानि छे, दूजो मडल (९९७१२) योजन ५१/६१ भागन १/७ भागनु लांबू पहोळू छे, ने तेनि परिधि (३१५३१९) योजन जाझेरानि छे, इम निकलता माडले २, लांब पहोळपणामा (७२) योजनने ५१/६१ भागने १/७ भाग वधारता नें परिधिमा (२३०) योजन माडले २, वधारता छेल (१५) मा माडलो (१००६६०) योजननु लाबु छे, नें तेनि परिधि (३१८३१५) योजननी आवे ॥ इम बाहिरथि माहिले माडले प्रवेश करता, पूर्वोक्त लांब पहोळपणा-

मांथी, पूर्वोक्त योजन घटाडताने, परिधिना मानमाथी, पण पूर्वोक्त योजन घटाडता, प्रथम मडलनु लांबपणुं पहोलपणुं तथा परिधि आवे ॥ जिवारे चद्र सर्वाभ्यतर (प्रथम) मडलनें, आश्रिने गति करे, तिवारे एक मुहूर्ते चंद्र (५०७३) योजनने एक योजनना (१३७२५) भाग करिये तेवा ७७४४/१३७२५ भाग चाले तिवारे इहाना मनुष्यनें (४७२६३) योजननें २१/६० भाग वेगलेथी उगतो चंद्र नजरे आवे जीवारे चद्र दूजा माडलाने आश्रिनें गति करे तिवारे (१) मुहूर्ते (५०७७) योजनने ३६७४/१३७२५ भागचाले एव निकलता मांडले २, मुहूर्त गतिमां (३) योजनने ९६५५/१३७२५ भाग वधारता यावत्, छेले [१५] माडले [१] मुहूर्ते (५१२५) योजनने ६९९०/१३७२५ भाग चाले, इम माही प्रवेश करता माडले २, मुहूर्त गतिमाथी पूर्वोक्तरीते, योजन भाग घटाडता प्रथम मांडले, मुहूर्त गति आवे, ते दीनें चंद्र उगतो (३१८३१) योजनथी नजरे आवे ॥

॥ इति चद्राधिकारः ॥

हिवे नक्षत्राना [८] मांडला छे तेमां जगतीथी (१८०) योजन जबुद्वीपमां पेशिये, एटलामां (२) मंडल छे नें जगतिथी [३३०] योजन लवणमां जइये, एटलामां नक्षत्रना [६] मांडला छे सर्व मिली [५१०] योजनमां [८] मांडला रह्या छे, सर्वाभ्यतर (प्रथम) मडलथी, छेलु (८) मु मडल (५१०) योजनने छेटे छे ॥ नक्षत्रना माडला (२) नें (२) योजननु आतरुं नक्षत्रनुं माडलो १ गाउनुं लांबु पहोलु नें अर्द्ध गाउनु जाडु छे ॥ मेरुथी [४४८२०] योजनने छेटे प्रथम मांडलो छे मेरुथी (४५३३०) योजनने छेटे छेलु (८) मु माडलो छे प्रथम मांडलो (९९६४०) योजननु लांबु पहोलु छे; नें (३१५०८९) योजन जाझेरानि तेनि परिधि छे ॥ बाहिरलु [८] मु, माडलो (१००६६०) योजननुं, लाबू छे नें

(१३८३१५) योजननि तेनि परिधि छे, जीवारे प्रथम मांडछे चाले तिवारे (१) एक मुहूर्ते (५२६५) योजनने $\frac{१८२६३}{२१९६०}$ भाग चाले जीवारे छेला मांडलाने आश्रिने गति करे तिवारे मुहूर्ते (५३१९) योजनने $\frac{१६३६५}{२१९६०}$ भाग चाले (८) नक्षत्रना मांडला १–३–६–७–८–१०–११–१५ मा, चद्र मडल साथे भेला छे, एक मुहूर्ते चंद्र जे जे मांडलाने आश्रिने गति करे ते ते, मांडलानी परिधिना (१७६८) भाग चाले ते मंडलनि परिधिने (१०९८००) छे दिये तेवा सूर्य (१) मुहूर्ते (१८३०) भाग चाले नक्षत्र (१८३५) भाग चाले ॥

॥ इति नक्षत्राधिकारः ॥

हिवे (५) सवछरना नाम.–नक्षत्र सवछर [१] युग सवछर (२) प्रमाण संवछर (३) लक्षण सवछर (४) शनैश्चर संवछर (५) नक्षत्र सवछरना (१२) भेद कहे छे ॥ श्रावण जाव आषाढ ॥ (अथवा) बृहस्पति नामे ग्रह (१२) वर्षे सर्व नक्षत्रना मांडलाने पूर्ण करे नक्षत्र भोगवी छे ते नक्षत्र सवछर कहिये ॥ १ ॥ युग सवछरना पाच भेद ॥ चद्र (१) चद्र चद्र (२) अभिवर्द्धित [३] चद्र (४) अभिवर्द्धित (५) ॥ प्रथम चद्र सवछरने (२४) पर्व एव दूजा चोथाना पण (२४) पर्व जाणवा ॥ अभिवर्द्धितोना छवीस २, पर्व, एव [५] सवछरे (१) युग १२४ पर्व ॥२॥ प्रमाण सवछरना ५ भेद ॥ नक्षत्र (१) चद्र (२) ऋतु (३) आदित्य (४) अभिवर्द्धित [५] ॥३॥ लक्षण सवछरना (५) भेद ॥ सम नक्षत्र (जे वखते जेनो जोग जोइये ते) जोग जोडे सम ऋतु परिणमे, अति ताप टाढ नहि, बहु उदक वर्षे, तेने नक्षत्र सवछर कहिये [१] पूर्णिमाए चद्र साथे विषम चार नक्षत्रनो योग होय, तापे टाढे, अति ०।० घणो

मेह वर्षे, तेने चंद्र संवछर कहिये ॥ २ ॥ वनस्पतिना प्रवाल विषम परिणमे, ऋतु विना अकाले फुल फल आवे, वर्षा सम्यक् प्रकारे न वर्षे, तेने कर्म संवछर कहिये ॥ ३ ॥ थोडे मेहे करी, पृथिवी पाणीनो रस, फुल फलनो रस आपे, सम्यक् प्रकारे धान्य निपजे तेने आदित्य संवछर कहिये ॥ ४ ॥ सूर्यने तापे करि तप्या थका, क्षण लव दिवस, ऋतु परिणमे, नें नीचा स्थानक जले करि पुराय तेने अभिवर्द्धित संवछर कहिये ॥ ५ ॥ ४ ॥ अभिजितादि (२८) नक्षत्रोनें, शनैश्चर महाग्रह ३० वर्षे भोगवी ले, तिवारे शनैश्चर संवछर (अथवा) ए संवछर (२८) प्रकारनो ते अभिच, जावं, उत्तरापाढा (५) एक संवछरना (१२) मास तेना (२) प्रकारे नाम, लौकिक पक्षे श्रावण जाव आषाढ ॥ लोकोत्तर पक्षे अभिनंदित (१) प्रतिष्ठित (२) विजय (३) प्रीति वर्द्धन (४) श्रेयांश (५) शीत (६) शिशिर (७) हिमवंत (८) वसंत (९) कुसुम संभव (१०) निदाघ (११) वनविरोध (१२) एक मासना (२) पक्ष बहुल पक्ष (१) शुक्र पक्ष २, एक पक्षना (१५) दिवस ते प्रतिपदा दिवस जाव पंचदशी दिवस ॥ हिवे (१५) दिवसना (१५) नाम ते ॥ पूर्वांग (१) सिद्ध मनोरम (२) मनोहर (३) यशोभद्र (४) यशोधरा (५) सर्व काम समृद्ध (६) इंद्र मूर्द्धाभिषिक्त (७) सोमणस (८) धनंजय (९) अर्थ सिद्ध (१०) अभिजात (११) अत्यासन [१२] शतंजय (१३) अग्निवेश्म (१४) उपशम (१५) हिवे [१५] दिवसने [१५] तिथी ते नंदा (१) भद्रा (२) जया [३] तुछा [४] पूर्णा (५) ए रीते (५) नें ३ वार उथलावता (१५) थाय, एक पक्षनि (१५) रात्रि ते प्रतिपदा जाव पंचदशी ॥ हिवे (१५) रात्रिना नाम, ते उत्तमा (१) सुनक्षत्रा (२) एलापत्या (३) यशोधरा [४] सोमणसा (५) श्री संभूता [६] विजया

(७) विजयंती [८] जयंती [९] अपराजिता (१०) इच्छा (११) समाहारा [१२] तेजा (१३) अति तेजा [१४] देवानंदा [१५] हिवे रात्रिनी (१५) तिथि कहे छे ॥ उग्रवती (१) भोगवती [२] यशोवती (३) सर्व सिद्धा (४) शुभ नाम (५) ए रीते ३ वार, उथलाववा (१५) तिथी थाय ॥ एक अहोरात्रना (३०) मुहूर्तना नाम ॥ रौद्र (१) श्वेत (२) मित्र (३) वायु (४) सुपीन (५) अभिचंद्र (६) माहेंद्र (७) बलवान (८) ब्रह्म (९) ब्रह्म सत्य (१०) इशान (११) त्वष्टा (१२) भावितात्मा (१३) वैश्रमण (१४) वारुण [१५] आनंद (१६) विजय (१७) विश्वसेन (१८) प्राजापत्य (१९) उपशम (२०) गांधर्व (२१) अग्नि वैश्य (२२) शतवृषभ (२३) आतपवान (२४) अमम (२५) ऋणवान (२६) भौम (२७) वृषभ (२८) सर्वार्थ (२९) राक्षस (३०) हिवे करण (११) ना नाम, ॥ बव (१) बालव (२) कौलव (३) स्तिमित लोचन (४) गरादि (५) वणिज (६) विष्टि (७) शकुनि [८] चतुष्पद (९) नाग (१०) किंस्तुघ्न (११) तेमां ७ करण चर, ते प्रथमना ७, नें उपरला ४ करण स्थिर छे, शुक्लपक्षे पडवा रात्रे बव करण ॥ दूजे दीवशे बालव करण, रात्रे कौलव ॥ एवं तिथीना दिवस रात्रिने ॥ करण एकेक पछि एकेक एम लेता मुकता जाव पूर्णिमा ए दीवशे विष्टि रात्रे बव बहुल पक्षे पडवाने दिवशे बालव रात्रे कौलव एव दीवश रात्रे अनुक्रमे करण लेता मुकता जाव चतुर्दशी ए दिवशे विष्टि रात्रे शकुनी अमावास्या ए दीवशे चतुष्पद रात्रे नाग शुक्ल पक्षनें पडवा दिवशे किंस्तुघ्न चरकरणते बदलाय ॥ स्थिर ते हमेश तेज तिथिये आवे ॥ संवछरमां आदि चंद्र ॥ अयनमां आदि दक्षिणायन ॥ ऋतुमां आदि प्रावृट् ॥ मासमां आदि श्रावण ॥ पक्षमां आदि बहुल ॥ अहोरात्रमां आदि दिवस ॥ मुहूर्तमां आद

(२) हिवे संठाणद्वार कहे छे ॥ पहिलो। दूजो। तीजो। चोथो। नवमो। दसमो। ग्यारमो। वारमो देवलोक अर्ध चद्रमाके आकार ॥ पांचमो छट्ठो सातमो आठमो देवलोक और नव ग्रीवेक और सर्वार्थ सिद्ध विमान पूर्ण चंद्रमाके आकार ॥ चार अणुत्तर विमान सिंघोडाके आकार ॥

॥ इति सठाणद्वार ॥ २ ॥

हिवे प्रतरद्वार कहे छेः—सर्व देवलोकोंमें (६२) प्रतर ॥ न्यारे न्यारे कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे (१३) प्रतर ॥ तीजा चोथा देवलोकमें (१२) प्रतर ॥ पांचमा देवलोकमें (६) प्रतर ॥ छट्ठा देवलोकमें (५) प्रतर ॥ सातमे देवलोकमें (४) प्रतर ॥ आठमे नवमे दशमे इग्यारमें वारमे देवलोकमे चार २ प्रतर ॥ नव ग्रीवेकके (९) प्रतर ॥ पांच अणुत्तर विमानका एक प्रतर ॥

॥ इति प्रतरद्वार ॥ ३ ॥*

हिवे विमानद्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकमें (३२०००००) बत्तिस लाख विमान ॥ दूजा देवलोकमे (२८) लाख विमान ॥ तीजा देवलोकमें बारा लाख विमान ॥ चोथा देवलोकमें आठ लाख विमान॥ पांचमां देवलोकमे चार लाख विमान ॥ छट्ठा देवलोकमें पचास हजार विमान ॥ सातमा देवलोकमे चालीस हजार विमान ॥ आठमां देवलोकमे छे हज्जार विमान ॥ नवमां दसमा देवलोकमे चारशे विमान ॥ इग्यारा वारमां देवलोकमे (३००) विमान ॥ नवग्रीवेकना तीन त्रिगडा ॥ पहिले (ऊपरला) त्रिगडामें (१११) विमान॥ दूसरा (वीचला) त्रिगडामें (१०७) विमान ॥ तीजा [नीचला] त्रिग-

* (प्रतर संख्या) १३–१२–६–५–४–४–४–४–९–१–७व सर्व (६२) प्रतर क्रमसे गीण लेना

दामें (१००) विमान ॥ पाच अणुत्तर विमानमें [५] विमान ॥

॥ इति विमानद्वार ॥ ४ ॥

* हिवे पङ्क्तिबध द्वार कहे छे ॥ पहिला दूजा देवलोकमे गुणतीस्से (२९००) पचीस २५) पङ्क्ति ॥ तीजा चोथा देवलोकमे (७१००) इकीससे पङ्क्ति ॥ पाचमा देवलोकमे (८३४) आठसे चैातीस पङ्क्ति ॥ छठा देवलोकमे (५८५) पक्ति ॥ सातमे देवलोकमे (३९६) तीनसे छिन्नु पक्ति ॥ आठमे देवलोकमे (३३२) तीनसे बत्तिस पक्ती ॥ नवमा दसमा देवलोकमें [२६८] पक्ती ॥ इग्यारमे बारमे देवलोकमे (२०४) पक्ति ॥ नवग्रीवेकका तीन त्रिगडा ॥ पहिला त्रिगडामें (१११) पक्ति ॥ दूसरा त्रिगडामें (७५) पक्ति ॥ तीसरा त्रिगडामें (२९) पक्ति ॥ पांच अणुत्तर विमानमें (५) पक्ति ॥ एव सर्व मिली (७८७४) पक्ति जांणवी ॥

॥ इति पक्तिबध द्वार ॥ ५ ॥

हिवे सख्याता असख्याता द्वार कहे छे ॥ सर्व ऊर्ध्वलोकमें (८४९७०२३) विमान छे ॥ जिनका पाच भाग कीजे (१६९९४०४ विमान प्रत्येक भागमे रहे छे) एक योजनका तीन भाग मांहीला दोय भाग लीजे ॥ एक भागमें सख्याते योजनका विमानोमें सख्याता देवता रहे छे ॥ और चार भागमें असख्याता योजनका विमानोमें असख्याता देवता रहे छे ॥

॥ इति सख्याता असंख्याता द्वार ॥ ६ ॥

* (विमान संख्या) पेहेला देवलोकेसे लेकर सर्वार्थसिद्धतक क्रमसे जानना (३२०००००) २८०००००) १२०००००) ८०००००) ४०००००) ५००००) ४००००) ६००) ४००) ३०००) १११) १०७) १००) ५) एव सर्व ८४९७०२३ विमान—

हिवे राजुद्वार कहे छे॥ पेहेलो दूजो देवलोक सं भूमतलाथी राजू उंचो ॥ तीजो चोथो देवलोक अठाई राजू ऊचो ॥ पांच देवलोक सवातीन राजू उंचो॥ छठो देवलोक साडातीन राजू उंचो सातमो देवलोक पूणाचार राजू ऊंचो ॥ आठमो देवलोक चार रा ऊंचो ॥ नवमो दसमो इग्यारमो बारमो देवलोक पांच राजू ऊचो नव ग्रीवेक छे राजू ऊंचा॥ पांच अणुत्तर विमान सात राजू मेठरा ऊंचा

॥ इति राजुद्वार ॥ ७ ॥ *

हिवे आधार द्वार कहे ,छे ॥ पेहेलो दूजो देवलोक घनवाय आधार ॥ तीजो चोथो पांचमो देवलोक घनोदधिके आधार ॥ छ सातमो आठमो देवलोक घनवाय अनें घनोदधिके आधार ॥ नव देवलोकसें लेकर सर्वार्थ सिद्ध विमान तक केवल आकाशके आधार

॥ इति आधारद्वार ॥ ८ ॥

हिवे मेहेलात द्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे [५० पांचशे २, योजनकी ऊची मेहेलात ॥ तीजा चोथा देवलोकमे छेस २, योजनकी ऊची मेहेलात ॥ पांचमे छट्ठे देवलोकमे सातशे योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ सातमे आठमे देवलोकमे आठसे योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ नवमे दसमे इग्यारमें बारमे देवलोक नवशे २, योजनकी ऊची मेहेलात ॥ नव नव ग्रीवेकमें, हजार योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ पांच अणुत्तर विमानमें इग्यारे इग्यारें योजनकी ऊंची मेहेलात ॥

॥ इति मेहेलात द्वार ॥ ९ ॥

* एक राजु जमीनका प्रमाण ३-८१-२७-९७० मणका एक लो हका गोलाको एक 'भार' कहा जाता है एसे हजार गोलेका एक गोला बनाके कोई देवता ऊंचा जाके उसको निचा डाले 'तब वो गोला ६ महिने ६ दिन ६ प्रहर और ६ घटिकामे जीतनी जगा (आकाश) उल्लंघे उतनी जगाको एक " राजु " की जगा कही जाती है

हिवे अगणाईद्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमें सत्तावीससे योजनकी अगणाई ॥ तीजा चोथा देवलोकमा छवीशे योजनकी अगणाई ॥ पांचमा छट्ठा देवलोकमे पचीस्से योजनकी अगणाई ॥ सातमे आठमे देवलोकमे चौवीस्से योजनकी अगणाई ॥ नवमा दसमा इग्यारमा बारमा देवलोकमे तेवीस्से योजनकी अगणाई ॥ नवग्रीवेकमे बावीस्से योजनकी अगणाई ॥ पाच अणुत्तर विमानमे एकवीस्से योजनकी अगणाई ॥

॥ इति अगणाई द्वार ॥ १० ॥

हिवे वर्णद्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे वर्ण पावे पांच तीजा चोथा देवलोकमे वर्ण पावे चार कालो टळ्यो ॥ पाचवे छठे देवलोकमे वर्ण पावे तीन कालो नीलो टळ्यो ॥ सातमे आठमे देवलोकमें वर्ण पावे दोय कालो नीलयो रातो टळ्यो॥ नवमे दसमे देवलोकसू लेकर सर्वार्थ सिद्ध तक वर्ण पावे एक ॥

॥ इति वर्णद्वार ॥ ११ ॥

हिवे चिन्हद्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकके इद्रके मुकुटमांही मृगको चिन्ह ॥ दूजा देवलोकके इद्रके मुकुटमांही भैसाको चिन्ह ॥ तीजा देवलोकके इद्रके सुयरको चिन्ह ॥ चोथा देवलोकके इद्रके बोकडाको चिन्ह ॥ पांचमे देवलोकके इद्रके मेंढकको चिन्ह ॥ छट्ठे देवलोकके इद्रके हाथीको चिन्ह ॥ सातमे देवलोकके इद्रके घोडाको चिन्ह ॥ आठमा देवलोकका इद्रके सर्पको चिन्ह ॥ नवमे दसमे देवलोकके इद्रके गेंडाको चिन्ह ॥ इग्यारमा बारमा देवलोकके इद्रके वृषभको चिन्ह ॥ आगे चिन्ह नथी ॥

॥ इति चिन्हद्वार ॥ १२ ॥

हिवे सामानिक द्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकके इद्रके चैयाशी हजार सामानिक देवता ॥ दूजा देवलोकके इद्रके अशी हजार सामानिक देवता ॥ तीजा देवलोकके इद्रके वेहेत्तर हजार सामानिक देवता ॥ चोथा देवलोकके इंद्रके सत्तर हजार सामानिक देवता ॥ पांचमे देवलोकके इद्रके साठ हजार सामा० ॥ छठे देवलोकके इद्रके पचास हजार सामानि० ॥ सातमे देवलोकके इद्रके चालिस हजार सामा० ॥ आठमे देवलोकके इद्रके तीस हजार सामानिक देवता ॥ नवमे दसमे देवलोकके इद्रके वीस हजार सामा० ॥ इग्यारमे वारमे देवलोकके इद्रके दस हजार सामा० ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति सामानिकद्वार ॥ १३ ॥

हिवे आत्मरक्षकद्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकके इद्र महाराजके तीन लाख छत्तीस हजार आत्मरक्षक देवता ॥ दूजा देवलोकके इंद्र महाराजके तीनलाख वीस हजार आत्मरक्षक० ॥ तीजे देवलोकके इंद्र महाराजके दोय लाख अठयाशि हजार आत्मरक्षक० ॥ चोथे देवलोकके इद्र महाराजके दोय लाख अशी हजार आत्मरक्षक० ॥ पांचमा देवलोकके इद्र महाराजके दोय लाख चालिस हजार आत्मरक्षक० ॥ छठे देवलोकके इद्रमहाराजके दोय लाख आत्मरक्षक० ॥ सातमा देवलोकके इद्र महाराजके एक लाख छासट हजार आत्मरक्षक० ॥ आठमा देवलोकके इद्र महाराजके एक लाख वीस हजार आत्मरक्षक० ॥ नवमे दसमे देवलोकके इद्र महाराजके अशीहजार आत्मरक्षक० ॥ इग्यारमे वारमे देवलोकके इंद्रमहाराजके चालीस हजार आत्मरक्षक० ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति आत्मरक्षकद्वार ॥ १४ ॥

हिवे लोकपाल द्वार कहे छे ॥ एकेक इंद्र महाराजके चार २, लोकपाल ॥ लोकपालोंके नांम सोम १ यम २ वरुण ३ वैश्रवण ४ ॥ सोमकी राजधानी पूर्वकी तरफ ॥ यमकी राजधानी दक्षिणकी तरफ ॥ वरुणकी राजधानी पश्चिमकी तरफ ॥ वैश्रवणकी राजधानी उत्तरकी तरफ ॥

॥ इति लोकपाल द्वार ॥ १५ ॥

हिवे त्रायतशक द्वार कहे छे ॥ एकेक इंद्र महाराजके तेवीस २ त्रायतशक देवता माता पिता गुरु स्थानक जांणवा ॥

॥ इति त्रायतशक द्वार ॥ १६ ॥

हिवे अणीकाद्वार कहे छे ॥ एकेक इंद्रमहाराजके सात २ अणिकाका अधिपति ॥ तेना नाम हाथी घोडा रथपायक नाटक गधर्व वृषभ ॥ पेहेला देवलोकके इंद्र महाराजके प्रत्येक अणिकामे एक क्रोड एक लाख अडसट हजार सैन्य० ॥ दूसरे देवलोकके इंद्र महाराजके प्रत्येक अणिकामे एक क्रोड एक लाख साठ हजार सैन्य ॥ तीसरा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० एक्याणवे लाख चमालीस हजार सैन्य ॥ चोथा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० अठयाशी लाख नव्वेह हजार सैन्य ॥ पाचमे देवलोकके इंद्र महाराजके प्रत्ये० अ० छेंत्तर लाख वीस हजार सैन्य ॥ छठा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० त्रेसट लाख पचास हजार सैन्य ॥ सातमा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० पचास लाख अशी हजार सैन्य ॥ आठमा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० अडतीस लाख दस हजार सैन्य ॥ नवमा दसमा देवलोकके इंद्र महाराजके प्र० अ० पचीस लाख चालीस हजार सैन्य ॥ इग्या-

रमे बारमे देवलोकके इद्र महाराजके म० अ० बारा लाख सत्तर हजार सैन्य ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति अणिकाद्वार ॥ १७ ॥

हिवे परखदाद्वार कहे छे ॥ परखदा ३ प्रकारकी ॥ अभ्यतर १ मध्य २ बाहिर ३ ॥ पहिले इद्र महाराजके अभ्यतरकी परखदा बारा हजार ॥ मध्यमकी परखदा चवदा हजार ॥ बाहिरकी परखदा सोला हजार ॥ दूसरे दे० इ० म० अभ्यतरकी परखदा दस हजार ॥ मध्यमकी० बारा हजार ॥ बाहिर० चवदे हजार ॥ तीसरे दे० इ० म० अभ्यतरकी० आठ हजार ॥ मध्यमकी० दस हजार ॥ बाहिरकी० बारा हजार ॥ चोथे दे० इ० महा० अभ्यतरकी० छे हजार ॥ मध्यकी० आठ हजार ॥ बाहिरकी० दस हजार ॥ पाचमे दे० इ० महा० अभ्यतरकी० चार हजार ॥ मध्यकी० छे हजार ॥ बाहिरकी० आठ हजार ॥ छठे देव लो० इ० महा० अभ्यतरकी० दोय हजार ॥ मध्यकी० चार हजार ॥ बाहिरकी० छे हजार ॥ सातमे दे० इं० महा० अभ्यतरकी० एक हजार ॥ मध्यकी० दोय हजार ॥ बाहिरकी चार हजार ॥ आठमे देवलोक० इ० महा० अभ्यतर० पाचशे ॥ मध्यकी० १ हजार ॥ बाहिरकी० दोय हजार ॥ नवमा दसमा दे० इं० महा० अभ्यतर० अढाईसे ॥ मध्यकी० पाचशे ॥ बाहिरकी० १ हजार ॥ इग्यारमा बारमा दे० इ० महा० अभ्यतर० सवासे ॥ मध्यकी० अढाईसे ॥ बाहिरकी० पाचशे ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति परखदा द्वार ॥ १८ ॥

हिवे अग्रमेपी द्वार कहे छे ॥ पेहला दूसरा देवलोकके इद्रके आठ २ अग्रमेपी ॥ एकेक अग्रमेपीके सोले २ हजार परिवार ॥ एक लाख अठावीस हजार तो मूलगी देवी ॥ एकेक देवी भोग

निमित्तें उत्तर वैक्रेयसे सोळे २ हजार रुप करे ॥ सर्व रुप दो अब्ज चारक्रोड अशी लाख रुप थया ॥ इतनेही रुप इंद्र करे ॥

॥ इति अग्रमेषी द्वार ॥ १९ ॥

हिवे प्रचारणा द्वार कहे छे ॥ पहिला दूजा देवलोकमे मनुष्यनी परे प्रचारणा ॥ तीसरे चोथे देवलोकमे स्पर्श सबधी प्रचारणा ॥ पांचमे छठे देवलोकमे बचन सबधी प्रचारणा ॥ सातमे आठमे देवलोकमे रुप सबधी प्रचारणा ॥ नवमे दसमे इग्यारमे बारमे देवलोकमे मन सबधी प्रचारणा ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति प्रचारणा द्वार ॥ २० ॥

हिवे विमानद्वार कहे छे ॥ पेहेलो पालक नामे विमान ॥ दूसरो पुष्कल नामे विमान ॥ तीसरो सुमानस नामे विमान ॥ चोथो सुवछल नामे विमान ॥ पांचमो नंदीवर्द्धन नामे विमान ॥ छठो कांम नामे विमान ॥ सातमो धाम नामे विमान ॥ आठमो विचरा नामे विमान ॥ नवमो विमल नामे विमान ॥ दसमो सर्वोद्भद्र नामे विमान ॥ इग्यारमो बारमो प्रियग नामे विमान ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति विमानद्वार ॥ २१ ॥

हिवे आनाजानाद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीमें चारों जातका देवता आवे ॥ दूसरी नारकीमे तीन जातका देवता आवे ॥ तीसरी नारकीमें दो जातका देवता आवे ॥ ज्योतिषी वाणव्यंतर टळ्या ॥ चोथी नारकीसे सातमी नारकी तक एक विमानिक देवता आवे जावे ॥

॥ इति आनाजानाद्वार ॥ २२ ॥

हिवे ज्ञानद्वार कहे छे ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी देवता ऊंचो वा नीचो देखे तो पचीस योजन तक देखे ॥ भुवनपति असुरकुमार ऊंचा देखे तो पेहेला दूजा देवलोक तक देखे ॥ नीचा देखे तो पेहेली नारकी तक संपूर्ण देखे ॥ तिरछा देखे तो असख्याता द्वीप समुद्र देखे ॥ पेहेला दूजा देवलोकवाला ऊपर अपनी ध्वजा पताका तक देखे ॥ नीचा देखे तो पेहेली नारकीके अंततक देखे ॥ तिरछा देखे तो असंख्याता द्वीप समुद्र देखे ॥ तीसरा चौथा देवलोकवाला ऊंचा तिरछा पूर्ववत् देखे ॥ नीचा दूसरी नारकीतक देखे ॥ पांचमा छट्ठा देवलोकवाला ऊंचो तिरछो पूर्ववत्० ॥ नीचा तीसरी नारकी तक० सातमा आठमा देवलोकवाला ऊं० ति० पू० ॥ नीचा चोथी ना० ॥ नवमासे बारमा देवलोकवाला ऊ० ति० पू० ॥ नीचा पांच ना० ॥ नव ग्रीवेकवाला देवता ऊ० ति० पू० ॥ नीचो छट्ठी ना० ॥ पांच अणुत्तर विमानवाला देवता ऊ० ति० पू० ॥ नीचा सातमी ना० ॥

॥ इति ज्ञानद्वार ॥ २३ ॥

हिवे शक्तिद्वार कहे छे ॥ असुरकुमारके इंद्र शक्तिसे उत्तर वैक्रेय करे तो जघन्य एक जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा असंख्याता भरे ॥ पेहेला देवलोकके इंद्र शक्तिसे उ० ॥ जघन्य दोय जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा अस० ॥ दूजा देवलोकके इंद्र श० उ० तो जघन्य दोय जंबुद्वीप जाझेरा भरे ॥ उत्कृष्टा अस० ॥ तीसरा देवलोकके इंद्र श० उ० जघन्य चार जंबुद्वीप० ॥ उत्कृष्टा अस० ॥ चोथा दे० इं० श० उ० ज० चार जंबुद्वीप जाझेरा ॥ उ० अस० ॥ पांचमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य आठ जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा अस० ॥ छट्ठा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० ॥ जघन्य आठ जंबुद्वीप जाझेरा भरे ॥ उत्कृष्टा अस० ॥ सातमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य सोळा जंबुद्वीप भरे ॥

उत्कृष्ट असं० ॥ आठमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य सोला जंबुद्वीप जाझेरा भरे ॥ उत्कृष्ट असं० ॥ नवमा दसमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य ३२ जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्ट असं० ॥ इग्यारमा बारमा देवलोकके इंद्र शक्तीसे उ० जघन्य ३२ जंबुद्वीप जाझेरा० ॥ उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप समुद्र भरे ॥ आगे उत्तर वैक्रेय नास्ति ॥

॥ इति शक्तिद्वार ॥ २४ ॥

हिवे पुण्यद्वार कहे छे ॥ वाणव्यंतर देवता सो वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना ज्योतिषी देवता २०० वरसमें क्षय करे ॥ ज्योतिषी देवताके इंद्र तीनसे वरसमें जितना पुण्य क्षय करे उतना भुवनपति चारसे वरसमे क्षय करे ॥ भुवनपतीके इंद्र पांचशें वरसमें जितना पुण्य क्षय करे उतना पेहेला दुसरा देवलोकवाला हजार वरसमें पुण्य क्षय करे ॥ तीसरा चोथा देवलोकवाला [२०००] वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना पांचवा छट्ठा देवलोकवाला (३०००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ सातमा आठमा देवलोकवाला (४०००) वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना नवमा दसमा इग्यारमा बारमा देवलोकवाला (५०००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ नव नवग्रीवेकका तीन त्रिगडा ॥ पहिला त्रिगडावाला जितना एक लाख वरसमे पुण्य क्षय करे उतना दूसरा त्रिगडावाला (२०००००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ तिसरा त्रिगडावाला जितना (३०००००) वरसमे पुण्य क्षय करे उतना चार अणुत्तर विमानवाला (४०००००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ चार अणुत्तर विमानवाला चार लाख वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना सर्वार्थसिद्ध विमानका देवता (५०००००) वरस पीछे पुण्य क्षय करे ॥

॥ इति पुण्यद्वार ॥ २५ ॥

कहे जे हुं पण आवु । इम कहिने मिश्र गुणठाणावाले । वांदवाने पग उपाडयो ॥ तेहवामा दूजो महा मिथ्यात्वी मित्र मिल्यो ॥ तेणे पुच्छ्युं के स्यांभणि जावोछो । तिवारे मिश्र गुणठाणावालो कहे, जे । साधु महा पुरुष ने वांदवा जइये छे ॥ तिवारे महा मिथ्याति कहे जे । एहने वांदे स्यु थाय । ए तो मेला घेला छे ॥ इम कहिने भोलवि नांख्यो पाछो वेठो । तिवारे साधु ज्ञानिने श्रावके वांदिनें पुछ्युं जे स्वामि वांदवा पग उपाडयो, तेहने स्युं गुण निपनो । तिवारे ज्ञान गुरु कहे छे । जे काला ऊडद सरिखो हतो ते छडि-दाल सरिखो थयो ॥ कृष्ण पक्षी टलिने शुक्ल पक्षी थयो ॥ अनादि कालनो उलटो हतो ते सुलटो थयो ॥ समकित सन्मुख थयो पण पग भरवा समरथ नहि ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडी मान मोडी वंदणा नमस्कार करीनें पूछता हुवा । स्वामीनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ॥ तिवारे श्री भगवत कहे छे ॥ ते जीव चार गति (२४) दंडकमा भमीनें पिण देश उणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तनमां उत्कृष्टो संसारनो पार पामशे ॥ ३ ॥ चोथो अविरिति सम्यक्त्वदृष्टि गुणठाणुं तेहना स्युं लक्षण ॥ सात प्रकृतीनें क्षयोप समावे । अनन्तानुबंधी क्रोध (१) मान (२) माया (३) लोभ (४) सम्यत्तव मोहनीय (५) मिथ्यात्व मोहनीय (६) मिश्र मोहनीय (७) ए सात प्रकृतीने कांईक उदय आवे ॥ तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामा दल छे तेहनें उपसमावे तेहनें क्षयोपसम सम्यत्तव कहिये ॥ ते सम्यत्तव असख्याती वार आवे ॥ अने सात प्रकृतीना दलने सर्वथा उपसमावे ढांके तेहने उपसम सम्यत्तव कहिये ॥ ते समकित पांचवार आवे । अने सात प्रकृतीना दलने सर्वथा क्षय करे । तिवारे क्षायक समकित्व कहिये ॥ ते समकित्व एकवार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्य थकी (१) क्षेत्र थकी (२) काल थकी (३) भाव थकि (४) नवकार

सियादि ॥ छे मासी तप जाणे सरदेह परूपे पण फरशी सके नही॥ तिंवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतनें पूछता हुआ ॥ स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ॥ तिंवारे श्री भगवंत कहे छे । हे गौतम ते जीव समकित व्यवहारपणें शुद्ध प्रवर्त्ततो थको जघन्य तीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पघरे भवे मोक्ष जाय ॥ वेदक समकित एकवार आवे एक समयनी स्थिति छे। पूर्वे जो आ-युष्यनो वध न पड्यो होय तो ॥

॥ हिवे ये सात बोलामां बंध पाडे नही ते कहे छे ॥

नरकनो आयुष्य (१) भवनपतीनो आयुष्य (२) वाणव्यतरनो आयुष्य (३) ज्योतिषीनो आयुष्य (४) तिर्यंचनो आयुष्य (५) स्त्री वेदनो आयुष्य (६) नपुसक वेदनो आयुष्य (७) ए सात बोलामां आयुष्यनो बंध पाडे नही ते जीव समकितना आठ आचार अराधी चतुर्विध संघनी परम हर्षसें भक्ती करतो थको जघन्य पहिले देव-लोके उपजे ॥ उत्कृष्ट बारमे देवलोके उपजे । पन्नवणानी साखे ॥ पूर्व करमने उदे करी व्रत पचखाण करी न सके । पण अनेक व-र्णनी श्रमणोपासकनी मवर्जा पालक कहिये ॥ दशाश्रुतस्कंधे श्रावक कह्या छे ते माटे ॥ दरशन श्रावकने अवीरीय समदीठी कहिये ॥४॥

हिवे पांचमुं देशविरति गुणठाणुं तेहना स्यु लक्षण ॥ इग्यारे प्रकृतीनें क्षयोप समावे ॥ सात तो पूर्वे कही ते ॥ अने प्रत्याख्यानी क्रोध (८) मान (९) माया (१०) लोभ (११) एव इग्यारे प्रकृतीनें क्षय करे तेहने क्षायक समकित कहिये ॥ अने इग्यारे प्रकृतीनें का-ईक ढांके काईक क्षय करे तेहनें क्षयोपसम समकित कहिये ॥ पा-चमे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ द्रव्यथी क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसी आदि देइने छै मासी तप जाणे सरदहे परूपे

शक्ति प्रमाणें फरसे ॥ एक पच्चखाणथि माडिने १२-व्रत ॥ ११ श्रावकनी पडिमा आदरे जावत् संलेखणा सुधि अनशन करि आराधे। तिवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पूछता हुवा। ते जीवने स्युं गुण निपनो। तिवारे श्री भगवते कह्यु ॥ जघन्य तिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टा १५ भवे मोक्ष जाय ॥ जघन्य पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्कृष्टा १२ मे देवलोके उपजे। तेने साधुना व्रतनि अपेक्षाये देशविरति कहिये ॥ पण परिणामथि अव्रतनी क्रिया उतरी गई छे ॥ अल्प इच्छा ॥ अल्प आरभ ॥ अल्प परिग्रही ॥ सुशील। सुव्रति ॥ धर्मिष्ठ। धर्मव्रति। कल्प उग्रविहारी। महा सवेग विहारी ॥ उदासी ॥ वैराग्यवत ॥ एकातआर्य ॥ सम्यग्मार्गी ॥ सुसाधु। सुपात्र ॥ उत्तम। क्रियावादि। आस्तिक्य। आराधक। जैनमार्ग प्रभावक ॥ अरिहतना शिष्य वर्णव्या छे। गीतार्थ जाणे छे ॥ सिद्धांतनि शाख छे। श्रावकपणुं। एक भवमां प्रत्येक हजारवार आवे ॥ ५ ॥

हिवे छठुं प्रमत्त सजति गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ॥ १५ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ११ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने पच्चखाणावरणीय क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ एव १५ प्रकृतिने क्षय करे तो १ क्षायिक समकित कहिये ॥ अने १५ प्रकृतिने ढाके तो उपशम समकित कहिये ॥ अने कांइ ढांके ने कांइ क्षय करे तो क्षयोपशम समकित कहिये ॥ तिवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवतने पूछता हुवा। ते जीवने स्यु गुण निपनो। तिवारे श्री भगवते कह्युं जे ॥ ते जीव द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि जीवादिक नव पदार्थने तथा नोकारसी आदि छे मासि तप जाणे–सरदहे–परूपे–फरसे ॥ साधुपणुं एक भवमां नवसें वार आवे। ते जीव जघन्य तिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टा १५ भवे

मोक्ष जाय ॥ आराधक जीव । जघन्य पहिले देवलोके उपजे । उत्कृष्टा अनुत्तर विमाने उपजे ॥ १७ भेदे संजम निर्मल पाळे ॥ १२ भेदे तपस्या करे पण जोग चपल। कषाय चपल। वचन चपल। दृष्टि चपलताना अंश छे। तेणे करिने यद्यपि उत्तम अप्रमादि थका रहे छे। तोपण प्रमाद रहे छे माटे प्रमादपणे करि ॥ तथा कृष्णादिक लेश्या ॥ अशुभ जोग ॥ कोइक काळे प्रणति प्रणमे छे माटे ॥ कषाय प्रकृष्ट मत्त थइ जाय छे ॥ तेहने प्रमत्त संजति गुणठाणु कहिये ॥ ६ ॥

सातमुं अप्रमत्त संजति गुणठाणुं तेहनु स्युं लक्षण ॥ पांच प्रमाद छांडे । तिवारे सातमे गुणठाणे आवे । ते ॥ ५ ॥ प्रमादना नाम ॥ गाथा ॥ मद[१] विसय[२] कसाया[३] । निद्दा[४] विगहा[५] पंचमा भणिया । एए पंच पमाया । जीवा पडंति संसारे ॥ १ ॥

ए ५ प्रमाद छांडे अने १६ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ १५ ॥ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने संजलनो क्रोध । एवं १६ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ तेहने स्युं गुण निपनो ॥ ते जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि काळथि भावथि तथा नोकारसि आदि देइने छ मासी तप ध्यान जुगतपणे जाणे–सरदहे–परूपे–फरसे ॥ ते जीव जघन्य । तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥ [illegible] ते माये कल्पातीतनी थाय ॥ ध्यानने विषे ॥ अनुष्ठानने विषे । अप्रमत्त उद्यत थका रहे छे । तथा शुभ लेश्यापणेज करिने मंदि प्रमत्त कषाय जेहने तेहने अप्रमत्त संजति गुणठाणुं कहिये ॥ ७ ॥

आठमुं नियट्टि बादर गुणठाणुं तेहनु स्युं लक्षण ॥ १७ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ १६ ॥ पूर्वे कहि ते अने संजलनो मान । ए ॥ १७ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोडी मानमोडी। श्री भगवंतने पुछता हुवा । स्वामीनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ।

तिवारे श्री भगवंते कह्यु ॥ परिणामधारा । अपूर्व करण ॥ जे कोई काले जीवने कोइ दिने आव्युं नथि । ते श्रेणी जुगत जीवादिक पदार्थ । द्रव्यथि । क्षेत्रथि । कालथि । भावथि । नोकारसी आदि देइ छे मासी तप जाणे–सरदहे–परुपे–फरसे । ते जीव । जघन्य । तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टा तिजे भवे मोक्ष जाय । इहांथि श्रेणि २ करे । उपशम श्रेणि ॥ १ ॥ ने क्षपक श्रेणि ॥ २ ॥ उपशमश्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने उपशमावे तो इग्यारमा गुणठाणा सुधि जाय ॥ पडिवाइ पण थाय । हायमान परिणाम पण परिणमे ॥ अने क्षपक श्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुद्ध मूलमांथि निर्जरा करतो । नवमे दशमे गुणठाणे थइने बारमे गुणठाणे जाय । अपडिवाइज होय । वर्द्धमान परिणाम परिणमे । हिवे नियट्टि बादरनो अर्थ ते निवर्त्यो छे बादर कषायथि । बादर संपराय क्रियाथि । श्रेणिकरवे । अभ्यंतर परिणामे । अध्यवसाय स्थिरथते बादर चपलताथि निर्वृत्यो छे । माटे नियट्टि बादर गुणठाणुं कहिये । तथा दूजुं नांम । अपूर्व करण गुण ठाणुं पण कहिये ॥ स्या माटे जे ॥ कोइ काले जीवे पूर्वे श्रेणि करि नहंति । अने ए गुणठाणे पहिलुंज करण ते ॥ पंडित वीर्यनुं आवरण क्षयकरण रुप करण परिणाम धार । वर्द्धनरुप श्रेणि करे ॥ तेहने अपूर्व करण गुणठाणुं कहिये ॥ ८ ॥

हिवे नवमु अनियट्टि बादर गुणठाणु तेहनुं स्युं लक्षण ॥ एकविश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥ १७ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने संजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्री वेद ॥ २ ॥ पुरुष वेद ॥ ३ ॥ नपुसक वेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गैतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पुछ-

ता हुवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ॥ तिवारे भगवते कह्यु । ते जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देइने छमासी तप ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि निर्विकार अमायी ॥ विषय निरवछापणे । जाणे सरदहे परूपे फरसे ते जीव ॥ जघन्य तेज भवे मोक्ष जाय । उत्कृष्टा तीजे भवे मोक्ष जाय ॥ हवे अनियट्टि बादर ते । सर्वथा प्रकारे नित्रत्यों नथि अंश मात्र हजि बादर सपराय क्रिया रहि छे माटे अनियट्टि बादर गुणठाणु कहिये ॥ तथा आठमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गभीर छे ॥ ते अन्य पच संग्रहादिक ग्रथ तथा सिद्धांतथि समजवा ॥ ९॥ दशमु सूक्ष्म सपराय गुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण ॥ २७ ॥ प्रकृतिनें क्षयोप समावे ॥२१॥ प्रकृति पूर्वे कहि रो । अनें । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ भय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुगंछा ॥ ६ ॥ एवं ॥ २७ ॥ प्रकृतिने क्षयोप शमावे ॥ तिवारे गैातम स्वामी हाथ जोडी मानमोडी ॥ श्री भगवतने पूछता हुवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो । तिवारे भगवंते कह्यु । ते जीव ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने छेमासी तप निरभिलाप निर्वंछक निर्वेदकतापणे निराशी अव्यामोह अविभ्रमपणे जाणे सरदहे परूपे फरसे ते जीव । जघन्य तेज भवे मोक्ष जाय । उत्कृष्टा तीजे भवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म थोडिक लगारेक पातलीसी सपराय क्रिया रहि छे तेहने सूक्ष्म सपराय गुणठाणुं कहिये ॥ १० ॥

इग्यारमु उपशात मोह गुणठाणुं तेहनु स्युं लक्षण ॥ २८ ॥ प्रकृतीने उपशमावे ते २७ प्रकृति पूर्वे कही ते । अने सजलनो लोभ ॥ १ ॥ एव ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे–सर्वथा ढांके । भस्म भारि प्रच्छन्न अग्निवत् । तिवारे गैातमस्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवतने पूछता हुवा ।

स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे श्री भगवंते कह्यु । ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसी आदि देइने छ मासी तप वीतराग भावे जथाख्यात चारित्रपणे ॥ जाणे-सरदहे-परुपे-फरसे । एहवामां जो काल करे तो । अनुत्तर वीमानमा जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय । अने जो सूक्ष्म लोभनो उदय थाय तो कषाय अग्नि प्रकटे पछि पडे दशमांथि पडे तो पहिला गुणठाणा सुधि जाय । पण इग्यारमेंथी चढवूं तो नथि । उपशांत ते उपशम्यो छे मोह सर्वथा जले करि अग्नि ओलव्यानिपरे टाल्यो नही ढांक्यो छे माटे उपशांत मोह गुणठाणु कहिये ॥ ११ ॥ बारमुं क्षीणमोह गुणठाणु तेहनु स्युं लक्षण जे ॥ २८ ॥ प्रकृतिने सर्वथा खपावे । क्षपक श्रेणि । क्षायकभाव । क्षायक समकित ॥ क्षायक जथाख्यात चारित्र ॥ करणसत्य । जोग सत्य । भावसत्य अमायी अकषायी वीतरागी । भाव निर्ग्रंथ । संपूर्ण संवुड ॥ सपूर्ण भावितात्मा ॥ महा तपस्वी । महा सुशिल । अमोही । अविकारी । महाज्ञानी ॥ महाध्यानी ॥ वर्द्धमान परिणामी । अपडिवाइ थइ अंतर्मुहुर्त्त रहे । ए गुणठाणे काल करवो नथि । पुनर्भव छे नहि । छेहले समये पांच ज्ञानावरणिय ॥ नव दर्शनावरणिय ॥ पंच विध अंतराय क्षयकरणोद्यमकरि ॥ तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षय करि । केवल ज्योति प्रकटे माटे क्षीण ते क्षय कर्यो छे मोह सर्वथा जे गुणठाणे तेहने क्षीण मोह गुणठाणुं कहिये ॥ १२ ॥

तेरमु सजोगि केवलि गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण । दश बोल सहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥ सजोगी ॥१॥ सशरिरी ॥२॥ सलेशी ॥ ३ ॥ शुकल लेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यात चारित्र ॥ ५ ॥ क्षायक समकित ॥ ६ ॥ पडित वीर्य ॥ ७ ॥ शुक्लध्यान ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान ॥ ९ ॥ केवलदर्शन ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोल सहित ॥

जघन्य । अंतर्मुहूर्त्त । उत्कृष्टा देशे उणी पूर्व कोडि सुधि ॥ विचरे घणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करीने ॥ दूजा तिजा शुकल ध्यानना पायाने ध्याइने चउदमे गुणठाणे जाय ॥ सजोगी ते शुभ मन वचन कायाना जोग सहित छे माहात्म्यचलोप करण छे । गम-नागमनादिक चेष्टा शुभसहित छे । केवल ज्ञान केवल दर्शन । उप-योग समयांतर । अविछिन्नपणे शुद्ध प्रणमे माटे सजोगि केवलि गुणठाणुं कहिये ॥ १३ ॥

हिवे चउदमु अजोगि केवलि गुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण ॥ शुक्ल ध्याननो चोथो पायो समुछिन्न क्रिय अनंतर अप्रतिपाती । अनिवृति ध्याता मन जोग रुधि वचन जोग रुधि कायजोग रुधि आन प्राण-निरोध करि रुपातीत परम शुकलध्यान ध्याता ॥ ७ ॥ बोल सहित विचरे । तेरमे ॥ १० बोल कह्या तेहमांथि । सजोगी ॥ १ ॥ सलेशी ॥ २ ॥ शुकललेशी ॥ ३ ॥ ए ३ वर्जीने शेष ॥ ७ बोल सहित सकल गिरीनो राजा मेरु तेहनिपरे । अडोल । अचल । स्थिर अवस्थाने पामे शैलेशी पणे रहि पच लघु अक्षर उच्चार प्रमाण काल रहि ॥ शेष वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ॥४॥ कर्म क्षीण करिने मुक्तिपद पामे ॥ शरिर उदारिक । तेजस कार्मण । सर्वथा छांडिने समश्रेणि ऋजुगति अन्य आकाश प्रदेशानावगाह तो अणफर सतो । एक समय मात्रमां । उर्द्ध गति । अ-विग्रह गतिये तिहां जाय । एरंडबीज बंधन मुक्तवत् । निर्लेप तुंबिवत् । कोदंड मुक्त बाणवत् ॥ इंधनवन्हि मुक्त धूम्रवत् । तिहां सिद्धक्षेत्रे जे साकारोपयोगे सिद्ध थाय । बुद्ध थाय ॥ पारंगत थाय । परंपरगत थाय । सकल कार्य अर्थ साधि ॥ कृतकृतार्थ । निष्टितार्थ । अतुल सुखसागर निमग्न ॥ सादि अनंत भांगे सिद्ध

चक्रवर्तसु दुणो ऊंचो हुवे ६ श्री देवी चक्रवर्तसु ४ आंगुल नींची हुवे (७)

॥ इति अवग्गहणाद्वार ॥ ३ ॥

हिवे उपजणद्वार कहे छे ॥ चक्र रतन (१) छत्र रतन (२) चरम रतन (३) दंड रतन (४) ए चार आयुधसालामे उपजे खड्ग रतन (५) मणि (६) कागणी रतन (७) ए (३) लक्ष्मीना भंडारमें उपजे सेन्यापति (१) गाथापती (२) वड्डई [३] प्रोहित (४) ए ४ रतन निज नगरमे उपजे अस्व रतन (५) गज रतन [६] ए दोय वेताढ्य परवतनी मुलमे उपजे श्री देवी विद्याधरोनी श्रेणीमे उपजे ७॥

॥ इति उपजणद्वार संपूर्ण ॥ ४ ॥

हिवे आगतद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीना नीकल्या १६ पदवी पामे ७ एकेंद्री रतन टल्या ॥ १ ॥ दूजी नारकीना नीकल्या १५ पदवी पामे १६ मांसु चक्रवर्त टल्या ॥ २ ॥ तीजी नरकना नीकल्या १३ पदवी पांमे १५ मासु बलदेव (१) वासुदेव (२) ए टली ॥ ३ ॥ चोथी नारकीना नीकल्या १२ पदवी पांमे १३ मांसु १ तीर्थंकर टल्या ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीना नीकल्या ११ पदवी पांमे १२ मांसु १ केवलिरी टली ॥ ५ ॥ छठी ना [illegible] १०
पदवी पामे ११ मासुं १ साधरी पदवी टली [illegible] नारकी
नीकल्या ३ पदवी पांमे [illegible] २ [illegible] (
भवनपती (१) [illegible]
नीकल्या २१ पदवी [illegible]
दोय पदवी टली ॥ ८ [illegible]
मेषीना नीकल्या १८ [illegible]
टली १० ॥ २ [illegible]

मांथी ७ एकेंद्री रतन वरज्या (९-१०) पेला बीजा देवलोकना नी-कल्या २३ पदवी पांमे (११) तीजा देवलोकसू लेने आठमा देवलोक ताइरा नीकल्या १६ पदवी पामे ७ एकेंद्री रतन टल्या (१२) नवमा देवलोकसू लेने ९ ग्रैवेग तांइरा नीकल्या (१४) पदवी पामे १६ मांसू हाथी (१) घोडो (२) ए २ टली (१३) पांच अणुत्तर विमानथी निकल्या ८ पदवी पांमे ते ९ मोटकी पदवीमासू १ वासुदेवरी पदवी टली (१४) पृथिवी पाणी वनस्पति सनी तिर्यंच सनी मनुष्यना निकल्या ११ पदवी पांमे तीर्थंकर (१) चक्रवर्त (२) बलदेव (३) वासुदेव (४) ए ४ टली (१५) तेउ (१) वाउना नीकल्या ९ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन हाथी (१) घोडो (२) ॥ ९ पांमे (१६) बेंद्री तेंद्री चोइन्द्री असनी तिर्यंच असनी मनुष्यना नीक-ल्या पदवी १८ पांमे २३ मांसू पांच पदवी प्रथम टली (१७) सिद्धांमे पदवी १ समदृष्टीनी पावे १८ ॥

॥ इति आगतद्वार ॥ ५ ॥

हिवे गतिद्वार कहे छे ॥ पेहेले नारकीसू लेने चोथी नारकी तांई ११ पदवीरो धणी जाय ७ एकेंद्री रतन चक्रवर्त (१) वासुदेव (२) मडलीक (३) समदृष्टी (४) एव ११ (१) पाचमी छठी नार-कीमे ९ पदवीरो धणी जाय ११ मासु हाथी (१) घोडो (२) ए २ टल्या (२) सातमी नारकीमे सात पदवीरो धणी जाय ९ मासु श्री देवी (१) समदृष्टी (२) ए २ टल्या (३) भुवनपती वाणव्यंतर ज्योतिषी इणमे १० पदवीरो धणी जाय सात पचेंद्री रतनमांसू एक श्री देवी टली ६ तो पचेंद्री रतन साधु (१) मडलीक राजा (२) श्रावक (३) समदृष्टी (४) एव १० पदवीरो धणी जाय (४) [पर मूल गुण विराधक जाय] पहेला दूजा देवलोकमाहे १० पदवीरो धणी जाय पर उत्तर गुण विराधक साधु श्रावक जाय आराधक पिण

जाय (५) तीजा देवलोकसूं लेने आठमा देवलोक ताई एहि १० पदवीको धणी जाय पर अराधक जाय(६)नवमां देवलोकसुं लेइनें १२ मां देवलोक सांई ८ पदवीको धणी जाय एही १० पदवी मांसु हाथी (१) घोडो (२) ए २ टलया (७) नव ग्रीवेक ५ अणुतर विमानमे २ पदवीको धणी जाय साधु समदृष्टी (८) ५ थावर असन्नी मनुष्यमे १४ पदवीनो धणी जाय ७ एकेंद्री रतन ६ पंचेंद्री रतन (१ श्रीदेवी टली) मडलीक राजा एव १४ (९) ३ विकलेंद्री गर्भेज तिर्यंच मनुष्य असन्नी तिर्यंचमे १५ पदवीको धणी जाय सात एकेंद्री रतन ६ पचेंद्री रतन मडलीक राजा समदृष्टी एवं १५ पदवीको धणी जाय (१०)

॥ इति गतिद्वार ॥ ६ ॥

हिवे पदवी पावणद्वार कहे छे ॥ तीर्थंकरमे ६ पदवी पावें मंडलीक राजानी (१) चक्रवर्तनी (२) तीर्थंकरनी (३) साधुनी (४) समदृष्टनी (५) केवलीनी (६) [१] चक्रवर्तमे एहीज ६ पदवी पावे (२) वलदेवमे ५ पदवी पावे मडलीकनी [१] वलदेवनी (२) साधुनी (३) समदृष्टीनी [४] केवलीनी (५) एवं ५ पावे (३) वासुदेवमे ३ पदवी पावे मंडलीकनी (१) वासुदेवनी (२) समदृष्टीनी (३) एव ३ (४) केवलीमें तथा साधुमे ८ पदवी पावे नव मोटकी पदवीमेसूं १ वासुदेवनी टली (५–६) श्रावकमे ३ पदवी पावे १ श्रावकनी १ समदृष्टीनी १ मडलीकनी एवं (३) (७) मंडलीकमे ६ पदवी पावे मडलीकनी (१) साधुनी (२) श्रावकनी (३) समदृष्टीनी [४] केवलीनी (५) वासुदेवनी एव ६ पावे (८) समदृष्टिमे १५ पदवी पावे ९ मोटकी ६ पचेंद्री रतन १ श्री देवी टली (९)

॥ इति पदवी पावणद्वार ॥ ७ ॥

हिवे सेवणद्वार कहे छे॥७ एकेंद्री रतन७पचेंद्री रतन एवं १४ रतननी एक एक हजार देवता सेवा करे (१) तीर्थकरनी ६४ इंद्र असख्याता देवता सेवा करे (२) चक्रवर्तनी २ हजार तो दोय भुजाना ओर १४ रतनना १४ हजार एवं (१६) सोळे हजार देवता सेवा करे (३) बलदेवनी ४ हजार देवता सेवा करे (५) केवलीनी अनेक देवता सेवा करे (६) साधु श्रावक समदृष्टी ए ३ नी एक एक देवता सेवा करे (७)

॥ इति सेवनद्वार ॥ ८ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे ॥ पहलो आरो ४ कोडा कोड सागरनो दूजो ३ कोडाकोड सागरनो ए दोय आरामे पदवी पावे १ समदृष्टीनी (१) तीजो आरो दोय कोडाकोड सागरनो पदवी २१ पावे बलदेवनी वासुदेवनी ए २ टली (२) चोथो आरो १ कोडाकोड सागरनो जीणमे ४२ हजार वरस गये वाद पदवी पावे २३ (३) पांचमे आरेमें ५ पदवी पावे [४] छठा आरामे पदवी नथी ए तो अवसरपणी काल आश्री कही (६) अव उत्त. सरपणी काल आश्री कहे छे ॥ पेला आरामे पदवी नथी (१) दूजा आरामे पदवी पावे १ समदृष्टीनी (३) तीजा आरामां पदवी २१ पावे (४) चोथा आरामां पदवी २३ पावे (५) पांचमां आरामे ५ पदवी पावे (६) छठा आरामे १ पदवी पावे समदृष्टिनी (६)

॥ इति कालद्वार ॥ ९ ॥

हिवे दंडकद्वार कहे छे ॥ एक दंडक सांतुनारकीनो दस भवनपतीना दस दंडक ओर ज्योतीषी वीमानीक देवताना दोय दंडक एव १४ में एक पदवी समदिष्टीनी पावे (१) पृथिवीकायमे पदवी पावे सात एकेंद्री रतन (२) ४ थावर असन्नी मनुष्यमे पदवी नथी (३)

विकलेंद्री असन्नी तिर्यंच अपरज्याप्तामें पदवी १ पावे समदिष्टिनी (४) सन्नि तिर्यंचमें पदवी ४ पावे हाथी (१) घोडो (२) श्रावक (३) समदिष्टि एवं ४ (५) अढीद्वीपनी वारला तिर्यंचमे २ पदवी पावे श्रावक (९) समदृष्टी [२] एव २ (६) असन्नीमे पदवी ८ पावे सात तो एकेंद्री रतन एक समदृष्टि एव ८ (७) सन्नीमाहें १६ पदवी पावे (७) एकेंद्री रतन टल्या (८) मनुष्यमें १६ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन टल्या (९)

॥ इति दंडकद्वार ॥ १० ॥

हिवे गुणठाणाद्वार कहे छे ॥ पेहेला गुणठाणामे १४ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन [६ पंचेंद्री रतन [१ श्री देवी टली] मंडलीक राजा एवं (१४) (१) दूजे गुणठाणेमें १ पदवी पावे समदिष्टीनी (२) तीजा गुणठाणे २ पदवी पावे श्री देवी मडलीक एवं २ (३) चोथा गुणठाणेमें ६ पदवी पावे तीर्थंकर (१) चक्रवर्त (२) बलदेव (३) वासुदेव [४] समदृष्टि [५] मंडलीक (६) [४] पांचमे गुणठाणेमें ३ पदवी पावे [१] समदिष्टिनी [२] श्रावकनी (३) मंडलीकनी एवं ३ (५) छठा गुणठाणांसुं लेने १० गुणठाणा तांई पदवी २ पावे साधुनी (१) समदृष्टिनी ए २ पावे [६] ११ मा १२ मां गुणठाणांमें १ पदवी पावे [७] १३ मा १४ मा गुणठाणामे ३ पदवी पावे [१] तीर्थंकरनी (२) केवलीनी (३) साधुनी ए ३ [८]

॥ इति गुणठाणाद्वार ॥ ११ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ स्त्री वेदमां पदवी ४ पावे श्री देवी (१) श्रावकनी (२) साधुनी (३) समदृष्टि ए (४) (१) एक मनुष्यणीमे ६ पदवी पावे (१) श्री देवी (२) साध (३) श्रावक (४) समदृष्टि (५) तीर्थंकर (६) केवळी ए छें [२] ॥ समचे पुरुष वेदमां पदवी

१३ पावे २३ पदवीमांहू ७ एकेंद्री रतन ८ श्री देवी ९ तीर्थंकर १० केवली ए १० टली (३) समचे मनुष्यमे पदवी ११ पावे ४ पचेंद्री रतन ९ मोटकी मांसूं तीर्थंकर (१) केवली २ ए २ टली (४) मनुष्य पुरुषमां पदवी १३ पावे तीर्थंकर केवली ए २ वधी ११ तेहीज, एव १३ (५) जन्म नपुंसकमे २ पदवी पावे १ श्रावक २ समदृष्टि ए (६) कृत नपुसकमे ४ पावे (१) श्रावकनी (२) साधुनी (३) समदृष्टिनी (४) केवली ए ४ पावे (७) अवेदीमां ४ पावे [१] समदृष्टी (२) साधु (३) तीर्थंकर (४) केवली ए ४ पावे [८] अमर पदवी १ बलदेवनी इण पदवीमे मरे नही (९)

॥ इति वेदद्वार ॥ १२ ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ भर्तक्षेत्रमा जघन्य १ पदवी पावे समदृष्टिनी (१) मज्जम भरतक्षेत्रमें ८ पदवी पावे चक्रवर्त टल्यो [२] भरतक्षेत्रमे उत्तकृष्टी २१ पदवी पावे (१) बलदेव (२) वासुदेव दोय ए टली (३)

॥ इति क्षेत्रद्वार ॥ १३ ॥

हिवे लोकद्वार कहे छे ॥ ऊंचा लोकमां ५ पदवी पावे [१] केवली (२) साधुनी [३] श्रावकनी [४] समदृष्टिनी (५) मंडलीक राजानी ए (५) पावे [१] नीचा लोकमे २३ पावे (२) त्रीछा लोकमे २३ पावे (३)

॥ इति लोकद्वार ॥ १४ ॥

हिवे लिंगद्वार कहे छे ॥ स्वलिंगीमां ४ पदवी पावे (१) तीर्थंकर (२) साधुनी (३) समदृष्टी (४) केवली ए ४ पावे (१) अन्य लिंगीमां ४ पावे (१) समदृष्टी (२) श्रावक (३) साधुनी (४) केवली ए ४ पावे (२) ग्रह लिंगीमे १३ पावे १ सेन्यापति (२) गाथा

च्यार गतिमा, पंचेंद्रिय आश्री विरहकाल जघन्य [१] समयनो ॥ उत्कृष्टो (१२) मुहुर्त्तनो ॥ सर्व इद्र स्थानकनो विरह जघन्य (१) समयनो उत्कृष्टो (६) मासनो ॥

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे विरह द्वाराख्यं नवम प्रकरणम् ॥





॥ प्रकरण दसवा–रुपी अरुपी द्वार ॥



(१८) पापस्थानक (८) कर्म (१) मन (१) वचन जोग [१] कार्मण शरीर ए (२९) मे १६ वोल पावे ते किसा ५ वरण (२) गध [५] रस (४) फरस (१) उनो (२) ठाढो (३) चीगटो (४) लुखो ए (२९) चोपरसि जाणवा ॥ हिवे जीवसजुक्तपुद्गल अठफरसी कहे छे (४) शरीर (६) छेलेस्या (१) घणोदधि (१) घणवाय [१] तणवाय (१) कायारो जोग ए १४ वोलमें वीस वोल पावे ते कहे छे ५ वरण (५) रस (२) गध (८) फरस ए २० बोल पावो ॥ हिवे जीवरहित पुद्गलना भेद (२) पावे अनत मदेसी सीखबध (१) सुपम (२) वादर हिवे अनंत मदेसी सूक्ष्म वध ते किसा (५) वरण (५) रस (२) गंध (४) फरस उनो ठडो लुपो चीगटो ए १६ वोल ॥ हिवे अनत मदेसी वादर वंध ते किसा (२०) वोल उपर मडीयाते हिवखधना मदेशमे वोल जघन्य पावे ५ उत्कृष्टा २० वोल पावे हिवे (१) मदेसीया मयाणुवाला पुद्गलमे पावे (१) वरण (१) रस (२) वोल सितराते कीसा चींगटो लुखो तथा (२) वोल उसणारा लुपो चींगटो ॥ रुपी पुद्गलना वोल सपूर्ण ॥ हिवे अरूपी-ना वोल कहे छे ॥ जीवनीज गुणना वोल ॥ जीवनी कलक (१) जीवास्तीकाय ससारी (२) जिनसिध ॥ हिवे ससारी जीवना भेद

कहे छे (६) भावलेस्या प्रवर्तमान (३) दृष्टि सरदहणारूप (१२) उपीयोग जाणवा रूप (४) सगन्या (२४)- दंडकमाहे सगन्या समभाव वर्ते ॥ जीवना श्रणमा (१८) पापसूं निवर्तवो (४) बोल कहे छे (१) उठाण कहता उभा थायवो (२) कर्म कहता गमण कीरीया करवो; (३) वलते कहता शरीरनो पाक्रम (४) वीर्य कहतां जीवनो उछाव हीमत करे वीर्यना दोय भेद (१) सकर्ण ते ससारी जीवमे पावे [२] अकर्ण ते सिद्धामे पावे पुरसाकार ते कहता अभीमान करने सगलांना काम करे (४) बुद्धिना नाम (१) उतपातिया (२) वीनीया (३) क्रमीया (४) परणामीया (४) मतिना बोल कहे छे ॥ उग्र कहेतां हेलो पाडे ते सुणे (२) इहां कहतां हेलो कीणने दीनो चिंतवे (३) उवाइ कहतां ओलख्यो हेलो फलाणाने दीनो (४) धारणा समाचार सुणीने हीये धारलीना ए (४) बोल अरुपी अजीव (१) धरमास्ती (२) अधरमास्ती (३) अकासास्ती (४) कालास्ती ए (४) जीवसजुक्त पुदगल ए (२९) चोपरसी ए (१४) अठपरसी (१) पुदगल चोपरसी (अथवा) अठपरसी जीवरहित पुदगलमे (१६) सूक्ष्ममे (२०) वादरमे एक ॥ प्रमाणुमे जघन्य (५) बोल पावे उत्कृष्टा (२०) बोल पावे ॥

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे रूपी अरूपी द्वाराख्यं दशम प्रकरणम् ॥



प्रकरण इग्यारवा–सो बोलनो बासठियो॥

गाथा.

जीव[१] गई इंदीय[२] काए[३] जोए[४] वेय[५] कसाय[६] लेशाय[७] समत्त[८] णाय[९]
दसणे[१०] सजए[११] उव[१२] उग्ग अहारे[१३] (१) भासग[१४] परित्त[१५] पज्जत्ते[१६] सुहुम[१७]
सन्नी[१८] भवत्थ[१९] चरिमेय[२०] जीव खेते वधे पोगगले महादंडए चेव (२)

		जीवका भेद	गुण ठाणा	जोग	उपयोग	लेशा	
१	मनुष्य जोवमे	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोडी मनुष्यनी १
२	नारकीमे	३	४	११	९	३	तेथकी मनुष्य असख्यात गुणा २
३	तिर्यचमे	१४	५	१३	९	६	नेरिया असख्यात गुणा ३
४	तिर्यचणीमे	२	५	१३	९	६	तिर्यचणी असख्यात गुणी ४
५	मनुष्यमें	३	१४	१५	१२	६	देवता असख्यात गुणा ५
६	मनुष्यणीमें	२	१४	१३	१२	६	देवागना सख्यात गुणी ६
७	देवतामें	३	४	११	९	६	सिद्ध भगवान अनत गुणा ७
८	देवागनामे	२	४	११	९	४	तिर्यच अनत गुणा ८
९	सिद्ध भगवानमें	०	०	०	२	०	समुच्चय जीव विशे साहिया ९ इति जीवद्वार ॥ १ ॥
१०	सइन्द्रियामें	१४	१२	१५	१०	६	सर्वसू थोडा पचेन्द्रिया २
११	एकेन्द्रियामें	४	१	५	३	४	तेथकी चौरिन्द्रिया विसेसाहिया २

१२	बेइंद्रियामें	२	२	४	५	३	तेइंद्रिया विसे साहिया ३
१३	तेइंद्रियामें	२	२	४	५	३	बेइंद्रिया विसे साहिया ४
१४	चवरिंद्रियामे	२	२	४	६	३	अनेंद्रिया अनतगुणा ५
१५	पचेंद्रियामें	४	१२	१५	१०	६	एकेंद्रिया अनतगुणा ६
१६	अनेंद्रियामे	१	२	७	२	१	सइंद्रिया विसेसाहिया ७ इति इंद्रियद्वार ॥ २ ॥
१७	सकाइयामें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोडा त्रसकाइया १
१८	पृथ्वीकाइयामें	४	१	३	३	४	तेउकाइया असरयात गुणा २
१९	अपकाइयामें	४	१	३	३	४	पृथ्वीकाइया विसेसाहिया ३
२०	तेउकाइयामें	४	१	३	३	३	अपकाइया विसेसाहिया ४
२१	वाउकाइयामें	४	१	३	३	३	वाउकाइया विसेसाहिया ५
२२	वनस्पति काइयामें	४	१	३	३	४	अकाइया अनतगुणा [illegible]
२३	त्रस काइयामें	१०	१४	१५	१२	६	वनस्पति काइया अनतगुणा ७
२४	अकाइयामें	०	०	०	२	०	सकाइया विसेसाहिया ८ इति कायद्वार ॥ ३ ॥
२५	सजोगीमें	१४	१३	१५	१२	६	सर्वसू थोडा मन जोगी १
२६	मन जोगीमें	१	१३	१४	१२	६	वचन जोगी असरयातगुणा २
२७	वचन जोगीमें	५	१३	१४	१२	६	अजोगी अनतगुणा ३
२८	काय जोगीमें	१४	१२	१५	१२	६	कायजोगी अनतगुणा ४
२९	अजोगीमें	१	१	०	२	०	सजोगी विसेसाहिया ५ इति जोगद्वार ॥ ४ ॥
३०	सवेदीमें	१४	०	१५	१०	६	सर्वसू थोडा पुरुषवेदी १

३१	स्त्री वेदीमें	२	९	१३	१०	६	स्त्री वेदी संख्यात गुणी २
३२	पुरुष वेदीमें	२	९	१५	१०	६	अवेदी अनंत गुणा ३
३३	नपुसक वेदीमें	१४	९	१५	१०	६	नपुसक वेदी अनंत गुणा ४
३४	अवेदीमें	१	५/२	११	९	१	सवेदी विसेसाहीया ५ इति वेदद्वार ॥ ५ ॥
३५	सकषायीमें	१४	१०	१५	१०	६	सर्वसू थोडा अकषाई १
३६	क्रोध कषाईमें	१४	९	१५	१०	६	ते थकि मान कषाई अनंत गुणा २
३७	मान कषाईमें	१४	९	१५	१०	६	क्रोध कषाई विसेसाहिया ३
३८	माया कषाईमें	१४	९	१५	१०	६	माया कषाई विसेसाहिया ४
३९	लोभ कषाईमें	१४	१०	१५	१०	६	लोभ कषाई विसेसाहिया ५
४०	अकषाईमें	१	४	११	९	१	सकषाई विसेसाहिया ६ इति कषायद्वार ॥ ६ ॥
४१	सलेशीमें	१४	१३	१५	१२	६	सर्वसू थोडा सुकललेशी १
४२	कृष्ण लेशीमें	१४	६	१३	९	१	पद्मलेशी असंख्यातगुणा २
४३	नील लेशीमें	१४	६	१३	९	१	तेजूलेशी असंख्यातगुणा ३
४४	कापोत लेशीमें	१४	६	१३	९	१	अलेशी अनंतगुणा ४
४५	तेजू लेशीमें	३	७	१५	१०	१	कापोतलेशी अनंतगुणा ५
४६	पद्म लेशीमें	२	७	१५	१०	१	नीललेशी विसेसाहिया ६
४७	सुकल लेशीमें	२	१३	१५	१२	१	कृष्णलेशी विसेसाहिया ७
४८	अलेशीमें	१	१	०	२	०	सलेशी विसेसाहिया ८ इति लेशाद्वार ॥ ७ ॥
४९	सन्नाणीमें	६	१२	१५	९	६	सर्वसू थोडा मनपर्यवनाणी १

५०	मति नाणिमें	६	१०	१५	७	६	अवधि नाणी असंख्यात गुणा २
५१	श्रुत नाणीमें	६	१०	१५	७	६	मति नाणी श्रुत नाणी माहो माहीतुल्ला विसे साहिया ३–४
५२	अवधि नाणीम	२	१०	१५	७	६	विभग अन्नाणी असंख्यात गुणा ५
५३	मन पर्यव नाणीमे	१	७	१४	७	२	केवलनाणी अनंतगुणा ६
५४	केवल नाणीम	१	२	७	०	१	सन्नाणी विसे साहिया ७
५५	मति अनाणीमे	१४	२	१३	६	६	मति अन्नाणी श्रुत अन्नाणी माहोमाहीतुल्ला अनंत गुणा ८–९
५६	श्रुत अनाणीमे	१४	२	१२	६	६	
५७	विभग अनाणीमें	२	२	१३	६		इति नाण द्वार ॥ ८ ॥
५८	सम्यक्दृष्टीम	६	१२	१५	०	५	सबसुं थोडा सास्वादान सम द्रेता १
५९	मिथ्यादृष्टीम	१४	५	१३	६	६	उपशम समकितो असंख्यात गुणा २
६०	समा मिथ्या दृष्टीमे	१	१	१०	६	६	समा मिथ्या दृष्टी संख्यात गुणा ३
६१	सास्वादान समकितमे	६	१	१३	६	६	वेदक
६२	उपसम समकितम	२	८	१५	७	६	क्षयोपशम समकिती माहोमाही तुला संख्यात गुणा ४–५
६३	वेदक समकितमें	१२	४	१५	७	६	क्षायक समकिती अनंत गुणा ६
६४	क्षयोपशम समकितमें	२	४	१५	७	६	मिथ्या दृष्टी अनंत गुणा ७
६५	क्षायक समकितमें	२	११	११	९	६	सम्यक दृष्टी विसेसा हिया ८
							इति समकित द्वार ॥ ९ ॥
६६	चक्षु दरसेणमें	६	१२	१३	१०	६	सर्वसू थोडा अवधि दर्शणी १
६७	अचक्षु दरसणमें	१२	१२	१५	१०	६	चक्षु दर्शणी असंख्यात गुणा २

८	अवधि दर्शनमे	६	१२	१४	१०	६	केवल दर्शनी अनत गुणा ३
९	केवल दर्शनमे	१४	१२	१५	१०	६	अचषु दर्शनी अनत गणा ४ इति दर्शन द्वार ॥ १० ॥
७०	समुच्चे सजतीमें	१	९	१५	९	६	सर्वमु थोडा सूक्ष्म सपरायना धणी १ परिहार विसुद्धिना
७१	सामाइक छेदोपस्थाप नी चारित्रमे	१	४	१४	७	६	धणी सख्यात गुणा २ यथा
७२	परिहार विसुद्धी चारित्रमे	१	२	९	७	३	ख्यातना धणी सख्यात गुणा३ छेदोपस्थापनी चारितना धणी
७३	सूक्ष्म सपराय चारित्रमे	१	१	९	७	३	सख्यात गुणा ४ सामाइक चारितना धणी सख्यात
७४	यथाख्यात चारित्रमे	१	४	११	९	१	गुणा ५ सजती विले साहिया ६ सजता सजती असख्यात
७५	असयतीमे	१४	४	१३	९	६	गुणा ७ नो सजतीनो असं जतीनो सजता सजती अनत
७६	सजता सयतीमे	१	१	१२	६	६	गुणा ८
७७	नोसजतीनोअसजती नो सजता सजतीमे	०	०	०	२	०	असजती अनत गुणा ९ इति सजयद्वार ॥ ११ ॥
७८	साकार उपयोगमे	१४	१५	१५	१२	६	सर्वमु थोडा अनाकार उपयुक्ता १ साकार उपयुक्ता सख्यात गुणा २
७९	अनाकार उपयोगमे	१४	१२	१५	१२	६	इति उपयोग द्वार ॥ १२ ॥
८०	आहारिकमे	१४	१	१८	१२	६	सर्वमु थोडा अनाहारीक १ अहारीक असख्यात गुणा २
८१	अनाहारिकमे	८	५	१	१०	६	इति आहारीक द्वार ॥ १३ ॥
८२	भासकमें	५	१३	१८	१२	६	सर्वमु थोडा भासक १ अभासक अनत गुणा २
८३	अभासकमें	१०	५	५	११	६	इति भासक द्वार ॥ १४ ॥
८४	परतमे	१४	१४	१५	१२	६	सर्वमु थोडा परत १
८५	अपरतमे	१४	१	१३	६	६	नोपरतनो अपरत अनत गुणा २

८६	नोपरतनो अपरतमें	०	०	०	२	०	अपरत अनत गुणा ३ इति परतद्वार ॥ १० ॥
८७	पर्जाप्तामें	७	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोडा नोपर्जाप्तानो अपर्जाप्ता १
८८	अपर्जाप्तामें	७	३	५	९	६	अपर्जाप्ता अनतगुणा २
८९	नोपर्जाप्तानो अपर्जाप्तामें	०	०	०	२	०	पर्जाप्ता सख्यात गुणा ३ इति पर्जाप्तद्वार ॥१६॥
९०	सूक्ष्ममें	२	१	३	२	३	सर्वसू थोडा नोसूक्ष्मनोबादर१ बादर अनतगुणा २
९१	बादरमें	१२	१४	१५	१२	६	सूक्ष्म असख्यात गुणा ३
९२	नोसूक्ष्मनो बादरमें	०	०	०	२	०	इति सूक्ष्मद्वार ॥ १७ ॥
९३	सन्नीमें	२	१२	१५	१०	६	सर्वसू थोडा नो सन्नी १ नो सन्नी असन्नी अनतगुणा २
९४	असन्नीमें	१२	२	३	६	४	असन्नी अनतगुणा ३
९५	नोसन्नीनो असन्नीमें	१	२	७	२	१	इति सन्नीद्वार ॥१८॥
९६	भव्यमें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोडा अभव्य १ नोभव्यनो अभव्य अनतगुणा२
९७	अभव्यमें	१४	१	१३	६	६	भव्य अनतगुणा ३
९८	नोभव्यनो अभव्यमें	०	०	०	२	०	इति भव्यद्वार ॥ १९ ॥
९९	चरममें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोडा अचरम १ चरम अनतगुणा २
१००	अचरममें	१४	१	१३	८	६	इति चरमद्वार ॥ २० ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे शत संज्ञाऽख्यं एकादश प्रकरणम् ॥



प्रकरण बारवा—९८ बोलनो बासठीयो·



हिवे पन्नवणाजी सूत्रके तीजा पदणे अनुसारें ९८ बोल कहे छे. ॥						
१	सर्वसूं थोडा गर्भेज मनुष्यमे	२	१४	१५	१०	६
२	मनुष्यनी सख्यातगुणीमे	२	१४	१५	१२	६
३	बादर तेउकाइया अपापूता असख्यात गु०	१	१	१	३	३
४	पांच अणुत्तर विमानवासी देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	६	१
५	नवग्रीवेकका उपरली त्रिकका देवता सख्यात गु	२	२	११	९	१
६	नवग्रीवेकका विचली त्रिकका देवता संख्यातगुणा०	२	३	११	९	१
७	नवग्रीवेकका नीचली त्रिकका देवता सख्यातगु०	२	३	११	९	१
८	बारमा देवलोकका देवता सख्यातगुणामे	२	३	११	९	१
९	इग्यारमा देवलोकका देवता सख्यात गुणामे	२	५	११	९	१
१०	दसमा देवलोकका देवता सख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
११	नवमा देवलोकका देवता सख्यातगुणामे	२	५	११	९	१
१२	सातमी नरकना नेरीया असख्यात गुणामे	२	४	११	९	१

१३	छठ्ठी नरकना नेरीया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१४	आठमा देवलोकका देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१५	सातमा देवलोकका देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१६	पांचमी नरकना नेरिया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	२
१७	छठ्ठा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१८	चौथी नरकना नेरीया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१९	पांचमा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२०	तीजी नरकना नेरिया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	२
२१	चौथा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२२	तीजा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२३	दूजी नरकना नेरीया असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२४	समूर्च्छिम मनुष्य असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
२५	दूजा देवलोकना देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२६	दूजा देवलोकनी देवी असंख्यातगुणीमे	२	४	११	९	१
२७	पेला देवलोकना देवता संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२८	पेला देवलोकनी देवी संख्यातगुणीमे	२	४	११	९	१
२९	भवनपती देवता असंख्यातगुणामे	२	४	११	९	४
३०	भवनपतीनी देवी संख्यातगुणीमे	२	४	११	९	४

३१	पेली नरकना नेरिया असंख्यातगुणामे	३	४	११	९	१
३२	खेचर पुरुष असंख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
३३	खेचरणी संख्यातगुणीमे	२	५	१३	९	६
३४	स्थलचर पुरुष संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
३५	स्थलचरणी संख्यातगुणीमे	२	५	१३	९	६
३६	जळचर पुरुष संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
३७	जळचरणी संख्यातगुणीमे	२	५	१३	९	६
३८	वाणव्यंतर देवता संख्यातगुणामे	३	४	११	९	४
३९	वाणव्यंतरनी देवी संख्यातगुणीमे	३	४	११	९	४
४०	ज्योतिषी देवता संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
४१	ज्योतिषीनी देव्या संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
४२	खेचर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४३	स्थलचर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४४	जळचर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४५	चोरिंद्री पर्याप्ता संख्यातगुणामे	१	१	२	४	३
४६	पंचेंद्री पर्याप्ता विसेसाहियामे	२	१२	१५	१०	६
४७	बेरिंद्री पर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	२	३	३
४८	तेरिंद्री पर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	२	३	३

४९	पर्चेंद्री अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	२	३	५	९	३
५०	चोरिंद्री अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	६	३
५१	तेरिंद्री अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	५	३
५२	बेरिंद्री अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	५	३
५३	बादर वनस्पतीकाइया प्रजाप्ता प्रत्येक शरीरी अस०	१	१	१	३	३
५४	बादरनिगोदा पजाप्ता शरीर असंख्यातगुणा	१	१	१	३	३
५५	बादर पृथ्वीकाइया पजाप्ता असंख्यातगुणा	१	१	१	३	३
५६	बादर अपकाइया पज.स्ता असंख्यातगुणामे	१	१	१	३	३
५७	बादर वाउकाइया पयाप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	४	३	३
५८	बादर तेउकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
५९	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतीकाइया अप० संख्या०	१	१	३	३	४
६०	बादरनीगोदा अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
६१	बादर पृथ्वीकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६२	बादर अपकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६३	बादर वा-काइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा	१	१	३	३	३
६४	सूक्ष्म तेउकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा	१	१	३	३	३
६५	सूक्ष्म पृथिवीकाइया अपर्याप्ता विसेसाहिया	१	१	३	३	३
६६	सूक्ष्म अपकाइया अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	३	३	३

६७	सूक्ष्म वाउकाइया अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	३	३	३
६८	सूक्ष्म तेउकाइया प्रजाप्ता सख्यात गुणामे	१	१	१	३	३
६९	सूक्ष्म पृथ्विकाइया पर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	१	३	३
७०	सूक्ष्म अपकाइया पर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	१	३	३
७१	सूक्ष्म वाउकाइया पर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	१	३	३
७२	सूक्ष्म निगोदा अपर्याप्ता असख्यात गुणामे	१	१	३	३	३
७३	सूक्ष्म निगोदा पर्याप्ता सख्यात गुणामे	१	१	१	३	३
७४	अभव्य जीव अनंत गुणा	१४	१	१३	६	६
७५	पड्वाई सम्यगदृष्टि अनंत गुणा	१४	१	१३	६	६
७६	सिद्द भगवान अनंत गुणा	०	०	०	२	०
७७	बादर वनस्पतिकाइया पर्याप्ता अनंत गुणा	१	१	१	३	३
७८	बादर पर्याप्ता विसेसाहिया	६	१४	१५	१२	६
७९	बादर वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
८०	बादर अपर्याप्ता विसेसाहिया	६	३	५	०	६
८१	समुच्चय बादर विसेसाहिया	१२	१४	१५	१२	६
८२	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असंख्यात गुणामे	१	१	३	३	३
८३	सूक्ष्म अपर्याप्ता विसेसाहिया	१	१	३	३	३
८४	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्याप्ता संख्यात गुणामे	१	१	१	३	२

४९	पचेंद्री अपर्याप्ता असख्यातगुणामे	२	३	५	९	९
५०	चोरिंद्री अपयाप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	६	३
५१	तेरिंद्री अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	५	३
५२	बेरिंद्री अपयाप्ता विसेसाहियामे	१	२	३	५	३
५३	बादर वनस्पती काइया प्रजाप्ता प्रत्येक शरीरी अस०	१	१	१	३	३
५४	बादरनिगोया पजाप्ता शरीर असख्यातगुणा	१	१	१	३	३
५५	बादर पृथ्वीकाइया पजाप्ता असंख्यातगुणा	१	१	१	३	३
५६	बादर अपकाइया पजाप्ता असख्यातगुणामे	१	१	१	३	३
५७	बादर वाउकाइया पयाप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	४	३	३
५८	बादर तेउकाइया अपयाप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
५९	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतीकाइया अप० संख्या०	१	१	३	३	४
६०	बादरनीगोदा अपजाप्ता असख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
६१	बादर पृथ्वीकाइया अपयाप्ता असख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६२	बादर अपकाइया अपर्याप्ता असख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६३	बादर वाउकाइया अपर्याप्ता असख्यातगुणा	१	१	३	३	३
६४	सूक्ष्म तेउकाइया अपयाप्ता असख्यातगुणा	१	१	३	३	३
६५	सूक्ष्म पृथिवीकाइया अपयाप्ता विसेसाहिया	१	१	३	३	३
६६	सूक्ष्म अपकाइया अपर्याप्ता विसेसाहियामे	१	१	३	३	३

६७	सूक्ष्म याउकाइया अपर्याप्ता विसेसाहियाभे	१	१	३	३	३
६८	सूक्ष्म तेऊकाइया प्रजाप्ता सख्यात गुणाभे	१	१	१	३	३
६९	सूक्ष्म पृथ्विकाइया पर्याप्ता विसेसाहियाभे	१	१	१	३	३
७०	सूक्ष्म अपकाइया पर्याप्ता विसेसाहियाभे	१	१	१	३	३
७१	सूक्ष्म याउकाइया पर्याप्ता विसेसाहियाभे	१	१	१	३	३
७२	सूक्ष्म निगोदा अपर्याप्ता असख्यात गुणाभे	१	१	३	३	३
७३	सूक्ष्म निगोदा पर्याप्ता सख्यात गुणाभे	१	१	१	३	३
७४	अभव्य जीव अनतगुणा	१४	१	१३	६	६
७५	पडवाई सम्यगदृष्टि अनत गुणा	१४	१	१३	६	६
७६	सिद्ध भगवान अनत गुणा	०	०	०	२	०
७७	बादर वनस्पतिकाइया पर्याप्ता अनत गुणा	१	१	१	३	३
७८	बादर पर्याप्ता विसेसाहिया	६	१४	१५	१२	६
७९	बादर वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असख्यातगुणाभे	१	१	३	३	४
८०	बादर अपर्याप्ता विसेसाहिया	६	३	५	९	६
८१	समुच्चय बादर विसेसाहिया	१२	१४	१५	१२	६
८२	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असंख्यात गुणाभे	१	१	३	२	३
८३	सूक्ष्म अपर्याप्ता विसेसाहिया	१	१	३	३	३
८४	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्याप्ता संख्यात गुणाभे	१	१	१	३	३

८५	सूक्ष्म पर्याप्ता विसेसाहिया	१	१	१	३	३
८६	समुच्चय सूक्ष्म विसेसाहिया	२	१	३	३	३
८७	भवसिद्धिया जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६
८८	निगोदा जीव विसेसाहिया	४	१	३	३	३
८९	वनस्पतीकाइया विसेसाहिया	४	१	३	३	४
९०	एकेंद्री जीव विसेसाहिया	४	१	५	३	४
९१	तिर्यंच विसेसाहिया	१४	५	१३	९	६
९२	मिथ्यादृष्टि जीव विसेसाहिया	१४	९	१३	६	६
९३	अविरती जीव विसेसाहिया	१४	४	१३	९	६
९४	सकसाई विसेसाहिया	१४	१०	१५	१०	६
९५	छमस्थ जीव विसेसाहिया	१४	१२	१५	१२	६
९६	सजोगी जीव विसेसाहिया	१४	१३	१५	१२	६
९७	ससारथा जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६
९८	सर्व जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डेऽष्ठनवति संज्ञाऽल्पं द्वादश प्रकरणम् ॥ १२ ॥ (बोल)





प्रकरण तेरवां—योगको वासठियो.

ी	योगको वासठियो.	जीव	गुणठाणा	जोग	उपयोग	लेश्या	भाव	आत्मा	दंडक
१	समुचे जीवमे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
२	पेहेला गुणठाणामे	१४	१	१३	६	६	३	६	२४
३	दूजा गुणठाणामे	६	१	१३	६	६	३	७	१९
४	तीजा गुणठाणामे	१	१	१०	६	६	३	६	१६
५	चोथा गुणठाणामे	२	१	१३	६	६	५	७	१६
६	पांचमा गुणठाणामे	१	१	१२	६	६	५	७	२
७	छट्ठा गुणठाणामे	१	१	१४	७	६	५	८	१
८	सातमा गुणठाणामे	१	१	५	७	३	५	८	१
९	आठमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	८	१
१०	नवमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	८	१
११	दसमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	८	१
१२	इग्यारमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	७	१
१३	बारमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	४	७	१

१४	तेरमा गुणठाणामे	१	१	७	२	१	३	७	१
१५	चवदमा गुणठाणामे	१	१	०	२	०	३	६	१
१६	सच मन जोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१६
१७	असत मनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
१८	मिश्र मनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
१९	विवहार मनजोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१६
२०	सत वचनजोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१६
२१	असत वचनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
२२	मिश्र वचनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
२३	विहार वचनजोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१९
२४	उदारिक जोगमे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	१०
२५	उदारिक मिश्रमे	९	६	१५	१२	६	५	८	१०
२६	वैक्रेय जोगमे	३	६	१४	१०	६	५	८	१७
२७	वैक्रेय मिश्रमे	३	५	१४	१०	६	५	८	१७
२८	आहारीक जोगमे	१	१	१४	७	६	५	८	१
२९	आहारीकमिश्रमे	१	१	१४	७	६	५	८	१
३०	कार्मण जोगमे	८	४	१	१०	६	५	८	२४
३१	उदय भावमे	१७	१४	१५	१२	६	५	८	२४

३२	उपशम भावमे	२	८	१५	७	६	५	८	१६
३३	क्षायक भावमे	२	११	१५	९	६	५	८	१[illegible]
३४	क्षयोपशम भावमे	१४	१२	१५	१०	६	५	८	२४
३५	परिणामिक भावमे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
३६	द्रव्य आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
३७	कषाय आत्मामे	१४	१०	१५	१०	६	५	८	२४
३८	योग आत्मामे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	२४
३९	उपयोग आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४०	ज्ञान आत्मामे	६	१२	१५	९	६	५	८	१९
४१	दर्शन आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४२	चारित्र आत्मामे	१	९	१५	९	६	५	८	१
४३	वीरी आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४४	मिथ्यात्व आश्रवमे	१४	१	१३	६	६	३	६	२४
४५	अवृती आस्रावमे	१४	५	१३	९	६	५	७	२४
४६	प्रमाद आश्रवमे	१४	६	१५	१०	६	५	८	२४
४७	कषाय आश्रवमे	१४	१०	१५	१०	६	५	८	२४
४८	योग आश्रवमे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	२४
४९	समकित सवरमे	१	१०	१५	९	६	५	८	२

५०	वृत संवरमे	१		१५	९	६	५	८	
५१	प्रमाद सवरमे	१	८	७	९	३	५	८	१
५२	कषाय सवरमे	१	४	७	९	१	५	७	१
५३	अजोग से सवरमे	१	१	०	२	०	३	६	१
५४	उपशम चारित्रमे	१	१	५	७	१	५	७	१
५५	क्षायक चारित्रमे	१	३	७	९	१	४	७	१
५६	क्षयोपशम चारित्रमे	१	४	१४	७	६	५	८	१
५७	बार बीरजेमे	१४	४	१३	९	६	५	७	२४
५८	पडीत बीरजमे	१	९	१५	९	६	५	८	१
५९	बाएपडित विरज	१	१	१२	६	६	५	७	२
६०	सीधामें	०	०	०	२	०	२	४	०

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे योग कोष्ठाऽख्यं त्रयोदश प्रकरणम् ॥





प्रकरण चवदवां–४२ बोलकी अल्पाबहुत.

(१) सर्वसूं थोडा मिश्र द्रष्टी.
(२) ते थकी पुरुषवेदी असखेजगुणा.
(३) ते थकी स्त्रीवेदी सखेजगुणा.
(४) ते थकी देवगतीया विसेसाहिया.
(५) ते थकी सन्नी सखेजगुणा.
(६) ते थकी भाषक संखेजगुणा.
(७) ते थकी सइंद्रिया असंखेजगुणा.
(८) ते थकी अभव्य जीव अनतगुणा.
(९) ते थकी परत अनंतगुणा.
(१०) ते थकी शुक्लपक्षी विसेसाहिया.
(११) ते थकी अजोगी अनतगुणा
(१२) ते थकी अणेंदीया.
(१३) नोसन्नी नोअसन्नी तुल्ला विसेसा०.
(१४) ते थकी सम्यक् दृष्टि विसेसाहिया.
(१५) ते थकी असन्नीका अलद्धीया विसेसा०

(१६) ते थकी भव्यका अलद्धिया.
(१७) अचर्म तुल्ला विसेसाहिया.
(१८) ते थकी वादर जीव अनंतगुणा.
(१९) ते थकी अणाहारी असंखेजगुणा.
(२०) ते थकी अपजाता असंखेजगुणा.
(२१) ते थकी पजात्ता संखेजगुणा.
(२२) ते थकी आहारीक विसेसाहिया.
(२३) ते थकी सूक्ष्मजीव विसेसाहिया.
(२४) ते थकी कृष्णपक्षी विसेसाहिया.
(२५) ते थकी अपरत विसेसाहिया.
(२६) ते थकी भव चरम.
(२७) अचरम तुला विसेसाहिया.
(२८) ते थकी असन्नी विसेसाहिया.
(२९) नपुंसक विसेसाहिया.
(३०) ते थकी तिर्यंच विसेसाहिया.
(३१) ते थकी कृष्ण लेशी विसेसाहिया.
(३२) ते थकी मिथ्यात्वी विसेसाहिया.
(३३) ते थकी अनाणी विसेसाहिया.
(३४) ते थकी अविरती विसेसाहिया.
(३५) ते थकी फार्सेंद्रिया विसेसाहिया.
(३६) ते थकी आहारथा विसेसाहिया.
(३७) ते थकी संसारथा, नो व, नो अभव, ना.

(३८) अलद्धीया तुला विसेसाहिया
(३९) ते थकी अभवका अलद्धीया विसे०
(४०) ते थकी रसेंद्रीना अलद्धिया विसे०
(४१) ते थकी पचेंद्रीना अलद्धिया विसे०
(४२) ते थकी अभासक विसेसाहिया
(४३) ते थकी सन्नीना अलद्धिया विसेसाहिया.

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे
त्रिचत्वारिंशत् संज्ञाऽल्प बहुत्वाऽख्यं
चतुर्दश प्रकरणम् ॥



(४३) अद्धापल्यना उत्कृष्ट असख्यातमे भागनो काल असंखेजगुणं
(४४) अद्धापल्यनो काल सखेजगुणो.
(४५) मनुष तिर्यचनी उत्कृष्ट थितनो काल संखेजगुणो.
(४६) अद्धासागरनो काल सखेजगुणो.
(४७) नरकदेवनी उत्कृष्ट थितनो काल सखेजगुणो.
(४८) कालचक्रनो काल सखेजगुणो.
(४९) क्षेत्रपल्यनो काल संखेजगुणो.
(५०) क्षेत्र सागरनो काल सखेजगुणो.
(५१) तेउकायनी उत्कृष्ट कायथितनो काल असंखेजगुणो.
(५२) वाउकायनी उत्कृष्ट कायथितनो काल विसेसाहिया.
(५३) अपकाइया कायनीथितनो विसेसाहीया.
(५४) पृथिवीकायनी कायथितनो विसेसाहिया.
(५५) कार्मण पुद्गल मावर्तनो काल अनंतगुणो.
(५६) तेजस पुद्गल मावर्तनो काल अनंतगुणो.
(५७) उदारिक पुद्गल मावर्तनो काल अनंतगुणो.
(५८) श्वासोश्वास पुद्गल मा० काल अ० ॥
(५९) मन पुद्गल मावर्तननो काल अनतगुणो.
(६०) वचन पुद्गल मावर्तननो काल अनतगुणो.
(६१) वैक्रेय पुद्गल मावर्तननो काल अनतगुणो.
(६२) वनस्पतीकायनी उत्कृष्ट थितनो काल असखेजगुणो.
(६३) अतीत काल अनतगुणो.
(६४) अनागत काल वि. १ समाधिक.
(६५) सर्व काल विसेसाहिया.

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे पंचषष्टि संज्ञाऽल्प बहुत्वाऽख्यं पंचदश प्रकरणम् ॥

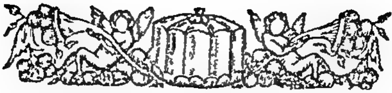


प्रकरण सोलवा ६२ बोलकी अल्पाबहुत.

(१) सर्वसू थोडा छपन्न अंतर्द्वीपना स्त्री पुरुष माहोमाही तुल्ला.
(२) ते थकी देवकुरु उत्तरकुरुना स्त्री पुरुष सखेज गुणा.
(३) ते थकी हरीवास रम्यकवासना स्त्री पुरुष संखेजगुणा.
(४) ते थकी हेमवय एरणवयना स्त्री पुरुष सखेजगुणा.
(५) ते थकी भरत ईरवर्तना पुरुष माहोमाही तुल्ला सखेजगुणा.
(६) ते थकी भरत ईरवर्तनी स्त्री माहोमाही तुल्ला सखेजगुणी.
(७) ते थकी महाविदेहना पुरुष संख्यात गुणा.
(८) ते थकी माहाविदेहनी स्त्री सख्यातगुणी.
(९) अणुत्तर विमानना देवता असखेजगुणा.
(१०) नव नवग्रीवेकना उपरली त्रिकना पुरुपाः [देवता] सख्यातगुणा.
(११) ते थकी वीचली त्रिकना पुरुपाः [देवता] सख्यातगुणा.
(१२) ते थकी नीचली त्रिकना पुरुपाः [देवता] सख्यातगुणा.
(१३) ते थकी बारमा देवलोकना पुरुपाः [देवता] सख्यातगुणा.
(१४) ते थकी ग्यारमा देवलोकना पुरुपाः (देवता) सख्यातगुणा.
(१५) ते थकी दसमा देवलोकना पुरुपाः (देवता) सख्यातगुणा.
(१६) ते थकी नवमा देवलोकना पुरुपाः (देवता) सख्यातगुणा.
(१७) ते थकी सातमी नरकना नपुसक (नेरिया) असखेजगुणा.
(१८) ते थकी छठी नरकना नपुसक (नेरिया) असखेजगुणा.

(१९) ते थकी आठमां देवलोकना पुरुपाः (देवता) असंख्यातगुणा.
(२०) ते थकी सातमां देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
(२१) ते थकी पांचमी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंख्यातगुणा.
(२२) ते थकी छठ्ठा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
(२३) ते थकी चोथी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंख्यातगुणा.
(२४) ते थकी पांचमां देवलोकना देवता असख्यातगुणा.
(२५) ते थकी तीजी नरकना नपुसक (नेरिया) असख्यातगुणा.
(२६) ते थकी चोथा देवलोकना देवता असख्यातगुणा.
(२७) ते थकी तीजा देवलोकना देवता असख्यातगुणा.
(२८) ते थकी दूजी नरकना नपुसक (नेरिया) असखेजगुणा.
(२९) ते थकी ५६ अंतर्द्वीपना नपुंसक असंखेज गुणा.
(३०) ते थकी देवकुरु उत्तरकुरुना नपुसक सखेजगुणा.
(३१) ते थकी हरिवास रम्यकवासना नपुसक संखेजगुणा.
(३२) ते थकी हेमवय एरणवयना नपुंसक सखेजगुणा.
(३३) ते थकी भरत ईरवर्तना नपुंसक संखेजगुणा.
(३४) ते थकी महाविदेहना नपुंसक सखेजगुणा.
(३५) ते थकी दूजा देवलोकना पुरुपाः (देवता) असखेजगुणा.
(३६) ते थकी दूजा देवलोकनी स्त्री (देवी) सखेजगुणी.
(३७) ते थकी पेला देवलोकना पुरुपाः (देवता) सखेजगुणा.
(३८) ते थकी पेला देवलोकनी स्त्री (देवी) सखेजगुणी.
(३९) ते थकी भवनपती पुरुपाः (देवता) असंखेजगुणा.
(४०) ते थकी भवनपतीनी स्त्री (देवी) असखेजगुणी.
(४१) ते थकी पेली नरकना नपुसक (नेरिया) असखेजगुणा.
(४२) ते थकी खेचर पुरुपाः असंखेजगुणा.
(४३) ते थकी खेचरनी स्त्रिया सखेजगुणी.

थोडी ॥ २ ॥ ते थकी पूर्व दिशे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! भवनपत्यांना भवन नथी ॥ अने चद्रमां सूर्यना दीया पृथिवी कायना छे ॥ ३ ॥ से थकी पिछम दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज॥ हे गोतम ! पछिम दिसे बारे हजार योजनरो गोतम दियो पृथिवी कायनो इधको पड्यो छे ॥ ते माटे पृथिवीकाय घणी छे ॥ ४ ॥ तेउकाय (१) मनुष (२) सिद्ध भगवान् ए (३) सर्वथी थोडा कठीणे महाराज ॥ हे गोतम ! उत्तर दक्षिण कानो क्यू महाराज ॥ हे गोतम! पांच भर्त पाच ईरवर्तना क्षेत्रानां तिहां मनुष्य थोडा तिहां अग्निना जीव थोडा तिहां सिद्ध भगवान् पिण थोडा सीजे ॥ १ ॥ २ ॥ ते थकी पूर्व दिशे सख्यातगुणा ॥ क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! पांच महाविदेह क्षेत्र मोटा जठे मनुष घणा जठे अग्निना जीव घणा जठे सिद्ध भगवान् पिण घणा सिजे ॥ ३ ॥ ते थकी पछिम दिसे विसेसाहिया ॥ क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम महाविदेहनी विजय हजार योजननी ऊडी छे तिहां मनुष्य घणा तिहां अग्निना जीव घणा तिहां सिद्ध भगवान पिण घणा सीजे ॥ ४ ॥ वाउकायने वाणव्यतर सर्वथी थोडा कठीनें महाराज॥ हे गोतम ! पूर्व दिसे क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! भूमि कठिण छे ॥ १ ॥ से थकी पश्चिम दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! हजार योजननी वीजय ऊडी छे तिहां पोलाडमें वाउकाय घणी नें वाणव्यतर घणा ॥ २ ॥ ते थकी उत्तर दिसे विसेसाहिया क्यु महाराज ॥ उत्तर दिसे (३) क्रोड ने (६६) लाख भवणपत्यांना भवण छे तिहां पोलाडमे वाउकाय घणी नें भवणपत्याना भवण उपरे वाणव्यतरना नगर घणा ॥ ३ ॥ ते थकी दक्षिण दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! तिहा (४) क्रोड (६) लाख भवणपत्याना भवण छे तिहा पोलाडमे वाउकाय घणी भवणपत्यांना भवण ऊपरे वाणव्यतरना नगर घणा ते माटे ॥ ४ ॥



॥ प्रकरण सतरवा दिसाणुवाई. ॥



समुचे जीव (१) पाणी (२) वनस्पती (३) बेइंद्री (४) तेइंद्री (५) चोइंद्री (६) तिर्यंच पंचेंद्री (७) ए ७ बोल सर्वथी थोडा थोडा कठीने छे महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम कांनी ॥ क्यों महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम कानी बारे हजार जोजनरो गोतम दीपो ॥ पृथ्वीकायनो पड्यो छे ॥ तिहां पाणी थोडो तिहां नीलण फूलण थोडी तिहां बेइंद्रियादिक जीव थोडा ते भणी सर्व जीव थोडा ॥ १ ॥ ते थकी पूर्व दिसे विसेसाहिया ॥ क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व दिसे गोतम दीपो नथी ॥ २ ॥ ते थकी दक्षिण दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! चद्रमा सूर्यका दीपा नथी ॥ ३ ॥ ते थकी उत्तर दिस संख्यातगुणा क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! असख्यातमे दीपमे संख्याता कोडान कोड योजनरो मान सरोवर भर्‍यो छे ॥ जठै पाणी घणो। जठै नीलण फूलण घणी, जठै बेइंद्रियादिक जीव घणा ॥ ते भणी सर्व जीव घणा ॥ ४ ॥ पृथिवीकायना जीव सर्वथी थोडा कठीने महाराज ॥ हे गोतम ! दक्षिण दिसे क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! (४) क्रोड ने (६६) लाख भवणपत्याना भवण छे ॥ तिहां पोलाड घणी तिणसू पृथिवीकाय थोडी ॥१॥ ते थकी उत्तर दिसे विशेसाहिया क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! (२) क्रोड नें (६६) लाख भवणपत्याना भवण छे ॥ तिहा पोलाड थोडी तिणसु पृथिवीकाय

थोडी ॥ २ ॥ ते थकी पूर्व दिशे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! भवनपत्यांना भवन नथी ॥ अने चंद्रमां सूर्यना दीया पृथिवी कायना छे ॥ ३ ॥ ते थकी पिछम दिसे विसेसाहिया क्यूं महाराज॥ हे गोतम ! पछिम दिसे बारे हजार योजनरो गोतम दियो पृथिवी कायनो इधको पडयो छे ॥ ते माटे पृथिवीकाय घणी छे ॥ ४ ॥ तेउकाय (१) मनुष (२) सिद्ध भगवान् ए (३) सर्वथी थोडा कहीणे महाराज ॥ हे गोतम ! उत्तर दक्षिण कानी क्यू महाराज॥ हे गोतम! पांच भर्त पांच ईरवर्तना क्षेत्रानां तिहां मनुष्य थोडा तिहां अग्निना जीव थोडा तिहां सिद्ध भगवान् पिण थोडा सीजे ॥ १ ॥ २ ॥ ते थकी पूर्व दिशे सख्यातगुणा ॥ क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! पांच महाविदेह क्षेत्र मोटा जठै मनुष घणा जठै अग्निना जीव घणा जठै सिद्ध भगवान् पिण घणा सिजे ॥ ३ ॥ ते थकी पछिम दिसे विसेसाहिया ॥ क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम महाविदेहनी विजय हजार योजननी ऊंडी छे तिहां मनुष्य घणा तिहां अग्निना जीव घणा तिहां सिद्ध भगवान पिण घणा सीजे ॥ ४ ॥ वाउकायने वाणव्यंतर सर्वथी थोडा कहीनें महाराज॥ हे गोतम ! पूर्व दिसे क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! भूमि कठिण छे ॥ १ ॥ ते थकी पश्चिम दिसे विसेसाहियां क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! हजार योजननी वीजय ऊंडी छे तिहां पोलाडमें वाउकाय घणी नें वाणव्यतर घणा ॥ २ ॥ ते थकी उत्तर दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ उत्तर दिसे (३) क्रोड ने (६६) लाख भवणपत्यांना भवण छे तिहां पोलाडमे वाउकाय घणी नें भवणपत्याना भवण उपरे वाणव्यतरना नगर घणा ॥ ३ ॥ ते थकी दक्षिण दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज॥ हे गोतम ! तिहा (४) क्रोड (६) लाख भवणपत्याना भवण छे तिहा पोलाडमे वाउकाय घणी भवणपत्यांना भवण ऊपरे वाणव्यतरना नगर घणा ते माटे ॥ ४ ॥



प्रकरण अठारवां-लद्धी.

गाथा ॥ जीव (१) गई (२) इंदीय (३) काए (४) सुहुम (५) पज्जत (६) भवत्थेय (७) भवसिद्धिया (८) सन्नी (९) लद्धी (१०) उपयोग (११) योगेय (१२) लेशा (१३) कषाय (१४) वेदेय (१५) आहारे (१६) णाणगोयरे (१७) काल (१८) अंतर (१९) अप्पा बहू (२०) पज्जवाचेवदारांई (२१) ॥ १ ॥

हिवे जीवद्वार कहे छे ॥ समुच्चय जीवमे ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ पहली नर्क भवणपती वाणव्यतर देव एहमे ३ ग्यानकी नेमा, ३ अग्यानकी भजना ॥ शेष ६ नर्क ज्योतिषी विमाणीक देव एहमे ३ ग्यानकी नेमा, ३ अग्यानकी नेमा ॥ पाच थावरमे ग्यान नथी ॥ २ ॥ अग्यानकी नेमा ॥ तीन विकलेंद्रीमे २ ग्यानकी नेमा ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ तिर्यंचपचेंद्रीमे ३ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ मनुष्यमे ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ सिद्ध भगवानमे केवल ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति जीवद्वार ॥ १ ॥

हिवे (गई) गतद्वार कहे छे ॥ गति याने वाटे वहतो जीव

जाणवो ॥ नर्क गतीयामे देवगतीयामे ३ ग्यानकी नेमा ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ तिर्यंच गतीयामे २ ग्यान २ अग्यानकी नेमा ॥ मनुष्य गतीयामे ३ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ सिद्धगतीयामे केवलग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति गतद्वार ॥ २ ॥

हिवे ईदीयद्वार कहे छे ॥ सइदिया पचेंदियामे ४ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ एकेंदियामे ग्यान नथी ॥ अग्यानकी नेमा ॥ बेयेंदिया तेयेंदिया चोयेंदियामें २ ग्यानकी नेमा ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ अणेंदियामे केवलज्ञाननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति इंदीयद्वार ॥ ३ ॥

हिवे कायद्वार कहे छे ॥ सकाइयामें तस काइयामें ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ पृथिवी अप तेउ वाउ वनस्पतीमें ग्यान नथी ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ अकाइयामे केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति कायद्वार ॥ ४ ॥

हिवे सूक्ष्मद्वार कहे छे ॥ सुक्ष्ममे ग्यान नथी ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ वादरमें ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो सुक्ष्म नो वादरमें केवलज्ञाननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति सूक्ष्मद्वार ॥ ५ ॥

हिवे सनीद्वार कहे छे ॥ समुचे सनीयामे ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ समुचय असनीयामे २ ग्यान २ अग्यानकी

भजना ॥ पहली नर्क भवणपती वाणव्यतर एहना अप्रजाप्तामे ३ ग्यानकी नेमा ३ अग्यानकी भजना ॥ सातमी नर्कनो अप्रजाप्तो वर्जी शेप नारकी ज्योतिपी विमाणीक एहना प्रजाप्ता अने अप्रजाप्ता ने पहली नर्क भवणपती वाणव्यतर एहना प्रजाप्त॥ यसर्वमें ३ ग्यान ३ अग्यानकी नेमा ॥ सातमी नर्कना अप्रजाप्तामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी नेमा ॥ पांच अणुत्तर विमानना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ए १० मैं ३ ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी । पांच थावरना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता तीन विकलेंद्रीना प्रजाप्ता असन्नी तिर्यच पचेंद्रीना प्रजाप्ता असन्नी मनुष्य एहमे ग्यांन नथी २ अग्याननी नेमा ॥ तीन विकलेंद्रीना अप्रजाप्ता असन्नी तिर्यच पचेंद्रीना अप्रजाप्ता सन्नी तिर्यचना अप्रजाप्ता ए ५ बोलमे २ ग्यान २ अग्यानकी नेमा ॥ सन्नी तिर्यचना अप्रजाप्तामें ३ ग्यानकी भजना॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ सन्नी मनुष्यना अप्रजाप्तामें ३ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ सन्नी मनुष्यमां प्रजाप्तामे ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो अप्रजाप्ता नो प्रजाप्तामें केवलग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति प्रजाप्तद्वार ॥ ६ ॥

हिवे भवत्थद्वार कहे छे ॥ नर्क भवथा देव भवथामें ३ ग्यानकी नेमा ३ अग्याननी भजना ॥ तिर्यच भवथामें ३ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ मनुष्य भवथामें ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ अभवथामें केवल ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ ७ ॥

॥ इति भवत्थद्वार ॥ ७ ॥

हिवे भवसियाद्वार कहे छे ॥ भवसिद्धियामें ५ ग्यानकी ३ अग्याननी भजना ॥ अभव सिद्धियामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो भव नो अभव सिद्धियामे १ ग्याननी नेमा ॥ अग्यान नथी॥

॥ इति भवसियाद्वार ॥ ८ ॥

हिवे सन्नीद्वार कहे छे ॥ सन्नीमें ४ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ असन्नीमें २ ग्यान २ अग्याननी नेमा ॥ नो सन्नी नो असन्नीमें २ ग्याननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति सन्नीद्वार ॥ ९ ॥

हिवे लद्धीद्वार कहे छे ॥ कही विहाण भते लद्धी पनता गोयमा, दश विहालद्धी पनता ॥ तजहा ग्यान लद्धी (१) दर्शन लद्धी (२) चारित्र लद्धी (३) चरिता चरित लद्धी (४) दाण लद्धी (५) लाभ लद्धी (६) भोग लद्धी (७) उपभोग लद्धी (८) वीर्य लद्धी (९) इद्री लद्धी (१०) भावार्थः समुच्चे ग्यान लद्धियामें ५ ग्यानकी भजना अग्यान नथी ॥ तस अलद्धीयामे ग्यान नथी ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ मतिग्यान श्रुतग्याननना लद्धीयामे ४ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें [अये गइया केवलग्यानी अये गइया] ३ अग्याननी भजना ॥ अवधग्याननना लद्धियामें ४ ग्याननी भजना अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें अवधग्यान वर्जीनें ४ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ मनपर्यवग्याननना लद्धियामें ४ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें मनपर्यव वर्जीनें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ केवलग्याननना लद्धियामें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें केवल वर्जित ४ चार ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ समुच्चय अनाण लद्धियामें अने मति अनाण श्रुत अनाण लद्धियामें ज्ञान नथी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ तस अलद्धियामें ५ ग्यानकी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ विभग नाणना लद्धियामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी नेमा ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥

॥ इति ज्ञान लद्धीना २० बोल ॥

हिवे दर्शणलद्धी कहे छे ॥ दर्शण लद्धीना ८ बोल ॥ समुचय दरसण लद्धियामे ५ ग्यान ३ अग्यानकी भजना तस अलद्धिया जीवा नथी ॥ सम्यक् दरसण लद्धियामे ५ ग्यानकी भजना ॥ अग्यान नथी तस अलद्धियामें ग्यान नथी ३ अग्याननी भजना ॥ मिथ्या दरसण लद्धियामें ग्यान नथी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥ समामिथ्या दरसण लद्धियामे ग्यान नथी ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामें ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥

॥ इति दर्शण लद्धियाना ८ बोल ॥

समुचय चरित लद्धीयामें ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें मनपर्यवग्यान वर्जी ४ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ (१) सामाइक छेदोपस्थापनीक (२) परिहार विसुधी (३) सूक्ष्म सपाय चारित्र (४) ना लद्धियामें ४ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥ जथाक्षायक चारित्रना लद्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ चरिता चरित लद्धियामें ३ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी तस अलद्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ दाण लद्धी लाभ लद्धी भोग लद्धी उपभोग लद्धी वीर्य लद्धी ग्यानांलध्धियामें ५ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलध्धियामें केवलग्याननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ बाल वीर्य लधियामें ३ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलध्धियामें ५ ज्ञाननी भजना ॥ अज्ञान नथी ॥ बाल पिंडत वीर्य लध्धियामें ३ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलध्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥

पिंहत तिर्य लद्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें मनपर्यवग्यान वर्जि ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ समुच्चे इंद्री लद्धियामें ४ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ श्रुतेंद्री चक्षुरिंद्री घ्राणेंद्रीना लद्धियामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामे अवे गइया केवलग्यानी अवे गइया ॥ २ अग्याननी नेमा। फरसेंद्रिया लद्धियामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस-अलद्धियामे केवलग्याननी नेमा अग्यान नथी ॥ लद्धीना ७० बोल जाणवा ॥

॥ इति लद्धीद्वार ॥ १० ॥

हिवे उपयोगद्वार कहे छे ॥ साकारवउत्तामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ मतिग्यान श्रुतग्यान अवधग्यान मनपर्यवग्यान साकार वउतामे ४ ग्याननी भजना अग्यान नथी ॥ केवलग्यान साकारवउतामे केवलनी नेमा अग्यान नथी अणाकारवउतामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना चक्षु दरसण अणाकारवउत्तामे अचक्षु दर्शण अणाकारवउत्तामे ४ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना अवधि दर्शण अणाकारवउत्तामे ४ ग्याननी भजना ३ अग्याननी नेमा॥ केवल दर्शण अणाकारवउतामें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति उपयोगद्वार ॥ ११ ॥

हिवे योगद्वार कहे छे ॥ सजोगी मनजोगी वचनजोगी कायजोगीमें ५ ग्याननी भजना ३॥ अग्याननी भजना अजोगीमें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी॥

॥ इति योगद्वार ॥ १२ ॥

हिवे लेशाद्वार कहे छे ॥ सलेशीमें शुक्ल लेशीमे ५ ग्यानन्नी ३ अग्याननी भजना ॥ कृष्ण नील कापोत तेजुं पद्म लेशीमें ४ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ अलेशीयें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति लेशाद्वार ॥ १३ ॥

हिवे कषायद्वार कहे छे ॥ सकषाइमे क्रोध मान माया लोभ॥ कषाइयामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ अकषाइमे ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति कषायद्वार ॥ १४ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ सवेदीमे स्रीवेदीमे पुरुषवेदीमें नपुसक वेदीमें ४ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ अवेदीमे ५ ग्याननी भजना॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ १५ ॥

हिवे आहारीकद्वार कहे छे ॥ आहारीकमे ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना अणाहारीकमे मनपर्यवग्यान वर्जीनें ४ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥

॥ इति आहारीकद्वार ॥ १६ ॥

हिवे नाणगोचरद्वार अन्य जगेथी जाणवो ॥ १७ ॥ हिवे काल-द्वार कहे छे ॥ समुचे सनाणीना २ भेद साइए अपज्जवसीय (१) साइए सपज्जवसीए (२) साइए अपज्जवसीएनी थिति नथी ॥ साइए सपज्जवसीएनी थिति जघन्य तो अंतरमुहुर्तनी ॥ उत्कृष्टी ६६ सागर

जाझेरी ॥ मतिग्यानी श्रुतग्यानीनी जघन्य अतर मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागरनी॥ अवधिग्यानीनी जघन्य एक समानी उत्कृष्टी ६६ सागरनी॥ मनपर्यवनी जघन्य एक समानी उत्कृष्टी देश उणा क्रोड पूर्वनी ॥ केवलग्यानीनी थिति नथी ॥ समुच्चय अनाणी मति अनाणी श्रुत अनाणीना ३ भेद ॥ अणाइए अपजवसीए (१) अणाइ सपजवसीए (२) साइए सपज्जवसीए ॥ ए ३ नी थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्टी अनतो काल देश उणा अर्द्धपुद्गल परावरतननी विभग अन्नाणीनी, जघन्य अतमुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३ सागर देश उणा क्रोड पूर्वाधिक ॥

॥ इति कालद्वार ॥ १८ ॥

हिवे अतद्वार कहे छे ॥ सनाणीना २ भेद ॥ साइए अपज्जवसीएनो आंतरो नथी ॥ साइए सपज्जवसीएको आतरो जघन्य अतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनंतो काल जाव देश० ॥ मतग्यानी श्रुत ग्यानी अवध मनपर्यव नाणीनो आतरो जघन्य अतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनतो काल देश० ॥ केवलज्ञाननो आतरो नथी. ॥ समुचै अनाणी मत श्रुत अनाणीना ३ भेद ॥ साइए सपज्जवसीए नो आंतरो जघन्य अतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो ६६ सागर जाझेरो ॥ विभग नाणनो आंतरो जघन्य अतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनतो काल [जाव वनस्सइ कालो]

॥ इति अंतर्द्वार ॥ १९ ॥

सर्वसू थोडा मनपर्जवनाणी(१)अवधिनाणीअसंख्यातगुणा(२)मतनाणीश्रुत नाणी विसेसाइया माहोमाही तुला (३) केवलनाणी अनंतगुणा (४) सनाणी विसेसाहिया (५) ॥ सर्वसू थोडा विभग नाणी (१) मत श्रुत अनाणी तुला अनंत (२) भेली अल्पाबहुत्व ॥ सर्वसू

थोडा मनपर्जवनाणी (१) अवधि असख्यातगुणा (२) मति श्रुती नाणी तुला विसेसाहिया (४) विभंग अनाणी असंख्यातगुणा (५) केवल नाणी अनंतगुणा (६) सनाणी विसेसाहिया (७) मत श्रुत अज्ञानी तुला अनंतगुणा (९)

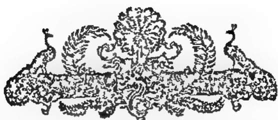
॥ इति अल्पावहुत्वद्वार ॥ २० ॥

सर्वथी थोडा मनपर्यव ग्यानरा पज्जवा (१) अवधि ग्यानरा पज्जवा अनतगुणा (२) श्रुत ग्यानरापजव अनतगुणा (३) मतग्या-नरा पज्जवा अनतगुणा (४) केवलग्यानरा पज्जवा अनतगुणा [५] सर्वथी थोडा विभग अनाणना पजवा (१) श्रुत अनाणना पजवा अनंतगुणा [२] मतग्यानरा पजवा अनतगुणा [३] भेली अलपावहु-त्व ॥ सर्वथी थोडा मनपर्यव पजवा [१] विभगना पजवा अनत-गुणा [२] अवधि० पजवा अनतगुणा [३] श्रोत्र अग्यान पजवा अनतगुणा [४] श्रुत नाण० पजवा विसेसाहिया [५] मत अनाण पजवा अनतगुणा (६) मति नाण० पजवा विसेसाहिया (७) केवल नाण० पजवा अनंत [८]

॥ इति पज्जवद्वार ॥ २१ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे 'लब्धी' आख्यं अष्टादश प्रकरणम् ॥





प्रकरण एकोणीसवां–कायस्थित.

॥ गाथा ॥

जीव (१) गई (२) इंदीय (३) काय (४) जोए (५) वेय (६) कषाय [७] लेस्या (८) समत्त (९) णाण (१०) दसणे (११) सजय [१२] उपयोग [१३] आहारे (१४) भासक (१५) परत्त (१६) पज्जत्ते (१७) सुहुम (१८) सन्नी (१९) भवत्थ (२०) चरमेय (२१) ए ए सतुपयाण कायठिए होइनायव्वा ॥ १ ॥ भावार्थः जीवनो जीवपणे रहतो सदा काल शाश्वतो रहै जीव धुव्वे (१) नित्ते [२] सासए (३) अक्षय (४) अवय (५) अवठिए [६] जीवनो तीन कालमै कदेई अजीव हुवै नही ॥ जिणनें जीव कहिये ॥

॥ इति जीवद्वार ॥ १ ॥

हिवे गतद्वार कहेछे ॥ नारकी देवतानी कायस्थित जघन्य १० हजार वर्षनी उत्कृष्टी ३३ सागरनी॥देवीनी ज० १० हजार वर्षनी उत्कृ० ५५ पल्यनी ॥ तिर्यचनी ज० अंतर्मुहूर्तनी उ० अनतो काल अनती अपसरपणी अनती उत्सर्पणी ॥ अ० कालो अ० खेतो ॥ " क्षेत्र थकी आवलिया ए असखेजे भागे " आवलिकाकै असंख्या-

तमे भाग जितरा समां होय तितरा पुद्‌गल प्रावर्तन कालतक जीव तिर्यंचमें रहै॥ तिर्यचणी १ मनुष्य २ मनुष्यणी ए ३ नी का० ज० अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३ पल्य पृथक् क्रोड पूर्व अधिक ॥ सिद्धसाइय अपजवसीए नर्क तिर्यच तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी देवता देवी ए ७ बोल अप्रजाप्तकी का० ज० उ० अंतर्मुहूर्तनी ॥ नारकी देवता प्रजाप्तनी का० जघन्य १० हजार वरसनी अंतर्मुहूर्तनी ऊणी ॥ उ० ३३ सागर अंतर्मुहूर्त ऊणी॥ देवी प्रजाप्तनी का० जघन्य १० हजार वरसनी अंतर्मुहूर्त ऊणी ॥ उत्कृष्ट ५५ पल्य अंतर्मुहूर्त ऊणी ॥ तिर्यच तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी ए ४ प्रजाप्तानी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी॥ उत्कृष्टी ३ पल्य अंतर्मुहूर्त ऊणी ॥

॥ इति गतिद्वार ॥ २ ॥

हिवे इंद्रिद्वार कहे छे ॥ सेइंद्रियाना दोय भेद ॥ अणाईए अपज्जवसीए अभव्य (१) अणाइए सपज्जवसीए ॥ ते भव्य ['२] एकेंद्रीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतोकाल जाव असंखेजा पुग्गल परियट्टा ॥ बेयेंद्री तेरींद्री चोरेंद्रीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता कालनी ॥ पचेंद्रीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १ हजार सागर पल्यके असंख्यातमे भाग अधिक ॥ अणेंदिया साइए अपज्जसीए सइंदिया इकेंद्रिया बेरिंद्रिया तेरिंद्रिया चोरेंद्रिया पचेंद्रिया ए ७ बोल अप्रजाप्तानी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ सइंदिया प्रजाप्तनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी एकेंद्री प्रजाप्तनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता हजार वरसनी ॥ बेरिंद्रीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता वरसांनी ॥ तेरिंद्रिनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता वरसानी ॥ रायेंद्रीयानी ॥ चौरेंद्रीयानी का०

जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता मासनी ॥ पचेंद्रीयानी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागरपूरी ॥

॥ इति इंद्रीद्वार ॥ ३ ॥

हिवे कायद्वार कहे छे ॥ सकाइयाना २ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) पृथिवी अप तेउ वायु ए ४ नी का० जघन्य अतरमुहूर्तनी ॥ उत्कृष्टी असख्यातो काल असख्याती अपसरपणी जाव असख्यात लोका ॥ वनस्पतीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल जाव असखेजा पुग्गल परियट्टा ॥ तसकायनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी दोय हजार सागर सख्याता वरसाधिक ॥ अकाइया साइए अपज्जवसीए ते सिद्ध ॥ सकाइया पृथिवीकाइया अप तेउ वाउ वनस्पती त्रसकाइया ए ७ अपजाप्तानो का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी सकाइया तसकाइया, पजाप्तानी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी ॥ पृथिवीकाइया अपकाइया वाउकाइया वनस्पतीकाइया पजाप्तानी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता हजार वर्षनी ॥ तेउ पजाप्तानी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता रायदीयानी ॥ हिवे ७ बोल सूक्ष्मना कहे छे ॥ समुचे सूक्ष्म सूक्ष्म पृथिवीकाय सूक्ष्म अपकाय सूक्ष्म तेऊ काय सूक्ष्म वाउकाय सूक्ष्म वनस्पतीकाय सूक्ष्म निगोद ए ७ नी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असख्यातो काल असख्याती अपसरपणी असख्याती उतसरपणी असख्यात कालो असंख्यात क्षेत्रो असख्यात लोगा ॥ ए ७ अपजाप्ता पजाप्तानी का० जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्तनी ॥ हिवे ९ बोल बादरनां ॥ समुचे बादर (१) बादर पृथिवीकाय (२) बादर अपकाय (३) बादर तेऊकाय (४) बादर वाउकाय (५) बादर वनस्पतीकाय (६)

प्रत्येक शरीरी वादर वनस्पती (७) वादर त्रस (८) वादर निगोद (९) जिणमें समुचे वादर वादर वनस्पती ए २ नी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल असंख्याती अपसरपणी असंख्याती उत्सरपणी असंख्यात कालो असख्यात क्षेत्तो ॥ क्षेत्रकी थकी आंगुलीया ए असंखेजइ भागे ॥ आगुलकाकै असख्यातमें भाग जितरा आंका प्रदेश होय तितरा कालचक्र जीव २ वोलमें रुलै ॥ वादर पृथिवीकाय वादरअपकाय वादरतेउकाय वादर वाउकाय प्रत्येक शरीरी वादर वनस्पतीकाय वादर निगोद ए ६ नी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ७० कोडा कोड सागरनी ॥ वादर त्रसनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृ० दोय हजार सागर सख्याता वरसाधिक ए नव वोल अपजाप्तानी का० ज० उ० अंतर्मुहूर्तनी समचै वादर वादर त्रस काय प्रजाप्ता जघन्य का० अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक सो सागर जाझेरी ॥ वादर पृथिवीकाय वादर अपकाय वादर वायुकाय वादर वनस्पतीकाय प्रत्येक शरीरी वादर वनस्पती एहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता हजार वरसनी॥ वादर तेउनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता रायेंदीयानी ॥ वादर निगोदनी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ समुचै निगोदनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल अनंती अवसरपणी अनती उत्सरपणी अनतो काल अनतो खेतो जाव अढाई पुग्गल प्रावर्तन ॥

॥ इति कायाद्वार ॥ ४ ॥

हिवे योगद्वार कहे छे ॥ सजोगीना २ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसीए ॥अणाहए सपज्जवसीए॥ मनजोगी वचननी का० जघन्य १ समानी उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ कायजोगीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी

उत्कृष्टी अनतो काल ॥ जावरणसइ कालो ॥ अजोगी साइए अप-ज्जवसीए ॥

॥ इति जोगद्वार ॥ ५ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ सवेदीना ३ भेद ॥ अणाइए अपज्जव-सीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) ए ३नी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतोकाल जाव देश उणा अर्ध पुद्गल परावर्तन ॥ स्त्री वेदनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी स्त्री वेदना ५ भेद पहला भेदनी का० उत्कृष्टी ११० पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ दूजा भेदनी का० उ० १०० पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक॥ तीजा भेदनी का० उ० १८ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ चोथा भेदनी का० उ० १४ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ पांचमा भेदनी का० उ० ९ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ पुरुष वेदनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी ॥ नपुसक वेदनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अनतो काल जाव वणसइ कालो ॥ अवेदीना २ भेद साइए अपज्जवसीए॥ साइए सपज्जवसीए॥ तेनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ ६ ॥

हिवे कषायद्वार कहे छे ॥ सकषाईना ३ भेद अणाइए अपज्ज-वसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) तेहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनता कालनी जाव देश उणा अर्द्ध पुद्गल परावर्तन ॥ क्रोध कषाइ या मान कषाईया माया क-षाईयानी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ लोभ कषाइयानी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी अकषाइयाना २ भेद साइए

अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) तेहनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृटी अतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति कषायद्वार ॥ ७ ॥

हिवे लेशाद्वार कहे छे ॥ सलेशीना २ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) कृष्णलेशी शुक्लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३ सागर अतर्मुहूर्त अधिक ॥ नील लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १० सागर पल्यने असंख्यातमे भाग अधिक ॥ कापोत लेशीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३ सागर पल्यके असंख्यातमे भाग ॥ तेजु लेशीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी २ सागर पल्यने असख्यातमे भाग.॥ पद्म लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १० सागर अतर्मुहूर्त अधिक ॥ अलेशी साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति लेशाद्वार ॥ ८ ॥

हिवे सम्यक्तद्वार कहे छे ॥ समदृष्टीना २ भेद साइए अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) तेहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी साश्वादान समकितनी जघन्य का० १ समयनी उत्कृष्टी ६ आवलिकानी ॥ उपसम समकितनी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ वेदक समकितनी का० जघन्य उत्कृष्ट १ समयनी ॥ क्षयोपशम समकितनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ क्षायक सम्यक्त साइए अपज्जवसीए ॥ मिथ्यादृष्टिना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाईए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल जाव देशोणा अर्ध पुद्गल मावर्तन ॥ मिश्रदृष्टीनी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति सम्यक्तद्वार ॥ ९ ॥

हिवे ज्ञानद्वार कहे छे ॥ सनाणीना २ भेद साइए अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) एहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ मति श्रुति नाणीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी॥ मन नाणी पर्यवनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी देशोणा कोड पूर्वनी ॥ केवलग्याननी का० साइए अपज्जवसीए । मति श्रुत अनाणीना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए(१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो कालनी जाव देशोणा अर्द्धपुद्गल प्रावर्तन ॥ विभग अनाणीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३ सागर देशोणा कोड पूर्व अधिक ॥

॥ इति ज्ञानद्वार ॥ १० ॥

हिवे दर्शणद्वार कहे छे ॥ चक्षु दर्शननी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी हजार सागर जाझेरी अचक्षु दर्शणना २ भेद अणाइ अपज्जवसीए [१] अणाइए सपज्जवसीए (२) अवधि दर्शननी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी १३२ सागर जाझेरी ॥ केवल दर्शणनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति दर्शणद्वार ॥ ११ ॥

हिवे सजतीद्वार कहे छे ॥ समुचै संजती सामाइक चारित्र छेदोपस्थापनीक चारित्र जथाखायक चारित्र ए ४ नी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी देशोणा क्रोड पूर्वनी परिहार विशुध्ध चारित्रनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी २९ वर्ष उंण क्रोड पूर्वनी ॥ सूक्ष्म समायचारित्रनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी

संजता सजतीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी देसोणा कोड पूर्वनी असंजतीना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल जाव देशोणा अर्ध पुद्गल प्रावर्तन॥नो सजती नो असजती नो सजता संजतीनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति सयतिद्वार ॥ १२ ॥

हिवे उपयोगद्वार कहे छे ॥ साकार वउत्ता अणाकार वउत्तानी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति उपयोगद्वार ॥ १३ ॥

हिवे आहारिकद्वार कहे छे ॥ आहारीकना २ भेद छद्मस्थ आहारीक केवल आहारीक छद्मस्थ आहारिकनी का० जघन्य १ खोडागभव २ समय उणी उत्कृष्टी असख्यातो काल असख्याती अपसरपणी " जाव आंगुलीयाए असखेजइ भागे " आंगुलके असख्यातमे भाग जितरा आकाश प्रदेश होय तितरा काल चक्र जीव छद्मस्थ आहारीक रहै ॥ केवल आहारिकनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी देशोणा कोड पूर्वनी ॥ अणाहारीकना २ भेद छद्म अणारीक (१) केवल अणारीक (२) छद्मस्थ अणारीकनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी २ समयनी केवल अणारीकना २ भेद सिद्ध अणाहारीक (१) ससारी केवली अणाहारीक (२) सिद्ध केवली अणारीकनी का० साइए अपज्जवसीए॥संसारी केवली अणाहारीकना २ भेद सजोगी केवली अणारीक (१) अजोगी केवली अणारीक (२) सजोगी केवली अणारिकनी का० जघन्य उत्कृष्टी ३ समयनी अजोगी केवली अणारिकनी का० ष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति आहारीकद्

हिवे भासकद्वार कहे छे ॥ भासकनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टो अंतर्मुहूर्तनी ॥ अभासकना २ भेद साइए अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल "जाव वणसइ कालो" ॥

॥ इति भासकद्वार ॥ १५ ॥

हिवे परतद्वार कहे छे ॥ परतना २ भेद संसार परत (१) काय परत (२) संसार परतनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल. "जाव देशोणा अर्द्धपुद्गल परावर्त्तन काय परतनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल "जाव पुढवी कालो" अपरतना २ भेद संसार अपरत (१) काय अपरत (२) संसार अपरतना २ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) काय अपरतनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल " जाव वणसइ कालो " नो परत्त नो अपरत्तनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति परतद्वार ॥ १६ ॥

हिवे प्रजाप्तद्वार कहे छे ॥ प्रजाप्तनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक सो सागर जाझेरी ॥ अप्रजाप्तनी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ नो अप्रजाप्तानो प्रजाप्तानी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति प्रजाप्तद्वार ॥ १७ ॥

हिवे सूक्ष्मद्वार कहे छे ॥ सूक्ष्मनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल " जाव असंख्यात लोगा " बादरनी का०

जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल "जाव आंगुलियाए असखेजइ भागे" नो सूक्ष्म नो बादरनी का० साइए अपज्जवसीए॥

॥ इति सूक्ष्मद्वार ॥ १८ ॥

हिवे सन्नीद्वार कहे छे ॥ सन्नीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी॥ असन्नीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल "जाव देशो वनसइ कालो" नो सन्नी नो असन्नी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति सन्नीद्वार ॥ १९ ॥

हिवे भवद्वार कहे छे ॥ भवते अणाइए सपज्जवसीए (१) अभव अणाइए अपज्जवसीए (२) नो भव नो अभव साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति भवद्वार ॥ २० ॥

हिवे चर्मद्वार कहे छे ॥ चर्मते अणाइए अपज्जवसीए ॥ अचर्मना २ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसीए ते अभव्य ॥ साइए अपज्जवसीए ते सिद्ध भगवान ॥

॥ इति चर्मद्वार ॥ २१ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे काय स्थित्याख्यं एकोनविंशति प्रकरणम् ॥



प्रकरण वीसवा–गतागत.

		आगति-ते आविवौ		गतीते जायवौ तेहना बोल	
१	प्रथम नारकीनी	२५	कर्म भूमि १५ पर्याप्ता पांच सन्नीऽसन्नी तिर्यञ्चका पर्याप्ता १०	४०	१५ कर्म भूमिना मनुष्य अने ५ सन्नी तिर्यञ्च पं २० ना पर्याप्ता अपर्याप्ता
२	दूजी नारकीनी	२०	पूर्वत् ५ असन्नी टल्या	४०	१५ कर्मभूमिना अपर्याप्तापर्याप्ता अने सन्नी तिर्यञ्चना पर्याप्ता ने अपर्याप्ता पूर्वे ४०
३	तीजी नारकीनी	१९	पूर्वे २० कह्या जिणमेसू एक भुजपर टल्यो.	४०	४० पूर्ववत्
४	चोथी नारकीनी	१८	पूर्वे १९ कह्या जिणमेसू खेचर १ टल्यो	४०	४० पूर्ववत्
५	पांचमी नारकीनी	१७	पूर्वे १८ कह्या जिणमेसू एक स्थलचर टल्यो.	४०	४० पूर्ववत्

आगत. गत.

६	छट्ठी नारकीनी	१६	पूर्वे १७ कह्या जिगमेसू उरपर टल्यो	४०	४० पूर्ववत्
७	सातमी नारकीनी	१६	इहां भी टली	१०	५ सन्नी तिर्यंचका अपर्याप्ता एव १०
८	१० भवनपती १५ पर्माधामी		१०१ गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता अने		१५ कर्म भूमिना मनुष्य ५ सन्नी तिर्यंच ए २०
	१६ व्यतर १० तिर्यग् जभकानी	१११	५ सन्नी ५ असन्नी तिर्यंचना पर्याप्ता एव १११	४६	अनें पृथ्वी १ अप २ वा ३ ए २३ ना पर्याप्ता अपर्याप्ता एव ४६
९	१० ज्योतिषीनी	५०	१५ कर्मभूमी ३० अकर्म० ५सन्नी पुना पर्याप्ता	४६	४६ पूर्ववत्
१०	प्रथम देवलोकनी	५०	१० पूर्ववत्	४६	४६ पूर्ववत्

	आगत.			गत.	
१	दूजा देवलोकने	४०	१५ कर्मभूमी ५ सन्नी ति० ५ देव कु० ५ उत्त० ५ हर वास० ५ र-म्यग्न० ए सर्व प०	४६	४६ पूर्ववर्
१२	त्रीजा देवलोकथि लेई ८ मा लगेनी	२०	१५ कर्म भूमीना ५ सन्नी तिर्यंचका प्रजाप्ता	४०	१५ कर्मभूमी ५ सन्नी तिर्यंच ए २० का अप्रजा प्ता प्रजाप्ता एव ४०
१३	नोग्रीवेकथी लई पांच अणुत्तर वि मान लगेनी	१५	१५ कर्मभूमीना प्रर्याप्ता	३०	१५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता एव ३०
१४	पृथ्वी अप वन-स्पती ए ३ नी	२४३	१०१ मनुष्य अ संख्यानी० १५ कर्मभूमीना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ४८ तिर्यंच ६४ देव	१७९	६४ देवता वरजीने
१५	तेऊ (१) वाऊनी (२)	१७९	छद्द पूर्ववत्	४८	तिर्यंच सर्व
१६	३ विकलेंद्रियनी	१७९	एद्द पूर्ववत्	१७९	छद्द पूर्ववत्

आगत. गत.

१७	सन्नी तिर्यंचनी	२६७	१७९ की लड ८१ देवता ८ मा देवलोक लगे ७ नारकी	५२७	८ मा देवलोक सू ऊपरला देवता वर्जी
१८	असन्नि तिर्यंचनी	१७९	लड०	३९५	१७९की लड ५१ देवता ५६ अंतर्द्वीपा प्रथम नर्क एव ३९५
	सन्नी तिर्यंचनी	२६७	८१ जातना देवता १७९ नी लड ओर सात नारकीना प्रजाप्ता	५२७	ते ५६३ माहियी नवमा देवलोकसे लेकर सर्वार्थसिद्ध १८ ना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता ए ३६ वज्याशेष ५२७रह्या
१९	सन्नी मनुष्यनी	२७६	१७१ की लड तेउ वाउना वर्जी ९९ देवता ६ नारकीना प्रजाप्ता	५६३	जीवना सर्व भेद
२०	असन्नी मनुष्यनी	१७१	१७९ लडमाहि-थी तेउ वाउ ना ८ भेद टालीने ॥	१७९	१३१ मनुष्यना अने ४८ भेद तिर्यंचना एव १७९
२१	देवकुरु उत्तर कुरी	२०	१५ कर्मभूमी ५ सन्नी तिर्यंच एव २०	१२८	प्रथम ६४ जातका देवलोक अप्रजाप्ता प्रजाप्ता एव १२८

		आगत.		गत.	
२२	हरीवास २४ रम्यकवासी	२०	पूर्ववत	१२६	?जा देवलोक तां ई ६३ जातना देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता एव १२६
२३	हेमवय-ऐरणयवनी	२०	पूर्ववत्	१२४	भवनपतीसे लेकर पहिला देवलोक तांई ६२ जातका देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता० एव १२४
२४	५६ अंतर्द्वीपानी	२५	१५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ५ सनी ५ असनी तिर्यंच एव २०	१०२	१० भुवनपती १६ वाणव्यंतर १५ परमाधामी १० तिर्यचका पुना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता एव १०२
२५	तीर्थंकरनी	३८	१२ देवलोक ९ लोकांतीक ९ नवग्रीवेक ३ नारकीएना प्रजाप्ता एव ३८	मोक्ष	मोक्षनी
२६	चक्रवर्तीनी	८२	८१ जातका देवता १ नारकी एना प्रजाप्ता एव ८२	१४	सात नारकीना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता एव १४
२७	वासुदेवनी	३२	१२ देवलोक ९ नवग्रीवेक ९ लोकांतिक २ नारकी एव ३२	१४	पूर्ववत्

			आगत.		गत.
२८	बलदेवकी	८३	३ किल्विषी १५ परमाधामी थरजीन दोख देवता और २ नारकी एव ८३	७० तथा मोक्ष	१२ देवलोक ९ नवग्रीवेक ९ लोकातिक ५ अणुत्तर विमान एहना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता
२९	केवलीनी	१०८	८१ जातका देवता १७ कर्मभूमी ५ सन्नी तिर्यंचका प्रजाप्ता पृथ्विपाणी वनस्पती ४ नारकी एव १०८	०	सिद्धगति
३०	साधुजीनो	२७५	मनुष्यवत् ५ नारकी-लगे	७०	बलदेववत्
३१	श्रावकनी	२७६	मनुष्यवत् ६ नारकी-लगे	४२	१२ देवलोक ९ लोकांतिक एना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता एव ४२
३२	समदृष्टीनी	३६३	९९ जातका देवताका प्रजाप्ता ८६ जुगलिया सात नारकी अप्रयाप्ता तेउ वाउना ८ टल्या एव ३६३ मसू	२२२	८१ देवता १५ कर्मभूमी ५ सन्नीतिर्यंच ६ नारकी ए १०७ प्रजाप्ता अप्रजाप्ता (२१४) ३ विकलेंद्री ५ असन्नी तिर्यंच
३३	मिश्रदृष्टीनो	३६३	पूर्ववत्	०	गती नथी

		आगत.		गत.	
३४	मिथ्यादृष्टिनो	३७१	९९ जातका देवता ८६ युगुलिया ७ नारकी प्रजाप्ता १७१ कि एह	५६३	५ अणुत्तरविमानवर्जी
३५	स्त्री वेदनी	३७१	पूर्ववत्	५६१	सातमी नारकीवर्जी
३६	पुरुष वेदनी	३७१	पूर्ववत्	५६३	सर्व
३७	नपुंसक वेदनी	२८५	पूर्वे ३७१ कह्या जिण मेंसू ८६ युगुलिया टळ्या	५६३	सर्व
३८	सिद्ध भगवान्नी	१५	१५ कर्मभूमीना प्रआप्ता	०	०

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे गतागत्याऽख्यं विंशति तम प्रकरणम्. ॥





प्रकरण एकवीसवां-संजया.



॥ गाथा ॥

पण्णवण (१) वेय (२) रागे (३) कप्प (४) चरित्त (५) पडिसेवणा (६) नाणे (७) तित्ये (८) लिंग (९) सरीरे (१०) खित्ते (११) काले (१२) गई (१३) सजम [१४] निकासे (१५) ॥ १ ॥ जोगु (१६) वओगे (१७) कसाए (१८) लेस्या (१९) परिणाम (२०) वध (२१) वेदेय (२२) ॥ कम्मोदी रण (२३) उवसं ॥ पजहण (२४) सन्नाय (२५) आहारे (२६) ॥ २ ॥ भव (२७) आगरिसे (२८) काल [२९] तरेय [३०] ॥ समुग्धाय (३१) खेत्त (३२) फुसणाय (३३) ॥ भावे (३४) परिमाणेय (३५) खलु ॥ अप्पा बहु यसंजयाण (३६) ॥ ३ ॥

हिवे प्रथम पन्नवणद्वार कहे छे ॥ पन्नवण कहतां परूप्या सजयाना भेद ॥ सामाइक चारित्र (१) छेदोपस्थापनीय चारित्र (२) परिहार विसुधि चारित्र [३] सूक्ष्म संपराय चारित्र (४) जथाखायिक चारित्र (५) हिवे उत्तरभेद कहे छे. सामाइक चारित्रना (२) भेद। इत्तरीएय (१) आवकहिएय (२) इत्तरियते थोडा कालनो ॥ प्रथम चरम तीर्थंकरने वारै होय। ते किम सामाइक छेदीने छेदोपस्थापनीय देवै ॥ सातमे दिने तथा चौथे मासे तथा छट्ठे मासे ते भणी (१) आवते जाव जीव लगै रहे ते मध्य २२ तीर्थंकरांने वारै। तथा महा-

विदेहका साधुओंके होय ॥ ते किम वडी दिक्षा नहि देवै ॥ ते भणी (२) ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय चारित्रना (२) भेद । साइयारे (१) निरइयारे (२) साइयारे तो अतिचार लागां देवै (१) निरइयारे ते। अतिचार लागा विना देवै । ते किम छोटी दिक्षा थकी वडी दिक्षा छेवै तथा पार्श्वनाथजीना साधु महावीरजीका सासणमें आवै जद छेदोपस्थापनीय छेवै ते भणी (२) ॥ २ ॥ परिहार विशुधि चारित्रना (२) भेद । निविसमाणे (१) निविठकाइय (२) निविसमाणे तो परिहार विशुधी तप करे ॥ ते किम नव (९) साधु गच्छ बारै नीकलीनै तप करवा माडयो. १८ मासको प्रमाण बाध्यो जिणमें प्रथम छ मासमें चार साधु तप करे, चार साधु वैयावच्च करै गुरु व्याख्यान करे ॥ बीजा छ मासमे वैयावच्चका करणेवाला तप करे तपका करणेवाला वैयावच्च करे ॥ त्रीजा छ मासमें गुरु तप करे शेष ८ जणा वैयावच्च करै ॥ अब तपनो प्रमाण कहे छेः—प्रथम छ मासमें सीत कालमै तो चोथ भक्त करे उष्णकालमे छठ भक्त करै वर्षाकालमें अट्ठ भक्त करे बीजा छ मासमें तीनूही ऋतुमें एकेक उपवास वधावें ॥ २ । ३ । ४ । त्रीजा छ मासमे पुनः तीनूही रितुमें पुनः एकेकोपवास वधावे । ३ । ४ । ५ । अर नवेंही साधु सदाही आंबिल करे इम अठरा मासताई तप करै जिणनै निविसमाणे कहिये (१) निविठ- माणे ते परिहार तप करी निवर्ते जिसको कहिये (२) ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रना (२) भेद ॥ संक्लेसमाणेय (१) विशुधमाणे (२) सक्लेसमाणे ते उपशम श्रेणीथी पडता १० मे गुणठाणे आवे जद होवे (१) विशुधिमाणे ते दोनूही श्रेणी चढता थका आवे (२) ॥४॥ जथाख्यायिक चारित्रना [२] भेद। छद्मस्थ [१] केवली (२) छद्मस्थ ते ११ में । १२ में गुणठाणे होवे [१] केवली ते । १३ में । १४ में गुणठाणें होवै (२) ॥ ५ ॥

॥ इति प्रथमद्वार ॥ १ ॥



प्रकरण एकवीसवां–संजया.



॥ गाथा ॥

पण्णवण (१) वेय (२) रागे (३) कप्प (४) चरित्त (५) पडि-सेवणा (६) नाणे (७) तित्ये (८) लिंग (९) सरीरे (१०) खित्ते (११) काले (१२) गई (१३) संजम [१४] निकासे (१५) ॥ १ ॥ जोगु (१६) वओगे (१७) कसाए (१८) लेस्या (१९) परिणाम (२०) वध (२१) वेदेय (२२) ॥ कम्मोदी रण (२३) उवसं ॥ पज-हण (२४) सन्नाय (२५) आहारे (२६) ॥ २ ॥ भव (२७) आग-रिसे (२८) काल [२९] तरेय [३०] ॥ समुग्घाय (३१) खेत्त (३२) फुसणाय (३३) ॥ भावे (३४) परिमाणेय (३५) खलु ॥ अप्पा बहु यसजयाण (३६) ॥ ३ ॥

हिवे प्रथम पन्नवणद्वार कहे छे ॥ पन्नवण कहतां परूप्या संज-याना भेद ॥ सामाइक चारित्र (१) छेदोपस्थापनीय चारित्र (२) परिहार विसुधि चारित्र [३] सूक्ष्म सपराय चारित्र (४) जथाखायिक चारित्र (५) हिवे उत्तरभेद कहे छे. सामाइक चारित्रना (२) भेद। इत्तरीएय (१) आवकहिएय (२) इत्तरियते थोडा कालनो ॥ प्रथम चरम तीर्थंकरने वारे होय। ते किम सामाइक छेदीने छेदोपस्थापनीय देवै ॥ सातमे दिने तथा चौथे मासे तथा छट्ठे मासे ते भणी (१) आवते जाव जीव लगै रहे ते मध्य २२ तीर्थंकरांने वारे। तथा महा-

विदेहका साधुओंके होय ॥ ते किम वडी दिक्षा नहि देवै ॥ ते भणी (२) ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय चारित्रना (२) भेद । साइयारे (१) निरइयारे (२) साइयारे तो अतिचार लांगा देवै (१) निरइयारे ते। अतिचार लागा विनां देवै । ते किम छोटी दिक्षा थकी वडी दिक्षा लेवै तथा पार्श्वनाथजीना साधु महावीरजीका सासणमें आवै जद छेदोपस्थापनीय लेवै ते भणी (२) ॥ २ ॥ परिहार विशुध्धि चारित्रना (२) भेद । निविसमाणे (१) निविठकाइय (२) निविसमाणे तो परिहार विशुधी तप करे ॥ ते किम नव (९) साधु गच्छ वारै नीकलीनै तप करवा माडयो. १८ मासको प्रमाण बाध्यो जिणमें प्रथम छ मासमें चार साधु तप करे, चार साधु वैयावृत्य करै गुरु व्याख्यान करे ॥ बीजा छ मासमे वैयावृत्यका करणेवाला तप करे तपका करणेवाला वैयावच करे ॥ त्रीजा छ मासमें गुरु तप करे शेष ८ जणा वैयावृत्य करै ॥ अब तपनो प्रमाण कहे छेः—प्रथम छ मासमें सीत कालमै तो चोथ भक्त करे उष्णकालमे छठ भक्त करै वर्षाकालमें अष्ट भक्त करे बीजा छ मासमें तीनूही ऋतुमें एकेक उपवास वधावें ॥ २ । ३ । ४ । त्रीजा छ मासमे पुनः तीनूही रितुमें पुनः एकेकोपवास वधावे । ३ । ४ । ५ । अब नवेंही साधु सदाही आंबिल करे इम अठरा मासताई तप करै जिणनै निविसमाणे कहिये (१) निविठमाणे ते परिहार तप करी निवर्ते जिस्को कहिये (२) ॥ ३ ॥ सूक्ष्म सपराय चारित्रना (२) भेद ॥ सक्लेसमाणेय (१) विशुध्यमाणे (२) सक्ले समाणे ते उपशम श्रेणीथी पडतां १० में गुणठाणे आवै जद होवे (१) विशुधिमाणे ते दोनूही श्रेणी चढता थका आवे (२) ॥४॥ जथाख्यायिक चारित्रना [२] भेद। छद्मस्थ [१] केवली (२) छद्मस्थ ते ११ में । १२ में गुणठाणे होवे [१] केवली ते । १३ में । १४ में गुणठाणें होवै (२) ॥ ५ ॥

॥ ६॥ ॥ १ ॥

हिवै वेदद्वार कहे छे ॥ प्रथम २ संजया सवेदीभी होय ॥ तथा अवेदीभी होय ॥ सवेदी होय तो। तीनूंहि वेद होय। अनें अवेदी होय ते उपशमवेदी तथा क्षीणवेदी होय ॥ परिहार विशुधि सवेदी-हीज होवै ॥ पुरुषवेदी तथा पुरुष नपुंसकवेदी होय। पिण स्त्री वेदी नही होय। अनें अवेदी पिण न होय॥ सूक्ष्म सपराय अने जथाखायिक। सवेदी नही होय। अवेदीहीज होय तथा उपशम वेदी तथा क्षीण वेदी होय ॥ ५ ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ २ ॥

हिवे रागद्वार कहे छे ॥ प्रथम चार संजया तो सरागी होय ॥ जथाखायक चारित्र उपशम रागी होय ॥ तथा क्षीण रागी होय ॥

॥ इति रागद्वार ॥ ३ ॥

हिवे कल्पद्वार कहे छे ॥ सामाइक सूक्ष्म संपराय जथाखायक। ए ३ थित कल्पी होय॥ अथित कल्पी पिण होय। छेदोपस्थापनी। परिहार विशुद्धी। ए २ थित कल्पी तो होय। पिण अथित कल्पी न होय॥

हिवे थित कल्पी अथित कल्पी नो अर्थ कहे छे॥

थित कल्पी तो दस बोल पाले॥ ते प्रथम चरम तीर्थंकरनै वारै होय॥ अने अथित कल्पी ते ४ बोल तो निश्चयही पाले। अने छै बोलकी भजना। पाले तथा न पाले॥ ते दस बोलना नाम कहे छे॥ सेज्यातर पिंड.(१) महाव्रत ४ (२) पुरुष ज्येष्ठ ते साध्वी साधुनें वंदना करे (३) कीर्ति कर्म ते लघु साधु वडा साधुनें वंदना करे ॥ ४ ॥ ए चार तो अथित कल्प कहीजे। अचेल ते वस्त्रनो प्रमाण करे॥ वर्ण थकी अने मोल थकी ॥ ५ ॥ उदेसिक ते कोई साधुने

काजै आहारादिक निपजायौ ते आहारादिक ओर साधु ल्यावे ॥६॥ पडिक्कमणा कल्प ते सांज प्रभातनै पडिक्कमणा करे ॥ ७ ॥ राज्य-पिंड ॥ ८ ॥ मास कल्प ॥ ९ ॥ पजुसणा कल्प । १० । ए १० जाणवा ॥ हिवे कल्प (३) आश्री कह छे ॥ सामायिक तो जिण कल्पी होय ॥ थिवर कल्पी होय ॥ कल्पातीत होय (१) छेदोपस्थापनीय ॥ परिहार विशुद्धि ॥ ए २ कल्पातीत न होय शेष दोय कल्प होय । सूक्ष्म सपराय जथाक्षायक । ए २ कल्पातीतहीज होय ॥ शेप २ न होय ॥ ५ ॥

॥ इति कल्पद्वार ॥ ४ ॥

हिवे चारित्रद्वार कहे छे ॥ सामाइक छेदोपस्थापनीकमांही नियठा पावे ४ पुलाक (१) वुकस (२) पडिसेवणा (३) कपाय कुसील (४) परिहार विशुधिमे सुक्ष्म सपरायमे नियठो पावे १ कपाय कुसील ॥ जथाक्षायकमें नियठा पावे २ नियठो (१)

॥ इति चारित्रद्वार ॥ ५ ॥

स्नातक (२) हिवे पडिसेवणाद्वार कहे छे ॥ प्रथम २ संजया। पडि सेवी अपडि सेवी दोनूही होवे । पडि सेवी होवे तो मूल गुण उत्तर गुण दोन्याको होवै । मूल गुण पडि सेवी तो पांच महाव्रतामे दोप लगावे । उत्तर गुण पडिसेवी ते । दस पच्चखाणमै दोप लगावे [अनागय (१) अइकंत (२) कोटि सहिय (३) नियठीय (४) सागार (५) अणागार (६) परिमाण कड [७] निविसेस (८) सकिय (९) अद्धा (१०) यां मे दोप लगावे शेप ३ सजया अपडिसेवी होय ॥ ६ ॥ ईति ॥

हिवे ७ ग्यानद्वार कहे छे । प्रथम ४ सजया

तथा ३ तथा ४ होवै । दोइ होवै तो । मति श्रुति ॥ तीन होवै तो । मती श्रुति अवधि ॥ तथा मति श्रुति मनपर्यव ॥ जथाक्षायकमे । ग्यान २ तथा ३ तथा ४ तथा १ पिण होय ॥ १ ॥ ? होय तो केवल होय ॥ ५ ॥ हिवे । सामाइक (१) छेदोपस्थापनीय (२) सूक्ष्म सपराय (३) ए ३ संजया भणे तो जघन्य ८ प्रवचन माता तक भणे । उत्कृष्टो १४ पूर्व भणे । परिहार विशुद्धि । जघन्य ८ पूर्व अने नवमा पूर्वनी त्रीजी आचार वत्थु लगे भणे ॥ उत्कृष्टो १० ऊणा पूर्व भणे ॥ जथाक्षायक जघन्य ८ प्रवचन माता तक भणे । उत्कृष्टो १४ पूर्व तथा सूत्रथी व्यतिरिक्त भणे (५) ॥ ७ ॥ ईति

हिवे ८ मो तीर्थद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) सूक्ष्म सपराय (२) जथाक्षायक(३)॥ए ३ सजया । तीर्थेवि तथा आतीर्थेवि होय ॥ तीर्थे कहिजे ४ तीर्थ प्रवर्तमान विषे होवै । अतीर्थे कहिजे ४ तीर्थ विना होय ॥ ते छद्मस्थ तीर्थकर होय । तथा प्रत्येक बुद्धी होय ॥ छेदोपस्थापनीय । परिहार विशुद्धी । ए २ सजया । तीर्थ होवे । पिण अतीर्थ न होय ॥ ८ ॥ ईति

हिवे ९ मो लिंगद्वार कहे छे ॥ लिंगका २ भेद । द्रव्य लिंग तो साधुनो भेष ॥ भावलिंग ते साधुना परिणाम ॥ परिहार विसुधी टाली शेष ४ सजया । द्रव्ये तीनूं लिंगी होवे । सलिंगी [१] अन्य लिंगी (२) गृहलिंगी (३) ॥ भाव आश्री नियमा सलिंगी होय । परिहार विसुधी द्रव्ये अने भावे सलिंगी होवे। शेष २ नथी ॥९॥ ईति॥

हिवे १० मो शरीरद्वार कहे छे ॥ सामायिक छेदोपस्थापनीय ए २ मे सरीर ५ पांवे ॥ शेष ३ मे सरीर ३ पावे। उदारिक (१) तेजस (२) कार्मण [३] ॥ १० ॥ ईति ॥

हिवे ११ मो क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ पांचुही संजया १५ कर्म भू-

मिने विषे होय अकर्मभूमिने विषे न होय ॥ विशेषः–छेदोपस्थापनीय (१) परिहार विशुद्धि ए २ सजया महाविदेह क्षेत्रमे न होय अनें १० क्षेत्रोंमे होवे साहारण आश्री ४ सजया अढाईद्वीपमें सघलो होवे परिहार विशुद्धिको साहारण नथी ॥ ११ ॥ इति ॥

हिवे १२ मो कालद्वार कहछे । अवसर्पणी काल आश्री सामायिक (१) छेदोपस्थापनीय (२) ए २ सजया । जन्म आश्री प्रवर्तन आश्रि तीजे चैाथे पांचमे आरै होय । परिहार विशुद्धी (१) सूक्ष्म सपराय (२) जथाक्षायक (३) ए ३ सजया जन्म आश्री ३–४ आरै होय ॥ अने प्रवर्तन आश्री । ३ । ४ । ५ । मै आरै होय । हिवे उत्सर्पणी काल आश्री कहे छे पाचूही सजया । जन्म आश्री । २ । ३ । ४ । आरै होय अनै प्रवर्तन आश्री ३ । ४ । आरै होय ॥ हिवे चार पलि भाग आश्री कहछे ॥ सामायिक [१] सुक्ष्म सपराय (२) जथा क्षायक ए ३ सजया चोथो पलि भाग महाविदेहमे होवै । तीन पलि भागमे न होय ॥ अने छेदोपस्थापनीय (१) परिहार विशुद्धि (२) ए दोनूं चारुही पली भागमे नथी ॥ हिवे साहारण आश्री कहे छे सामायिक (१) सूक्ष्म सपराय (२) जथाक्षायक (३) ए ३ संजयोता चारे आरामे अने चार पलिभागमै सघलेही होवे ॥ छेदोपस्थापनी पाच आरामे होय ।३।४।५ ए तीन अपसर्पणीका ॥ ३ ।४ । ए दोई उत्सर्पणीका । एव (५) परिहार विशुद्धिको साहारण नथी ॥ १२ ॥

॥ इति ॥

हिवै १३ मौ गतिद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) छेदोपस्थापनीय (२) ए २ सजया जघन्य तो प्रथम देवलोक ऊपजे उत्कृष्टा सर्वार्थ सिद्ध विमाणतांई ऊपजे ॥ आउखो ॥ जघन्य दोइ पल्योपमको उत्कृष्टो ३३ सागरोपमको । पदवी पावे ५ इंद्रकी (१) सामानिककी

(२) त्रायत्रिंशककी (३) लोकपालकी (४) अहमिंद्रकी (५) परिहार विसुधी जघन्य प्रथम स्वर्गे ॥ उत्कृष्टो । आठमे स्वर्गे ऊपजे ॥ आउखो जघन्य दो पल्योपमको । उत्कृष्टो । १८ सागरको ॥ पदवी पावै ४ पूर्व ५ कही जिणमेसू अहमिंद्रकी टली ॥ सूक्ष्म संपराय (१) जथाक्षायक (२) ए २ संजया जघन्य उत्कृष्टी पाच अणुत्तर विमाणमै हिज उपजे ॥ आउखौ अजघन्य अने उत्कृष्टो ३३ सागरकोहीज पावै ॥ पदवी १ पावे अहमिंद्रकी ॥५॥ ए पाचूही आराधक आश्री जांणवा । निराधक होय तो भवण पत्यादिकमै उपजै ॥ १३ ॥॥ ईति॥

हिवे १४ मो सजमद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ सजयाका। संजमका स्थानक असख्याता छे । जथाक्षायकको संजमको स्थानक एक छे ॥ हिवे अल्पाबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा जथाक्षायकको स्थानक ॥ १ ॥ तेथी सूक्ष्म संपरायका स्थानक असख्यातगुणा ॥२॥ परिहार विशुद्धिका स्थानक असख्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी । सामाइक छेदोपस्थापनीकका स्थानक माहोमांही ॥ तुल्ला असख्यात गुणा ॥ ५ ॥ १४ ॥ ईति. ॥

हिवे १५ मो निकासद्वार कहे छे ॥ प्रथम तो षट्गुणी हांणि वृधिका नाम कहे छे ॥ अनंत भागहीन (१) असख्यात भागहीन (२) सख्यात भागहीन (३) सख्यात गुणहीन (४) असख्यात गुणहीन [५] अनत गुणहीन (६) एही नाम वृधिका जांणवा ।सामायिक (१) छेदोपस्थापनीक (२) परिहार विशुद्धि (३) यां तीना थकी छट्ठाण वडीया॥ सूक्ष्म सपराय जथाख्यायक थकी अनंत गुणहीन (१) एवं छेदोपस्थापनी ॥ प्रथम तीनां थकी छट्ठाण वडिया ॥ चरम २

थकी अनंत गुणहीन (२) एनं परिहार विशुद्धी ॥ प्रथम तीनां थकी छट्ठाण वडिया ॥ शेष २ थकी अनत गुणहीन [३] सूक्ष्म सपरायी। प्रथम तीन सजया थकी अनतगुण अधिक ॥ आपणा स्थान थकी। अनंत गुणहीन होय ॥ अनतगुण अधिक होय ॥ तुल्ला पिण होय ॥ जथाक्षायक थकी अनत गुणहीन होय (४) जथाक्षायकी। प्रथम चार सजया थकी अनंतगुण अधिक होय ॥ आपसमे तुल्ला होय (५) हिवे चारित्रना पज्जवाकी अल्पाबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा॥ सामाइक १ छेदोपस्थापनीय चारित्रना जघन्य पज्जवा॥ तेथी परिहार विशुद्धी जघन्य चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा॥ तेथी सामाइक।छेदो पस्थापनीक उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनतगुणा ॥ तेथी सूक्ष्म संपराय जघन्य चारित्रना पज्जवा अनतगुणा ॥ तेथी सूक्ष्म सपरायना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनतगुणा ॥ तेथी जथाक्षायक अजघन्य अनुत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनतगुणा (५) ॥ १५ ॥ ॥ ईति ॥

हिवे सोलमो जोगद्वार कहे छे ॥ पाछली सजयामें जोग पावै ३ मन वचन काया जोग । जथाक्षायक अजोगी पिण होवै॥ १६ ॥ईति॥

हिवे १७ मो उपयोगद्वार कहे छे ॥ चार सजया तो दोई उपयोगी होई ॥ साकार वउत्ता अनें अनाकार वउत्ता ॥ सूक्ष्म सपरायी सागार वउत्ता होय । अनाकारोपयोग न होय ॥ १७ ॥ ॥ ईति ॥

हिवे १८ मो कषायद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) छेदोपस्थापनीक (२) ए २ सजयामै। सजलकी ४ कषाय होय । तथा ३ होय । क्रोध टल्यो ॥ तथा २ होय ॥ क्रोध मांन टल्यो ॥ तथा १ होय लोभ ॥ परिहार विसुधीमे ४ कषाय होय॥ सूक्ष्म सपरायीमै १ लोभ होय ॥ जथाक्षायकमे अकषाईदिज होय अथवा ॥ उपशम कषाई तथा क्षीण कषाई होय ॥ १८ ॥ ईति ॥

(२) चरित पुलाय (३) लिंग पुलाय (४) आहासुहमं पुलाय (५) हिवे बुकसना पांच भेद ॥ आभोग बुकस [१] अणाभोग बुकस (२) सवड बुकस [३] असंवड बुकस [४] आहासुहम बुकस (५) कुसीलका दोय भेद ॥ पडिसेवणा कुसील (१) कपाय कुसील (२) पडिसेवणा कुसीलका पांच भेद ॥ नाण पडिसेवणा कुसील (१) दरसण पडिसेवणा कुसील (२) चरितपडी० (३) लिंगपडि० (४) आहासुहम पडिसेवणा कुसील (५) कपाय कुसीलका पांच भेद । नाण कपाय कुसील (१) दरसण कपायकुसील(२) चरित कपाय कु० (३) लिंग कपाय कु० (४) आहासुहम कपाय कुसील (५) ॥ नियठाना पांच भेद ॥ पढम समय नियठो (१) अपढिम समय नियठो (२) चरम समय नियठो (३) अचरम समय नियठो (४) आहासुहम नियठो (५) सनातकना पांच भेद ॥ अछवी (१) असवले [२] अकमंसे (३) समुद्रे नाण दर्शण धरे अरहाजीण केवली (४) अपडिसावी (५) इति ॥ १ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ पुलाग सवेदी होय । पुरुष वेदी होय (१) पुरुष नपुसक वेदी होय (२) स्त्रीवेदी नही होय ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुशील (२), मांही। वेद तीन पावे । स्त्री वेद ॥ पुरुष वेद होय २ ॥ कृत नपुसक वेद होय [३] कपाय कुशील सवेदी होय । अवेदी होय । सवेदी होय तो तीनुंही वेद होय । अवेदी होय तो उवसमवेदी होय तथा क्षीणवेदी होय ॥ नियंठा अवेदी होय । उपसम वेदी होय । तथा क्षीणवेदी होय ॥ सनातक अवेदी होय तथा क्षीण वेदी होय ॥ इति ॥ २ ॥

हिवे राग कहे छे चार नियंठा सरागी होय ॥ पुलाक (१) —— (२) पडिसेवणा कुशील (३) कपाय कुसील (४) ए ४

सरागी ॥ नियंठो उवसम तथा वीतरागी होय । तथा क्षीण वीतरागी होय । सन्नातक क्षीण वीतरागी होय ॥ इति ॥ ३ ॥

हिवे कल्प कहे छे ॥ छे नियठा-ठि-(स्थीति) कल्पी होय । अठि (अस्थीति) कल्पी होय ॥(स्थिति) ठि-कल्पी तो पहिला तीर्थंकर अने चोविसमां तीर्थंकरने वारे होय ॥ ठि-कल्पी दस बोल पाले । अचेल (१) उदेसिक (२) सेज्यातरपिंड (३) राजपिंड [४] किर्तीकर्म [५] पुरुष ज्येष्ठ (६) महाव्रत (७) पजुसणा कल्प [८] मासकल्प [९] पडकमणा कल्प (१०)॥ अठि कल्पी चार बोल तो पाले । सेज्यातर पिंड [१] किर्तीकर्म (२) पुरुष ज्येष्ट (३) महाव्रत (४) ए चार बोल ॥ छे बोलकी भजना पाळे या नहि पाळे । हिवे पुलाग थिवर कल्पी होय ॥ बुकस अने पडिसेवणा कुसिल जिन कल्पी होय थिवर कल्पीय पिण कल्पातीत नहि होय ॥ कषाय कुसील जिण कल्पी होय थिवर कल्पी होय.॥ कल्पातीत होय॥ नियंठो अने सनातक कल्पातीत होय ॥ इति ॥ ४ ॥

हिवे चारित्रद्वार कहे छे॥ चारित्र पांच । सामायिक चारित्र (१) छेदोपस्थापनीक चारित्र [२] परिहार विशुद्धी चारित्र [३] सुक्ष्म संपराय चारित्र ॥ ४ ॥ जथाक्षायक चारित्र (५) पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तिनुंमांही चारित्र पावे दोय सामाइक (१) छेदोपस्थापनी (२) कषाय कुसीलमांही। चारित्र पावे चार सामायक (१) छेदोपस्थापनी (२) परिहार विशुद्धी (३) सुक्ष्म सपराय (४) हिवे नियठा तथा सन्नातकमे जथाक्षायक चारित्र पावे॥ ॥ इति ॥ ५ ॥

हिवे पडिसेवणा द्वार कहे छैं ॥ पुलाग मूल गुण पडि सेवि

होय ॥ उत्तर गुण पडि सेवी होय ॥ मूल गुण तो । पांच महाव्रतमे दोष लगावे ॥ उत्तर गुण दस विध पचखाणमे दोष लगावे ॥ बुकस मूल गुण-पडिसेवी होय । उत्तर गुण पडिसेवी होय । पडिसेवणा कुसील पुलागनी परै जाणवो ॥ कषाय कुसील (१) नियठो (२) सनातक (३) ए तीनु अपडिसेवी होय ॥ इति ॥ ६ ॥

हिवे नाणद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तीनुमाहे ग्यान दोय होय तथा तीन होय । दोय होय तो मति (१) श्रुत (२) तीन होय तो । मति (१) श्रुति (२) अवधि [३] तथा । मति १ श्रुति २ मनपर्यव (३) चार होय तो ॥ मति (१) श्रुति (२) अवधि (३) मनपर्यव [४] इमहिज कषाय कुसील तथा । नियठो जाणवो ॥ सनातकमांहे । एक केवलज्ञान जाणवो । हिवे भणे तो । पुलाग । जघन्य आठ पूर्व नवमा पूर्वनी तिजी आचार वत्थु ॥ लगे उत्कृष्टो नव पुर्व पुरा भणे ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) ए दोय ॥ जघन्य आठ पर वचन माता लगे । उत्कृष्टो भणे तो दस पूर्व ॥ कषाय कुसील (१) नियठो [२] ए दोनू । जघन्य भणे तो आठ प्रवचन माता । उत्कृष्टो चवदै पुर्व भणे । सनातक श्रुतथी अधिक छे सर्वज्ञ छे ॥ इति ॥ ७ ॥

हिवे तिर्थद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ए तीन तो तिर्थमें होय ॥ साधु–साध्वी श्रावक–श्राविकामांहि । कषाय कुशील [१] नियठो (२) सनातक (३) ए तीन तीर्थमांही होय । अतिर्थमाहि होय । तिरथमे होय तो । साधू–साध्वी श्रावक श्राविकामांही होय अतिर्थमाही होय तो स्वय बुद्धी होय प्रत्येक बुद्धि होय तथा छद्मस्थ तीर्थंकर होय ॥ इति ॥ ८ ॥

हिवे लिंगद्वार कहे छे ॥ बहु नियठा । द्रव्ये तो । सालिंगी होय ।

अन्यलिंगी होय । गृहलिंगी होय। भावे नियमामे सलिंगी होय ॥ इति ॥ ९ ॥

हिवे शरीरद्वार कहे छे ॥ शरीर पांच ॥ उदारिक (१) वैक्रेय [२] आहारिक (३) तेजस (४) कारमण [५] ॥ हिवे पुलाग (१) नियठो (२) सनातक (३) ए तीनमाहे शरीर पावे ३ उदारिक (१) तैजस (२) कारमय (३) बुकस (४) पडिसेवणा कुसील (५) मे शरीर तीन तथा चार पावे तीन पावे तो । उदारिक (१) तेजस (२) कारमण [३] अने चार पावे तो । उदारिक वैक्रे तेजस कार्मण ॥ ४ ॥ हिवे कपाय कुसीलमे शरीर । तीन तथा । चार तथा । पाच पावे । तीन पावे तो । उदारिक (१) तेजस (२) कार्मण (३) चार पावे तो उदारिक (१) वैक्रेय (२) तेजस (३) कारमण (४) पांच पावे तो । उदारिक (१) वैक्रेय (२) आहारीक (३) तेजम (४) कारमण (५) ईति ॥ १० ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ वहु नियठा जन्म आश्री । प्रवरतण आश्री । पनरे कर्म भूमीमाहि होय । साहारण आश्री । पुलाग वर्जीने । पाच नियठा अनेरा क्षेत्रमेंभी होय ॥ इति ॥ ११ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे ॥ दस कोडा कोडी सागरनो अवसरप्पणी काल । दस कोडा कोडी सागरनो उत्सरपणी काल । नौ सर्प्पणीनो उत्सरपणी कालना चार पली भाग ॥ हिवे अवसरपणी काल आश्री । पुलाग जन्म आश्री । तीजे चौथे आरे होय ॥ परवरतण आश्री । ३ । ४ । ५ । आरे होय ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) कपाय कुसील (३) ए तीन नियठा अपसर्पणी काल आश्री । जन्म आश्री।३।४।५। आरे होय॥ प्रवरतण आश्री।३।४।५।आरे होय॥ सहारण आश्री ६ आरे माहे होय । पुलागने साहारण नथी. नियंठो

(१) सम्नातक (२) अपसरपणी जन्म आश्री । ३ । ४ । आरे होय ॥ परवरतण आश्री । ३ । ४ । ५ । आरे होय ॥ साहारण आश्री । ६ । आरे होय उत्सर्पणी काल आश्री ॥ पुलाग जन्म भवरतन आश्री । २ । ३ । ४ । साहारण नथी । नियठो सनातक । पुलाग नी परै ॥ पण साहारण आश्री ६ आरामाहे होय ॥ उत्सर्पणी काल आश्री बुकस (१) पडिसेवणा कुसील [२] कषाय कुसील (३) ए तीन नियंठा । जन्म आश्री । २ । ३ । ४ । आरे ओरभवरतन आश्री । ३ । ४ । आरे होय ॥ साहारण आश्री ६ आरामाहे होय ॥ नी सप्पणी नो उत्सप्पणी कालना चार पली भाग ॥ पहिलो सुषम सुषम पलि भाग ॥ पांच देवकुरु । पांच उत्तरकुरुमें होय । पहिला आरा सरीखो जाणवो । १ । दूजो सूषम पलि भाग । दूजा आरा सरीखो पांच हरिवास । पांच रमगवासमें होय ॥ तीजो सुषम दुषम पलि भाग ॥ तीजा आरा सरीखो । पांच हेमवय पांच इरणवैमे होय । चोथो सुषम दुषम पलिभाग ॥ चोथा आरा सरीखो॥ पांच महाविदेहमें होय ॥ बहु नियठा । जन्म भवतन आश्री । चोथा पलि भागमें होय । पांच महाविदेह क्षेत्रमाहे होया साहारण आश्री पुलाग वर्जी । अने (दुसरा) काल माहे होय ॥ इति ॥ १२ ॥

हिवे गतिद्वार कहे छे ॥ पुलाग जघन्य जाय तो पहिले देवलोक पृथक् पलके आउखे उत्कृष्टो जाय तो आठमे देवलोक १८ सागरने आउखे जाय ॥ आराधक आश्री जाणवो ॥ हिवे विराधक आश्री चार जातना ॥ देवतामाहे जाय ॥ बुकस (१) अने पडिसेवणा कुसील (२) जघन्य जाय तो । पहिले देवलोक पृथक् पलके आउखे । उत्कृष्टो १२ देवलोक जाय २२ सागरने आउखे ॥ यह आराधक आश्री जाणवो ॥ हिवे विराधक आश्री चार जातना देवतामाहे जाय ॥ कषाय कुसील आराधक आश्री जघन्य पहले देवलोक जाय।

उत्कृष्टो जाय तो पाच अणुत्तर विमाण ३३ सागरने आउखे जाय। विराधक आश्री ४ जातना मांहे जाय॥ नियंठो आराधक आश्री जघन्य उत्कृष्टो पांच अणुत्तर विमाणमे जाय। विराधक आश्री ४ जातनां देवता माहे जाय॥ सनातक मोक्ष जाय। हिवै पदवी पावे पांच॥ इंद्रनी (१) सामानिकनी (२) तावतसनी (३) लोगपालनी (४) अहमिंद्रनी (५) पुलाग (१) वुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ए तीन नियंठा पदवी चार पावे। इंद्रनी (१) सामानिकनी (२) तावतसनी (३) लोगपालनी (४) ये चार पदवीमाहीलि एकेक पदवी पावे॥ कषाय कुसील। पांच पदवी मांहीली एक पदवी पावे। नियंठो (१) अहमिंद्रकी पदवी पावे। ए पांच पदवी आराधक आश्री जाणवी। विराध अनेरी (दूशरी) गतमे जाय॥ सनातक मोक्ष जाय॥ इति॥ १३॥

हिवे संजम स्थानद्वार कहे छै॥ पुलाग (१) वुकस (२) पडिसेवणा कुसील [३] कषायकुसील (४) ए चार नियंठाना संजमका स्थानक असख्याता असख्याता॥ नियंठो तथा सनातकना संजमना स्थानक एक एक॥ सर्वसूं थोडा। नियंठ (निर्ग्रंथ) सनातकना (संजमना) थानक॥ तेह थकी पुलागना थानक असंख्यातगुणा॥ तेह थकी वुकसना थानक असख्यातगुणा॥ तेहथी पडिसेवणा कुसीलका थानक असख्यातगुणा॥ तेहथी कषाय कुसीलका थानक असख्यातगुणा॥ इति॥ १४॥

हिवे निकासद्वार कहे छे। छे नियंठाना चारित्रना पजवा अनंता अनंता॥ सीयहीणे, सीयतुले, सीयभीय, जे हीण तो। अनंत भाग हिणेवा। असखेज भाग हिणेवा। संखेज भाग हीणेवा संखेज गुणहीणेवा। असंखेज गुणहिणेवा। अनत गुणहिणेवा। जेमभीये तो। अनंत भाग

मभियवा। असखेज भाग मभियवा। सखेज भाग मभियवा। सखेज गुण मभियवा॥ असखेज गुण मभियवा॥ अनतगुण मभियवा। पुलाग पुलागथी छठाण वडिया। वुकसथी अनतगुणहिण। पडिसेवणा कुसीलथी अनतगुणहिण। कषाय कुसीलथी छठाण वडिया। नियठा सन्नातकसू अनंतगुणहीण॥ हिवे वुकस पुलागथी अनतगुण अधिक॥ पोतारा थानकसू छठाण वडिया। पडिसेवणा कुसीलथी छठाण वडिया॥ कषाय कुसीलथी, छठाण वडिया॥ नियठा सन्नातकसू अनत गुणहीण। पडिसेवणा कुसील पुलागथी अनत गुण अधिक॥ वुकसथी छठाण वडिया, पोतारा थानकसू छठाण वडिया। कषाय कुसीलथी छठाण वडिया। नियठा सन्नातकथी अनतगुणहीण॥ हिवे कषायकुसील पुलागथी छठाण वडिया। वुकसथी छठाण वडिया पडिसेवणा कुसीलथी छठाण वडिया॥ पोतारा थानकसूं छठाण वडिया। नियठा सन्नातकथी। अनतगुणहिण॥ हिवे नियठो पाछला चार नियंठांथी। अनंतगुण अधिक। पोतारा थानकथी तूल्य॥ हिवे सन्नातकथी तुल्य। हिवे सनातक चार नियंठाथी अनतगुण अधिक। निग्रंथथी तूल्य। पोतारा थानकथी तुल्य। हिवे पुलागना अने कषाय कुसीलना। जघन्य तो माहोमाही तुल्य सर्वथी थोडा। चारित्रना पजवा। तेहथी पुलागना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनतगुणा॥ तेह थकी वुकस अने पडिसेवणा कुसीलना॥ जघन्य। उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा। अनतगुणा तेहथकी वुकसना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनतगुणा तेहथकी पडिसेवणा कुसीलना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा॥ तेहथकी कषाय कुसीलना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा॥ तेहथकी नियठा। अने सन्नातक दोनाका माहोमाही तुल्य जघन्य उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा॥ इति॥ १९॥

हिवे जोगद्वार कहे छे। पुलाग (१) वुकस (२) पडिसेवणा

कुसील (३) कपाय कुसील (४) नियंठो (५) ए पाच नियठा तो सजोगी होय ॥ अजोगी नथी॥सन्नातक सजोगी होय अजोगी होय॥ सजोगी होय तो १३ गुणठाणे अजोगी होय तो १४ गुणठाणे। अजोगी होय ॥ इति ॥ १६ ॥

हिवे उपयोगद्वार कहे छे ॥ छै नियठा साकारवउता होय ॥ अणाकारवउता होय। साकारवउता ज्ञानको उपयोग॥ अणाकार वउता दरसणको उपयोग ॥ इति ॥१७ ॥

हिवे कपायद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) वुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तीन नियठामाही। कपाय एक सजलनी चोकडी होय ॥ हिवै कपाय कुसील। माहे सजलनो क्रोध (१) मान (२) माया (३) लोभ (४) ये चार पावे तथा तीन तथा दोय तथा एक पावै। चार पावै ते। सजलकी चोकडी पावे। तीन पावे तो सजलको मान (१) माया (२) लोभ (३) दोय पावे तो माया (१) लोभ (२)। एक पावे तो सजलको लोभ पावै। नियठोअकपाई होय। उपसत कपाई होय ॥ तथा क्षीण कपाई होय ॥ सन्नातक अकपाइ होय ॥ पण क्षीण कपाइ होय ॥ इति ॥ १८ ॥

हिवे लेश्याद्वार कहे छे। पुलाग (१) वुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तीना माहै लेश्या। तीन पावे। तेजू (१) पदम (२) सुक (३) हिवे कपाय कुसीलमाही लेश्या ६ छैठी लेश्याना भाव लाधे ॥ नियठामे १ सुक लेश्या पावै ॥ सन्नातक सलेसी होय ॥ अलेसी होय ॥ सलेशी होय तो परम शुक्ल लेश्या होय। अलेशी होय तो १४ मे गुणठाणे अलेसी होय ॥ इति ॥ १९ ॥

हिवे परिणामद्वार कहे छे ॥ परिणाम ३ ए।

(२) उवठिया (३) ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) कषाय कुसील (४) ए चारा माहे तीन परिणाम लाभे हायमान (१) वृधमान (२) उवठिया (३) हायमान (१) वृधमाननी थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ उवठियानी थिती जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी सात समयनी ॥ हिवे नियठामाहे परिणाम दोय लाभे । वृधमान (१) उवठिया (२) वृधमानकी थिती जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी ॥ उवठियानी थिती जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी हिवै सन्नातक माहे परिमाण दोय लाभे ॥ वृधमान (१) उवठिया (२) वृधमानकी थिति । जघन्य उत्कृष्टी । अंतर्मुहूरतनी उवठिया थिति । जघन्य अंतर्मुहूरतनी । उत्कृष्टी देस उणी पूर्व कोडनी ॥ इति ॥ २० ॥

हिवै बधद्वार कहे छे ॥ पुलाग । आउखो कर्म वरजीने सात कर्म बांधे ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) सात कर्म बांधे तथा आठ कर्म बांधे ॥ ७ बाधे तो ॥ आउखो वरजीने बांधे ॥ कषाय कुसील ६ बांधे तथा ७ बांधे तथा ८ बांधे ॥ छे बांधे तो । मोहनी । आउखो वरजीने ॥ ७ बांधे तो आउखो वरजीने ॥ ८ बाधे तो पुरा बांधे ॥ नियठो एक सातावेदनी बांधे ॥ सन्नातक बाधे तो एक सातावेदनी बांधे । तथा अबंध ॥ इति ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥) बुकस
कुसील (३) कषाय कुसी तो
मोहनी वरजी ७ कर्म (
नाम (३ गोत्र (४)

)

उदीरे तथा ७ उदीरे ॥ आठ उदीरे ॥ ६ उदीरै तो आउखो वेदनी-वरजीने ॥ ७ उदीरे तो आउखो वरजीने ॥ ८ उदीरे तो पुरा उदीरे। कषाय कुसील । ५ उदीरे तथा ६ उदीरे तथा सात (७) उदीरे। तथा ८ उदीरे ॥ हिवे ५ उदीरे तो वेदनी (१) मोहनी (२) आउखो (३) वरजीनें ॥ ६ उदीरे तो वेदनी (१) आउखो (२) वरजी ॥ ७ उदीरे तो आउखो वरजीने ॥ ८ उदीरे तो पुरा उदीरे ॥ नियठो २ उदीरै । तथा ५ उदीरै । २ उदीरै तो नाम (१) गोत्र (२) ॥ पांच उदीरै तो वेदनी (१) मोहनी (२) आउखो (३) ए तीन कर्म वरजीनें ॥ सन्नातक उदीरे तो २ उदीरे। नामा (१) गोत्र (२) तथा नथी उदीरे ॥ इति ॥ २३ ॥

हिवे उवसंपजहणाद्वार कहे छे ॥ पुलाग । पुलागपणो छांडीनें। २ ठिकाणें जाय कषाय कुसीलमें आवै १। असंजमपडवजे २ ॥ बुकस बुकसपणो छांडीनें चार ठिकाणे जाय ॥ पडिसेवणा कुसील माहे जाय (१) कषाय कुसीलमांहे जाय (२) असजम पडवजे (३) सजमा सजम पडवजे (४) ॥ पडिसेवणा कुसील पडिसेवणा कुसील-पणो छांडीनें । चार ठिकाणे जाय । बुकसमे आवै (१) कषाय कुसीलमे जाय (२) असंजम पडवजे (३) सजमा सजम पडवजे (४) ॥ हिवे कषायकुसील । कषाय कुसीलपणो छाडीनें ६ ठिकाणें जाय ॥ पुलागमे आवे (१) बुकसमे आवे (२) पडिसेवणा कुसीलमे आवे (३) नियठामें जाय (४) असंजम पडवजे (५) सजमासजम पडवजे (६) हिवे नियंठो नियठापणो छांडीनै ३ तीन् ठिकाणे जाय कषायकसीलमे आवै (१) सन्नातकमे जाय (२) असजमपडवजे (३) ॥ सन्नातक सन्नातकपणो छांडीने मोक्ष जाय ॥ इति ॥ २४॥

हिवे संज्ञाद्वार कहे छे॥ पुलाग (१) नियठो २ सन्नातक ३ ए

(२) उवठिया (३) ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) कपाय कुसील (४) ए चारा माहे तीन परिणाम लाभे हायमान (१) वृधमान (२) उवठिया (३) हायमान (१) वृधमाननी थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ उवठियानी थिती जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी सात समयनी ॥ हिवे नियठामाहे परिणाम दोय लाभे । वृधमान (१) उवठिया (२) वृधमानकी थिती जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूरतनी ॥ उवठियानी थिती जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी अतर्मुहूरतनी हिवे सन्नातक माहे परिमाण दोय लाभै ॥ वृधमान (१) उवठिया (२) वृधमानकी थिति । जघन्य उत्कृष्टी । अतर्मुहूरतनी उवठिया थिति । जघन्य अतर्मुहूरतनी । उत्कृष्टी देस उणी पूर्व कोडनी ॥ इति ॥ २० ॥

हिवे बधद्वार कहे छे ॥ पुलाग । आउखो कर्म वरजीनै सात कर्म बांधे ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) सात कर्म बांधे तथा आठ कर्म बांधे ॥ ७ बाधे तो ॥ आउखो वरजीने बांधे ॥ कषाय कुसील ६ बांधे तथा ७ बांधे तथा ८ बांधे ॥ छे बांधे तो । मोहनी । आउखो वरजीने ॥ ७ बाधे तो आउखो वरजीनें ॥ ८ बांधे तो पुरा बांधै ॥ नियठो एक सातावेदनी बाधे ॥ सन्नातक बाधै तो एक सातावेदनी बाधे । तथा अबध ॥ इति ॥ २१ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) कपाय कुसील (४) ए चार तो ८ कर्मवेदे ॥ नियंठो मोहनी वरजी ७ कर्म वेदै ॥ सन्नातक वेदनी (१) आउखो (२) नाम (३) गोत्र (४) ए चार अघातिया कर्म वेदै ॥ इति ॥ २२ ॥

हिवे उदीरणाद्वार कहे छे ॥ पुलाग ६ कर्म उदीरै । आउखो (१) वेदनी (२) वर्जीनें ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) छे

पडवज्या आश्री कहे छे ॥ हिवे पुलाग पूर्वे पडवज्या आश्री । सीय अत्थि सीय नत्थी । होवइ न होवई । जे होय तो जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक हजार होय ॥ बुकस अने पडिसेवणा कुसील । जघन्य उत्कृष्टो । प्रत्येक सो कोडी होय ॥ हिवे कषाय कुसील। पूर्वे पडवज्या आश्री । जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक हजार कोडि होय ॥ हिवे नियठो पुर्वे पडवज्या आश्री जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक सो पावै ॥ हिवे सन्नातक पुर्वे पडवज्या आश्री । जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक कोडि होय ॥ इति ॥ ३५ ॥

हिवे अल्पाबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा । नियंठाना धणी तेह थकी पुलागना धणी सख्यात गुणा ॥ तेह थकी सन्नातकना धणी सख्यातगुणा ॥ ते थकी बुकसना धणी । सख्यात गुणा ॥ ते थकी पडिसेवणा कुसीलका धणी सख्यात गुणा ते थकी कषाय कुसीलका धणी सख्यात गुणा** ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे नियंठाऽख्यं द्वाविंशति प्रकरणम् ॥



* ए पांचों नियठामे पुलाग (१) और निग्रंथ (२) ए दोय अ साश्वता छे अने शेष च्यार (४) साश्वता छे

* ए छे नियठानो विस्तार भगवति शतक २५ मे उद्देशे ६ छठे छे.

पडिसेवणा कुसील (२) ये दोनोंमांही समुद्घात ५ पावै ॥ वेदना (१) कषाय (२) मारणातिक (३) वैक्रेय (४) तेजस (५) हिवे कषाय कुसीलमाहें । ६ समुद्घात पावै । वेदना (१) कषाय (२) मारणातिक (३) वैक्रेय (४) तेजस [५] आहारीक (६) केवल समुद्घात टली ॥ नियंठामाहे समुद्घात नथी॥ सन्नातकमे एक केवल समुद्घात पावे ॥ इति ॥ ३१ ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे । छ नियठा-तो-लोकने संख्यातमे भाग होय । असंख्यातमे भाग होय ॥ घणे असंख्यातमें भागे होय । तथा सर्व लोकमै होय ॥ इति ॥ ३२ ॥

हिवे फरसणाद्वार कहे छे ॥ ५ नियठा-तो-लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे ॥ सनात्तक । लोकनो । असख्यातमे भाग फरसे । घणो असख्यातमो भाग फरसे । तथा सर्व लोक फरसे ॥इति॥३३॥

हिवे भावद्वार कहे छे ॥ प्रथम चार नियंठा-तो-खयोपसमभावे होय ॥ नियंठो उवशम भावे होय ॥ तथा क्षायक भावे होय । सन्नातक क्षायक भावे होय ॥ इति ॥ ३४ ॥

हिवे परिमाणद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ए तीन वर्तमान-पडवज्या आश्री ॥ सीय अत्थी सीय नत्थी होवइ न होवइ ॥ होय तो जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक सो होय ॥ हिवे नियठो । वरतमान पडवज्या आश्री ॥ सीय अत्थी सीय नत्थी होवइ न होवइ । जे होय तो १ । २ । ३ । उत्कृष्टा ('१६२) एकसो वासठ होय तेमा ५४ उवसम श्रेणीका धणी । (१०८) एकसो आठ क्षपक श्रेणीका धणी होय ॥ हिवे सनातक सीय अत्थी । सीय नत्थी । होवई न होवई जे होय तो । जघन्य १। २ । ३। उत्कृष्टा १०८ एकसो आठ क्षपक श्रेणीका धणी होय ॥ हिवै पूर्वे

परेभापा बोले नही (५) कलहकारी भापा बोले नही ॥ (६) मर्मकारी भापा बोले नही (७) छेदकारी भापा बोले नही (८)" ए ८ आठ बोल. ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी मार्ग चालता बोले नही ॥ २ ॥ काल थकी पेहेर रात गया पछे उतावळो बोले नही. ॥ ३ ॥ भाव थकी उपयोग सहित अल्प वचन बोले. मिष्ट वचन बोले. चतुराइसे बोले. काम पडे तव बोले. निरवद्य वचन बोले. (४)

हिवे एपणा सुमतीना चार भेदः–द्रव्य थकी ४२ दोपटाल आहार वस्त्र पात्र स्थानक लेवे. [१] क्षेत्र थकी दोयकोश उपरांत आहार पाणी लेजावे नही. (२) काल थकी पेहला पेहरको चौथा पेहरमे भोगवे नही. (३) भाव थकी ५ पांच मांडलियाका दोप रहित भोगवे. (४)

हिवे आयाण भड मत्त निखेवणा सुमतिका चार भेदः–द्रव्य थकी चार उपगर्ण राखे पडिहार ॥ पीढ (१) फलग (२) सेज्या (३) सथारो (४) ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी जठे धरे तहा पूज कर धरे. [२] काल थकी दोनो वख्त पडिलेहणा करे [३] भाव थकी उपयोग सहित २५ प्रकारकी पडिलेहणा करे [४]

हिवे उच्चारपासवण जळ खेल परिठावणया सुमतीका चार भेदः–द्रव्य थकी वडी नीती लघु नीति जयणासू परठे (१) क्षेत्र थकी कोई गृहस्थ आवे नही (१) देखे नहि जेठे परठे (२) सजमकी आत्माकी घात नही हुवे जठे परठे [३] ऊंची नीची धरती (जमीन) नही हुवे जहां परठे (४) पोली भूमी नही हुवे जहां परठे (५) थोडे कालसू भूमी अचित हुई होय जहां नही परठे (६) जघन्य एक हाथ छे आगुल लवी चौडी होय चार अगुल तक नीचे अचित होय जहां परठे (७) तृणादिकना ढिगला नही होय जहां परठे. (८) समूर्छिम



प्रकरण तेवीसवा–पंच सुमति तीन गुप्तीनो स्वरूप.



हिवे पंच सुमतीना नाम कहे छे। इरियासुमति (१) भाषा सुमति (२) एषणा सुमति (३) आयाण भड मत्त निखेवणा सुमति (४) उच्चारपासवण जळ खेल परिठावणया सुमति [५].

हिवे इरियासुमतीका च्यार भेदः–द्रव्य थकी देख कर चाले (१) क्षेत्र थकी धूसरा (साढे तीन हाथ) प्रमाण (२) काल थकी दिनका देख कर चाले रातका पूंजकर चाले. [३] भाव थकी उपयोग सहित " वायणा (१) पूच्छणा [२) पर्यट्टणा (३) अणुप्पेहा (४) धम्मकहा (५) शब्द [६] रूप (७) रस (८) गध (९) स्पर्श [१०] ए दस बोल वर्जीने " बोले. ॥ (४) ॥

हिवे भाषा सुमतिना चार भेदः–द्रव्य थकी आठ बोल वर्जीनें बोले. (ते कहे छे.) "अलिय वचन कहतां किसकूंभी आल (कलक) देवे नही (१) हेलिय वचन कहता किसीकी निंदा करे नहीं (२) खिंसीय वचन कहतां किसीके ऊपर क्रोध करे नहीं (३) फरूस वचन कहता कठोर भाषा बोले नही (४) गारथीय कहता गृहस्थकी

परेभाषा बोले नही (५) कलहकारी भाषा बोले नहीं ॥ (६) मर्मकारी भाषा बोले नही (७) छेदकारी भाषा बोले नही (८) " ए ८ आठ बोल. ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी मार्ग चालता बोले नहीं ॥ २ ॥ काल थकी पेहेर रात गया पछे उतावळो बोले नही. ॥ ३ ॥ भाव थकी उपयोग सहित अल्प वचन बोले. मिष्ट वचन बोले. चतुराइसे बोले. काम पढे तब बोले. निरवद्य वचन बोले. (४)

हिवे एपणा सुमतीना चार भेदः–द्रव्य थकी ४२ दोपटाळ आहार वस्त्र पात्र स्थानक लेवे. [१] क्षेत्र थकी दोयकोश उपरात आहार पाणी लेजावे नही. (२) काल थकी पेहला पेहरको चौथा पेहरमे भोगवे नही. (३) भाव थकी ५ पाच माडलियाका दोप रहित भोगवे. (४)

हिवे आयाण भड मत्त निखेवणा सुमतिका चार भेदः–द्रव्य थकी चार उपगर्ण राखे पडिहार ॥ पीढ (१) फलग (२) सेज्या (३) संथारो (४) ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी जठे धरे तहा पूज कर धरे. [२] काल थकी दोनो वरत पडिलेहणा करे [३] भाव थकी उपयोग सहित २५ प्रकारकी पडिलेहणा करे [४]

हिवे उच्चारपासवण जळ खेल परिठावणया सुमतीका चार भेदः–द्रव्य थकी वडी नीती लघु नीति जयणासू परठे (१) क्षेत्र थकी कोई गृहस्थ आवे नही (१) देखे नहि जेठे परठे (२) सजमकी आत्माकी घात नही हुवे जठे परठे [३] ऊची नीची धरती (जमीन) नही हुवे जहा परठे (४) पोली भूमी नही हुवे जहा परठे (५) थोडे कालसू भूमी अचित हुई होय जहा नही परठे (६) जघन्य एक हाथ छे आंगुल लबी चौडी होय चार अगुल तक नीचे अचित होय जहां परठे (७) तृणादिकना ढिगला नही होय जहां परठे. (८) सम्मूर्छिम

जीव रहित होय जहां परठे (९) बिल रहित धरती होय जहां परठे (१०) ॥ २ ॥ काल थकी परठे जहां लगे (३) भाव थकी उपयोग सहित (४) ॥ इति ॥

हिवे ३ गुप्तीना नाम कहे छे । मनगुप्ती (१) वचनगुप्ती (२) कायगुप्ती (३)

मनगुप्तीका ३ भेद सारंभ (१) समारभ (२) आरभ (३) सारभ ते मन करी किसीका मरणादि चिंतवे नही ॥ चिंतवे जिणनें सारभ कहिये (१) समारभ ते मन करी पीडा (वेदना) उपजावे नही ॥ उपजावे जिणनें समारभ कहीये (२) आरभ ते मन करी मन्त्रादिक गुणी किसी जीवने हणे नही ॥ हणे जिणनें आरंभ कहिये. (३)

हिवे वचनगुप्तीके ३ भेदः–सारभ (१) समारंभ (२) आरभ [३] पूर्ववत् यहां वचन थकी कहना.

हिवे कायगुप्तीका ३ भेदः–बैठतें, ऊठतें, हलतें, चलतें सारंभ [१] समारंभ (२) आरभ [३] होय, इन ३ तीनोमें काया प्रवर्तावे नही. (३)

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे
पंच सुमति त्रिगुप्ती स्वरूपाऽख्यं
त्रयोविंशति प्रकरणम् ॥

प्रकरण चौवीसवा-दस श्रावक यंत्र.

		१	२	३	४
१	श्रावक नाम	आणद	कामदेव	चुलणी पीया	सुरादेव.
२	नगर नाम	वाणिया	चंपा	वणारसी	वणारसी
३	राजा नाम	जितशत्रु	जितशत्रु	जितशत्रु	जितशत्रु
४	गुरु नाम	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी
५	जात नाम	गाथापति	गाथापति	गाथापति	गाथापति
६	स्त्री नाम	शिवनंदा	भद्रा	शामा	धन्ना
७	वणिज धन प्रमाण	४०००००००	६०००००००	१०००००००	६०००००००
८	पृथ्वी धन प्रमाण	४०००००००	६०००००००	१०००००००	६०००००००
९	घर विखेरो	४०००००००	६०००००००	१०००००००	६०००००००

१०	गाय सख्या	४००००	६००००	६००००	६००००
११	श्रावकपणो	२० वर्ष	२० वर्ष	२० वर्ष	२० वर्ष
१२	उपसर्ग	०	गजनो	मातामारणनो	१६ सोला रोगनों
१३	सथारो	एक मास	एक मास	एक मास	एक मास
१४	देवलोक	पहेलो	पहेलो	पहेलो	पहेलो
१५	विमाग नाम	अरणाभ	अरुणाभ	अरुग प्रभ	अरुगका.
१६	स्थिति प्रमाण	चार पल्य	चार पल्य	चार पल्य	चार पल्य
१७	भव प्रमाण	१	१	१	१
१८	मोक्षक्षेत्र	मोक्षमहाविदेहजासें	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह
१९	सूत्र	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा
२०	अध्ययन	१	२	३	४

		५	६	७	८	९	१०
१	श्रावक नाम	सुछणीशतक	कुण्डकोळियो	शदालपुत्र	महाशतक	नवणीपिया	तेतली प्रिया
२	नगर नाम	आलविया	कम्पिलपूर	पोलाशपूर	राजगृही	सावथी	सावथी
३	राजा नाम	जितशत्रु	जितशत्रु	जितशत्रु	श्रेणिक	जितशत्रु	जितशत्रु
४	गुरुनाम	महावीरजी	महावीरजी	महावीरजी	महावीरजी	महावीरजी	महावीरजी
५	जात नाम	गाथापति	गाथापति	गाथापति	गाथापति	गाथापति	गाथापति
६	स्त्री नाम	बहुला	पद्मा	अग्निमित्रा	रेवती	असणीया	फल्गुनी
७	बणिज धन	६०००००००	६०००००००	१०००००००	८०००००००	४०००००००	४०००००००
८	दट्यो धन	६०००००००	६०००००००	१०००००००	८०००००००	४०००००००	४०००००००
९	घर विखेरो	६०००००००	६०००००००	१०००००००	८०००००००	४०००००००	४०००००००
१०	गाय संख्या	६००००	६००००	१००००	८००००	४००००	४००००
११	श्रावकपणो	२० वरस	२० वरस	२० वरस	२० वरस	२० वरस	२० वरस

१२	उपसर्ग नाम	धन काढवानो	०	अग्नि सिरानो	०	०	०
१३	सथारो	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास
१४	देवलोक	पेहेलो	पेहेलो	पेहेलो	पेहेलो	पेहेलो	पेहेलो
१५	विमान नाम	अरुणदेवी	अरुणध्वज	अरुणव	अरुणवर्डिक्षग	अरुणग	अरुणकिल
१६	स्थिति प्रमाण	४ पल्य	४ पल्य	४ पल्य	४ पल्य	४ पल्य	४ पल्य.
१७	भव प्रमाण	१	१	१	१	१	१
१८	मोक्ष क्षेत्र	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह
१९	सूत्र	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा
२०	अध्ययन	५	६	७	८	९	१०

॥इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीयखण्डे दश श्रावक यंत्राख्यं चतुर्विंशति प्रकरणम्॥



प्रकरण पंचीसमा–इंद्रियद्वार.

		१	२	३	४	५
१	नाम	श्रोत्रेंद्रिय	चक्षुरिंद्रिय	घ्राणेंद्रिय	रसेंद्रिय	स्पर्शेंद्रिय
२	संठाण	कदंब वृक्षने फूलने आकार	चन्द्रमसूरने आकार	धमणनो आकार	छूरपलानो आकार	नानाप्रकारनो आकार
३	लांबपणो जाडपणो	अंगुलके अस ख्यातमे भाग	अंगुलके अस०	अंगुलके अस०	जघन्य अंगुल अस० उत्कृ० नवअं०	जघन्य अं० के असंख्यात मे भाग उत्कृष्टो हजार योजन
४	इन्द्रियना प्रदेश	अनंतप्रदेशी	अनंतप्रदेशी	अनंतप्रदेशी	अनंतप्रदेशी	अनंतप्रदेशी
५	इन्द्रि प्रदेश केतला अवगाहे	असंख्यात प्रदेश अवगाहे	असंख्यात प्र अव	असंख्यात प्र० अव	असंख्यात प्र० अव०	असंख्यात प्रदेश अवगाहे
६	प्रदेशानी अल्पाबहुत	संखेज गुणा २	सर्वसूथोडा १	संखेज गुणा ३	असंख्यात गुणा ४	संख्यात गुणा ५

७	इन्द्रि अवगहणानो अल्पा बहुत	सख्यातगुणा २	सर्वसूंथोडा १	सख्यातगुणा ३	असख्यातगुणा ४	सख्यातगुणा ५
८	अवगहणा अने प्रदेशानी भली अल्पा बहुत	सख्यातगुणा २ अव प्र	सर्वसू थोडा १ अव प्र	अवप्र सख्यातगुणा ३	अव. प्र असख्यात गुणा ४	अवगहणा प्रदेश सख्यात गुणा ५
९	र्कश गुरूनागुग केतला	अनतगुणा	अनतगुणा	अनतगुणा	अनतगु०	अनतगुणा
१०	मृदु लघुना गुण केतला	अनतगुणा	अनत गु०	अनतगु०	अनतगु०	अनतगुणा
११	कर्कश गुरूनो अल्पाबहुत	अनतगुणा २	सर्वसू थोडा १	अनतगुणा ३	अनतगुणा ४	अनतगुणा ५
१२	मृदु लघुनो अल्पाबहुत	अनतगुणा ४	अनतगु० ५	अनतगु० ३	अनतगु० २	सर्वसू थोडा १
१३	कर्कश मृदु अने गुरु लघु नो अल्पा०	कर्क० मृ० कर्क० गु० २ अनतगुणा	क गु० सर्वसूं थोडा १	अनतगुणा ३	अनंत गु० ४	अनंतगुणा. ५ मृदु अ०
१४	समुचय इन्द्रीनो विषय	१२ योजन	१ लक्ष योज	९ योजन	९ योजन	९ योजन

१५	जघन्य उपयोगनो काल	विसेसाहिया २	सर्वथी थोडा १	विसेसाहिया ३	विसेसाहि० ४	विसेसाहिया ५
१६	उत्कृष्ट उपयोगनो काल	विसेसा० २	सर्वथी थो० १	विसेसा० ३	विसेसाहि० ४	विसेसाहिया ५
१७	जघन्य उत्कृष्ट उपयोगना कालनी भग्या	ज० उ० विसेसाहि० २	सर्व० ज उ विसेसाहि० १	ज उ विसेसा० ४	ज० उ० विसेसा० ४	जघन्य-उत्कृष्ट विसेसाहिया १
१८	फरसा भणफरसानो प्रमाण	ज० अंगु० असं० उत्कृष्ट १२ योजन	ज० अंगु० असं० उत्कृष्ट लाख योजन	ज अंगु० अस उत्कृ० ९ योजन	ज अंगु० असं० उत्कृ० ९ योजन	जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्ट ९ योजन

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे इंद्रियद्वाराऽख्यं पंचविंशति प्रकरणम्. ॥





प्रकरण छव्वीसवा सम्यक्त्व स्वरूप.



हिवे सम्यक्त्वना पांच भेद —साश्वादान सम्यक्त्व (१) उपशम सम्यक्त्व (२) वेदक सम्यक्त्व [३] क्षयोपशम सम्यक्त्व (४) क्षायक सम्यक्त्व (५)

हिवे पांच सम्यक्त्वनी स्थिती कहे छे। साश्वादान सम्यक्त्वनी स्थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी ६ छे आविलकानी ॥ १ ॥ उपशम सम्यक्त्वनी स्थिती जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी ॥ २ ॥ वेदक सम्यक्त्वनी स्थिती जघन्य उत्कृष्ट एक समयनी ॥ ३ ॥ क्षयोपशम सम्यक्त्वनी स्थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ ४ ॥ क्षायक सम्यक्त्वनी स्थिती नथी ॥ ६ ॥

हिवे साश्वादान सम्यक्त्व अने उपशम सम्यक्त्व एक भवाश्री जघन्य एकवार आवे उत्कृष्टी ५ वार आवे ॥ वेदक सम्यक्त्व जघन्य उत्कृष्ट एक वार आवे ॥ क्षयोपशम सम्यक्त्व जघन्य एक वार उत्कृष्टी असख्यातीवार आवे ॥ क्षायक सम्यक्त्व आया पीछे जाय नही. ॥

हिवे उपशम सम्यक्त्वना सात भेदः—अणतानुबंधी क्रोध (१) मान (२) माया (३) लोभ (४) मिथ्यात्व मोहनी [५] मिश्रमोहनी

(६) सम्यक्त्व मोहनी (७) ए सातू प्रकृति उपशमावे जिणनें उपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ तथा ए सातू प्रकृति माहिली कोई क्षय करे, कोइ उपसमावे जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥

हिवे क्षयोपशम सम्यक्त्वना चार भेदः--चार प्रकृती क्षय करे तेनें उपशमावे जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ १ ॥ तथा ५ प्रकृति क्षय करे दोय प्रकृती उपशमावें जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ २ ॥ तथा ६ प्रकृती क्षय करे एक उपशमावे जिणनें क्षयो-पशम स० क० ॥ ३ ॥ तथा ४ प्रकृती क्षय करे २ उपशमावे एक वेदे जिणनें क्षयोपशम वेदक सम्यक्त्व कहिये ॥ ४ ॥

हिवे क्षयवेदकना ४ भेदः--चार प्रकृति क्षय करे अने ३ वेदे तेने क्षयवेदक सम्यक्त्व कहिये ॥ ५ ॥ तथा ५ प्रकृती क्षय करें दोय वेदे तेने क्षयवेदक स० क० ॥ ६ ॥ तथा ६ प्रकृती क्षय करे एक वेदे तेने क्षय वेदक स० क० ॥ ७ ॥ तथा ७ सातूही प्रकृती क्षय करे तेने क्षायक स० क० ॥ ८ ॥ ए नव भेद जाणवा. ॥

हिवे नव प्रकारनी सम्यक्त्व कहे छे । द्रव्य सम्यक्त्व [१] भाव सम्यक्त्व (२) निश्चय सम्यक्त्व (३) व्यवहार सम्यक्त्व (४) निसर्ग सम्यक्त्व (५) उपशम सम्यक्त्व (६) कारक सम्यक्त्व (७) रुचक सम्यक्त्व [८] दीपक सम्यक्त्व (९).

हिवे द्रव्य सम्यक्त्व किणनें कहिये । श्री तीर्थंकर जिन वचन सत्य सरदे पिण परमार्थ नहि जाणे भेदानु भेद नहि जाणे गुरुनो दियो सम्यक्त्व राखो इण ऊपर भेडनो दृष्टांत ॥ १ ॥

हिवे भाव सम्यक्त्व किणनें कहिये । भाव सम्यक्त्वनो धणी परमार्थ जाणे भेदानुभेद जाणे तिण ऊपर आरिशाको (काच)

दृष्टान्त जिम आरसामाही जेसा स्वरूप देखे तैसो दीसे. तेने भाव सम्यक्त्व कहिये ॥ २ ॥

हिवे निश्चय सम्यक्त्व किणनें कहिये. ज्ञान दर्शन चारित्रनें विसे शुभ भाव प्रवर्ते तेने निश्चय सम्यक्त्व कहिये. ॥ ३ ॥

हिवे व्यवहार सम्यक्त्व किणनें कहिये ॥ लक्षण करि जाणे साधूनी समाचारीमे प्रवर्ते तथा श्रावक व्रत पाले सामाइक पोषध प्रतिक्रमण करे त्याग पचखाण लेवे जिणनें व्यवहार सम्यक्त्व कहिये. (४)

हिवे निसर्ग सम्यक्त्व किणनें कहिये ॥ ते गुरुना उपदेश विना जिन धर्म सत्य सरदे, जातिस्मरण ज्ञान करी जाणे मृगापुत्रनी परे ॥ जिणनें निसर्ग सम्यक्त्व क० ॥ ५ ॥

हिवे उपदेश सम्यक्त्व किणनें कहिये । गुरुना उपदेशथी देव-गुरु धर्म ए ३ तत्व सत्य सरदे तेनें उपदेश सम्यक्त्व कहिये ॥६॥

हिवे कारक सम्यक्त्व किणनें कहिये । ते शुद्ध क्रिया पाले शुद्ध आचार पाले जिम सिद्धान्तमाही कह्यो तिम प्रवर्ते तेनें कारक सम्यक्त्व कहिये ॥ ७ ॥

हिवे रुचक सम्यक्त्व किणनें कहिये । गुरुना वचन ऊपरे रुची राखे क्रिया करणकी रुची राखे पिण करी सके नहीं जिणनें रुचक सम्यक्त्व कहिये ॥ ८ ॥

हिवे दीपक सम्यक्त्व किणनें कहिये ॥ दीपकनी परे जिम दीपक अन्य जगे चादणो करे पिण आपणे नीचे अधारो रहे तिम अन्य

लोगोंको प्रतिवोधे पिण पोते सम्यक्त्व पावे नहीं जिणनें दीपक सम्यक्त्व कहीये ॥ ९ ॥

हिवे विस्तारथी व्यवहार सम्यक्त्वना ६७ भेद कहे छे॥ सम्यक्त्वनी चार ४ सरदणा ॥ जीवादिक ९ पदार्थनी ओलखण (पहछान) करे ॥ १ ॥ तत्वना जाण आचार्य बहु श्रुतीनी सेवा करे० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो परिचय टाले ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म पर प्रेम न राखे ॥ ४ ॥

हिवे ३ लिंगः– स्त्री लिंग पुरपलिंग नपुसकलिंग* एवं ॥ ७॥

हिवे दस प्रकारनो विनय कहे छे । अरिहंतणो विनय करे (१) सिद्धनो विनय (गुणग्राम) करे० (२) ज्ञानी पुरुषनो विनय करे (३) सूत्र सिद्धान्तनो विनय करे (४) धर्मी पुरुषनो विनय करे (५) साधुजीनो विनय करे (६) धर्माचार्यनो विनय करे (७) उपाध्यायजिनो विनय करे (८) प्रवचननो विनय करे (९) सम्यक्दृष्टीनो विनय करे (१०) एव ॥ १७ ॥

हिवे सम्यक्त्वनी ३ शुद्धता ॥ मनशुद्धता (१) वचन शुद्धता (२) कायशुद्धता (३) एव ॥ २० ॥

हिवे सम्यक्त्वना ५ लक्षण सम (१) सवेग [२] निरवेग (३) अणुकंपा (४) आसता । [५] एव २५

* पुरपलिंग ते जिम तरुण पुरुप रंग राग उपर राचे तिम श्री वीतरागनी वाणी उपर राचे (१) स्त्री लिंग ते जिम २–३ दिननो भूखो पुरुप क्षीर सक्करना भोजनने आदर देवे तिम श्री वीतरागनी वाणीनें आदर देवे (२) नपुंसकलिंग ते जिन रागनी वाणी सुणी हर्षयतहुवें (३)

हिवे सम्यक्त्वनी आठ भावना–सूत्र सिद्धान्तनो जाण होय तो जिण मार्ग दीपावे (१) धर्म कथानो कहनहार (वक्ता) होय तो जिण मार्ग दीपावे [२] न्यायनो जाणकार होय तो जिणमार्ग दीपावे (३) अवसरनो जाण होय तो जिण मार्ग दीपावे (४) तपस्वी होय तो जिन मार्ग दीपावे (५) विद्वान् होय तो जिणमार्ग दीपावे (६) मिष्ट वचनी होय तो जिन मार्ग दीपावे (७) कवी होय तो जिन मार्ग दीपावे (८) एवं ॥ ३३ ॥

सम्यक्त्वना ५ आभरण-धर्मने विषे चतुर होय (१) चतुर्विध संघनी सेवा करे (२) गुणवंतनी भक्ति करे (३) धर्मने विषे स्थिर चित्त राखे [४] अन्यमतीने हेतू दृष्टांत करी समजावा समर्थ होय (५) एवं ॥ ३८ ॥

हिवे सम्यक्त्वना ५ लक्षण–सुख दुःख आया धीरता (धैर्य) राखे । १ । वैराग्यवंत होय । २ । दिनदिन प्रत्यय आरंभसूं निवर्ते । ३ । अनुकम्पावंत होय । ४ । जिन धर्म ऊपरे विश्वासवन्त होय ॥ ५ ॥ एवं ॥ ४३ ॥

हिवे सम्यक्त्वना छे दोष टाले ॥ पर पाखंडीनें वंदना नही करे (१) पर पाखंडीसूं वारवार बोले नहीं (२) पर पाखंडीको घणो परिचय करे नहीं (३) पाखंडीनें मोक्षनो कारण जाण दान देवे नहीं (४) पाखंडीसूं घणो वाद करे नही (५) पाखंडीसे विना बोलाया बोले नहीं (६) एवं ४९ ॥

हिवे सम्यक्त्वीने छे प्रकारनो आगार ॥ राजा मिथ्यात्वी कोई कार्य करावे तो आगार (१) न्यातनो आगार (२) जोरावरनो आगार (३) देवतानो आगार (४) माता पिताको आगार ॥ (५) कारणसूं अन्यमतीने दान देणाको आगार (६) एवं ५५ ॥

हिवे सम्यक्त्वनी छे भावना ॥ हे जीव सम्यक्त्व सदा निर्मल छे। तें रागद्वेष करी मलीन करी छे तांहाभे निजगुण निर्मलही राखवो ॥ ए पहिली भावना ॥ १ ॥

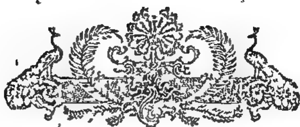
हिवे दुजी भावना-जिम नगरनें कोट दरवाजा करीने दोपद चोपद सर्व जीवने आधारभूत छे। जिम सम्यक्त्व रूपया नगरने विपे ज्ञानदर्शन चारित्र, सयम व्रत पचखाण विनय व्यावच सम्यक्त्व रूप राजानें आधारभूत छे ॥ २ ॥ हिवे तीजी भावना ॥ सर्व धर्मनो उपाय सम्यक्त्व छे ॥ ३ ॥ हिवे चोथी भावना जिम सर्व जीवनें पृथ्वी आधारभूत छे तिम जीव धर्मने विपे सम्यक्त्व आधारभूत छे ॥ ४ ॥

हिवे पांचमी भावना जिम दूधनो भाजन शख-शख माही दूध विणसे नही खाटो थाय नही तिम सर्व ज्ञान धर्मरूप दूधनो भाजन सम्यक्त्व छे ॥ ५ ॥

हिवे छठी भावना जिम चक्रवर्तिने रत्ननो भाजन निधान छे तिम सर्वव्रती देशव्रती रत्ननो भाजन सम्यक्त्व छे ॥ ६ ॥ ॥ एव ६१ ॥

हिवे सम्यक्त्वना छे स्थानक ॥ जीवादिक हेय-गेय-उपादेयनो स्वरूप चिंतवे (१) जीवसदा शाश्वतो छे (२) शुभ अशुभनो कर्ता जीव छे (३) कीधा कर्मनो भोगवणहार जीव छे (४) किणही ऊपर रागद्वेष करे नहीं (५) जीवने मोहनी आदि अष्ट कर्म क्षयकर्या पछे मोक्ष छे (६) एव ६७ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे सम्यक्त्व स्वरूपाऽख्यं षड्विंशति प्रकरणम् ॥ २६ ॥



प्रकरण सत्तावीसवा–प्रमाणबोध॥

हिवे भव्य जीवना सुख बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपमनु मान सूत्र अनुयोग द्वारथी कहे छे ॥ तेमां प्रथम ३ प्रकारना अंगुलना नाम ॥ आत्म अंगुल ॥ १ ॥ उत्सेधांगुल ॥ २ ॥ प्रमाणांगुल ॥ ३ ॥

हिवे आत्म अंगुलनुं मान कहे छे ॥ भरतादि १५ क्षेत्र छे ॥ तिहां जे काले जे आरे जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्यनुं ते काले ते आराने विषे पोतापोतानें १२ अंगुले १ मुख थाय ॥ अने ९ मुखे एक पुरुषनु ऊंचपणानु मांन थाय ॥ एटले १२ नवा अठोत्तरसो १०८ आत्म अंगुलनो पुरुष उचो होय ॥ ते पुरुषने प्रमाणोपेत कहिये ॥ १ ॥

हिवे मान युक्त पुरुष ते केहने कहिये ॥ पुरुष प्रमाणे उंडि जलनि कुंडी होय ॥ तेने जले करि परिपूर्ण भरिये ॥ ते माही पुरुष बेशे ॥ तिवारे एक द्रोण प्रमाणे जलकुंडि माहीथी बाहिर निकले ॥ तथा एक द्रोण प्रमाणे जले करि कुंडि उणी होय ते कुंडी माहि ते पुरुष बेशे तिवारे परिपूर्ण जले भराय ॥ तिवारे ते मानो

पेत पुरुप कहिये ॥ हिवे द्रोण ते केवडो होय ते कहे छे ॥ बे अ-
सलीये १ पसली थाय ॥ बे पसलीये १ सइ थाय ॥ चार सइये १
कुडव थाय। चार कुडवे १ पाथो थाय ॥ चार पाथे १ आढो थाय॥
चार आढे एक द्रोण थाय ॥ ए द्रोणनूं मानकयूं॥ ए रीते मानो पेत
पुरुप कहिये ॥ २ ॥ हिवे उन्मान युक्त पुरुप केहने कहिये ॥ जे
पुरुप तोड्यो थको अर्द्ध भार थाय तेने उन्मान युक्त पुरुप कहिये ॥
अर्द्धभारनूं मान कहे छे ॥ एक हजारने पचास पले अर्द्ध भार
थाय ॥ ए अर्द्ध भारनु मान कह्यूं ॥ ३ ॥ हिवे ए ३ ॥ प्रमाण मान
उन्मान युक्त लक्षण साथियादिक ॥ व्यंजन मस तिलादिक ॥ गुण
ते क्षमा दानादिक सहित जे पुरुप होय ते उत्तम पुरुप जाणवो ॥
हिवे उत्तम पुरुप १०८ आत्म अगुलनो उचो होय ॥ १ ॥ मध्यम
पुरुप १०४ आत्म अगुलनो ऊचो होय ॥ २ ॥ अधम पुरुप ९६
आत्म अंगुलनो उचो होय ॥ ३ ॥ हिवे जे पुरुप १०८ आत्म अं-
गुलथि न्युनाधिक होय ॥ स्वर आदेय वचन ॥ १ ॥ सत्व धीर्य
॥ २ ॥ सारतेरूपादि ॥ ए ३ गुणे वर्जित होय ते परनो दास-किं-
कर थाय ॥ एहवा ६ आत्म अगुले १ पगना मध्य भागनु पहोल-
पणु थाय ॥ बे पगे १ विहथि वेंत थाय। बे विहथि वेंते ए १ हाथ
थाय ॥ बे हाथे एक कुक्षि थाय। बे कुक्षिये अथवा ४ हाथे १ ध-
नुप थाय॥ बे हजार धनुपे १ गाउ थाय। चार गाउए १ जोजन थाय॥
जे काले जे आरे जे मनुष्यनु आत्म अगुल होय ते आत्म अगुले ते
ते नखतना॥ नगर॥गाम॥वन॥कुवा॥तलाव॥वावडी॥गढ॥पोल॥
कोठा॥यान॥॥ रथ ॥ गाडादिक ७३ बोलना मान मळता छे ॥१॥
हिवे उत्सेधागुलनु मान कहे छे ॥ अनता सूक्ष्म परमाणु आ भेला
करिये ॥ तिवारे १ व्यवहारि परमाणु थाय ॥ तथा जालीने विषे
रह्या सूर्यना किरण तेमां रहिजे रज उडती देखाय छे ॥ ते रजनो

अनतमो भाग तेने व्यवहारि परमाणुं कहिये ॥ अन्यमति रजना ते त्रिशमा भागने परमाणुं कहे छे ॥ ते व्यवहारि परमाणुं ॥ शस्त्रे करि तरवारनी तथा छर पलानि धाराये करि पण छेदाय भेदाय नही ॥ अग्निमांही सोंसरो निकली जाय पण बले नही ॥ दाजे नही ॥ तथा पुष्कर सवर्त महा मेहमांहि चाल्यो जाय पण पलळे भिंजाय नही ॥ तथा गंगा महा नदीनो प्रवाह ऊंचो चुल हिमवत पर्वतथी पडे छे ते प्रवाह साहमो चाल्यो जाय पण खलाय नही ॥ घात पामे नही ॥ तथा पाणिना आवर्तन तथा बिंदु वा मांही रहे पण तिहां सडीगलीने पाणि न थइ जाय ॥ ते अति तिखे शस्त्रे करिने देवतानी शक्तिये छेदता भेदता एक खण्डनो बिजो खड न थाय ॥ तेने तत्त्वज्ञाता परमाणु कहे छे ॥ एहवा अनंता व्यवहारि परमाणु एकठा मिले तिवारे १ उण्ण सन्नियो थाय ॥ आठ उण्ण सन्नियें १ सण सन्नियो थाय ॥ आठ सणसन्निये १ उर्द्धरेणु थाय ॥ आठ उर्द्धरेणुये १ त्रश रेणु ते बेंद्रीयादिक त्रश जीवने चालता रज उडे ते थाय ॥ आठ त्रश्वरेणुये १ रथरेणु ते रथादिक हिंडता रज उडे ते थाय ॥ आठ रथरेणुए १ देवकुरु उत्तर कुरूना जुगलिया मनुष्यना वालाग्रनु जाडपणु थाय ॥ आठ देवकुरु उत्तरकुरुना वालाग्रे १ हरिवास रमकवास क्षेत्रना जुगलियाना वालाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ हरिवास रमकवासना वालाग्रे १ हेमवय एरणवय क्षेत्रना जुगलियाना वालाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ हेमवय एरणवयना वालाग्रे १ पूर्व पश्चिम महाविदेहना मनुष्यना वालाग्रनु जाडपणु थाय ॥ आठ पूर्व पश्चिम महाविदेहना वालाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यना वालाग्रनु जाडपणुं -थाय ॥ एहवा ८ वालाग्रे १ लिख थाय ॥ आठ लिखे १ जु थाय ॥ आठ जुये १ जवमध्य थाय ॥ आठ जव मध्ये १ अगुल थाय ॥ छ अगुल १ पग थाय ॥ १२ अगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय । ४८ अगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अगुले १ धनुष थाय ॥ २ हजार धनुषे १ गाउ

थाय ॥ चार गाउए १ योजन थाय ॥ ए उत्सेधागुळे २४ दंडकनी अवघेणामवी छे ॥

हिवे प्रमाणांगुलनुं मान कहे छे भरतादिक चक्रवर्तीनु कांगणि रत्न होय ॥ ते ८ सोनइया भारने तोले छे ॥ सोनइयानु तोल कहे छे ॥ ४ मधुर त्रिफले ॥ १ श्वेत सरसव थाय ॥ १६ सरसवे १ अडद थाय ॥ २ अडदे १ गुंजा थाय ॥ ५ गुंजाये १ मासो थाय॥ १६ मासे १ सोनइयो थाय ॥ एहवा ८ सोनइया भारनुं कांगणि रत्न होय ॥तेने छे तला॥ ८ खुणा॥ १२ हांश छे॥सोनीनी अहिरणनें सठाणे छे॥ते कागणि रत्नभी एकेकी हांश उत्सेधागुलनि पहोलि छे ॥ अने जे उत्सेधांगुल ते समण भगवत महावीरनू अर्द्ध अंगुल थाय॥ तेने हजारगुणु करिये ॥ तिवारे १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एटले महावीर स्वामीना पांचसे आत्म अगुले १ प्रमाणांगुल थाय॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय ॥ ४८ अगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अगुले एक धनुष थाय ॥ २ हजार धनुषे १ गाउ थाय॥ ४ गाउये एक योजन थाय॥ ए प्रमाणांगुले ॥ पृथ्वी पर्वत विमान नरकवासा द्वीप समुद्र नरक देवलोक लोक अलोक शाश्वती जमीन रत्न प्रभादिक २८ बोलनुं तथा द्वीप समुद्रादि २८ बोलनु ॥ लांबपणु ॥ पहोलपणु ॥ उचपणु उडपणु ॥ परिधि प्रमुखना मान मळ्या छे ॥ ३॥ ए ३ प्रकारना अगुल कह्या ते प्रत्येक २ ना त्रण भेद ॥ श्रेणि अगुल ॥ १ ॥ प्रतरागुल ॥ २ ॥ घनांगुल ॥ ३ ॥ तीहां असत्कल्पनाये श्रेणि ते असंख्याता जोजन कोडाकोडि प्रमाणे लांबी ॥ अने एक आकाश प्रदेशनी पहोळी ॥ जाडपणे लोकांत सुधि तेने श्रेणि कहिये ॥ १ ॥ ते श्रेणिनें श्रेणि गुणो करिये तेने प्रतर कहियें ॥ २ ॥ ते प्रतरने श्रेणि गुणो करिये तेने घन कहिये ॥ ३ ॥ ते घनकृत लोकने स-

प्रकरण अठावीसवा–चौदा बोलनी लड.

१ २ ३ ४

संख्या	चौदे बोलनी लड	जीवका भेद		गुण ठाणा		जोग		उप-योग		लेश्या		दंडक		उदय-भाव		उपशम भा०		क्षायक भा०		क्षयोप-शमभा		परिणा-मिया भा०		चार गत		छकाय		आत्मा ८	
		ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ	ज	उ
१	चौदा भेदोंका जीव चौदे लिया	१४	१४	१	४	२	१५	४	१०	३	६	५	११	२१	३२	१	८	१	९	१७	२६	८	१०	१	४	२	५	६	८
२	१४ गुणठाणाका जीव १४ लिया	१	४	१४	१४	९	१५	८	१२	६	६	१	६	२२	२९	८	८	९	९	२६	३२	१०	१०	१	४	१	२	८	८
३	१५ योगका जीव १५ लिया	१	७	२	१२	१५	१५	४	१२	६	६	१	१४	२०	३२	१	८	१	९	१९	३२	१०	१०	१	४	१	२	८	८
४	१२ उपयोगका जीव १२ लिया	१	८	३	११	६	१५	१२	१२	१	६	१	१०	१७	३१	१	८	७	१३	२४	३२	१०	१०	१	४	१	४	८	८

५	६ लेश्याका जीव ६ लिया	१	६	१	६	१	१५	३	१२	६	६	१	६	२०	३२	१	८	१	९	१६	३२	८	१०	१	४	१	५	६	८
६	२४ दंडकका २४ जीव लिया	५	११	१	६	१	१५	५	११	४	६	२४	२४	२९	३३	१	/	१	९	२८	२०	८	१०	८	४	६	६	६	८
७	उदैभावका ३३ बोलका ३३ जीव लिया	२	१४	१	१४	२	१५	३	१२	५	६	८	२४	३३	३३	१	८	१	९	७६	३२	८	१०	४	४	६	६	६	/
८	उपशम भावका ८ बोलका ८ जीव लिया	१	२	१	३	५	१४	४	७	१	६	१	२	१०	२२	८	८	१	१	१६	२२	८	१०	१	२	१	१	७	/
९	क्षायक भावका १३ बोलका १३ जीव लिया	१	२	१	४	१	११	२	९	१	६	१	२	८	२२	४	७	१३	१३	१६	२३	५	१०	१	२	१	१	६	८
१०	क्षयोपशम भाव का ३२ बोलका ३२ जीव लिया	१	१४	५	१२	९	१५	१०	१०	६	६	१	२४	२२	३३	५	८	१	२	३७	३२	१०	१०	१	४	१	६	८	८
११	परिणामिक भावका १० बोलका १० जीव लिया	१	१०	१	१०	१	१५	३	१२	१	६	१	१०	१५	३३	१	८	१	२	१७	३२	१०	१०	१	४	१	६	८	८

१२	चारगत ४ जीव लिया	१	४	१	४	१	१५	३	११	२	६	४	४	२१	२९	१	८	१	९	१६	२९	८	१०	४	४	१	२	६	८
१३	छेकायका छे जीव लिया	२	५	१	२	१	१५	३	९	३	६	६	६	२४	३०	१	८	१	९	१३	२५	८	१०	१	२	६	६	६	८
१४	८ आत्माका ८ जीव लिया	१	८	१	८	१	१५	३	१२	१	६	१	८	११	३३	१	८	१	३	१५	३२	९	१०	१	४	१	६	८	८

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे चतुर्दश संज्ञाऽख्यं अष्टाविंशति प्रकरणम् ॥.



प्रकरण २९ वा १२ चक्रवर्ति यंत्र.

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१	१२ चक्रवर्ती के नाम	भरत	सागर	मघव	सनतकुमार	शांतीनाथ	कुंथुनाथ	अरीनाथ	सुभूम	महापद्म	हरिषेन	जयनाम	ब्रह्मदत्त
२	पिता नाम	ऋषभ	सुमति	विजय	समुद्रविजय	विश्वसेन	शूरसेन	सुदर्शन	पैकुत	कर्तवीर्य	महाहरिविजय	पद्मराजा	ब्रह्मराजा
३	माता नाम	सुमंगला	यशोवती	भद्रा	सहदेवी	अचला	श्री	देवी	ज्वाला	तारा	मेराणी	वप्राराणी	चुलणी
४	स्त्री नाम	सुभद्रा	भद्रा	सुनंदा	जया	विजया	कृष्णश्री	शूरश्री	पद्मश्री	वसुंधरा	देवी	लक्ष्मीवती	कुरुमती
५	आयुष प्रमाण	८४ लाख पूर्व	७२ लाख व०	५ लाख व०	३ लाख व०	१ लाख व०	९५ हजार व०	८४ हजार व०	६० हजार व०	३० हजार व०	१० हजार व०	३०० वर्ष	७०० वर्ष
६	देह प्रमाण	५०० धनुष	४५० धनु	४२ धनु	४१ धनु	४० धनु	३५ धनु	३० धनु	२८ धनु	२० धनु	१५ धनु	१२॥ धनु	७ धनु
७	नगरी नाम	विनिता	अयोध्या	श्रावस्ती	हस्तनागपुर	हस्तनागपुर	हस्तनागपुर	हस्तनागपुर	बनारसी	बनारसी	कंपिलपुर	राजगृही	कंपिलपुर

८	गती नाम	मोक्ष गये	मोक्ष गये	मोक्ष गये	मोक्ष गये	मोक्ष गये	मोक्ष गये	मोक्ष गये	नरक गये	मोक्ष गये	मोक्ष गये	मोक्ष गये	नरक गये
९	खंड साध्या	६	६	६	६	३	६	२	६	६	६	६	६
१०	निधान	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
११	रत्न	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
१२	सेवक देवता	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
१३	रत्नका आगर	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००	२६०००
१४	मुकुटबध राजा	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
१५	सामान्य राजा	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
१६	अंतेवर (राणी) प्रमाण	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००	६४०००

१७	सर्व कुलांगना	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
१८	वारांगना	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००	१२८०००
१९	ग्राम प्रमाण	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड
२०	नगर प्रमाण	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००
२१	खेडा प्रमाण	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
२२	कर्वट मान	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००
२३	पाटण प्रमाण	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००	४८०००
२४	मंडप प्रमाण	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
२५	द्रोणमुख प्रमाण	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००	९६०००

२६	वारांगना	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
२७	देश प्रमाण	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
२८	महनगर संख्या	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
२९	सामान्य नगर	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००	८४०००
३०	नवाकटक पड़ाव	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००
१	राजधानी संख्या	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
३२	वेलावर	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००
३३	द्वीपनी संख्या	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००
३४	जळ पथनगर मान	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००	१६०००

३५	सन्नीवेशमान	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००	२१०००
३६	सन्नाहन मान	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००
३७	स्लैठना सामानिक देश	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००	१००००
३८	उद्यान वन खंड	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार	४९ हजार
३९	जातिवंत तुरग	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४०	हस्ती	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४१	संग्रामीक रथ	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४२	सामान्य सर्व तुरग	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड
४३	सह दाना	८४ ला०	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला

४४	पायक	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड	९६ क्रोड
४५	तलारगनी सख्या	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४६	सूत्रधरनीसख्या	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख	८४ लाख
४७	रसोईदारनी स	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०
४८	रसोई दरोगा	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०	३६०
४९	आयुध शाला	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख	३० लाख
५०	सेनापतीनी सख्या	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००	३६०००
५१	कटका ईस-राजपालकनी स	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००	२४०००
५२	सामानिक अ-योध्या पडावा ना नगरीस	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००	३२०००

५३	सामान्य उद्या नगनकी सख्या	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००	५०००
५४	पुरनी सख्या	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००	७२०००
५५	मत्रीनी सख्या	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००	१४०००
५६	पंडितनी सख्या	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख	८३ लाख
५७	क्ष राजमान	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८
५८	म्लेंछ राजमान	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख	१६ लाख
५९	सर्व कल्याणका	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख	६४ लाख
६०	अगर सोना रूपाना	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००	२००००
६१	अंतर्द्वीपा	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६

६२	अगमर्दन करने वाला	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड
६३	आभरण वाला	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रो[redacted]	३५ क्रोड	३५ क्रोड	३५ क्रोड
६४	कुल मान	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड
६५	स्वधर्म कुटुंब	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	[redacted] क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड	७ क्रोड
६६	पुत्रमान	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड	११ क्रोड
६७	भोजन स्थापक	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख	३ लाख
६८	गोकुल संख्या	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड	२ क्रोड
६९	हट संख्या	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड	३ क्रोड
७०	दिवटीया	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख	५ लाख

७१	कोटी ध्वज व्यव हारिया	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रोड	१० क्रो॰	१० क्रोड	१० क्रोड
७२	खोजा पुरुषनी सख्या	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००	७०००
७३	ध्वजापताका धरानी सख्या	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो	०००० क्रो	१०००० क्रो	१०००० क्रो
७४	३२ निधनाटकनी सख्या	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड	३२ क्रोड
७५	देवतानीसख्या	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००
७६	श्रेणीनी सख्या	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१[illegible]	१६	१६	१६
७७	प्रश्रेणीनी सख्या	१६	१६	१६	१६	१६	१[illegible]	१६	१[illegible]	१६	१६	१६	१६
७८	वेदनी सख्या	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५०७००	५००००
७९	सग्रामिक निशाण स०	८४ ला०	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला	८४ ला

८०	सामान्य निशाण	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड	१८ क्रोड
८१	६४ लडामणि-का हार	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी
८२	सोनानाहार	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी
८३	रत्नाकाहार	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी	६४ लडी
८४	पट्टण सहितनी स	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००
८५	उत्कृष्टोबागजाय	७२ योजन	७२ योज	७२ योज	७२ योज	७२ योज	७२ योज	७२ योज	७२ योज	७२ योज	७२ योज	७२ योज	७२ योज
८६	सैरानी सख्या	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
८७	माद्नेहेलनी स०	६४ खं	६४ खं	६४ ख	६४ ख	६४ ख	६४ ख	६४ ख	६४ ख	६४ ख	६४ ख	६४ ख	६४ ख
८८	प्रसाद मेहेलनी स	३६ भूमी	३६ भू	३६ भू	३६ भू	३६ भू	३६ भू	३६ भू	३६ भू	३६ भू	३६ भू	३६ भू	३६ भू

१९	कुमारपण	७० लाख पूर्व	५०००० पूर्व	२५००० वर्ष	५००० व	२५००० व	२३७५० व	२१००० व	५००० व	५००० व	३२५ व	३०० व	५६ व
२०	मांडलिकपण	१००० वर्ष	५००० पूर्व	२५००० वर्ष	५०००० व	२५००० व	२३७५० व	२१००० व	५००० व	५०० व	३२५ व	३०० व	५६ व
२१	खड साध्या	६०००० वर्षे	३०००० व	२८०० व	१००० व	८०० व	६०० व	५०० व	४०० व	३०० व	१५० व	१०० व	१६ व
२२	राज्यपदवी भोगवी	६ लाख पूर्व उणा १ ला	७० ला पूर्वे	३९००० वरस	९९००० व	२४००० व	२३१५० व	२०६०० व	४९५०० व	१८३०० व	१८७० व	१९०० व	६०० व
२३	दीक्षा पाली	१००००० पूर्व	१००००० पू	५०००० पू व	१००००० व	[illegible]१००० व	२३७५० व	२१००० व	०	१००० व	७३३० व	४० व	०

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे द्वादश चक्रवर्ति यंत्राख्यं एकोनत्रिंश प्रकरणम् ॥



हिवे एकवीसमो मनुष्यनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमां बद्ध ते ॥ कदाचित् मनुष्य सख्याता होय ॥ समुर्छिमनो विरह पडे छे तेथि कदाचित् असख्याता होय । जघन्य पदे ॥ त्रीणजमलपद (२४) निउपरने (५) जमलपद (३२) निहेठे ॥ अर्थात् २९ आकनी सख्या प्रमाणें ॥ अथवा पाचमो वर्ग । छट्टा वर्ग साथे । गुणता जे राशी थाय ॥ अथवा ९६ वार यथोत्तर बमणा करिये ॥ अथवा ९६ वार अर्द्धा अर्द्धा करता शेष एक रहे ॥ एटला अक प्रमाणें मनुष्य जाणवा ॥ तेनो आक आ प्रमाणे ॥ ७९ । २२ । ८१ । ६२ । ५१ । ४२ । ६४ । ३३ । ७५ । ९३ । ५४ । ३९ । ५० । ३३६ ॥ १ ॥ उत्कृष्ट पदे असख्याता होय ॥ समुर्छिम गर्भज मेलता कालथी असख्यात उत्सर्पणी अवसर्पणीना समय जेटला क्षेत्रथी अगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनो प्रथम वर्गमूल त्रीजा वर्गमूल साथे गुणता जे राशी थाय तेटला भागमा मनुष्यनु एकेक शरीर मुकता॥ एक श्रेणी खाली थाय उत्कृष्ट शरीरमां एकेक शरिर वधारे नाखिये तो ॥ १ ॥ मुक्त अनता ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना दोय भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमां बद्ध सख्याता कालथि सख्याता कालना समय जेटला १ मुक्त अनंता उधिकवत् ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ आहारिकनां दोय भेद उधिकवत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना दोय भेद उदारिकवत् २ । ४ । ५ ॥ ए एकविश दडक ॥इति॥

हिवे बावीसमो वाणव्यतरनो दडक कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ बद्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ते पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना २ भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमा बद्धते असख्याता कालथी असख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरने असख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो तेना प्रदेश जेटला अथवा सख्यात

योजन शतना वर्ग कर्ता जे आवे । तेटला २ भागमां ॥ वाणव्यंतरनु शरीर मुकता मतर भराय तेटला बद्ध वैक्रेय छे ॥ १ ॥ मुक्त उदारीकवत् ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना बध्ध नथी १ मुक्त पूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बध्ध मुक्त वैक्रेयवत् ॥ ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ इति बाविसमों दंडक ॥

हिवे तेवीसमो ज्योतिषीनो दंडक कहे छे ॥ आहारिकना २ भेद ॥ बध्ध नथी (१) मुक्त अनता पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना बे भेद ॥ बध्ध [१] मुक्त [२] ॥ तेमां बध्ध असंख्याता कालथि असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी मतरने असंख्यातमें भागे । जेटली श्रेणियो तेना आकाश मदेश जेटला ॥ अथवा २५६ अगुलनो जे वर्ग तेटला प्रदेश प्रमाणें ॥ एक खंड उपरे ॥ एकेकु ज्योतिषीनुं शरीर मुक्त मतर भराय ॥ १ ॥ मुक्त अनता पूर्ववत् २ ॥ २ ॥ आहारिकना बध्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बध्ध मुक्त वैक्रेयवत् ॥ इति ॥ २३ मो दंडक ॥

हिवे २४ मो वैमानिकनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना बध्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ॥ २ । १ । वैक्रेयना दोय भेद ॥ बध्ध ॥ १ ॥ मुक्त ॥ २ ॥ तेमां बध्ध असंख्याता छे ते कालथी असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला । क्षेत्रथी मतरने असंख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो तेना आकाश मदेश जेटला ॥ तेनी विष्कम शुची अगुल प्रमाणे आकाश मदेशनी राशीनो बीजो वर्गमूल ॥ त्रीजा वर्गमूल साथे गुणता जे आवे तेटली श्रेणियो जाणवी ॥ अथवा अगुल आकाश मदेश राशीनो । त्रीजो वर्गमूल तेनो घन क-

हिवे एकवीसमो मनुष्यनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमां बद्ध ते ॥ कदाचित् मनुष्य सख्याता होय ॥ समुर्छिमनो विरह पडे छे तेथि कदाचित् असख्यातो होय । जघन्य पदे ॥ त्रीणजमलपद (२४) निउपरने (५) जमलपद (३२) निहेठे ॥ अर्थात् २९ आकनी सख्या प्रमाणे ॥ अथवा पाचमो वर्ग । छट्ठा वर्ग साथे । गुणता जे राशी थाय ॥ अथवा ९६ वार यथोत्तर बमणा करिये ॥ अथवा ९६ वार अर्द्धा अर्द्धा करता शेप एक रहे ॥ एटला अंक प्रमाणे मनुष्य जाणवा ॥ तेनो आंक आ प्रमाणे ॥ ७९ । २२ । ८१ । ६२ । ५१ । ४२ । ६४ । ३३ । ७५ । ९३ । ५४ । ३९ । ५० । ३३६ ॥ १ ॥ उत्कृष्ट पदे असख्याता होय ॥ समुर्छिम गर्भेज भेलता कालथी असख्यात उत्सर्पणी अवसर्पणीना समय जेटला क्षेत्रथी अंगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनो प्रथम वर्गमूल त्रीजा वर्गमूल साथे गुणता जे राशी थाय तेटला भागमां मनुष्यनु एकेक शरीर मुकता ॥ एक श्रेणी खाली थाय उत्कृष्ट शरीरमां एकेक शरिर वद्धारे नाखिये तो ॥ १ ॥ मुक्त अनता ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना दोय भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमां बद्ध सख्याता कालथि सख्याता कालना समय जेटला १ मुक्त अनता उधिकवत् ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ आहारिकना दोय भेद उधिकवत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना दोय भेद उदारिकवत् २ । ४ । ५ ॥ ए एकविश दडक ॥इति॥

हिवे बावीसमो वाणव्यतरनो दडक कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ बद्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ते पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना २ भेद ॥ बद्ध (१) मुक्त (२) तेमा बद्धते असख्याता कालथी असख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरने असंख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो, तेना प्रदेश जेटला अथवा सख्यात

योजन शतना वर्ग कर्ता जे आवे । तेटला २ भागमां ॥ वाणव्यंतरनु शरीर मुकता प्रतर भराय तेटला बद्ध वैक्रेय छे ॥ १ ॥ मुक्त उधीकवत् ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना बध्ध नथी १ मुक्त पूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बध्ध मुक्त वैक्रेयवत् ॥ ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ इति वाविसमों दंडक ॥

हिवे तेवीसमो ज्योतिषीनो दंडक कहे छे ॥ आहारिकना २ भेद ॥ बध्ध नथी (१) मुक्त अनंता पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना बे भेद ॥ बध्ध [१] मुक्त [२] ॥ तेमा बध्ध असंख्याता कालथि असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरने असंख्यातमे भागे । जेटली श्रेणियो तेनां आकाश प्रदेश जेटला ॥ अथवा २५६ अंगुलनो जे वर्ग तेटला प्रदेश प्रमाणें ॥ एक खंड उपरे ॥ एकेकु ज्योतिषीनु शरीर मुक्त प्रतर भराय ॥ १ ॥ मुक्त अनंता पूर्ववत् २ ॥ २ ॥ आहारिकना बध्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनंता ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना बध्ध मुक्त वैक्रेयवत् ॥ इति ॥ २३ मो दंडक ॥

हिवे २४ मो वैमानिकनो दंडक कहे छे ॥ उदारिकना बध्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनंता ॥ २ । १ । वैक्रेयना दोय भेद ॥ बध्ध ॥ १ ॥ मुक्त ॥ २ ॥ तेमां बध्ध असंख्याता छे ते कालथी असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला । क्षेत्रथी प्रतरने असंख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो तेना आकाश प्रदेश जेटला ॥ तेनी विष्कम शुची अंगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनी राशीनो बीजो वर्गमूल ॥ त्रीजा वर्गमूल माये गुणता जे आवे तेटली श्रेणियो जाणवी ॥ अथवा अंगुल आकाश प्रदेश राशीनो । त्रीजो वर्गमूल तेनो घन क-

रिये ॥ तेटली श्रेणियो जाणवि ॥ १ ॥ मुक्त पूर्ववत् ॥ २ ॥ २ ॥
आहारिकना वध्ध नथि ॥ १ ॥ मुक्त अनता पूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥
तैजस कार्मणना बद्ध (१) मुक्त (२) वैक्रेयवत् २ । ४ । ५ ॥

॥ इति २४ मो विमानिकनो दंडक ॥

॥ इति श्री सिद्धान्तशिरोमणौ द्वितीय खण्डे बद्ध मुक्त संज्ञाऽख्यं त्रिशत्प्रकरणं ॥





प्रकरण एकतीसवा–५६३ जीवके भेदनी चर्चा ॥

हिवे जीवना ५६३ भेद ते मांही १४ भेद नारकीना ४८ भेद तिर्यंचना ३०३ भेद मनुष्यना १९८ भेद देवताना ॥ ए सर्व मलीनें पांचसें त्रेसठ भेद थाए ॥ ते माहिलाः–

(१) स्त्री वेदमे जीवका भेद ३४० पावे ते ५ सन्नी तिर्यंचना अपजाप्ता ने पजाप्ता एव दस १० ॥ अने १०१ गर्भेज मनुष्यना अपजाप्ता ने पजाप्ता एव २१२ ॥ अने ६४ जातका देवताना (दूजा देवलोक तक) अपजाप्ता ने पजाप्ता एवं सर्व मिली ३४० ॥

(२) पुरुप वेदमे जीवका भेद ४१०॥५ सन्नी तिर्यचना पजाप्ता अपजाप्ता एव १० ॥ अने २०२ गर्भेज मनुष्यना १९८ देवताना एव सर्व ४१० ॥

(३) नपुसक वेदमे जीवका भेद १९३ ॥ १४ नारकीना ४८ जातना तिर्यंचना १३१ मनुष्यना युगुलिया वर्जीने एव सर्व १९३॥

(४) समुचय ३ भेदमां जीवका ४० भेद लाभे ॥ ते दस सन्नी तिर्यंचना अने १५ कर्मभूमीना अपजाप्ता नें पजाप्ता एव सर्व ४० भेद माही ३ वेद लाभे ॥

(५) केवल समकितिमे जीवका भेद दस १० ॥ ५ अणुत्तर विमानका अपजाप्ता नें पजाप्ता एव १० ॥

(६) समुचय समकितमाही जीवका भेद २३३ नारकीना १३ भेद सातवी नारकीनो अपजाप्तो वर्जी तिर्यंच सन्नीना १० ॥ अने असन्नीना ५ अपजाप्ता ॥ विगलेंद्रीना ३ अपजाप्ता ॥ एवं १८ तिर्यंचना ॥ मनुष्य कर्मभूमीना ३० नें पांच देवकुरु पाच उत्तर कुरुना पजाप्ता एव ४० ॥ मनुष्यना अने देवतामांही परमाधामीनें त्रीण किल्मिषी ए अठरा जातीना देवता वर्जीनें ॥ एक्यासो जातीना देवताका अपजाप्ता ने पजाप्ता १६२ भेद एव सर्व २३३॥

(७) मिथ्यादृष्टीमे जीवका ३३० भेद ॥ ते १ सातमी नारकीनो अपजाप्तो ने पजाप्तो ने तिर्यंचना ३० । ते एकेंद्रीना २२ असन्नी पचेंद्री ५ ना पजाप्ता ३ विगलेंद्रीना पजाप्ता एवं ३० ॥ अने मनुष्यना २६३ ते १०१ समुर्छिम मनुष्यने अने ५६ अतर्द्वीपाना अपजाप्ता अने पजाप्ता अकर्मभूमीना ३० अपजाप्ता नें देवकुरु । उत्तर कुरुना वर्जीने २० । ना पजाप्ता ए २६३ अने देवताना ३६ ते १८ । अपजाप्ता नें पजाप्ता । एवं सर्व मिळी ३३० ॥

(८) समा मिथ्यादृष्टीमें ९४ भेद ॥ नारकीना ७ । सन्नी तिर्यंचना ५ मनुष्य १५ । कर्मभूमीना सन्नीना ॥ देवतामाही परमाधामी किल्मिषी नवग्रीवेयक अणुत्तर विमानना ए ३२ । वरजीनें बाकी ६७ जातिना देवता एव सर्व मिळी ९४ ॥

(९) २ द्दष्टी ते समदृष्टी (१) अने मिथ्यात्वदृष्टी (२) ए दोयमे जीवका भेद १२० ॥ पहिली ६ नरकना अपजाप्ता, ५ सन्नी, ५ असन्नी ३ विगलेंद्री, ए १३ ना अपजाप्ता ॥ मनुष्यमा १५ कर्मभूमिना अपजाप्ता ॥ देवकुरु उत्तरकुरुना (१०) पजाप्ता एव २५ मनुष्यना ॥ देवताया भवनपती। १० वाणव्यंतर १६ जभडा १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, लोकांतिक ९, एव ६७ ना अपजाप्ता। अने ९ ग्रीवेयकना पजाप्ता ने अपजाप्ता एव ८९ देवताना सर्व मिली १२९ ॥

(१०) ३ दृष्टीमे जीवका भेद ९४ ॥ ते समा मिथ्यातदृष्टीनी परे जाणवु ॥

(११) पजाप्तामे जीवका भेद २३१ ॥ ७ नारकीना २४ तिर्यंचना १०१ सन्नी मनुष्यना ९९ देवताना एव २३१ ॥

(१२) अपजाप्तामे ३३२ जीवके भेद ते २३१ तो पूर्ववत् अने १०१ समुर्छिम मनुष्य अपजाप्ता छे ॥ एव सर्व ३३२ ॥

(१३) सास्वता २५० जीवके भेद ॥ ७ नारकीना पजाप्ता तिर्यंचमा ५ सनीना अपजाप्ता वर्जीनें ॥ ४३ भेद मनुष्यना १०१ सन्नीना ॥ पजाप्ता ९९ जातीना देवता पजाप्ता एव सर्व मिली २५० ॥

(१४) अशाश्वतामां ३१३ जीवका भेद ॥ ७ नरकना अपजाप्ना ५ सन्नी तिर्यंचना अपजाप्ता १०१ समुर्छिम मनुष्यना १०१ सन्नी मनुष्यना अपजाप्ना एव २०२ मनुष्यना, ९९ जातिना देवताना अपजाप्ता एव सर्व मिली ३१३ ॥

(१५) सनीमांहीं जीवका भेद ४२४ ॥ ते १४ नारकीना ५

सनी तिर्यचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, सन्नी मनुष्यना १०१ अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एव २०२ भेद, ९९ जातीना देवताना अ-प्रजाप्ता ने प्रजाप्ता । ए । १९८, एव सर्वमिली ४२४ भेद जाणवा ॥

(१६) असन्नीमे जीवके भेद १३९ ॥ ते १०१ समुर्छिम मनु-ष्य ३८ भेद तिर्यचना सन्नीना १० वर्जीनें । एव १३९ भेद, अस-न्नीमे लाभें ॥

(१७) ५६३ जीवके भेदमांही ३७१ भेद मरे, ते ७ नारकीना प्रजाप्ता ९९ जातना देवताना प्रजाप्ता ४८ तिर्यचना ८६ जातना युगलियाना प्रजाप्ता । १३१ मनुष्यना एव सर्व ३७१ भेद ॥

(१८) ५६३ जीवका भेदमांही १९२ भेद अमर ॥ ७ नारकी-ना अप्रजाप्ता । ९९ जातका देवताना अप्रजाप्ता ॥ एव १०६ अने ८६ जातना युगुलियाना अप्रजाप्ता एव १९२ ॥

(१९) कृष्णलेशी नील लेशी कपोत लेशी ए ३ में जीवका भेद ४५९ । ते ६ नारकीना ४८ तिर्यचना एव ५४, अने ३०३ मनु-ष्यना, ५१ जातना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एव सर्व मिली ४५९ ॥

(२०) तेजूलेशामांही जीवका भेद ३४३ ॥ ते बादर पृथिवी बादर पाणी बादर वणसइ ए ३ ना अप्रजाप्ता, सन्नी तिर्यचना १०, सन्नी मनुष्यना २०२, ६४जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता । १२८ । एव सर्व मिली ३४३ ।

(२१) पद्मलेशामा ६६ जीवका भेद ॥ ते पाच सन्नी तिर्य-चना अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता ए १०, अने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ए ३० ॥ देवतामे दूजो किल्मिषी १ त्रीजो २ चोथो ३

पाचमो देवलोक ए ४, नें नव लोकांतिक ए १३ ना अपजाप्ता ने पजाप्ता मिली २६, ए सर्व ६६ ॥

(२२) शुक्ल लेशामाही ८४ जीवका भेद ॥ ते सन्नी तिर्यचना १०, सन्नी मनुष्यना ३०, ते कर्मभूमीना, देवतामांही एक त्रीजो किलमिषी १ छठेथी बारमा देवलोक सुधी ७ देवलोक ० ग्रीवेयक, ५ अणुत्तर विमान, एवं २७ ना अपजाप्ता ने पजाप्ता ॥ ए ४४ ए सर्व मिली ८४ ॥

(२३) ॐ लेशामाहि ४० जीवका भेद ॥ ते १० सन्नी तिर्यचना, अने ३० सन्नी मनुष्यना कर्मभूमीना, एव सर्व मिली ४० ॥

(२४) आगली ४ लेशामाही २७७ जीवका भेद ॥ प्रथम ५१ जातिना देवताना अपजाप्ता नें पजाप्ता एव १०२, जुगलिया ८६ जातिना अपजाप्ता ने पजाप्ता ए १७२, अनें बादर पृथिवी १ बादर पाणी ० वणसई २ ए ३ ना अपजाप्ता एवं सर्व मिली २७७॥

(२५) उदारिक कायजोगमां २५१ जीवका भेद॥ ३०३ मनुष्यना, ४८ तिर्यचना, एव ३५१ ॥

(२६) उदारिकना मिश्रमा २४७ जीवका भेद ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्य, १०१ सन्नीना अपजाप्ता, अने १५ कर्मभूमिना पजाप्ता, तिर्यचना २८ अपजाप्ता १ बादर वायुकायनो पजाप्तो, ५ सन्नी तिर्यचना पजाप्ता ॥ एव सर्व मिली २४७ ॥

(२७) वैक्रिय काययोगमा २३३ जीवका भेद ॥ १९८ देवताना, १४ नारकीना, ५ सन्नी तिर्यचना पजाप्ता, बादर वायुकायनो पजाप्तो, १५ कर्मभूमीना सन्नी मनुष्यना पजाप्ता । एवं सर्व मिली २३३ ॥

(२८) वैक्रेय मिश्रमां २१९ जीवके भेद ॥ ते ९ ग्रीवेक, ५ अणुत्तर विमान, एवं १४ ॥ प्रजाप्ता वर्जीने शेष २१९ भेद ॥

(२९) आहारिक मिश्रमां जीवका भेद १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(३०) कार्मण कायथोगमाही ३४७ जीवका भेद ॥ ते ३३२ अप्रजाप्ताना भेद पूर्वे कह्या ते अने १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता एवं सर्व ३४७ ॥

(३१) सत्यमनादिक ४ ने सत्यवचनादिक ३, ए ७ जोगमे जीवका भेद २१२ ॥ ते ९९ जातीना देवता अने ७ नारकी अने १०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच एव सर्व मिली २१२ ना प्रजाप्ता ॥

(३२) व्यवहार वचनमाही २२० जीवका भेद २१२ तो सत्यमनादि ७ जोगमा कह्या तेहीज अने ५ असन्नी तिर्यचना ॥ अने त्रिण निगलेद्री ए ८ ना प्रजाप्ता एव सर्व २२० ॥

(३३) आहारक शरीरमां १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(३४) तेजस कार्मण शरीरमांही ५६३ भेद ॥

(३५) अणांहारिकमे ३४७ जीवके भेद । ते कार्मण जोगनी परे जाणवा ॥

(३६) आहारकमें ५६३ जीवके भेद ॥

(३७) मन सहितमे २१२ जीवके भेद । ते सत्य मन योगनी परे जाणवा ॥

(३८) मन सहितमे ३५१ जीवके भेद ॥ ते ७ नरकना अ पजाप्ता ॥ ४३ तिर्यचना ते ५ सन्नीना पजाप्ता वर्जीने शेष ४ भेद अने १०१ समुर्छिम मनुष्य, ने १०१ सन्नी मनुष्यन अपजाप्ता । ए २०१, अने ९९ जातीना देवताना अपजाप्ता ए सर्व ३५१ भेद ॥

(३९) नजरे आवे ते २२५ जीवके भेद ॥ ते ७ नारकी ९९ जातीना देवता १०१ गर्भज मनुष्य । ५ सन्नी तिर्यच, ५ अ सन्नी तिर्यच, ३ विगलेंद्री । ५ एकेंद्री बादर, ए सर्वेना पजाप्ता एव २२५ भेद ॥

(४०) नजरे न आवे ते ३३८ जीवके भेद ॥ ३३२ भेद तो अपजाप्ताना अने ५ सुक्ष्म एकेंद्री अने १ साधारण ए ६ ना पजाप्ता एव सर्व मिली ३३८ भेद ॥

(४१) गर्भजमा । २१२ जीवका भेद ॥ २०२ सन्नी मनुष्यना, १० सनी तिर्यचना ए २१२ ॥

(४२) विना गर्भजमांही ३५१ जीवके भेद ते १४ नारकीना १९८ देवताना ३८ समुर्छिम तिर्यचना १०१ समुर्छिम मनुष्यना एव सर्व ३५१ ॥

(४३) त्रस नाडीमाही ५६३ जीवका भेद ॥

(४४) थावर नाडीमांही १५० जीवके भेद ॥ ते १०१ समुर्छिम मनुष्य १५ कर्मभुमिना अपजाप्ता एवं ११६ अने ३४ तिर्यचना ते २२ एकेंद्रीमाहीथी एक बादर तेउनो पजाप्तो वरजीने २१ एकेंद्रीना, ३ विगलेंद्रीना अपजाप्ता, । ५ । सन्नी तिर्यचना अपजाप्ता, ५ असन्नी तिर्यचना अपजाप्ता ॥ एव १५० ॥

(४५) नाण आत्मामां २३३ जीवके भेद ॥ सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वरजी १३ नारकीना, ५ सन्नी तिर्यचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, अने ५ असन्नी तिर्यचना अप्रजाप्ता, अने ३ विगलेंद्रीना अप्रजाप्ता ए १८ तिर्यचना, अने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३०, अने ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ए १० ना प्रजाप्ता एवं ४० मनुष्यना अने १५ परमाधामी ३ किलमिपी, ए १८ ना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता ए ३६ भेद वरजीनें शेप १६२ भेद देवताना एवं सर्व थईने २३३ भेद ॥

(४६) चारित्र आत्मामांही जीवके भेद १५, कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(४७) शेप ६ आत्मामांही ५६३ जीवका भेद ॥

(४८) अप्रजाप्तो मरीने १७९ भेदमे जाय ॥ ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, ४८ तिर्यच, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, अप्रजाप्ता ३०, एव १७९ ॥

(४९) स्त्री मरीने ५६१ भेदमा जाए ॥ सातमी नारकीका २ भेद वरजीने शेप ५६१ मा जाए ॥

(५०) पुरुप मरीने ५६३ मांही जाए छे ॥

(५१) नपुंसक मरीनें ५६३ जीवके भेदमांही जाए ॥

(५२) वेदनी समुद्घातमे ५६३ जीवके भेद ॥

(५३) कपाय समुद्घातमें ५६३ जीवके भेद ॥

(५४) मारणातिक समुद्घातमे ३७१ जीवके भेद ॥

(५५) वैक्रेय समुद्घातमें ११९ जीवके भेद ॥ ते पूर्वे वैक्रेय मिश्र जोगमाही कह्या छे ते जाणवा ॥

(५६) तेजस समुद्घातमाही १०५ जीवके भेद ॥ ते ८५ देवताना प्रजाप्ता ने १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ५ सन्नीना प्रजाप्ता एव सर्व १०५ ॥

(५७) आहारीक समुद्घातमांही १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता लाभे ॥

(५८) केवल समुद्घातमाही १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता लाभे ॥

(५९) (६०) (६१) आगली ३ पर्यामांही ५६३ जीवके भेद ॥

(६२) श्वासोश्वास पर्यामाही ५५२ जीवके भेद ॥ एकेंद्रीना ११ अप्रजाप्ता वर्ज्या ॥

(६३) भाषापर्यामांही ३२६ जीवके भेद ॥ ते ७ नारकीना, अनें सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता १०, असन्नी तिर्यचना ५, अनें ३ विगलेंद्रीना, एव ८ ना प्रजाप्ता, अने सन्नी मनुप्यना २०२, अने ९९ जातिना देवता प्रजाप्ता एव ३२६ ॥

(६४) मनपर्यामांही २१२ जीवके भेद ॥ ७ नारकी ५ सन्नी तिर्यंच, १०१ सन्नी मनुप्य, ९९ जातीना देवता, ए सर्वना प्रजाप्ता एव २१२ भेद ॥

(६५) अजीवना ५६० भेद ॥ तेमांहीथी लोकमां ५५७ भेद ते धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ ए २ देश आकाशास्ति कायनो स्कंध ए ३ वरजी शेप ५५७ लाभे ॥

(६६) अलोकमाहे अजीवना भेद ६ लाभे ॥ ते आकाशास्तिकायनो देश १ प्रदेश २ आकाशास्तिकायना द्रव्यादिक ४ बोल, एव ६ लाभे ॥

(६७) विभंग अज्ञानमांही २२२ जीवना भेद ॥ ५ अणुत्तर विमानना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता ए १०, वर्ज्या, बाकी १८८ देवताना

अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, अने १४ नारकी ने १५ कर्मभूमि मनुष्य प्रजाप्ता नें ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता एवं सर्व २२२ ॥

(६८) अवधिज्ञानमें २१० भेद ॥ ते १५ परमाधामी, ३ किल्मिषी ए १८ वर्जीनें, १६२ जातीना देवता अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, ने १३ नारकीना सातमी नरकनो १ अप्रजाप्तो वर्ज्यो, १५ कर्मभूमीना मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ताना ३०, ने ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता । एवं सर्व २१० ॥

(६९) अवधि दर्शणमांही २४७ जीवका भेद ॥ १९ देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, १४ नारकीना अप्रजाप्ता नें प्रजाप्ता, नें १५ कर्मभूमी मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, ने ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता ॥ ए २४७ ॥

(७०) परत्तमांहि जीवना भेद ५६३ लाभे ॥

(७१) अपरत्तमांही जीवना भेद ॥ ५५३ लाभे ॥ ५ अणुत्तर विमानना १० भेद वर्जिने शेष ५५३ लाभे ॥

(७२) सजतीमांही जीवका भेद १५, कर्मभूमीना गर्भेज प्रजाप्ता लाभे ॥

(७३) संजता सजतीमांही जीवका २० भेद ॥ १५ कर्मभूमीना मनुष्य गर्भेज प्रजाप्ता अनें ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता । एवं २० ॥

(७४) असजतिमाही ५५२ जीवना भेद ॥

(७५) पहिला गुणठाणामांही ५५३ भेद ॥ ते अणुत्तर विमानना १०१ वर्जीनें ॥

(७६) सास्वादान गुणठाणामांही २१३ जीवना भेद ॥ ते १२ नारकीना १८ तिर्यचना कर्मभूमी मनुष्यना ३०, देवतामाही १५

परमाधामी ३ किलमिषना ५ अणुत्तर विमानना ए २३ जातिना व-रजीनें बाकी ॥ १९२ देवताना । एव सर्व मिली ॥ २१३ भेद ॥

(७७) मिश्र गुणठाणामाही ९४ भेद ॥ ७ नारकी प्रजाप्ता, ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता ॥ १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता एव २७, १५ परमाधामी, ३ किल्विषी, ९ नवग्रीवेक, । ५ अणुत्तर विमान, । एव ३२ वर्जीनें ६७ देवताना प्रजाप्ता एव ९४ ॥

(७८) चोथा गुणठाणांमाही जीवका भेद २२५ । पूर्वे सम्यक्त्वमांही २३३ भेद कह्या छे ते माहीथी ५ असन्नी तिर्यच नें ३ विकलेंद्री ए ८ टळ्या ॥ शेष २२५ ॥

(७९) पाचमा गुणठाणांमांही जीवके भेद २० ॥ १५ कर्म भूमी ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता ॥ एव २० ॥

(८०) छठ्ठा गुणठाणासू लेने १४ मा गुणठाणा तांही जीवका भेद १५ ॥ ते कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(८१) धर्मास्तिकायना खदमाही अजीवना भेद ११ ॥ धर्मास्तिकायनो खद प्रदेश २ अधर्मास्तिकायनो खद ३ प्रदेश ४ आकाशास्तिकायनो देश ५ प्रदेश ६ काल ७ पुद्गलास्तिकायना ४ भेद । एव सर्व ११ ॥

(८२) अढाईद्वीप वारे अजीवना भेद १० ॥ पूर्वे कह्या ते माहीथी एक काल टळयो ॥

(८३) धर्मास्तिकायना देशमे अजीवका भेद ११ ॥ धर्मास्ति कायनो देश १ प्रदेश २ आकास्तिकायनो प्रदेश ३ प्रदेश ४ अधर्मास्तिकायनो देश ५ प्रदेश ६ काल ७ अने पुद्गलास्तिकायना ४ भेद ए ११ ॥

(८४) धर्मास्तिकायना प्रदेशमे अजीवका भेद ८ ॥ ते धर्मा-

स्तिकायनो प्रदेश १ अधर्मास्तिकायनो प्रदेश २ आकास्तिकायनो प्रदेश ३ काल ४ पुद्गलास्तिकायना ४ भेद ॥ एव ८ ॥

(८५) अधर्मास्तिकायना खंदमे अजीवके भेद ११ ॥ धर्मास्तिकायनी परे जाणवा ॥

(८६) आकास्तिकायना खंदमां अजीवका भेद ११ ॥ अजीवना १४ भेदमांहीथी धर्मास्तिकायनो देश १ अधर्मास्तिकायनो देस २ आकास्तिकायनो देश ३ । ए ३ टळया ॥ शेप ११ ॥

(८७) आकास्तिकायना देशना दोय २ भेद लोकाकाश (१) अलोकाकाश (२) ते लोकाकाशना २ भेद । संपूर्ण (१) ने अधूरो (२) संपूर्णमां अजीवका इग्यारा ११ भेद लाभे ॥ पूर्ववत् ॥

(८८) अधूरामां अजीवका ११ भेद ॥ धर्मास्तिकायनो स्कंद अधर्मास्तिकायनो स्कंद आकास्तिकायनो स्कंध ए ३ भेद टळया शेप ११ ॥

(८९) अलोकाकाश देशमां अजीवका भेद २ ॥ आकास्तिकायनो देश १ ने प्रदेश २ ॥

(९०) आकास्तिकायना प्रदेशमां अजीवका भेद ८ । पूर्ववत् ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे ५६३ जीव भेद चर्चाऽख्यं एकत्रिंशत्प्रकरणम् ॥ ३१ ॥



श्रीमद्दूवार्धेः सूता भृत्सकल गुण गणो देव वीरो वरेशः।
तत्पादाम्भूद्भवस्य मचुर मधु रस लेढु कामेप्वलीपु ॥
पूज्यश्री स्वामि दासः मवरपद धरः तस्य शिप्या मशिप्यात्
पारपर्येण भूतो भरत भुनि वृहत्कीर्तिमा न्रेखराजः ॥ १ ॥

येनेय वसुधा सुधांशुशुभया कीर्त्या कृताऽलकृता।
भूपाला मणि मस्तका अपि कृताः पादागता वदितु ॥
तस्माच्छ्री नथमेल्ल आदर धरः श्रीकुंद नाख्यो मुनिः।
जातोऽस्यां भुवि धर्मपालन परस्तस्माद्गुरुर्ज्ञानधीः ॥ २ ॥

तत्पादाब्ज पराग सेवन परोऽह रामचंद्रो मुनिः
तस्यैव कृपया कृतिं च रचया चक्रे भवान्मोचने
सच्छिष्यो मुनि हर्षचद्र इतिमां कर्तु मुहुः मार्थयत्
तस्य मार्थनयाऽनया जन शिवे ग्रथः क्षमोनिर्मितः ॥ ३ ॥

कृतोऽय रामचद्रेण जिनवीर मसादतः
पाठक श्रावकानावै विदधातु सुमङ्गलं ॥ ४ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ धर्म ग्रंथे मुनि राम-
चंद्र कृतौ द्वितीय खण्ड· समाप्तिमगमत् ॥
॥ शुभं सर्व ॥




॥ मुनिवरेष्वभ्यर्थना ॥

भो पूज्य पद मुनिवराः। ग्रन्थान्ते भवतः प्रसादार्थं अभ्यर्थितु मिच्छामि। मया पूज्य श्री रेखराजते वासि परंपरानुगत गुरुवर्य श्री कुन्दनमल्लाख्यस्य पदाब्जपद्पदेन रामचन्द्रेणाय सिद्धान्त शिरोमणिः इत्यभिधानको ग्रंथो विनिर्मितः। सच मद्गुरु जन हस्त लिखित पुस्तकेषु यथा च लिखित अनुसृत्याऽष्ट त्रिंशप्रकरणात्मकः कृतः स्यात्। कार्यकारणार्थं मनेक ग्रथावलोकनमपि विधाय क्रमेण शोभनानि प्रकरणानि न्यस्तानि। तस्मिश्च द्वितीये खण्डे केषुचित् प्रकरणेषु अदभ्र प्रमादा दृश्यन्ते। ते तु भाषा सबधिनः केचिद्रचना सबधिनश्च। निरसन तेषा क्षमपर रेषु प्रकरणेषु भेदाभेद विधाय तान्दूरी कर्तु नाहं प्रभुरत्यल्पावकाशत्वात्।

तन्मन्ये समर्था व्याख्यातारः पाठकाश्च विवेकेन आत्म समाधान समन्ततो निश्चिच्य विशाय श्रावक समुदाये व्याख्या पयिष्यन्ति। मय्यनुग्रहेण ग्रथवर्ति सम दोषान्विहाय गुणानुरक्त तया क्षममेव गृण्हति इति बलवती आशा मम मनसि वर्तते। इति कर्तु व्यवसितानां किलाह बहूपकृति भारवानितिश सर्वम्.

ग्रंथ प्रणेता,

मुनि रामचंद्र.

हिंगणघाट.

(अथ शुद्धि पत्रम्)

सामायिक प्रतिक्रमणादि नित्य स्मरणम्.

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	७	(व)	(६)
२	८	ठाणाउ	ठाणाओ
,,	,,	जीवियाउ	जीवियाओ
३	५	मभिण	मभिणदण
७	११	सुण	सुय
९	१	अतिच्यार	अतिचार
,,	३	फल सदेह	फल प्रते सदह
,,	५	लागो	लागी
१०	९	त्रिरमणा	विरमण
,,	१२	भेल समेल	भेल समेल कीधी होय
११	२	विखराको	विखेराको
,,	७	विखराको	विखेराको
१२	९	औपधि	औपधिनो
,,	११	दग्गिदावणया	दवग्गिदावणया
१३	१४	वारयी	वारथी
,,	१८	वग	वन्नग
१४	६	परठी होय	परठियो होय
,,	१७	निमत्रणा	आमत्रणा
१५	२०	चारे	चारू

१६	६	संसप्पउगे	संसप्पओगे
,,	,,	,,	,,
१७	४	लोगुत्तमो	लोगुत्तमा
१८	४	मे,	मै,
,,	५	खामि	खामेमि
१९	७	दोपा	दोप
,,	१५	संस्कारेमि	सकारेमि
२४	४	जूण	योनि
,,	१७	साढा	साढ
३?	४	छाप्पाणे	छप्पाणे
३२	१३	वियासण	वियासणं पच्चखामि
,,	१९	टाणेण	ठाणेण
३३	१०	पारिट्ठाविया	पारिट्ठावणिया
,,	१४	,,	,,
३४	९	सूरे	०
,,	११	पारिट्ठाविया	पारिट्ठावणिया
३५	१३	होवेगो !	होवेगा !
३६	१	दश यति धर्म	दशविध यति धर्म
३७	६	चौपठ	चौसठ
,,	१३	होणा !	होज्यो !
३८	५	,,	,,
,,	१०	,,	,,
३९	११	वथ	वत्य
४०	५	खेशर	केशर
,,	७	मीरजादा	[illegible]

६१	४	धारखा	धारणा
६२	२०	जार	जुवार
,,	,,	घउ	गउं
६४	१	खोदण	खोदन
,,	७	वींछी	विछु
,,	६	मुक	मूळमें
६७	१६	पहिछांण	पहिचांन
६९	२	सश	संशय
	श्लोकमें	रामचद्रांघ्रि	रामचद्रांघ्रि



सिद्धांत शिरोमणि प्रथम खंड.

प्रकरण १ ला-स्तोत्र.

१	५	सार्दूल	शार्दूल
,,	९	शेर्वेश	सर्वेशं
,,	१०	सीतल	शीतलं
२	१	सिध	सघं
,,	,,	साक्षादरवैष्णद	साक्षाद्धरिं वैष्णवं
,,	२	मेतत्सगत	एतत्सगत
,,	,,	पव	येव
,,	३	पार्श्वेः	पार्श्वैः
,,	,,	शुभेः	शुभैः
,,	४	मदो	मदोः
,,	,,	नरस्तदतरे	नरस्तदितरे

,,	५	मार्ग्रे	मार्गे
,,	६	वष्यार्थे	वश्यार्थे
,,	१२	नीलंघत्पटलंघनाय	नीलघत्पटलंघनाय
,,	१५	त्कुत्वा	कृत्वा
,,	१६	ध्यत्नाधेन	यत्नौधेन
३	९	स्वप्तति	स्तृप्यति
,,	१२	दृष्ट्वा	दृश्वा
,,	१३	द्वस्त	ध्वस्त
५	१	नत्वा	नत्या
६	२	स्पूर्जित	स्फूर्जित
,,	१३	पुत्रस्या त्रुलवल	पुत्रस्यातुवल
,,	१५	विका रोपि	विकारोपि
७	१	विश्रेयै	विधेयैः
,,	४	व्रर	स्वर
,,	१५	मुह्वा	मुग्धा
,,	२१	त्रिदश	त्रिदश
,,	२२	श्राता	भ्राता
८	५	मसम	मशम
,,	८	नम	नमो नमः
,,	,,	नमः	नमो नम
,,	१७	द्वय	वि
९	६	भृह्वा	भृत्या
,,	१५	किमिते	किमिति
११	८	रत्युम	रत्युग्र
,,	३	जन्मातरूरथ	जन्मातररथ

	०	अनुप्ठुभ्	अनुप्ठुप्
२	१६	वहत्पद्मामुक्ते	वहत्पद्मामुक्ते
२	९	स्पृशाति	स्पृशति
,,	१०	जगत्साक्षि	जगत्साक्षी
,,	,,	भानुखियो	भानुरवियो
,,	२१	श्न	स्न
४	१	शीता	सिना
,,	७	जिनाग्रमः	जिनाग्रिमः
,,	१२	निःश्वेदो	निःस्वेदो
१५	७	चित्यात्मा	श्रित्यात्मा
,,	६	विश्वस्टइ	विश्वस्टड्
,,	८	महालासो	महोल्लासो
,,	१४	स्याद्रलगर्भोः	स्याद्रलगर्भः
,,	२१	शूची	सूची
,,	२२	क्षुद्ध	क्षुब्ध
१९	२१	दिग्मार्ग	दिङ्मार्ग
२३	७	चतुर्ष्वेप	चतुर्ष्वेपु
,,	११	भेदेपि	भेदोपि
२४	१२	जिनायैच	परेशाय
२५	१६	यमकै	यमकैः
,,	,,	सुपरिः	सुपदो
२६	१	ग्रहि	गृहे
,,	६	भवते	भवती
,,	७	सेवकः	सेवके
,,	१५	शायिनी	शायिनः

,,	,,	आयुधं	आयुधं
,,	१६	शुमे	शुमे
२७	२	महोदेवं	महादेव
,,	४	कंदर्प्यं	कंदर्प्प
,,	६	अरनाथ	अर्हनाथं
,,	११	मेनं	मेतत्
२८	३	जश्श पभावेणस्येया	जस्स पभावेणसया
,,	२	विनाश	विणास
,,	५	दुस्कं	दुक्ख
,,	६	नयिध्य	नत्थित्थ
,,	८	तश्श	तस्स
,,	१०	पाश	पास
,,	११	ह्रीँ	०
,,	१२	मूल्ल	मूल
२९	१५	शीर्घ्रां	शीघ्रं
३०	९	समशरण	समवशरण
,,	२३	व्याधिः	व्याधीः
३१	१२	भिंधि २	भिंधि २
,,	१९	एहि २	०
,,	,,	ग्रहण	ग्रहाण
,,	१८	पूरमध्य	पूरीमध्ये
,,	१७	दोपाय	दोपा
,,	१६	कुरू २	कुरु २
३४	४	मणुनो	मणुओ
,,	१२	हय	इह

३४	१३	हियेण	हियएण
३५	२	जिना दिश जाता	जिना देश जाता
,,	३	शंकराणी	शंकराणि
,,	१७	मागेश्वरि	वागीश्वरि
३६	१३	सचेतन	सचेतः



प्रकरण २ रा–छन्द.

३७	३	पाणि	पांण
,,	१०	करुणासिंधु	करुणा २ सिंधु
,,	१३	अबे	अछे
,,	१४	शुर	सुर
,,	१५	मन्मय	मन्मथ
,,	१६	नवनिधि तुज नांमे	नवनिधि सिद्धी तुज नांमे
३८	१	मकुला	बहुला
,,	,,	मकुल	बहुल
,,	,,	विपहारी	विषहारी
,,	१७	यखी	पखी
३९	२	अहियाइ	अहियावे
,,	३	धोटिक	घोटिक
,,	,,	छेटे	छूटे
,,	४	इस	इण
,,	८	नदुकप	नद्दुक्कप
,,	१७	सुरिज	सूरज

४०	९	मतपेए	मतापए
,,	२१	खसरवाण	खसर्वाण
४१	८	पुजे	पुज्या
,,	,,	रिंश्चया	रिंश्या
४२	९	उष्टुतें	ओष्टुतें
,,	१८	दर्शण	दर्श
४३	९	शुणयो	शुण्यो
४४	४	कूंक्षे ते	कूंक्षे
,,	९	पचागन	पचाग्नि
,,	१३	अगत्र	आगल
४५	१	सुणही	सुणहो
४६	४	छमऊरी	छमऊर
,,	८	वादल	वावल
४७	१६	इसठो	इसढो
,,	१७	इसठो	इसढो
४८	२१	अरूए	घरूए
५०	१४	नित्यसु	नित तसु
,,	१५	कणी	फणी
५१	८	अज्यानें	अजानें
,,	११	अंब	वंबुल
,,	१८	भाख्या	भाखे
,,	२१	नव रेणु	भव रेणु
५३	८	देवा	देवं
५४	५	आनिंदहिकंदनि	आनदहिकदन
,,	२०	प्रभु गुण सागर पार न	प्रभु गुण पारन सागर

		वारितिर	वारी तीर
५५	३	सुवर्ग	सुचंगं
,,	१९	कोऊ	कोढ
५८	७	मूर्त्तिं	मूर्त्तिं
,,	१९	गुडो	गोडो
५९	१५	देना	देवा
६०	७	चक्र	चक्र
६१	६	भंडे	मडे
,,	१२	मयग	मगल
,,	१६	सभय	समय
६२	८	विनाय	छिनाय
,,	१९	नामा	वामा
६४	७	ठांण	थांन

प्रकरण ३ रा-पद.

६७	२	भागतही	भागतहें
६८	४	बुले	खुले
,,	१२	उस सिखे ठण	उस सिरवे ठण
,,	१५	होयगारिं	होय गया
६९	७	श्वर्धात	श्वर्धात
,,	१८	हटे न किनसू नहि तृसना मूररटे निरजन.	हटे न किनसू रटे निरजन नही तृष्णा मूर.
,,	१९	रह	रहे

६९	,,	कसूर	करूर
,,	२०	मोर	मोह
,,	२२	कंवन	कचन
७०	७	मिलहे	मिळे
७१	७	पठि	पढि
,,	२०	उटाय	ओटाय
,,	२१	पिपे	पिये
७२	३	पुरखा	पुरुषा
,,	७	सष्टा	शब्दा
७३	९	नाथ तेरी	नाथ जगमें
,,	,,	घुलाया	भुलाया
७५	४	जांन	जांनत
,,	५	भूली	भूमि
७७	४	ढढग	ढग
७८	२	मानते मेरा	मानले मेरा
७९	,,	रुपहे	कूपहे
८०	९	पकर लोक	फकर लोक
,,	११	जाने न	जाने जो
८१	८	दिय	दिव्य
८१	१३	इस्त नमे	इस तनमें
८२	१६	देह वाई	देह पाई
,,	१७	विरुया	विरथा
८४	१९	खाज रही	वाज रही
८५	९	दिलमोद समाई	दिलमे समाई
८६	१	लेव	जब

८९	१८	ब्रम	ब्रह्म
९०	१४	जाइ	जाय
,,	१८	चंदा विन सूरज निश-दिन	विन चदा विन सूर-ज निशदिन
९३	४	सुर वसे	सुखसे
,,	१२	लेजावे	लेजासी
,,	,,	चलेरारे	चलेलारे
९४	४	रे चेतन पोते तू परना	रे चेतन पोते तूं पापी परना
,,	७	क्यू छूटे	किम छूटे

प्रकरण चोथा–स्तवन.

९६	६	देन	देह
,,	१०	पांपां	पाया
,,	१८	नेसीसर	नेमि सर
९७	३	त्रिण	पिण
,,	५	रापी	राखी
,,	१०	दुपणी	दुःखणी
,,	,,	चीत्र पढयो	जीव पडयो
,,	१६	सुपे	सुखे
९८	१	पारो	खारो
,,	३	रग	सग
,,	१६	मारय उरे	मार पढारे

९८	१८	तपोघनी	तपोधनी
९९	२	अंघरारे	अंधरारे
१००	२	घेलाई	छेलाई
,,	३	मुंह नाई	मुह माई
,,	५	ऊटकैं	झटकै
,,	१४	करन	देखन
,,	१८	दयो	दियो
,,	२१	जोसरोरे,	जोझरोरे,
,,	८	थारे	थांने
१०१	१३	सुवाता	सुहाता
१०२	२३	मकर	मकरजो
,,	१०	हूदय चरव	ह्रदय चख
१०५	११	कैं	कहे
,,	१	जूल	झूले
१०६	८	॥ श० ॥ १ ॥	॥ स० ॥ १ ॥
,,	९	भूल मती	झूल मती
,,	१	जिस	जिम
१०७	११	हरु कर्मी	हल कर्मी
,,	१७	लिरव्योसु	लिरव्यो सो
,,	१४	मरे	हरे
१०८	१६	इसमो	इसडो
,,	२२	दिजीयो	दिजो
,,	१	थांरो	यांरो
१०९	,,	माणो	आंणो
,,	२	मितरा	नितरां
,,			

१०९	१४	एक	एह
,,	१९	फल	०
११०	४	सिरधणी	शिर धणी
,,	१३	श्रीफलवद्धी	श्री जगपति
,,	१७	वात	रात
१११	२	मानी	मानो
,,	१४	काड	पाड
,,	१७	छेल	ठेल
,,	२०	फलक	पलक
११२	४	अत्र	०
,,	१५	किन	किम
,,	१९	कै	कहे
११३	४	दुलसी	हुलसी
,,	६	फद्दोम	क दौड
,,	१५	पांणी	आणी
,,	२५	भेल	भिन्न
११५	१	वलिघन	वलिधन
,,	५	द्वार जरे देत	द्वार जरे न देत
,,	१५	मोचे	मोवे
,,	१६	बल	विन
११६	११	जस वांण	जसमांन
,,	१४	पुन्हा	पुनः
,,	१६	जीरो	जीरो
,,	१९	उपजे	उपज्यो
,,	२२	त्रिगज	विगय

११७	१२	मोडे	मांडे
११८	१	जान	जात
,,	३	डर	डरके
,,	४	फिर	०
११९	४	वेठा	घेठा
,,	६	वेध	वैद्य
,,	,,	,,	,,
१२०	७	वहु	वहु
१२२	१०	भानु	भानू
११४	६	निंदा कर पराई.	निंदा म कर पराई.

प्रकरण ५ वां-लावणी.

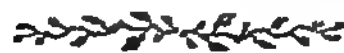
१२४	११	कचा	वचा
,,	१९	शरने	रसीये.
१२९	९	भव विकार	सव विकार
१२६	१२	परया	पऱ्या
१३०	१०	भरण	मरण
,,	२१	व्याख्यानो	व्याख्यानो
१३१	८	ऊपमयावे	ओपम पावे
१३३	६	हे	यह
१३४	३	भिलाना	मिलाना
,,	१६	दोष	दो
१३९	१	विधामाना	विधाना
,,	८	पर पर पद	पर पद

१३६	१	मायाके	मायामें
१३९	१७	गोघ	गोद
	१९	विचू	विछु
”			
१४१	१०	टूटी	टूटी
१४२	१४	फुरमाते	कहते
१४३	८	जग	जब

प्रकरण छहा—होरी.

१४६	१५	कुटिल	कुटिरका
१४७	११	भक्षीया	भखीया
१४८	२	वीतरागवा	वीतरागका
	२०	अन निंदारी एह जगतमे	कर निंदा एह जगतमे
”			
१४९	१५	नाई	दाई
१५०	१२	क्रिम तमो	०
१५१	१	सयलेशी	अलेशी
”	”	परव	परज
”	८	राग	वैराग
”	१९	हरव	हर्ख.
१५२	१२	कुवला	कुब्जा
	१५	रसगभर	रगभर
”			
१५३	१९	मकर	कर
”	”	जुगति	जुगतिसे
१५४	३	मारग चूक गयोरी २	यह दो वार छपा है परंतु एक वार होना !

प्रकरण ७ वां-व्याख्यांन.



१५६	६	धूज	ध्वजा
,,	९	रत्नी	रत्ननी
१५८	५	त्यू	ज्यूं
१६२	१०	भछे	भेछे
,,	१४	नूकाजी	यूकाजी
१६४	७	हजारदि	हजारहि
१६५	२	छोर द्यो	छोड द्यो
१६६	१	घर २	धर २
,,	१०	मुज	तुज
,,	१९	गुझराती	गुजराती
१७०	९	सुनादो	सुनावो
१७१	१७	कुम २	कुमर
,,	१९	जजे अति जणकार	झझे अति झणकार
१७४	८	पहि वंधोधर पास	इन्द्र आई पास
,,	९	संच	तांम
१७५	७	पांति	पक्ति
,,	१६	पूजे	पूगे
,,	१७	पूजे	पूरो
१७८	६	ताढा हिमवत पाणी	ठंडा हेमवंत सरिखा पांणी
,,	७	काढा	काठा

१७८	२४,	वस	वस्त्र
१८०	८	ग्यात	वन
,,	८	शक्रेंद्रजे	शक्रेंद्रनें
,,	१०	सात्र	पाप
१८१	४	पारव	पाख
,,	६	गाताथापति	गाथापति
,,	८	कैलामें	कैलाशमे
,,	१३	घर	घर
१८२	१६	उशध्येन	उत्तराध्येन
१८३	९	लही केवल निज रूप रत-न निज	लह्यो केवल गौतम तत्क्षिणही.
१८४	११	सारवी	साखी
,,	१९	भांयोए	मांयोए
१८६	१५	भोया	भोपा
,,	१६	साहे	साह्य
१९०	६	घनराई	घनराई
,,	१७	मेली	लीजे
१९३	१३	काय	काप
१९४	२०	यतः	
१९७	२३	गीरवाना	गरवाना
१९८	७	लाहा	लावा
२०२	१७	सिघश्री	सिघश्री
२०३	१०	वल	वदल
,,	११	वहु चमू	सब सैन्य
२०५	१८	भवियण	०
,,	७	अही	गही

२६४	५	तेउनीतंनी	तेउनी
२६५	३	वेरिंद्री	वेरिंद्री
	१३	तेइंद्रिने	तेइंद्रिये
”			पांच महाविदेह
२७०	४	पाच मात्रिदेह	
२७१	११	”	”
२७४	२१	सुमति	सुमति
३४७	८	पात्रो	पावे
	१०	वंत्र	वध
”			असन्नी
३५४	९	कसन्नी	पद्नें
३५५	२	पदणे	मनुष्यणी
	४	मनुष्यनी	अपर्याप्ता
”	५	अयाप्ता	समूर्छिम्
”	१२	समूर्च्छम्	सत्य
”			
३६२	३	सच	व्यवहार
	१०	विहार	विर्य
”			
३६३	१२	वीरी	शुभ योग
३६४	४	अजोग	स्नानादिक
३७७	५	नानादिक	पांचमे
	१४	पांचमी	भवसिद्धिया
”			
३८०	२२	भत्रसिया	अनंतगुणा
३८५	२२	अनंत	अवधि नांणी
३८६	७	अवधि	श्रुत
	१२	श्रोत्र	पज्जेत्ते
”			
३८७	६	पउत्ते	

१९८	२	५ सन्नी तिर्यंचका अपर्याप्ता	५ सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता अपर्याप्ता
"	३	वन	वनस्पती "
"	९	१०	०
३९९	४	१०१ मनुष्य असख्यानो०	१०१ समुर्छिम मनुष्य
३९९	"	१७१	१७९
४००	९	देवलोक	देवताना
४०४	३	तित्ये	तित्ये
४१८	२३	राग	राग द्वार
४१९	३	कल्प	कल्प द्वार

अन्तिम पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
०	१	श्रीमद्द	श्रीमद्
"	१	शिष्या	शिष्य
	४	सुमहलं	सुमगल
मुनिवरेष्वभ्यर्थना	४	पढाब्ज	पदाब्ज

(१) "सिद्धांत शिरोमणि" की अन्त 'णि' ह्रस्व रहना चाहीये.

(२) जहां 'पकरण पहिला अकलंक स्तोत्र' है, वहां "प्रकरण पहिला स्तोत्र" एसा होना.

(३) जहां 'प्रकरण द्वितीय छन्द.' है, वहां 'प्रकरण दूसरा छन्द' यह होना.

(जाहिर खबर.)

वाचक वर्ग !

इसके शिवाय औरभी कही जगह बहुत अशुद्धियें (ह्रस्व-दीर्घ प्लुत स्वल्पविराम अर्द्धविराम पूर्णविराम पदच्छेद इत्यादि) रह गई हैं. जिस्को सर्व स्वधरमी बंधु सुधारके पढेंगे एसी आशा है.

(नोट) इस्मे ग्रंथ कर्त्ताका और प्रेस मालिकका कोई दोष नही है.

आपका हितैषी.

मगनमल गणेशमल कासवा.

मु० हिंगणघाट.

जि० वर्धा (सी. पी.)

